"The perfect thriller."—A.J. FINN

THE SILENT PATIENT

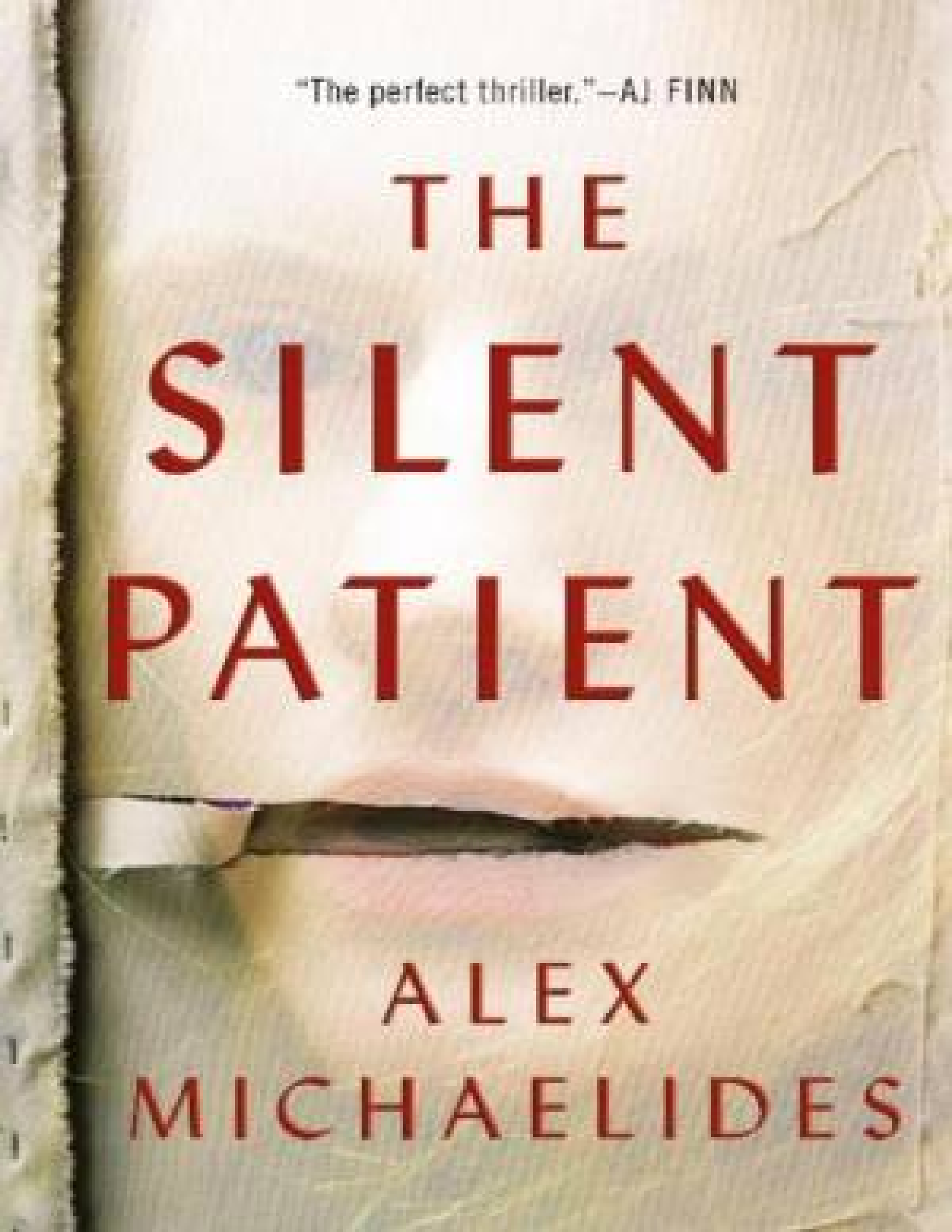

ALEX MICHAELIDES

Table of Contents

शीर्षक पेज
कॉपीराइट सूचना
समर्पण
सूक्ति
प्रस्तावना
भाग एक
अध्याय एक
अध्याय दो
अध्याय तीन
चौथा अध्याय
अध्याय पाँच
अध्याय छह
अध्याय सात
अध्याय आठ
अध्याय नौ
अध्याय दस
भाग दो
अध्याय एक: एलिसिया बेरेंसन की डायरी
अध्याय दो
अध्याय तीन
चौथा अध्याय
अध्याय पाँच
अध्याय छह
अध्याय सात
अध्याय आठ

अध्याय नौ
अध्याय दस
अध्याय ग्यारह
अध्याय बारह
अध्याय तेरह: एलिसिया बेरेंसन की डायरी
अध्याय चौदह
अध्याय पंद्रह
अध्याय सोलह
अध्याय सत्रह
अध्याय अठारह
अध्याय उन्नीस
अध्याय बीस
अध्याय इक्कीस
अध्याय बाईस: एलिसिया बेरेंसन की डायरी
अध्याय तेईस
अध्याय चौबीस
अध्याय पच्चीस
अध्याय छब्बीस
अध्याय सत्ताईस
अध्याय अट्ठाईस
अध्याय उनतीस
अध्याय तीस
अध्याय इकत्तीस
अध्याय बत्तीस
अध्याय तैंतीस
अध्याय चौंतीस
भाग तीन
एलिसिया बेरेंसन की डायरी

भाग चार
अध्याय एक
अध्याय दो
अध्याय तीन
चौथा अध्याय
अध्याय पाँच
अध्याय छह
अध्याय सात
अध्याय आठ
अध्याय नौ
अध्याय दस
अध्याय ग्यारह
अध्याय बारह
अध्याय तेरह
अध्याय चौदह
अध्याय पंद्रह
अध्याय सोलह
अध्याय सत्रह
अध्याय अठारह
अध्याय उन्नीस
अध्याय बीस
अध्याय इक्कीस
भाग पाँच
अध्याय एक: एलिसिया बेरेंसन की डायरी
अध्याय दो
अध्याय तीन
स्वीकृतियाँ
लेखक के बारे में

वृत्त पत्र शामिल होना
कॉपीराइट

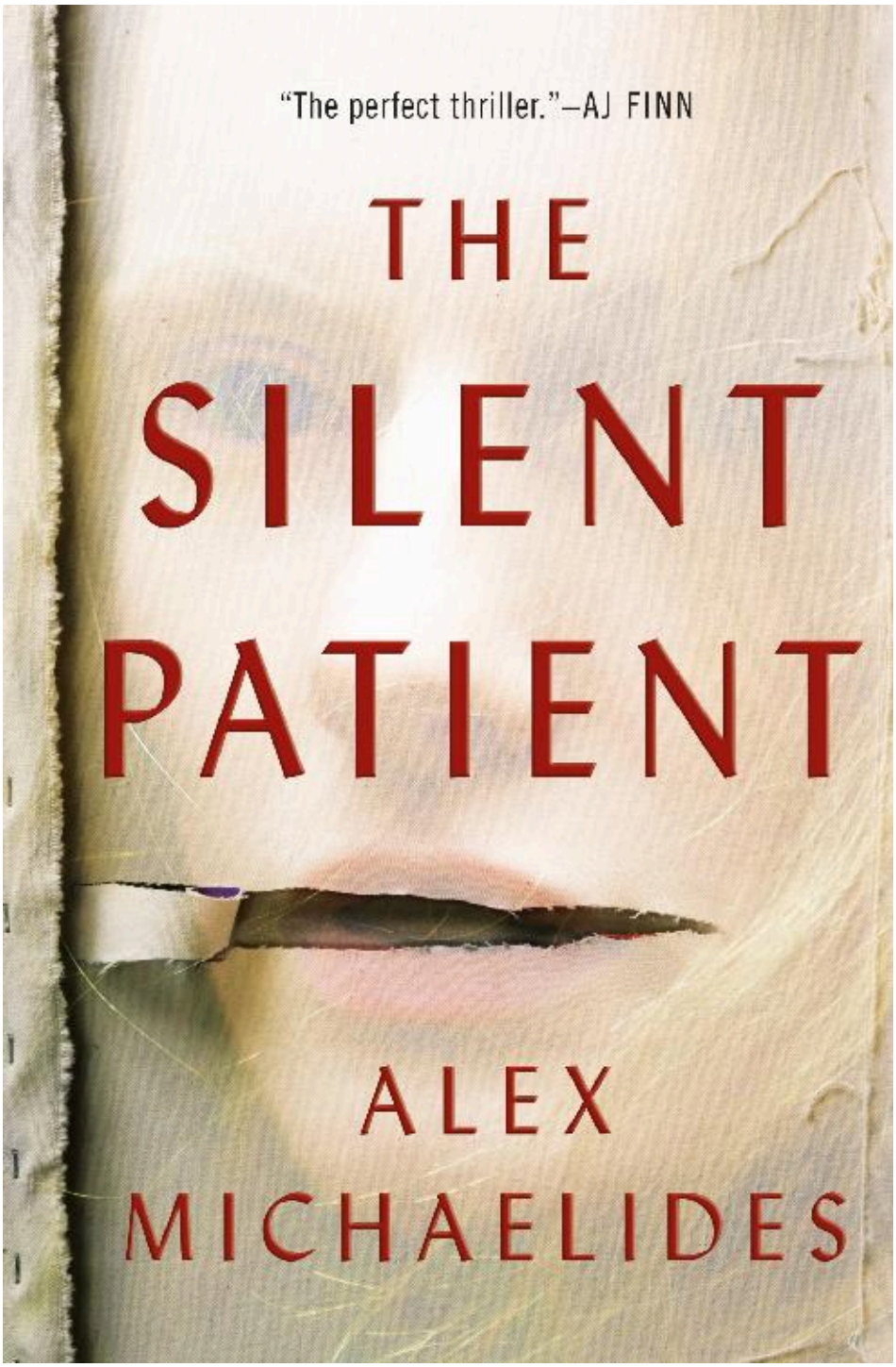

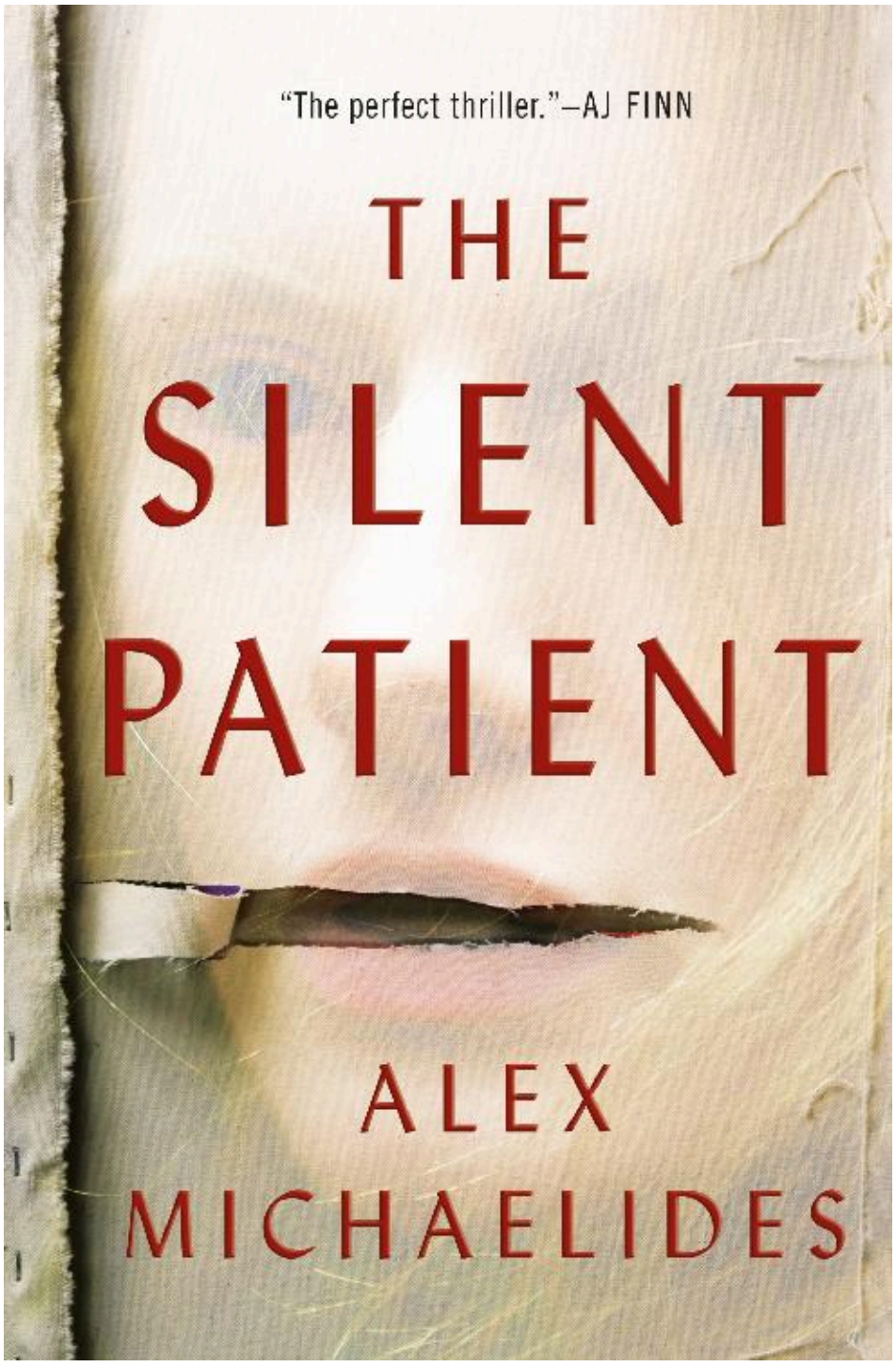
"The perfect thriller."—AJ FINN
THE
SILENT
PATIENT
ALEX
MICHAELIDES

THE SILENT PATIENT

Alex Michaelides

CELADON BOOKS
NEW YORK

पढ़ना शुरू करें
विषयसूची
लेखक के बारे में
कॉपीराइट पृष्ठ

लेखक और प्रकाशक ने यह ई-पुस्तक केवल आपके व्यक्तिगत उपयोग के लिए प्रदान की है। आप इस ई-पुस्तक को किसी भी तरह से सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं करा सकते। कॉपीराइट का उल्लंघन कानून के विरुद्ध है। यदि आपको लगता है कि आप जिस ई-पुस्तक को पढ़ रहे हैं वह लेखक के कॉपीराइट का उल्लंघन करती है,
कृपया us.macmillanusa.com/piracy पर प्रकाशक को सूचित करें।

मेरे अभिभावकों के लिए

लेकिन वह बोलती क्यों नहीं है?
—यूरिपाइड्स, एल्सेस्टिस

प्रस्तावना

एलिसिया बेरेंसन की डायरी

14 जुलाई

मुझे नहीं पता कि मैं यह क्यों लिख रहा हूँ।

यह सच नहीं है। शायद मैं जानती हूँ और बस खुद से स्वीकार नहीं करना चाहती। मुझे तो यह भी नहीं पता कि इसे क्या कहूँ—जो मैं लिख रही हूँ। इसे डायरी कहना थोड़ा दिखावा लगता है। ऐसा नहीं है कि मेरे पास कहने के लिए कुछ है। ऐनी फ्रैंक डायरी लिखती थीं—मेरे जैसी कोई नहीं। इसे "जर्नल" कहना कुछ ज़्यादा ही अकादमिक लगता है। जैसे कि मुझे इसमें हर दिन लिखना चाहिए, और मैं लिखना नहीं चाहती।

अगर यह एक बोझ बन गया, तो मैं इसे कभी जारी नहीं रखूंगा।

शायद मैं इसे कुछ भी न कहूँ। एक अनाम चीज़ जिसमें मैं कभी-कभार लिखती हूँ। मुझे यही ज़्यादा अच्छा लगता है। एक बार किसी चीज़ को नाम दे देने से आप उसका पूरा सार या उसकी अहमियत नहीं समझ पाते। आप शब्द पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो वास्तव में बस एक छोटा सा हिस्सा है, हिमशैल का ऊपरी सिरा। मुझे शब्दों से कभी इतनी सहजता नहीं रही—मैं हमेशा चित्रों में सोचती हूँ, छवियों के ज़रिए खुद को व्यक्त करती हूँ—इसलिए अगर गैब्रियल न होता तो मैं इसे लिखना कभी शुरू ही न करती।

मैं आजकल कुछ बातों को लेकर उदास महसूस कर रही हूँ। मुझे लगा कि मैं इसे अच्छे से छुपा रही हूँ, लेकिन उसने देख लिया—ज़ाहिर है, उसने देख लिया, वो तो सब कुछ देख लेता है। उसने पूछा कि पेंटिंग कैसी चल रही है—मैंने कहा कि कुछ नहीं चल रहा। उसने मुझे एक गिलास वाइन दी, और मैं रसोई की मेज पर बैठ गई जबकि वह खाना बना रहा था।

मुझे गैब्रियल को रसोई में काम करते देखना अच्छा लगता है। वह एक कुशल रसोइया है।

सुरुचिपूर्ण, बैले डांसर जैसी, व्यवस्थित। मेरे विपरीत। मैं तो बस सब कुछ अस्त-व्यस्त कर देती हूँ।
“मुझसे बात करो,” उसने कहा।
“कहने को कुछ नहीं है। कभी-कभी मैं अपने विचारों में इतना उलझ जाता हूँ कि मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं कीचड़ में चल रहा हूँ।”
“आप चीजों को लिखकर क्यों नहीं रखते? किसी तरह का रिकॉर्ड क्यों नहीं रखते?” इससे शायद मदद मिल सके।
“हां, मुझे लगता है ऐसा ही होगा। मैं इसे आजमाऊंगा।”
“सिर्फ कहो मत, जानम। करके दिखाओ।”
"मैं करूँगा।"
वह मुझे लगातार परेशान करता रहा, लेकिन मैंने कुछ नहीं किया। फिर कुछ दिनों बाद उसने मुझे लिखने के लिए यह छोटी सी किताब दी। इसका जिल्द काले चमड़े का था और पन्ने मोटे, सफेद और खाली थे। मैंने पहले पन्ने पर हाथ फेरा, उसकी चिकनाई महसूस की—फिर अपनी पेंसिल तेज की और लिखना शुरू कर दिया।
वह बिल्कुल सही थे। मुझे अभी से बेहतर महसूस हो रहा है—इसे लिखने से मुझे एक तरह की राहत मिल रही है, एक ज़रिया मिल रहा है, खुद को अभिव्यक्त करने की जगह मिल रही है। शायद एक तरह की थेरेपी भी।
गैब्रियल ने ये कहा तो नहीं, पर मुझे पता है कि वो मेरे बारे में चिंतित है। और अगर मैं सच कहूँ—और मुझे कहना ही चाहिए—तो इस डायरी को लिखने की मेरी असली वजह उसे तसल्ली देना—ये साबित करना था कि मैं ठीक हूँ। मैं ये सोच भी नहीं सकती कि वो मेरे बारे में परेशान हो। मैं उसे कभी भी तकलीफ या दुख नहीं देना चाहती। मैं गैब्रियल से बहुत प्यार करती हूँ।
वह निःसंदेह मेरे जीवन का प्यार है। मैं उससे इतना पूर्णतः, इतना प्रेम करती हूँ कि कभी-कभी यह मुझे अभिभूत कर देता है। कभी-कभी मैं सोचती हूँ—
नहीं। मैं उस बारे में नहीं लिखूंगा।
यह विचारों और छवियों का एक आनंदमय संकलन होगा जो मुझे कलात्मक रूप से प्रेरित करते हैं, ऐसी चीजें जो मुझ पर रचनात्मक प्रभाव डालती हैं। मैं केवल सकारात्मक, खुशहाल और सामान्य विचार ही लिखूंगा।

किसी भी प्रकार के अटपटे विचार स्वीकार्य नहीं हैं।

भाग एक

जिसके पास देखने के लिए आंखें और सुनने के लिए कान हैं, वह शायद
खुद को यह विश्वास दिलाना कि कोई भी इंसान रहस्य नहीं रख सकता।
अगर उसके होंठ चुप रहते हैं, तो वह अपनी उंगलियों से बातें करता है; विश्वासघात उसके हर रोम से रिसता है।
—सिगमंड फ्रायड, मनोविश्लेषण पर परिचयात्मक व्याख्यान

अध्याय एक

एलिसिया बेरेनसन ने जब अपने पति की हत्या की तब उनकी उम्र तैंतीस वर्ष थी। उनकी शादी को सात साल हो गए थे। दोनों कलाकार थे—एलिसिया एक चित्रकार थीं और गैब्रियल एक जाने-माने फैशन फोटोग्राफर थे। उनकी एक विशिष्ट शैली थी, जिसमें वे अधमरी और अधनंगी महिलाओं की अजीबोगरीब, भद्दे कोणों से तस्वीरें खींचते थे। उनकी मृत्यु के बाद से उनकी तस्वीरों की कीमत आसमान छू रही है। सच कहूँ तो मुझे उनका काम कुछ ज्यादा ही सतही और दिखावटी लगता है। उसमें एलिसिया के बेहतरीन कामों जैसी गहराई नहीं है। कला के बारे में मुझे इतनी जानकारी नहीं है कि मैं कह सकूँ कि एलिसिया बेरेंसन एक चित्रकार के रूप में समय की कसौटी पर खरी उतरेंगी या नहीं। उनकी प्रतिभा हमेशा उनकी बदनामी के साये में रहेगी, इसलिए निष्पक्ष होना मुश्किल है। और आप मुझ पर पक्षपात का आरोप भी लगा सकते हैं।

मैं बस अपनी राय दे सकता हूँ, चाहे उसका कितना भी महत्व हो। और मेरे लिए, एलिसिया एक विलक्षण प्रतिभा की धनी थीं। उनकी तकनीकी कुशलता के अलावा, उनकी पेंटिंग्स में आपका ध्यान खींचने की अद्भुत क्षमता थी—लगभग गला पकड़कर—और उसे जकड़ कर रखती थीं।

गेब्रियल बेरेंसन की हत्या छह साल पहले हुई थी। उनकी उम्र चौवालीस वर्ष थी। उनकी हत्या 25 अगस्त को हुई थी - आपको शायद याद होगा कि वह एक असामान्य रूप से गर्म गर्मी का मौसम था, जिसमें अब तक के सबसे अधिक तापमान दर्ज किए गए थे। जिस दिन उनकी मृत्यु हुई, वह उस वर्ष का सबसे गर्म दिन था।

अपने जीवन के अंतिम दिन, गैब्रियल सुबह जल्दी उठे। उन्हें सुबह 5:15 बजे एक कार लेने आई।
वह सुबह उत्तर-पश्चिम लंदन के हैम्पस्टेड हीथ के किनारे स्थित अपने घर से निकले, जहाँ वे एलिसिया के साथ रहते थे, और उन्हें शोरडिच में एक शूट के लिए ले जाया गया। उन्होंने वोग पत्रिका के लिए एक छत पर मॉडलों की तस्वीरें खींचने में पूरा दिन बिताया।
एलिसिया की गतिविधियों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। उनकी एक प्रदर्शनी होने वाली थी और उनका काम अधूरा चल रहा था। संभवतः उन्होंने पूरा दिन बगीचे के अंत में स्थित समरहाउस में पेंटिंग करते हुए बिताया होगा।
हाल ही में इसे एक स्टूडियो में परिवर्तित किया गया था। अंत में, गैब्रियल की शूटिंग देर तक चली, और उसे रात ग्यारह बजे तक घर नहीं पहुँचाया गया।
आधे घंटे बाद, उनकी पड़ोसी बार्बी हेलमैन ने कई गोलियों की आवाज सुनी। बार्बी ने पुलिस को फोन किया, और रात 11:35 बजे हैवरस्टॉक हिल स्थित पुलिस स्टेशन से एक कार भेजी गई। वह कार तीन मिनट से भी कम समय में बेरेंसन के घर पहुंच गई। सामने का दरवाज़ा खुला था। घर घोर अंधेरे में डूबा हुआ था; कोई भी लाइट स्विच काम नहीं कर रहा था। पुलिस अधिकारी गलियारे से होते हुए बैठक कक्ष में पहुँचे। उन्होंने टॉर्च से कमरे में रोशनी की, जिससे कमरा रुक-रुक कर रोशन हो रहा था। एलिसिया चिमनी के पास खड़ी मिली। टॉर्च की रोशनी में उसकी सफेद पोशाक भूतिया सी चमक रही थी। एलिसिया को पुलिस की मौजूदगी का कोई आभास नहीं था। वह हिल-डुल नहीं पा रही थी, जैसे बर्फ से तराशी गई कोई मूर्ति हो, उसके चेहरे पर एक अजीब, डरावना भाव था, मानो वह किसी अनदेखे आतंक का सामना कर रही हो।
ज़मीन पर एक बंदूक पड़ी थी। उसके पास, अँधेरे में, गैब्रियल बेसुध बैठा था, उसके टखनों और कलाईयों पर तार लिपटे हुए थे और वह कुर्सी से बंधा हुआ था। पहले तो अधिकारियों को लगा कि वह ज़िंदा है। उसका सिर थोड़ा एक तरफ झुका हुआ था, मानो वह बेहोश हो। तभी एक तेज़ रोशनी से पता चला कि गैब्रियल के चेहरे पर कई गोलियां लगी थीं। उसके सुंदर चेहरे हमेशा के लिए नष्ट हो गए थे, और उसकी जगह

एक जला हुआ, काला, खून से लथपथ चेहरा रह गया था। उसके पीछे की दीवार खोपड़ी, दिमाग, बाल और खून के टुकड़ों से सनी हुई थी।
हर जगह खून ही खून था—दीवारों पर छींटे, फर्श पर गहरी धारियों में बहता हुआ खून, लकड़ी के तख्तों की दरारों में फैला हुआ खून। अधिकारियों को लगा कि यह गैब्रियल का खून है। लेकिन खून बहुत ज़्यादा था। तभी टॉर्च की रोशनी में कुछ चमका —एलिसिया के पैरों के पास फर्श पर एक चाकू पड़ा था। रोशनी की एक और किरण ने एलिसिया की सफेद पोशाक पर फैले खून को उजागर किया। एक अधिकारी ने उसकी बांहें पकड़ीं और उन्हें रोशनी में ऊपर उठाया। उसकी कलाई की नसों पर गहरे घाव थे—ताज़ा घाव, जिनसे तेज़ी से खून बह रहा था।
एलिसिया ने अपनी जान बचाने के प्रयासों का विरोध किया; उसे काबू में करने के लिए तीन पुलिस अधिकारियों को लगना पड़ा। उसे कुछ ही मिनटों की दूरी पर स्थित रॉयल फ्री अस्पताल ले जाया गया। रास्ते में ही वह बेहोश हो गई। उसका बहुत खून बह गया था, लेकिन वह बच गई।
अगले दिन, वह अस्पताल के एक निजी कमरे में बिस्तर पर लेटी हुई थी। पुलिस ने उसके वकील की मौजूदगी में उससे पूछताछ की। एलिसिया चुप रही।
पूरे साक्षात्कार के दौरान, उसके होंठ पीले और बेजान थे; वे कभी-कभार फड़फड़ाते थे, लेकिन कोई शब्द नहीं बोलते थे, कोई आवाज़ नहीं करते थे। उसने किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। वह बोल नहीं सकती थी, बोलना नहीं चाहती थी। गैब्रियल की हत्या के आरोप में भी वह नहीं बोली। गिरफ्तारी के समय भी वह चुप रही, न तो उसने अपना अपराध स्वीकार किया और न ही इनकार किया।
एलिसिया ने फिर कभी बात नहीं की।
उनकी अटूट चुप्पी ने इस कहानी को एक सामान्य घरेलू त्रासदी से कहीं अधिक भव्य बना दिया: एक रहस्य, एक पहेली जिसने सुर्खियों में जगह बनाई और आने वाले महीनों तक जनता की कल्पना को मोहित कर लिया।
एलिसिया चुप रही—लेकिन उसने एक बात कही। एक पेंटिंग। इसे उसने अस्पताल से छुट्टी मिलने और मुकदमे से पहले घर में नजरबंद किए जाने के बाद बनाना शुरू किया था। अदालत द्वारा नियुक्त मनोरोग नर्स के अनुसार, एलिसिया मुश्किल से खाती-पीती और सोती थी—वह बस पेंटिंग ही करती रहती थी।

सामान्यतः एलिसिया एक नई पेंटिंग बनाने से पहले हफ्तों, यहाँ तक कि महीनों तक मेहनत करती थी, अनगिनत रेखाचित्र बनाती, रचना को व्यवस्थित और पुनर्व्यवस्थित करती, रंग और आकार के साथ प्रयोग करती—एक लंबी तैयारी के बाद एक धीमी प्रक्रिया चलती थी, जिसमें प्रत्येक ब्रशस्ट्रोक को सावधानीपूर्वक लगाया जाता था। लेकिन अब, उसने अपनी रचनात्मक प्रक्रिया में आमूलचूल परिवर्तन किया और अपने पति की हत्या के कुछ ही दिनों के भीतर इस पेंटिंग को पूरा कर लिया।
और ज्यादातर लोगों के लिए, यह उसे दोषी ठहराने के लिए काफी था - गैब्रियल की मृत्यु के तुरंत बाद स्टूडियो में वापस लौटना एक असाधारण असंवेदनशीलता को दर्शाता है।
एक निर्मम हत्यारे में पश्चाताप की घोर कमी।
शायद। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भले ही एलिसिया बेरेंसन एक हत्यारी हो, वह एक कलाकार भी थी। यह बात मुझे कम से कम पूरी तरह समझ में आती है। कि वह अपने ब्रश और रंग उठाए और कैनवास पर अपनी जटिल भावनाओं को व्यक्त करे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पहली बार चित्रकारी करना उसके लिए इतना सहज हो गया; अगर दुःख को सहज कहा जा सकता है तो।
यह एक आत्मचित्र था। उन्होंने कैनवास के निचले बाएं कोने में हल्के नीले रंग के ग्रीक अक्षरों में इसका शीर्षक लिखा था।
एक शब्द:
एल्सेस्टिस।
अध्याय दो
एल्सेस्टिस एक ग्रीक पौराणिक कथा की नायिका है। एक बेहद दुखद प्रेम कहानी। एल्सेस्टिस स्वेच्छा से अपने पति एडमेटस के लिए अपना जीवन बलिदान कर देती है, जब कोई और उसकी जगह मरने को तैयार नहीं होता। आत्म-बलिदान की यह विचलित कर देने वाली कहानी, एलिसिया की स्थिति से कैसे संबंधित है, यह स्पष्ट नहीं था। इस संकेत का असली अर्थ मुझे कुछ समय तक समझ नहीं आया। आखिरकार, एक दिन सच्चाई सामने आ गई।
लेकिन मैं जल्दबाजी कर रहा हूँ। मैं अपनी बात से भटक रहा हूँ। मुझे शुरुआत से शुरू करना चाहिए और घटनाओं को खुद बयां करने देना चाहिए। मुझे उन्हें रंग नहीं

देना चाहिए, तोड़-मरोड़ नहीं करनी चाहिए या कोई झूठ नहीं बोलना चाहिए। मैं धीरे-धीरे और सावधानी से कदम दर कदम आगे बढ़ूंगा। लेकिन शुरुआत कहाँ से करूँ? मुझे अपना परिचय देना चाहिए, लेकिन शायद अभी नहीं; आखिर मैं इस कहानी का नायक नहीं हूँ। यह एलिसिया बेरेंसन की कहानी है, इसलिए मुझे शुरुआत उनसे और एल्सेस्टिस से ही करनी चाहिए।

यह चित्र एलिसिया का आत्मचित्र है, जिसमें हत्या के कुछ दिनों बाद, घर पर बने स्टूडियो में, ईज़ल और कैनवास के सामने खड़ी एलिसिया को दर्शाया गया है। उसके हाथ में एक ब्रश है। वह नग्न है। उसके शरीर को बारीकी से चित्रित किया गया है: पतले कंधों पर बिखरे लंबे लाल बाल, पारदर्शी त्वचा के नीचे दिखाई देती नीली नसें, और दोनों कलाइयों पर ताज़े निशान। उसने ब्रश को अपनी उंगलियों के बीच पकड़ रखा है। ब्रश से लाल रंग टपक रहा है—या फिर खून? उसे पेंटिंग करते हुए कैद किया गया है—फिर भी कैनवास खाली है, उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं है। उसका सिर कंधे के ऊपर मुड़ा हुआ है और वह सीधे हमारी ओर देख रही है। मुंह खुला है, होंठ थोड़े खुले हैं। वह मूक है।

मुकदमे की सुनवाई के दौरान, जीन-फेलिक्स मार्टिन, जो एलिसिया का प्रतिनिधित्व करने वाली सोहो की छोटी गैलरी का प्रबंधन करते थे, ने एक विवादास्पद निर्णय लिया, जिसे कई लोगों ने सनसनीखेज और भयावह बताकर निंदा की, और एल्सेस्टिस की कलाकृति को प्रदर्शित करने का फैसला किया। कलाकार पर अपने पति की हत्या का आरोप था और गैलरी के लंबे इतिहास में पहली बार प्रवेश द्वार के बाहर लंबी कतारें लग गईं।

मैं अन्य कामुक कला प्रेमियों के साथ कतार में खड़ा था, बगल की एक सेक्स शॉप की नियॉन-लाल बत्तियों के पास अपनी बारी का इंतजार कर रहा था। एक-एक करके हम सब अंदर चले गए।

गैलरी में प्रवेश करते ही, हमें पेंटिंग की ओर धकेल दिया गया, मानो मेले में उमड़ी हुई भीड़ किसी भूतिया घर में घुसने की कोशिश कर रही हो। आखिरकार, मैं कतार में सबसे आगे पहुँच गया—और मेरे सामने एल्सेस्टिस की पेंटिंग थी।

मैं पेंटिंग को घूरता रहा, एलिसिया के चेहरे को निहारता रहा, उसकी आँखों के भावों को समझने की कोशिश करता रहा, कुछ जानने की कोशिश करता रहा—पर वह

चित्र मेरी समझ से परे था। एलिसिया भी मुझे घूर रही थी—एक खाली मुखौटा—अस्पष्ट, भेदने में मुश्किल। मैं उसके चेहरे पर न तो मासूमियत देख पाया और न ही गुनाह।
अन्य लोगों को उसे समझना आसान लगता था।
मेरे पीछे खड़ी महिला ने फुसफुसाते हुए कहा, "शुद्ध बुराई।"
“है ना?” उसकी साथी ने सहमति जताते हुए कहा। “बेहद निर्दयी कुतिया।”
मुझे लगा कि यह कुछ हद तक अन्यायपूर्ण है—खासकर तब जब एलिसिया का अपराध अभी तक साबित नहीं हुआ था। लेकिन सच तो यह था कि यह पहले से ही तय था। टैब्लॉइड अखबारों ने उसे शुरू से ही खलनायिका के रूप में पेश किया था: एक घातक स्त्री, एक काली विधवा। एक राक्षस।
तथ्य सीधे-सादे थे: एलिसिया गैब्रियल के शव के साथ अकेली पाई गई थी; बंदूक पर केवल उसके उंगलियों के निशान थे। इसमें कोई संदेह नहीं था कि उसने गैब्रियल को मारा था। दूसरी ओर, उसने उसे क्यों मारा, यह एक रहस्य बना रहा।
इस हत्या पर मीडिया में खूब बहस हुई, और अखबारों, रेडियो और चैट शो में तरह-तरह के सिद्धांत सामने आए। एलिसिया के कार्यों को समझाने, निंदा करने और सही ठहराने के लिए विशेषज्ञों को बुलाया गया। क्या वह घरेलू हिंसा की शिकार रही होगी, हद से ज्यादा परेशान होकर उसने आखिरकार अपना आपा खो दिया? एक और सिद्धांत यह था कि यह एक यौन खेल का बिगड़ जाना था—पति बंधा हुआ मिला था, है ना? कुछ लोगों को शक था कि एलिसिया की हत्या के पीछे पुरानी ईर्ष्या थी—शायद किसी दूसरी महिला से? लेकिन मुकदमे के दौरान गैब्रियल को उसके भाई ने एक समर्पित पति बताया, जो अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता था। खैर, पैसे का क्या? एलिसिया को उसकी मौत से कुछ खास फायदा नहीं होने वाला था; पैसा तो उसी के पास था, जो उसे अपने पिता से विरासत में मिला था।
और इसी तरह अटकलें चलती रहीं—कोई जवाब नहीं, बस और सवाल—एलिसिया के इरादों और उसके बाद की चुप्पी को लेकर। उसने बोलने से इनकार क्यों किया? इसका क्या मतलब था? क्या वह कुछ छिपा रही थी? किसी की रक्षा कर रही थी? अगर हाँ, तो किसकी? और क्यों?

उस समय मुझे याद है कि जब हर कोई एलिसिया के बारे में बात कर रहा था, लिख रहा था, बहस कर रहा था, इस उन्मादपूर्ण, शोरगुल भरी गतिविधि के केंद्र में एक खालीपन था—एक सन्नाटा। एक रहस्यमयी खामोशी।

मुकदमे की सुनवाई के दौरान, न्यायाधीश ने एलिसिया के लगातार चुप रहने पर आपत्ति जताई। न्यायमूर्ति अल्वरस्टोन ने कहा कि निर्दोष लोग अक्सर अपनी निर्दोषता का खुलकर और बार-बार दावा करते हैं। एलिसिया न केवल चुप रही, बल्कि उसने पश्चाताप का कोई संकेत भी नहीं दिखाया। मुकदमे की पूरी सुनवाई के दौरान वह एक बार भी नहीं रोई—इस बात को प्रेस में खूब उछाला गया—उसका चेहरा भावहीन, ठंडा और स्थिर बना रहा। मानो जम गया हो।

बचाव पक्ष के पास कम ज़िम्मेदारी की दलील देने के अलावा कोई चारा नहीं था: दावा किया गया कि एलिसिया को बचपन से ही मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं थीं। न्यायाधीश ने इनमें से अधिकांश को सुनी-सुनाई बातों के आधार पर खारिज कर दिया —लेकिन अंत में वे इंपीरियल कॉलेज में फोरेंसिक मनोचिकित्सा के प्रोफेसर और उत्तरी लंदन में स्थित एक सुरक्षित फोरेंसिक इकाई, द ग्रोव के नैदानिक निदेशक, लाजरस डायोमेडेस की बातों से प्रभावित हो गए। प्रोफेसर डायोमेडेस ने तर्क दिया कि एलिसिया का बोलने से इनकार करना ही गंभीर मनोवैज्ञानिक पीड़ा का प्रमाण है —और उसे उसी के अनुसार सजा दी जानी चाहिए।

यह बात कहने का एक घुमावदार तरीका था जिसे मनोचिकित्सक सीधे तौर पर कहना पसंद नहीं करते:

डायोमेडेस कह रहा था कि एलिसिया पागल थी।

यही एक एकमात्र स्पष्टीकरण था जो समझ में आता था: भला क्यों अपने प्रिय को कुर्सी से बांधकर उसके चेहरे पर करीब से गोली मार दी? और फिर कोई पछतावा न जताया, कोई स्पष्टीकरण न दिया, यहाँ तक कि कुछ बोला भी नहीं? वह ज़रूर पागल हो गई होगी।

उसे होना ही था।

अंत में, न्यायमूर्ति अल्वरस्टोन ने कम जिम्मेदारी की दलील स्वीकार कर ली और जूरी को भी ऐसा ही करने की सलाह दी। इसके बाद एलिसिया को ग्रोव में दाखिला मिल

गया—उसी प्रोफेसर डायोमेडेस की देखरेख में, जिनकी गवाही न्यायाधीश पर बहुत प्रभावशाली रही थी।
अगर एलिसिया पागल नहीं थी—यानी, अगर उसकी चुप्पी महज़ एक नाटक थी, जूरी को प्रभावित करने के लिए किया गया एक प्रदर्शन—तो यह कारगर साबित हुआ। उसे लंबी जेल की सज़ा से बचा लिया गया—और अगर वह पूरी तरह से ठीक हो जाती है, तो शायद कुछ ही सालों में उसे रिहा कर दिया जाएगा। क्या अब ठीक होने का नाटक शुरू करने का समय नहीं था? यहाँ-वहाँ कुछ शब्द बोलना, फिर कुछ और; धीरे-धीरे
क्या उसने किसी तरह का पछतावा ज़ाहिर किया? लेकिन नहीं। हफ़्तों बीतते गए, महीनों बीतते गए, फिर साल बीतते गए—और फिर भी एलिसिया ने कुछ नहीं कहा। वहाँ पूरी तरह सन्नाटा छाया हुआ था।
और इस तरह, आगे कोई और जानकारी सामने न आने पर, निराश मीडिया ने आखिरकार एलिसिया बेरेंसन में रुचि खो दी। वह उन अन्य हत्यारों की श्रेणी में शामिल हो गईं, जिन्हें कुछ समय के लिए प्रसिद्धि मिली थी; ऐसे चेहरे जिन्हें हम याद रखते हैं, लेकिन जिनके नाम हम भूल जाते हैं।
हम सभी नहीं। कुछ लोग—जिनमें मैं भी शामिल हूँ—एलिसिया बेरेंसन के रहस्य और उनकी अटूट चुप्पी से मोहित होते रहे। एक मनोचिकित्सक के रूप में, मुझे स्पष्ट रूप से लगता था कि गैब्रियल की मृत्यु के कारण उन्हें गहरा सदमा लगा था; और यह चुप्पी उसी सदमे की अभिव्यक्ति थी। अपने किए को स्वीकार न कर पाने के कारण, एलिसिया हकलाती और रुक जाती, मानो कोई टूटी हुई कार हो। मैं उन्हें फिर से चलने में मदद करना चाहता था—
एलिसिया को अपनी कहानी बताने में मदद करो, ताकि वह ठीक हो सके और स्वस्थ हो सके। मैं उसे ठीक करना चाहता था।
मैं अपनी बड़ाई नहीं करना चाहती, लेकिन मुझे लगा कि एलिसिया बेरेंसन की मदद करने के लिए मैं पूरी तरह से योग्य हूँ। मैं एक फॉरेंसिक मनोचिकित्सक हूँ और समाज के सबसे ज़्यादा पीड़ित और कमज़ोर लोगों के साथ काम करने की आदी हूँ। एलिसिया की कहानी ने मुझे व्यक्तिगत रूप से बहुत प्रभावित किया—शुरू से ही मुझे उसके प्रति गहरी सहानुभूति महसूस हुई।

दुर्भाग्यवश, उन दिनों मैं ब्रॉडमूर में ही काम कर रहा था, और इसलिए एलिसिया का इलाज करना एक कोरी कल्पना ही रह जाती, अगर भाग्य ने अप्रत्याशित रूप से हस्तक्षेप न किया होता।

एलिसिया के अस्पताल में भर्ती होने के लगभग छह साल बाद, ग्रोव में फोरेंसिक मनोचिकित्सक का पद रिक्त हुआ। विज्ञापन देखते ही मुझे पता चल गया कि मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। मैंने अपने मन की सुनी और नौकरी के लिए आवेदन कर दिया।

अध्याय तीन

मेरा नाम थियो फैबर है। मेरी उम्र बयालीस वर्ष है। और मैं मनोचिकित्सक इसलिए बना क्योंकि मैं मानसिक रूप से बहुत परेशान था। यही सच है—हालाँकि नौकरी के साक्षात्कार के दौरान जब मुझसे यह सवाल पूछा गया था, तब मैंने यह नहीं कहा था।

"आपको क्या लगता है, मनोचिकित्सा की ओर किस बात ने आकर्षित किया?" इंदिरा शर्मा ने अपने उल्लू जैसे चश्मे के ऊपर से मेरी ओर देखते हुए पूछा।

इंदिरा द ग्रोव में सलाहकार मनोचिकित्सक थीं। उनकी उम्र पचास के आसपास थी, उनका चेहरा गोल और आकर्षक था, और उनके लंबे काले बालों में सफ़ेद बाल आ रहे थे। उन्होंने मुझे हल्की सी मुस्कान दी—जैसे मुझे आश्वस्त कर रही हों कि यह एक आसान सवाल है, एक शुरुआती अभ्यास है, आगे आने वाले कठिन सवालों से पहले का संकेत है।

मैं हिचकिचाया। मुझे महसूस हुआ कि पैनल के अन्य सदस्य मुझे देख रहे हैं। मैंने सचेत रहते हुए उनसे नज़रें मिलाए रखीं और एक पूर्वनिर्धारित जवाब दिया - एक सहानुभूतिपूर्ण कहानी जिसमें मैंने किशोरावस्था में एक केयर होम में अंशकालिक काम करने के अपने अनुभव को साझा किया; और बताया कि कैसे इससे मनोविज्ञान में मेरी रुचि जागी, जिसने मुझे मनोचिकित्सा में स्नातकोत्तर अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया, इत्यादि।

“शायद मैं लोगों की मदद करना चाहता था।” मैंने कंधे उचकाते हुए कहा। “बस यही बात है।”

जो कि बिलकुल बकवास था।

मतलब, बेशक मैं लोगों की मदद करना चाहता था। लेकिन यह मेरा गौण उद्देश्य था।

विशेषकर उस समय जब मैंने प्रशिक्षण शुरू किया था। असल प्रेरणा पूरी तरह स्वार्थपूर्ण थी। मैं खुद की मदद करने की कोशिश कर रहा था। मेरा मानना है कि मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में आने वाले अधिकांश लोगों के साथ भी ऐसा ही होता है। हम इस पेशे की ओर आकर्षित होते हैं क्योंकि हम अंदर से टूटे हुए होते हैं—हम खुद को ठीक करने के लिए मनोविज्ञान का अध्ययन करते हैं। हम इसे स्वीकार करने के लिए तैयार हैं या नहीं, यह एक अलग सवाल है।

मनुष्य होने के नाते, अपने प्रारंभिक वर्षों में हम स्मृति से परे एक युग में निवास करते हैं। हम स्वयं को इस आदिम धुंध से अपने पूर्ण विकसित व्यक्तित्व के साथ उभरते हुए देखना पसंद करते हैं, जैसे एफ़्रोडाइट समुद्र के झाग से परिपूर्ण रूप से प्रकट होती है। लेकिन मस्तिष्क के विकास पर बढ़ते शोध के कारण,

हम जानते हैं कि ऐसा नहीं है। हम आधे-अधूरे मस्तिष्क के साथ पैदा होते हैं—एक दिव्य ओलंपियन की बजाय मिट्टी के एक ढेले की तरह। जैसा कि मनोविश्लेषक डोनाल्ड विनिकॉट ने कहा था, "शिशु जैसी कोई चीज नहीं होती।" हमारे व्यक्तित्व का विकास एकांत में नहीं होता, बल्कि दूसरों के साथ संबंधों में होता है—हम अदृश्य, अविस्मरणीय शक्तियों द्वारा आकारित और पूर्ण होते हैं; अर्थात्, हमारे माता-पिता।

यह बात स्पष्ट कारणों से भयावह है। कौन जानता है कि इस धरती पर, जहाँ अब तक हमारा अस्तित्व नहीं था, हमने कितनी अपमानजनक बातें, कितनी यातनाएँ और दुर्व्यवहार सहे? हमारा चरित्र हमारी जानकारी के बिना ही गढ़ा गया। मेरे मामले में, मैं बचपन से ही बेचैन, भयभीत और चिंतित महसूस करता था। यह चिंता मेरे जन्म से पहले से ही मौजूद थी और मुझसे स्वतंत्र थी। लेकिन मुझे लगता है कि इसकी जड़ें मेरे पिता के साथ मेरे रिश्ते में थीं, जिनके आसपास मैं कभी सुरक्षित नहीं था।

मेरे पिता का अप्रत्याशित और अनियंत्रित क्रोध किसी भी स्थिति को, चाहे वह कितनी भी सामान्य क्यों न हो, एक खतरनाक स्थिति में बदल देता था। एक मामूली सी टिप्पणी या असहमति की आवाज़ भी उनके क्रोध को भड़का देती थी और ऐसे विस्फोटों की एक श्रृंखला शुरू कर देती थी जिनसे बचना नामुमकिन था। जब वे चिल्लाते हुए मुझे ऊपर मेरे कमरे तक दौड़ाते थे, तो घर कांप उठता था। मैं छिपकर बिस्तर के नीचे, दीवार के सहारे दुबक जाता था।

मैं हल्की-हल्की हवा में सांस लेती, दुआ करती कि ईंटें मुझे निगल लें और मैं गायब हो जाऊं। लेकिन उसका हाथ मुझे पकड़ लेता, घसीटकर बाहर ले जाता, मेरे अंजाम तक। बेल्ट खींची जाती और हवा में सीटी बजाती, फिर वार करती, हर वार मुझे एक तरफ धकेल देता, मेरी त्वचा को जला देता। फिर कोड़े मारना अचानक ही खत्म हो जाता, जैसे शुरू हुआ था। मुझे ज़मीन पर पटक दिया जाता, एक ढेर की तरह। जैसे किसी गुस्से में भरे बच्चे ने कोई गुड़िया फेंक दी हो।

मुझे कभी यकीन नहीं हुआ कि मैंने ऐसा क्या किया था जिससे यह गुस्सा भड़का, या क्या मैं इसके लायक था।

मैंने अपनी माँ से पूछा कि मेरे पिता मुझसे हमेशा इतने गुस्से में क्यों रहते हैं, तो उन्होंने निराशा से कंधे उचकाते हुए कहा, "मुझे कैसे पता चलेगा? तुम्हारे पिता तो पूरी तरह से पागल हैं।"

जब उसने कहा कि वह पागल है, तो वह मज़ाक नहीं कर रही थी। अगर आज किसी मनोचिकित्सक द्वारा उसका मूल्यांकन किया जाता, तो मुझे लगता है कि उसे व्यक्तित्व विकार का निदान होता—एक ऐसी बीमारी जिसका उसके जीवन भर इलाज नहीं हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि उसका बचपन और किशोरावस्था उन्माद और शारीरिक हिंसा से भरा रहा: धमकियाँ, आँसू और कांच तोड़ना।

खुशी के पल भी आते थे; आमतौर पर तब जब मेरे पिताजी घर से दूर होते थे। मुझे याद है एक सर्दी में वे व्यापारिक यात्रा पर अमेरिका गए थे।

एक महीना। तीस दिनों तक, मेरी माँ और मैं घर और बगीचे में बिना उनकी निगरानी के पूरी तरह आज़ाद थे। उस दिसंबर में लंदन में भारी बर्फ़बारी हुई और हमारा पूरा बगीचा बर्फ़ की मोटी चादर से ढक गया। माँ और मैंने एक बर्फ़ का पुतला बनाया। जाने-अनजाने, हमने उसे अपने अनुपस्थित स्वामी का प्रतीक बनाया: मैंने उसका नाम 'पिताजी' रखा, और उसके बड़े पेट, आँखों के लिए दो काले पत्थरों और सख्त भौंहों के लिए दो तिरछी टहनियों के साथ, वह हूबहू मेरे पिताजी जैसा दिखता था। हमने उसे पिताजी के दस्ताने, टोपी और छाता पहनाकर इस भ्रम को पूरा किया। फिर हम शरारती बच्चों की तरह खिलखिलाते हुए उस पर बर्फ़ के गोले फेंकने लगे।

उस रात बहुत तेज़ बर्फ़ीला तूफ़ान आया था। मेरी माँ सोने चली गईं और मैंने भी सोने का नाटक किया, फिर मैं चुपके से बगीचे में चली गई और गिरती बर्फ़ के नीचे खड़ी

हो गई। मैंने अपने हाथ फैलाकर बर्फ़ के टुकड़ों को पकड़ना शुरू किया और उन्हें अपनी उंगलियों पर गायब होते हुए देखा। यह एक सुखद और निराशाजनक एहसास था और इसमें एक ऐसी सच्चाई छिपी थी जिसे मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकती थी; मेरे शब्द इतने सीमित थे, मेरे शब्द इतने कमज़ोर थे कि उसे पकड़ नहीं सकते थे। गायब होते बर्फ़ के टुकड़ों को पकड़ना किसी तरह खुशी को पकड़ने जैसा था: एक ऐसा अधिकार जो पल भर में खो जाता है। इसने मुझे याद दिलाया कि इस घर के बाहर भी एक दुनिया है: विशालता और अकल्पनीय सुंदरता की दुनिया; एक ऐसी दुनिया जो फिलहाल मेरी पहुँच से बाहर है। यह याद मुझे सालों से बार-बार आती रही है। ऐसा लगता है मानो उस थोड़े से पल की आज़ादी के चारों ओर छाए दुख ने उसे और भी तेज़ कर दिया हो: अँधेरे से घिरी एक छोटी सी रोशनी।

मुझे एहसास हुआ कि जीवित रहने की मेरी एकमात्र उम्मीद पीछे हटना ही थी—शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से। मुझे दूर जाना था, बहुत दूर। तभी मैं सुरक्षित रह सकती थी। और आखिरकार, अठारह साल की उम्र में, मुझे विश्वविद्यालय में दाखिला पाने के लिए आवश्यक अंक मिल गए। मैंने सरे में स्थित उस अर्ध-पृथक जेल को छोड़ दिया—और मुझे लगा कि मैं आज़ाद हो गई हूँ।

मैं गलत था।

तब मुझे इसका एहसास नहीं था, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी—मैंने अपने पिता को अपने भीतर समा लिया था, उन्हें अपने अवचेतन में गहराई से दफना दिया था। मैं चाहे जितनी दूर भाग जाऊं, वो मेरे साथ हर जगह जाते थे। क्रोध की एक भयानक, निर्दयी लहर मेरा पीछा कर रही थी, सबकी आवाज़ उन्हीं की थी—जो चीख-चीख कर कह रही थी कि मैं बेकार, शर्मनाक और असफल हूं।

विश्वविद्यालय में मेरे पहले सत्र के दौरान, उस पहली ठंडी सर्दियों में, आवाज़ें इतनी भयानक, इतनी भयावह हो गईं कि उन्होंने मुझे वश में कर लिया। डर से मैं हिल भी नहीं पा रहा था।

बाहर निकलना, लोगों से मिलना-जुलना, दोस्त बनाना नामुमकिन था। ऐसा लग रहा था मानो मैं कभी घर से निकला ही न होऊं। सब कुछ निराशाजनक था। मैं हार गया था, फंस गया था। कोने में धकेल दिया गया था।

कोई रास्ता नहीं।

केवल एक ही समाधान सामने आया।
मैं एक केमिस्ट की दुकान से दूसरी केमिस्ट की दुकान पर जाकर पैरासिटामोल के पैकेट खरीदता रहा। शक से बचने के लिए मैं एक बार में कुछ ही पैकेट खरीदता था —लेकिन मुझे चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। किसी ने भी मेरी तरफ ध्यान नहीं दिया; मैं उतना ही अदृश्य था जितना मुझे महसूस हो रहा था।
मेरे कमरे में ठंड थी, और मेरी उंगलियां सुन्न और बेजान थीं, फिर भी मैंने पैकेट फाड़े। सारी गोलियां निगलने में मुझे बहुत मशक्कत करनी पड़ी। लेकिन मैंने एक-एक करके सारी कड़वी गोलियां निगल लीं। फिर मैं अपने असुविधाजनक, संकरे बिस्तर पर लेट गई। मैंने आंखें बंद कर लीं और मौत का इंतजार करने लगी।
लेकिन मृत्यु नहीं आई।
इसके बजाय, एक असहनीय, दिल दहला देने वाला दर्द मेरे भीतर से फूट पड़ा। मैं दर्द से कराह उठा और उल्टी करने लगा, पित्त और अधपची गोलियां मेरे पूरे शरीर पर फैल गईं। मैं अंधेरे में पड़ा रहा, पेट में आग सी जल रही थी, मानो अनंत काल तक।
और फिर, धीरे-धीरे, अंधेरे में, मुझे कुछ एहसास हुआ।
मैं मरना नहीं चाहता था। अभी नहीं; तब तक नहीं जब तक मैंने जीवन जीना ही न सीखा हो।
इससे मुझे एक तरह की उम्मीद मिली, भले ही वह अस्पष्ट और अनिश्चित थी। इसने मुझे कम से कम यह स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया कि मैं यह अकेले नहीं कर सकता: मुझे मदद की ज़रूरत थी।
मुझे वो मिल ही गई—रूथ के रूप में, एक मनोचिकित्सक, जिनसे मुझे विश्वविद्यालय की परामर्श सेवा के माध्यम से संपर्क कराया गया था। रूथ के बाल सफेद थे, वह थोड़ी गोल-मटोल थीं और उनमें दादी माँ जैसी मासूमियत थी। उनकी मुस्कान में सहानुभूति झलकती थी—एक ऐसी मुस्कान जिस पर मैं विश्वास करना चाहती थी। उन्होंने पहले तो ज्यादा कुछ नहीं कहा। बस मेरी बातें सुनती रहीं। मैंने अपने बचपन, अपने घर और अपने माता-पिता के बारे में बताया।
जैसे-जैसे मैं बोलती गई, मुझे एहसास हुआ कि चाहे मैं कितनी भी पीड़ादायक बातें बताऊं, मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। मैं अपनी भावनाओं से बिल्कुल अलग

हो गई थी, जैसे कलाई से हाथ कट गया हो। मैंने दर्दनाक यादों और आत्महत्या के विचारों के बारे में बात की।
लेकिन उन्हें महसूस नहीं कर पा रहे थे।
मैं कभी-कभार रूथ के चेहरे की ओर देखता था। मुझे आश्चर्य होता था कि सुनते समय उसकी आँखों में आँसू भर आते थे। यह बात समझना शायद मुश्किल लगे, लेकिन वे आँसू उसके नहीं थे।
वे मेरे थे।
उस समय मुझे समझ नहीं आया। लेकिन थेरेपी इसी तरह काम करती है। मरीज़ अपनी असहनीय भावनाओं को अपने थेरेपिस्ट के हवाले कर देता है; और थेरेपिस्ट उन सभी भावनाओं को अपने अंदर समाहित कर लेती है जिन्हें महसूस करने से मरीज़ डरता है, और वह उनके लिए उन भावनाओं को महसूस करती है। फिर, बहुत धीरे-धीरे, वह उनकी भावनाओं को वापस उन्हीं तक पहुँचाती है। जैसे रूथ ने मेरी भावनाओं को मुझे वापस पहुँचाया।
हम दोनों, रूथ, कई सालों तक एक-दूसरे से मिलते रहे। वह मेरे जीवन की एकमात्र स्थिर कड़ी बनी रही। उसके ज़रिए, मैंने एक इंसान के साथ एक नए तरह का रिश्ता विकसित किया: आपसी सम्मान, ईमानदारी और दया पर आधारित रिश्ता, न कि आरोप-प्रत्यारोप, क्रोध और हिंसा पर। धीरे-धीरे मुझे अपने बारे में अलग महसूस होने लगा—कम खालीपन, ज़्यादा भावनाओं को महसूस करने की क्षमता, कम डर। मेरे अंदर की नफ़रत भरी आवाज़ें पूरी तरह से कभी नहीं छूटीं—लेकिन अब मेरे पास रूथ की आवाज़ थी जो उसका मुकाबला करती थी, और मैं उस पर कम ध्यान देने लगा। नतीजतन, मेरे दिमाग में उठने वाली आवाज़ें शांत होती गईं और कभी-कभी गायब भी हो जाती थीं। मुझे शांति महसूस होती थी—कभी-कभी तो खुशी भी।
मनोचिकित्सा ने सचमुच मेरी जान बचाई। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने मेरे जीवन की गुणवत्ता को पूरी तरह बदल दिया। बातचीत के माध्यम से की गई यह चिकित्सा मेरे व्यक्तित्व का अभिन्न अंग थी—गहरे अर्थों में, इसने मुझे परिभाषित किया।
मुझे पता था कि यही मेरा पेशा है।

विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद, मैंने लंदन में मनोचिकित्सक का प्रशिक्षण लिया। अपने प्रशिक्षण के दौरान, मैं रूथ से मिलती रही। वह हमेशा मेरा साथ देती रहीं और मुझे प्रोत्साहित करती रहीं, हालांकि उन्होंने मुझे अपने चुने हुए रास्ते के बारे में यथार्थवादी रहने की चेतावनी भी दी: "यह कोई आसान काम नहीं है," उन्होंने कहा था। और वह सही थीं।

मरीजों के साथ काम करना, खुद को गंदा करना—यह बिल्कुल भी आरामदायक साबित नहीं हुआ।

मुझे एक सुरक्षित मनोरोग इकाई में अपनी पहली यात्रा याद है। मेरे पहुँचने के कुछ ही मिनटों के भीतर, एक मरीज़ ने अपनी पैंट नीचे खींची, उकड़ू बैठा और मेरे सामने शौच कर दिया। बदबूदार मल का ढेर। और उसके बाद की घटनाएँ, जो उतनी भयावह नहीं थीं, लेकिन उतनी ही नाटकीय थीं—अस्त-व्यस्त आत्महत्या के प्रयास, आत्म-हानि के प्रयास, अनियंत्रित उन्माद और शोक—ये सब मेरे लिए असहनीय थे। लेकिन हर बार, किसी न किसी तरह, मैंने अपने भीतर छिपी सहनशक्ति का सहारा लिया।

यह आसान हो गया।

यह अजीब बात है कि कोई व्यक्ति मानसिक स्वास्थ्य इकाई की इस विचित्र नई दुनिया में कितनी जल्दी ढल जाता है। आप धीरे-धीरे पागलपन के साथ सहज होने लगते हैं—और न केवल दूसरों के पागलपन के साथ, बल्कि अपने स्वयं के पागलपन के साथ भी। मेरा मानना है कि हम सब पागल हैं, बस अलग-अलग तरीकों से।

इसीलिए—और इसी तरह—मैं एलिसिया बेरेंसन से जुड़ाव महसूस करती थी। मैं उन भाग्यशाली लोगों में से एक थी। कम उम्र में सफल चिकित्सा उपचार की बदौलत, मैं मानसिक अंधकार के कगार से वापस आ सकी। हालाँकि, मेरे मन में एक और संभावना हमेशा बनी रही: मैं पागल हो सकती थी—और एलिसिया की तरह किसी संस्था में बंद होकर अपने दिन बिता सकती थी। ईश्वर की कृपा से ही मैं बच गई...

जब इंदिरा शर्मा ने मुझसे पूछा कि मैं मनोचिकित्सक क्यों बनी, तो मैं उन्हें इनमें से कुछ भी नहीं बता सकी। आखिर यह एक साक्षात्कार पैनल था—और कम से कम मुझे यह तो पता था कि इस खेल को कैसे खेलना है।

मैंने कहा, "अंत में, मेरा मानना है कि प्रशिक्षण आपको मनोचिकित्सक बनाता है। आपके शुरुआती इरादे चाहे जो भी हों।"
इंदिरा ने समझदारी से सिर हिलाया। "जी हां, बिल्कुल सही। एकदम सटीक।"
इंटरव्यू अच्छा रहा। इंदिरा ने कहा, ब्रॉडमूर में काम करने के मेरे अनुभव ने मुझे फायदा पहुंचाया—यह साबित हुआ कि मैं अत्यधिक मानसिक तनाव से निपट सकती हूं। मुझे तुरंत नौकरी की पेशकश की गई और मैंने उसे स्वीकार कर लिया।
एक महीने बाद, मैं ग्रोव की ओर जा रहा था।
चौथा अध्याय
जनवरी की बर्फीली हवा के झोंकों का पीछा करते हुए मैं उस बाग में पहुँचा। सड़क के किनारे नंगे पेड़ कंकालों की तरह खड़े थे। आसमान सफेद था, बर्फ से ढका हुआ था जो अभी गिरी नहीं थी।
मैं प्रवेश द्वार के बाहर खड़ा था और अपनी जेब में रखी सिगरेट निकालने के लिए हाथ बढ़ाया।
मैंने एक हफ्ते से ज़्यादा समय से सिगरेट नहीं पी थी—मैंने खुद से वादा किया था कि इस बार मैं इसे हमेशा के लिए छोड़ दूँगा। फिर भी, मैं फिर से हार मान रहा था। मैंने एक सिगरेट जलाई और खुद पर गुस्सा आ रहा था। मनोचिकित्सक धूम्रपान को एक अनसुलझी लत मानते हैं—एक ऐसी लत जिससे किसी भी अच्छे चिकित्सक को निपटना चाहिए और उस पर काबू पाना चाहिए। मैं सिगरेट की बदबू से लथपथ होकर अंदर नहीं आना चाहता था, इसलिए मैंने दो पुदीने की गोलियां मुंह में डालीं और सिगरेट पीते हुए उन्हें चबाता रहा, एक पैर से दूसरे पैर पर उछलता रहा।
मैं कांप रहा था—लेकिन सच कहूँ तो, ठंड से ज़्यादा घबराहट थी। मुझे संदेह हो रहा था। ब्रॉडमूर में मेरे सलाहकार ने साफ-साफ कह दिया था कि मैं गलती कर रहा हूँ। उन्होंने इशारा किया कि मेरे जाने से मेरा एक उज्ज्वल भविष्य बर्बाद हो रहा है, और वे ग्रोव और खासकर प्रोफेसर डायोमेडेस के बारे में संदेह जता रहे थे।
“एक अपरंपरागत व्यक्ति। समूह संबंधों पर बहुत काम करते हैं—कुछ समय तक फाउल्क्स के साथ काम किया। अस्सी के दशक में हर्टफोर्डशायर में एक तरह का वैकल्पिक चिकित्सीय समुदाय चलाया। आर्थिक रूप से व्यवहार्य नहीं हैं वे चिकित्सा मॉडल, खासकर आज के समय में...” वह एक पल के लिए हिचकिचाए, फिर धीमी

आवाज़ में बोले, “मैं तुम्हें डराना नहीं चाहता, थियो। लेकिन मैंने सुना है कि वह जगह बंद होने वाली है। छह महीने में तुम्हारी नौकरी जा सकती है... क्या तुम वाकई इस पर पुनर्विचार नहीं करोगे?”
मैं हिचकिचाया, लेकिन केवल शिष्टाचारवश। "बिल्कुल।"
उन्होंने सिर हिलाया। “मुझे तो यह करियर खत्म करने जैसा लगता है। लेकिन अगर आपने अपना फैसला कर लिया है...”
मैंने उसे एलिसिया बेरेंसन के बारे में, उसके साथ काम करने की अपनी इच्छा के बारे में नहीं बताया। मैं उसे ऐसे शब्दों में समझा सकती थी जो शायद उसे समझ आ जाते: उसके साथ काम करने से शायद कोई किताब या प्रकाशन हो सके। लेकिन मुझे पता था कि इसका कोई फायदा नहीं; वह फिर भी यही कहता कि मैं गलती कर रही हूँ। शायद वह सही था। मुझे जल्द ही पता चल जाएगा।
मैंने अपनी सिगरेट बुझाई, अपनी घबराहट को दूर भगाया और अंदर चला गया।
द ग्रोव, एडगवेयर अस्पताल के सबसे पुराने हिस्से में स्थित था। मूल लाल ईंटों से बनी विक्टोरियन इमारत लंबे समय से बड़ी और आम तौर पर बदसूरत इमारतों से घिरी हुई थी और उनके सामने छोटी पड़ गई थी। द ग्रोव इस परिसर के बिल्कुल बीचोंबीच था। इसके खतरनाक निवासियों का एकमात्र संकेत बाड़ पर लगे सुरक्षा कैमरों की कतार थी, जो शिकारी पक्षियों की तरह घात लगाए बैठे थे। रिसेप्शन में, इसे दोस्ताना दिखाने के लिए हर संभव प्रयास किया गया था—बड़े नीले सोफे, दीवारों पर चिपकाई गई मरीजों की भद्दी, बचकानी कलाकृतियाँ। यह मुझे किसी सुरक्षित मनोरोग इकाई से ज़्यादा एक बालवाड़ी जैसा लगता था।
मेरे बगल में एक लंबा आदमी प्रकट हुआ। उसने मेरी ओर देखकर मुस्कुराया और अपना हाथ आगे बढ़ाया।
उन्होंने अपना परिचय यूरी, मुख्य मनोरोग नर्स के रूप में दिया। “ग्रोव में आपका स्वागत है। मुझे खेद है कि स्वागत करने के लिए कोई खास टीम नहीं है। बस मैं ही हूँ।”
यूरी दिखने में सुंदर, सुगठित और लगभग तीस वर्ष का था। उसके बाल काले थे और कॉलर के ऊपर गर्दन पर एक जनजातीय टैटू बना हुआ था। उससे तंबाकू और बहुत ज़्यादा मीठे आफ्टरशेव की महक आ रही थी।

हालांकि उनके लहजे में अंग्रेजी का लहजा थोड़ा अलग था, लेकिन उनकी अंग्रेजी एकदम सही थी। उन्होंने कहा, "मैं सात साल पहले लातविया से यहाँ आया था और जब मैं आया था तो मुझे अंग्रेजी का एक शब्द भी नहीं आता था। लेकिन एक साल के अंदर ही मैं धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलने लगा।"
"यह बहुत ही प्रभावशाली है।"
“नहीं, ऐसा नहीं है। अंग्रेजी एक आसान भाषा है। आपको लातवियाई भाषा सीखनी चाहिए।”
वह हँसा और अपनी कमर में लटकी चाबियों की खनकती हुई गुच्छी को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया।
उन्होंने कागजों का एक सेट निकाला और मुझे थमा दिया। “आपको ये अलग-अलग कमरों के लिए चाहिए होंगे। और वार्डों के लिए कुछ कोड हैं जिन्हें आपको जानना होगा।”
“यह तो बहुत ज्यादा है। ब्रॉडमूर में मेरे पास इससे भी कम चाबियां थीं।”
“हां, ठीक है। स्टेफ़नी के हमारे साथ जुड़ने के बाद से हमने हाल ही में सुरक्षा व्यवस्था काफी बढ़ा दी है।”
“स्टेफ़नी कौन है?”
यूरी ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन रिसेप्शन डेस्क के पीछे स्थित कार्यालय से बाहर निकल रही महिला को देखकर उसने सिर हिलाकर अभिवादन किया।
वह कैरेबियन मूल की थीं, उनकी उम्र लगभग चालीस के आसपास थी और उनके बाल बॉब कट में थे। "मैं स्टेफ़नी क्लार्क हूं। द ग्रोव की मैनेजर।"
स्टेफ़नी ने मुझे बनावटी मुस्कान दी। जब मैंने उससे हाथ मिलाया, तो मैंने देखा कि उसकी पकड़ यूरी की तुलना में अधिक दृढ़ और कसी हुई थी, और कुछ हद तक कम स्वागतपूर्ण थी।
“इस यूनिट के प्रबंधक के रूप में, सुरक्षा मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता है। मरीजों और कर्मचारियों दोनों की सुरक्षा। यदि आप सुरक्षित नहीं हैं, तो आपके मरीज भी सुरक्षित नहीं हैं।”
उसने मुझे एक छोटा सा उपकरण दिया—एक व्यक्तिगत हमले का अलार्म। “इसे हमेशा अपने साथ रखें। इसे अपने ऑफिस में यूं ही न छोड़ें।”

मैंने 'जी मैडम' कहने की इच्छा को दबा लिया। अगर मुझे आराम से जीना था तो बेहतर यही था कि मैं उनसे अच्छे संबंध बनाए रखूँ। पहले भी मैंने दबंग वार्ड मैनेजरों के साथ यही रणनीति अपनाई थी—टकराव से बचना और उनकी नजरों से दूर रहना।
“आपसे मिलकर अच्छा लगा, स्टेफ़नी।” मैंने मुस्कुराते हुए कहा।
स्टेफ़नी ने सिर हिलाया लेकिन मुस्कुराई नहीं। "यूरी आपको आपके कार्यालय तक ले जाएगी।" वह मुड़ी और बिना दूसरी नज़र डाले चली गई।
“मेरे पीछे आओ,” यूरी ने कहा।
मैं उसके साथ वार्ड के प्रवेश द्वार तक गया—जो कि एक बड़ा, मजबूत स्टील का दरवाजा था।
इसके बगल में एक मेटल डिटेक्टर लगा हुआ था, जिसकी निगरानी एक सुरक्षा गार्ड कर रहा था।
“मुझे यकीन है कि आपको नियम पता हैं,” यूरी ने कहा। “कोई नुकीली वस्तु नहीं—कोई भी ऐसी चीज नहीं जिसका इस्तेमाल हथियार के रूप में किया जा सके।”
"लाइटर मना है," सुरक्षा गार्ड ने मेरी तलाशी लेते हुए कहा और मेरी जेब से लाइटर निकालते हुए मुझे दोषी नजरों से देखा।
"माफ़ कीजिए। मैं भूल गया था कि मेरे पास यह है।"
यूरी ने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया। "मैं तुम्हें तुम्हारे कार्यालय तक ले चलूँगा।"
सभी लोग सामुदायिक बैठक में हैं, इसलिए यहाँ काफी शांति है।
"क्या मैं उनके साथ शामिल हो सकता हूँ?"
“कम्युनिटी में?” यूरी हैरान होकर बोली। “क्या तुम पहले यहाँ बसना नहीं चाहती?”
मैं बाद में आकर बस जाऊंगा। अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो?
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "जो चाहो। इधर से।"
वह मुझे आपस में जुड़े गलियारों से होते हुए ले गया, जिनके बीच-बीच में बंद दरवाजे लगे हुए थे।
—ताले में चाबियों के घूमने, कुंडी लगने और दरवाज़े पटकने की एक लय। हमने धीमी गति से काम किया।

प्रगति।
यह स्पष्ट था कि पिछले कई वर्षों से इमारत के रखरखाव पर ज्यादा खर्च नहीं किया गया था: दीवारों से पेंट उखड़ रहा था, और गलियारों में फफूंदी और सड़न की हल्की सी दुर्गंध फैली हुई थी।
यूरी एक बंद दरवाजे के बाहर रुका और सिर हिलाया। "वे अंदर हैं। अंदर जाओ।"
ठीक है, धन्यवाद।
मैंने हिचकिचाते हुए खुद को तैयार किया। फिर मैंने दरवाजा खोला और अंदर चला गया।
अध्याय पाँच
सामुदायिक सभा एक लंबे कमरे में आयोजित की गई थी, जिसकी खिड़कियों पर लंबी जाली लगी थी और उनसे लाल ईंटों की दीवार दिखाई देती थी। हवा में कॉफी की खुशबू फैली हुई थी, जिसमें यूरी के आफ्टरशेव की हल्की महक भी मिली हुई थी। लगभग तीस लोग एक घेरे में बैठे थे। अधिकांश लोग चाय या कॉफी के कागज़ के कप पकड़े हुए थे, जम्हाई ले रहे थे और जागने की पूरी कोशिश कर रहे थे। कुछ लोग अपनी कॉफी पी चुके थे और खाली कपों से खेल रहे थे, उन्हें मसल रहे थे, चपटा कर रहे थे या फाड़ रहे थे।
सामुदायिक बैठक दिन में एक या दो बार होती थी; यह एक प्रशासनिक बैठक और सामूहिक चिकित्सा सत्र के बीच की कोई चीज़ होती थी। यूनिट के संचालन या रोगियों की देखभाल से संबंधित विषयों पर चर्चा के लिए एजेंडा में चर्चा रखी जाती थी। प्रोफ़ेसर डायोमेडेस अक्सर कहते थे कि यह रोगियों को उनके उपचार में शामिल करने और उन्हें अपनी भलाई की ज़िम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करने का एक प्रयास था, हालाँकि यह प्रयास हमेशा सफल नहीं होता था। सामूहिक चिकित्सा में डायोमेडेस की पृष्ठभूमि के कारण उन्हें हर प्रकार की बैठकों से लगाव था और वे यथासंभव सामूहिक कार्य को प्रोत्साहित करते थे। आप कह सकते हैं कि वे श्रोताओं के बीच सबसे अधिक प्रसन्न रहते थे। मुझे लगा कि उनमें एक रंगमंच के आयोजक की हल्की सी झलक थी, जब वे मेरा अभिवादन करने के लिए खड़े हुए, स्वागत में हाथ फैलाए और मुझे अपने पास बुलाया।
“थियो। तुम यहीं हो। हमारे साथ जुड़ो, हमारे साथ जुड़ो।”

उनकी बोली में हल्का सा ग्रीक लहजा था, जो मुश्किल से ही सुनाई देता था—तीस साल से ज़्यादा इंग्लैंड में रहने के कारण उनका लहजा लगभग खत्म हो चुका था। वे आकर्षक थे और साठ साल के होने के बावजूद काफी जवान दिखते थे—उनका व्यवहार युवा और चंचल था, किसी मनोचिकित्सक से ज़्यादा किसी बेपरवाह चाचा जैसा। इसका मतलब यह नहीं कि वे अपने मरीज़ों के प्रति समर्पित नहीं थे—वे सुबह सफाईकर्मियों से पहले आ जाते थे और रात की टीम के दिन के कर्मचारियों से कार्यभार संभालने के बाद भी काफी देर तक रुकते थे, कभी-कभी तो रात सोफे पर ही बिता देते थे।

उसका कार्यालय। दो बार तलाकशुदा, डायोमेडेस अक्सर कहते थे कि उनका तीसरा और सबसे सफल विवाह ग्रोव से हुआ था।

“यहाँ बैठो।” उन्होंने अपने बगल में पड़ी एक खाली कुर्सी की ओर इशारा किया। “बैठो, बैठो, बैठो।”

मैंने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था।

डायोमेडेस ने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से मेरा परिचय कराया। “आइए, मैं आपको हमारे नए मनोचिकित्सक, थियो फैबर से मिलवाता हूँ। मुझे आशा है कि आप थियो का हमारे छोटे से परिवार में स्वागत करने में मेरा साथ देंगे—”

जब डायोमेडेस बोल रहा था, मैंने एलिसिया को ढूंढने के लिए चारों ओर नजर डाली। लेकिन वह कहीं नज़र नहीं आई। प्रोफ़ेसर डायोमेडेस को छोड़कर, जो सूट और टाई में एकदम सलीके से सजे हुए थे, बाकी सभी लोग बाजूबंद या टी-शर्ट में थे। यह बताना मुश्किल था कि कौन मरीज़ था और कौन कर्मचारी।

कुछ चेहरे मुझे जाने-पहचाने लगे—जैसे कि क्रिश्चियन। मैं उसे ब्रॉडमूर में जानता था। रग्बी खेलने वाला मनोचिकित्सक, जिसकी नाक टूटी हुई थी और घनी दाढ़ी थी। दिखने में थोड़ा अटपटा लेकिन आकर्षक। मेरे आने के कुछ समय बाद ही वह ब्रॉडमूर छोड़कर चला गया था। मुझे क्रिश्चियन ज़्यादा पसंद नहीं था, लेकिन सच कहूँ तो मैं उसे अच्छी तरह से जानता भी नहीं था, क्योंकि हमने ज़्यादा समय तक साथ काम नहीं किया था।

मुझे इंटरव्यू से इंदिरा याद आ गई। उसने मेरी तरफ मुस्कुराया, और मैं आभारी थी, क्योंकि उसका चेहरा ही एकमात्र दोस्ताना चेहरा था। मरीज़ ज़्यादातर मुझे चिड़चिड़े

अविश्वास से घूर रहे थे। मैं उन्हें दोष नहीं दे सकती थी। उन पर जो अत्याचार हुए थे—शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, यौन—इसका मतलब था कि उन्हें मुझ पर भरोसा करने में बहुत लंबा समय लगेगा, शायद कभी नहीं। सभी मरीज़ महिलाएं थीं—और उनमें से अधिकांश के चेहरे पर झुर्रियां और निशान थे। उन्होंने कठिन जीवन जिया था, ऐसी भयावह घटनाओं से गुज़री थीं जिन्होंने उन्हें मानसिक बीमारी की अंधेरी दुनिया में धकेल दिया था; उनकी पीड़ा उनके चेहरों पर स्पष्ट रूप से अंकित थी, जिसे नज़रअंदाज़ करना असंभव था।

लेकिन एलिसिया बेरेंसन? वो कहाँ थी? मैंने फिर से चारों ओर देखा, लेकिन वो मुझे कहीं नहीं मिली। तभी मुझे एहसास हुआ—मैं उसे ही देख रहा था। एलिसिया मेरे ठीक सामने, घेरे के दूसरी तरफ बैठी थी।

मैंने उसे नहीं देखा था क्योंकि वह अदृश्य थी।

एलिसिया कुर्सी पर आगे की ओर झुकी हुई थी। स्पष्ट रूप से उसे बहुत अधिक बेहोशी की दवा दी गई थी। उसके हाथ में चाय से भरा एक कागज़ का कप था, और उसका कांपता हुआ हाथ लगातार चाय को फर्श पर गिरा रहा था। मैंने खुद को रोका...

मैं उसके पास जाकर उसका कप सीधा करने लगा। वह इतनी खोई हुई थी कि मुझे शक है कि अगर मैंने ऐसा किया भी होता तो उसे पता भी चलता।

मुझे उसकी इतनी बुरी हालत की उम्मीद नहीं थी। उसमें कभी की खूबसूरत स्त्री की कुछ झलकियाँ थीं: गहरी नीली आँखें; एकदम सुडौल चेहरा। लेकिन वह बहुत दुबली-पतली और मैली दिख रही थी। उसके लंबे लाल बाल उसके कंधों पर गंदे और उलझे हुए लटके हुए थे। उसके नाखून कुतरे हुए और टूटे हुए थे। उसकी दोनों कलाइयों पर धुंधले निशान दिखाई दे रहे थे—वही निशान जो मैंने एल्सेस्टिस के चित्र में हूबहू देखे थे। उसकी उंगलियाँ काँपना बंद नहीं कर रही थीं, निस्संदेह यह उन दवाओं के मिश्रण का दुष्प्रभाव था जिनका वह सेवन कर रही थी।

रिस्पेरिडोन और अन्य शक्तिशाली एंटीसाइकोटिक्स। और उसके खुले मुंह के चारों ओर चमकदार लार जमा हो रही थी, अनियंत्रित लार टपकना दवा का एक और दुर्भाग्यपूर्ण दुष्प्रभाव था।

मैंने देखा कि डायोमेडेस मुझे देख रहा है। मैंने एलिसिया से अपना ध्यान हटाकर उस पर केंद्रित किया।
“मुझे यकीन है कि आप मुझसे बेहतर तरीके से अपना परिचय दे सकते हैं, थियो,” उन्होंने कहा।
क्या आप कुछ शब्द नहीं कहेंगे?
“धन्यवाद।” मैंने सिर हिलाया। “मुझे कुछ कहना नहीं है। बस इतना ही कि मैं यहाँ आकर बहुत खुश हूँ। उत्साहित, घबराई हुई, आशावान। और मैं सभी से, खासकर मरीजों से, मिलने के लिए उत्सुक हूँ। मैं—”
अचानक ज़ोरदार धमाके की आवाज़ से मेरा ध्यान भंग हो गया, जैसे ही दरवाज़ा ज़ोर से खुला। पहले तो मुझे लगा कि मैं भ्रम में हूँ। एक विशालकाय महिला कमरे में घुस आई, उसके हाथों में लकड़ी के दो नुकीले डंडे थे, जिन्हें उसने अपने सिर के ऊपर उठाया और फिर भाले की तरह हमारी ओर फेंक दिया। एक मरीज़ ने अपनी आँखें ढँक लीं और चीख पड़ी।
मुझे लगा था कि भाले हमें भेद देंगे, लेकिन वे घेरे के बीचोंबीच ज़मीन पर ज़ोर से गिरे। फिर मैंने देखा कि वे भाले नहीं थे। वे तो पूल क्यू थे, जो दो टुकड़ों में टूट गए थे।
चालीस वर्ष की आयु की, गहरे बालों वाली एक विशालकाय मरीज़ ने चिल्लाते हुए कहा, "मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है। पूल क्यू एक हफ्ते से टूटा हुआ है और तुमने अभी तक इसे बदला नहीं है।"
“एलिफ़, ज़रा संभलकर बोलो,” डायोमेडेस ने कहा। “जब तक हम यह तय नहीं कर लेते कि तुम्हें इतने देर से समुदाय में शामिल होने देना उचित है या नहीं, तब तक मैं पूल क्यू के बारे में बात करने के लिए तैयार नहीं हूँ।” उसने शरारती अंदाज़ में अपना सिर घुमाया और मुझसे पूछा, “थियो, तुम्हारा क्या ख्याल है?”
मैंने पलकें झपकाईं और अपनी आवाज़ ढूंढने में एक पल का समय लिया। "मुझे लगता है कि समय की सीमाओं का सम्मान करना और कम्युनिटी के लिए समय पर पहुंचना महत्वपूर्ण है—"
"जैसे तुमने किया था, तुम्हारा मतलब है?" घेरे के दूसरी तरफ बैठे एक आदमी ने कहा।

मैंने मुड़कर देखा तो पता चला कि क्रिश्चियन बोल रहा था। वह अपनी ही बात पर हंस पड़ा।
मैंने जबरदस्ती मुस्कुराते हुए एलिफ की ओर मुड़कर कहा, "वह बिल्कुल सही कह रहा है, मैं भी आज सुबह देर से आई थी। तो शायद यह एक ऐसा सबक है जिसे हम दोनों मिलकर सीख सकते हैं।"
“तुम किस बारे में बात कर रहे हो?” एलिफ ने कहा। “तुम हो कौन भला?”
“एलिफ, अपनी भाषा पर ध्यान रखो,” डायोमेडेस ने कहा। “मुझे तुम्हें कुछ समय के लिए अलग रखने पर मजबूर मत करो। बैठ जाओ।”
एलिफ खड़ी रही। "और पूल क्यू का क्या हुआ?"
यह प्रश्न डायोमेडेस से पूछा गया था—और उसने मेरी ओर देखा, मेरे उत्तर की प्रतीक्षा करते हुए।
“एलिफ़, मैं समझ सकती हूँ कि तुम पूल क्यू को लेकर नाराज़ हो,” मैंने कहा। “मुझे लगता है कि जिसने भी इसे तोड़ा है, वह भी नाराज़ होगा। इससे यह सवाल उठता है कि इस तरह की संस्था में हम गुस्से से कैसे निपटें। क्यों न हम इसी मुद्दे पर थोड़ी देर बात करें? बैठ जाओगी क्या?”
एलिफ ने अपनी आँखें घुमाईं। लेकिन वह बैठ गई।
इंदिरा ने प्रसन्नतापूर्वक सिर हिलाया। इंदिरा और मैंने क्रोध के बारे में बात करना शुरू किया, और मरीजों को उनके क्रोध की भावनाओं पर चर्चा में शामिल करने की कोशिश की। मुझे लगा कि हम दोनों ने मिलकर अच्छा काम किया। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे डायोमेडेस मुझे देख रहे हों और मेरे प्रदर्शन का मूल्यांकन कर रहे हों। वे संतुष्ट लग रहे थे।
मैंने एलिसिया की तरफ देखा। और मुझे आश्चर्य हुआ कि वह मेरी तरफ देख रही थी—या कम से कम मेरी दिशा में देख रही थी। उसके चेहरे पर धुंधलापन था—जैसे मानो वह अपनी आँखों को केंद्रित करने और देखने के लिए संघर्ष कर रही हो।
अगर आप मुझसे कहते कि यह टूटा हुआ शरीर कभी प्रतिभाशाली एलिसिया बेरेन्सन हुआ करता था, जिसे जानने वाले लोग चकाचौंध भरी, आकर्षक और जीवन से भरपूर बताते थे—तो मैं आपकी बात पर यकीन ही नहीं करती। मुझे उसी क्षण पता चल गया कि ग्रोव आने का मेरा फैसला बिल्कुल सही था। मेरे सारे संदेह दूर हो गए। मैंने ठान

लिया कि जब तक एलिसिया मेरी मरीज़ नहीं बन जाती, मैं हर हाल में हार नहीं मानूंगी।
समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं था: एलिसिया खो गई थी। वह लापता थी।
और मेरा इरादा उसे ढूंढने का था।
अध्याय छह
प्रोफेसर डायोमेडेस का कार्यालय अस्पताल के सबसे पुराने और जर्जर हिस्से में था। कोनों में जाले लगे हुए थे, और गलियारे की कुछ ही बत्तियाँ जल रही थीं। मैंने दरवाजे पर दस्तक दी, और कुछ क्षण बाद मुझे अंदर से उनकी आवाज सुनाई दी।
"अंदर आएं।"
मैंने हैंडल घुमाया और दरवाजा चरमराते हुए खुल गया। कमरे के अंदर की गंध ने मुझे तुरंत चौंका दिया। यह अस्पताल के बाकी हिस्सों से बिल्कुल अलग गंध थी। यह एंटीसेप्टिक या ब्लीच जैसी गंध नहीं थी; बल्कि अजीब तरह से, यह किसी ऑर्केस्ट्रा पिट जैसी गंध थी। इसमें लकड़ी, तार, धनुष, पॉलिश और मोम की गंध थी।
मेरी आँखों को अँधेरे में अभ्यस्त होने में कुछ पल लगे, फिर मेरी नज़र दीवार के सहारे रखे पियानो पर पड़ी, जो अस्पताल में एक अजीब सी वस्तु लग रही थी। लगभग बीस धातु के संगीत स्टैंड छाया में चमक रहे थे, और एक मेज पर संगीत की शीटों का ढेर लगा था, मानो आसमान को छूता हुआ कागज़ का एक अस्थिर टावर हो। एक और मेज पर वायलिन, उसके बगल में ओबो और बांसुरी रखी थी। और उसके पास ही वीणा थी—एक विशाल वाद्य यंत्र, सुंदर लकड़ी के फ्रेम और तारों के गुच्छे से सजा हुआ।
मैं यह सब देखकर अवाक रह गया।
डायोमेडेस हँस पड़ा। "आप यंत्रों के बारे में सोच रहे हैं?" वह अपनी मेज के पीछे बैठ गया और खिलखिलाकर हँसने लगा।
“क्या ये आपके हैं?”
“हाँ, बिल्कुल। संगीत मेरा शौक है। नहीं, मैं झूठ बोल रहा हूँ—यह मेरा जुनून है।” उन्होंने नाटकीय अंदाज़ में अपनी उंगली हवा में उठाई। प्रोफेसर के बोलने का अंदाज़ बहुत ही जीवंत था, वे अपनी बात को ज़ोर देने के लिए तरह-तरह के हाव-भाव का इस्तेमाल करते थे—जैसे कि वे किसी अदृश्य ऑर्केस्ट्रा का संचालन कर रहे हों।

“मैं एक अनौपचारिक संगीत समूह चलाता हूँ, जिसमें कोई भी शामिल हो सकता है—चाहे कर्मचारी हों या मरीज़। मुझे संगीत एक बहुत ही प्रभावी चिकित्सीय साधन लगता है।”
उन्होंने रुककर मधुर, संगीतमय स्वर में कहा, “‘संगीत में एक क्रूर हृदय को शांत करने का जादू होता है।’ क्या आप सहमत हैं?”
मुझे पूरा यकीन है कि आप सही हैं।
“हम्म।” डायोमेडेस ने एक पल के लिए मेरी ओर देखा। “क्या तुम बजाते हो?”
"क्या खेलें?"
“कुछ भी। एक त्रिभुज से शुरुआत हो सकती है।”
मैंने सिर हिलाया। “मैं संगीत में बहुत माहिर नहीं हूँ। मैंने बचपन में स्कूल में थोड़ा-बहुत रिकॉर्डर बजाया था। बस इतना ही।”
“तो क्या आप संगीत पढ़ सकते हैं? यह तो अच्छी बात है। बढ़िया। कोई भी वाद्य यंत्र चुन लीजिए। मैं आपको सिखा दूंगा।”
मैंने मुस्कुराते हुए फिर से सिर हिलाया। "मुझे डर है कि मुझमें उतना धैर्य नहीं है।"
“नहीं? खैर, मनोचिकित्सक के रूप में आपको धैर्य जैसे गुण को विकसित करना चाहिए। आपको पता है, अपनी जवानी में मैं इस दुविधा में था कि संगीतकार बनूँ, पुजारी बनूँ या डॉक्टर बनूँ।” डायोमेडेस हँसे। “और अब मैं तीनों ही हूँ।”
मुझे लगता है कि यह सच है।
“तुम्हें पता है”—बिना रुके उसने विषय बदल दिया—“तुम्हारे इंटरव्यू में निर्णायक आवाज़ मेरी थी। मानो, मैंने ही तुम्हारा पक्ष लिया था। तुम्हें पता है क्यों? मैं बताता हूँ—मुझे तुममें कुछ खास दिखा, थियो। तुम मुझे अपने जैसे लगते हो... कौन जाने? कुछ सालों में, शायद तुम इस जगह को संभाल रहे होगे।” उसने वाक्य को कुछ देर के लिए अधूरा छोड़ दिया, फिर आह भरी। “अगर तब तक यह जगह यहीं रही तो।”
“आपको लगता है कि ऐसा नहीं होगा?”
“कौन जाने? मरीज़ों की संख्या कम है, कर्मचारियों की संख्या ज़्यादा है। हम ट्रस्ट के साथ मिलकर काम कर रहे हैं ताकि कोई अधिक ‘आर्थिक रूप से व्यवहार्य’ मॉडल मिल सके। इसका मतलब है कि हम पर लगातार नज़र रखी जा रही है, हमारा

मूल्यांकन किया जा रहा है—हमारी जासूसी की जा रही है। ऐसे हालात में हम चिकित्सीय कार्य कैसे कर सकते हैं?"
आप शायद यही पूछेंगे। जैसा कि विनिकॉट ने कहा था, जलती हुई इमारत में चिकित्सा का अभ्यास नहीं किया जा सकता। डायोमेडेस ने अपना सिर हिलाया और अचानक अपनी उम्र के अनुरूप दिखने लगे।
थका हुआ और उदास। उसने अपनी आवाज़ धीमी कर ली और कानाफूसी में बोला, "मुझे लगता है कि मैनेजर स्टेफ़नी क्लार्क उनके साथ मिली हुई है।"
आखिरकार, ट्रस्ट ही तो उसकी सैलरी देता है। उसे देखिए, आपको मेरी बात समझ आ जाएगी।
मुझे लगा कि डायोमेडेस थोड़ा संशय में था, लेकिन शायद यह स्वाभाविक था। मैं कुछ गलत नहीं कहना चाहता था, इसलिए मैं चुप रहा।
कुछ क्षण के लिए कूटनीतिक रूप से चुप रहे। और फिर—
मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ। एलिसिया के बारे में।
"एलिसिया बेरेंसन?" डायोमेडेस ने मुझे अजीब नज़र से देखा। "उसके बारे में क्या?"
मुझे यह जानने की उत्सुकता है कि उसके साथ किस तरह का चिकित्सीय कार्य किया जा रहा है। क्या वह व्यक्तिगत चिकित्सा ले रही है?
"नहीं।"
"क्या वहाँ एक कारण है?"
"इसे आजमाया गया था—और फिर छोड़ दिया गया।"
"ऐसा क्यों हुआ? उसे किसने देखा? इंदिरा ने?"
"नहीं।" डायोमेडेस ने सिर हिलाया। "दरअसल, मैंने खुद एलिसिया को देखा था।"
"मैं समझ गया। क्या हुआ?"
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "उसने मेरे दफ्तर में आने से इनकार कर दिया, इसलिए मैं उससे उसके कमरे में मिलने गया। मुलाकातों के दौरान, वह बस अपने बिस्तर पर बैठी खिड़की से बाहर देखती रही। ज़ाहिर है, उसने बोलने से इनकार कर दिया। उसने मेरी तरफ देखने से भी इनकार कर दिया।" उसने झुंझलाहट में अपने हाथ ऊपर उठा लिए। "मैंने तय किया कि यह सब समय की बर्बादी थी।"
मैंने सिर हिलाया। "मुझे लगता है... खैर, मैं स्थानांतरण के बारे में सोच रहा हूँ..."

“जी?” डायोमेडेस ने उत्सुकता से मेरी ओर देखा। “आगे बोलो।”
“ऐसा संभव है, है ना, कि उसने आपको एक सत्तावादी व्यक्तित्व के रूप में अनुभव किया हो... शायद—संभवतः दंडात्मक? मुझे नहीं पता कि उसके अपने पिता के साथ संबंध कैसे थे, लेकिन...”
डायोमेडेस हल्की मुस्कान के साथ सुन रहा था, मानो उसे कोई चुटकुला सुनाया जा रहा हो और वह उसके अंत का इंतज़ार कर रहा हो। "लेकिन तुम्हें लगता है कि वह किसी छोटे व्यक्ति से आसानी से घुल-मिल पाएगी? मुझे अंदाज़ा लगाने दो... तुम्हारे जैसे किसी से? तुम्हें लगता है कि तुम उसकी मदद कर सकते हो, थियो? क्या तुम एलिसिया को बचा सकते हो? उसे बोलने के लिए मना सकते हो?"
मुझे नहीं पता कि मैं उसे बचा पाऊँगी या नहीं, लेकिन मैं उसकी मदद करना चाहूँगी। मैं कोशिश करना चाहूँगी।
डायोमेडेस उसी मज़ाकिया अंदाज़ में मुस्कुराया। “तुम पहले नहीं हो। मुझे पूरा यकीन था कि मैं कामयाब हो जाऊंगा। एलिसिया एक खामोश मोहिनी है, मेरे बच्चे, जो हमें चट्टानों की ओर खींच लाती है, जहाँ हम अपने इलाज के सपने को चकनाचूर कर देते हैं।” वह फिर मुस्कुराया। “उसने मुझे नाकामी का एक अहम सबक सिखाया। शायद तुम्हें भी यही सबक सीखने की ज़रूरत है।”
मैंने चुनौती भरे लहजे में उसकी आँखों में देखा। "जब तक कि, ज़ाहिर है, मैं सफल न हो जाऊँ।"
डायोमेडेस की मुस्कान गायब हो गई, उसकी जगह कुछ ऐसा भाव आ गया जिसे समझना मुश्किल था। वह एक पल के लिए चुप रहा, फिर उसने एक निर्णय लिया।
“देखते हैं, ठीक है? पहले आपको एलिसिया से मिलना होगा। अभी तक आपकी उससे मुलाकात नहीं हुई है, है ना?”
"अभी नहीं, बिल्कुल नहीं।"
"तो फिर यूरी से इसे व्यवस्थित करने के लिए कहो, ठीक है? बाद में मुझे बता देना।"
“अच्छा।” मैंने अपनी खुशी छुपाने की कोशिश की। “मैं करूँगा।”
अध्याय सात
थेरेपी रूम एक छोटा, संकरा आयताकार कमरा था; किसी जेल की कोठरी की तरह खाली, या उससे भी ज़्यादा खाली। खिड़की बंद थी और उस पर सलाखें लगी थीं।

छोटी सी मेज पर रखे चमकीले गुलाबी रंग के टिशू के डिब्बे ने एक अजीब सी खुशी का माहौल बना दिया—शायद इसे इंदिरा ने वहाँ रखा था: मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि क्रिश्चियन अपने मरीजों को टिशू देगा।

मैं दो जर्जर, फीकी पड़ चुकी कुर्सियों में से एक पर बैठ गया। मिनट बीतते गए। एलिसिया का कोई अता-पता नहीं था। शायद वह आ ही नहीं रही थी? शायद उसने मुझसे मिलने से मना कर दिया था। ऐसा करना उसका पूरा अधिकार था।

अधीर, चिंतित और घबराई हुई, मैंने बैठना छोड़ दिया और उठकर खिड़की की ओर चल पड़ी। मैंने सलाखों के बीच से बाहर झाँका।

आंगन मुझसे तीन मंजिल नीचे था। टेनिस कोर्ट के आकार का यह आंगन ऊंची लाल ईंटों की दीवारों से घिरा हुआ था, इतनी ऊंची दीवारें कि उन पर चढ़ना नामुमकिन था, हालांकि कुछ लोगों ने कोशिश जरूर की होगी। मरीजों को हर दोपहर तीस मिनट के लिए ताजी हवा के लिए बाहर ले जाया जाता था, चाहे वे चाहें या न चाहें, और इस कड़ाके की ठंड में मैं उनके विरोध करने को दोष नहीं दे सकता था। कुछ अकेले खड़े होकर खुद से कुछ बुदबुदा रहे थे, या बेचैन ज़ॉम्बी की तरह इधर-उधर टहल रहे थे, कहीं नहीं जा रहे थे। कुछ समूह में इकट्ठा होकर बातें कर रहे थे, सिगरेट पी रहे थे, बहस कर रहे थे। आवाजें, चीखें और अजीब सी उत्तेजित हंसी मुझ तक पहुंच रही थीं। पहले तो मुझे एलिसिया दिखाई नहीं दी। फिर मैंने उसे ढूंढ लिया। वह आंगन के दूसरे छोर पर, दीवार के पास अकेली खड़ी थी। एकदम स्थिर, जैसे कोई मूर्ति हो। यूरी आंगन पार करके उसकी ओर बढ़ा। उसने कुछ ही दूरी पर खड़ी नर्स से बात की। नर्स ने सिर हिलाया। यूरी एलिसिया के पास सावधानी से, धीरे-धीरे गया, जैसे कोई अप्रत्याशित जानवर के पास जाता है।

मैंने उनसे कहा था कि वे ज़्यादा विस्तार से न बताएं, बस इतना बता दें कि एलिसिया से यूनिट में आए नए मनोचिकित्सक मिलना चाहते हैं। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे इसे एक अनुरोध के रूप में कहें, न कि एक मांग के रूप में। जब वे एलिसिया से बात कर रहे थे, तो वह चुपचाप खड़ी रहीं।

लेकिन उसने न तो सिर हिलाया, न ही मना किया और न ही सुनने का कोई संकेत दिया। थोड़ी देर रुकने के बाद, यूरी मुड़ा और चला गया।

बस, हो गया! मैंने सोचा—वो नहीं आएगी। धिक्कार है! मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था। सारा समय व्यर्थ गया।
फिर, मुझे आश्चर्य हुआ जब एलिसिया ने एक कदम आगे बढ़ाया। थोड़ा लड़खड़ाते हुए, वह आंगन पार करते हुए यूरी के पीछे-पीछे चलने लगी—जब तक कि वे मेरी खिड़की के नीचे से ओझल नहीं हो गए।
तो वो आ रही थी। मैंने अपनी घबराहट पर काबू पाने और खुद को तैयार करने की कोशिश की। मैंने अपने दिमाग में उठ रही नकारात्मक आवाज़—मेरे पिता की आवाज़—को चुप कराने की कोशिश की, जो मुझसे कह रही थी कि मैं इस काम के लायक नहीं हूँ, मैं बेकार हूँ, एक धोखेबाज़ हूँ। चुप रहो, मैंने सोचा, चुप रहो, चुप रहो—
कुछ मिनट बाद दरवाजे पर दस्तक हुई।
"अंदर आएं।"
दरवाजा खुला। एलिसिया गलियारे में यूरी के साथ खड़ी थी। मैंने उसकी तरफ देखा। लेकिन उसने मेरी तरफ नहीं देखा; उसकी निगाहें झुकी रहीं।
यूरी ने मुझे गर्व भरी मुस्कान दी। "वह यहाँ है।"
“जी हां। मैं देख सकता हूँ। हेलो, एलिसिया।”
उसने कोई जवाब नहीं दिया।
"क्या तुम अंदर नहीं आओगे?"
यूरी उसे हल्का सा धक्का देने के इरादे से आगे झुका, लेकिन उसने वास्तव में उसे छुआ नहीं।
इसके बजाय उसने फुसफुसाते हुए कहा, "चलो, प्यारी। अंदर जाओ और बैठ जाओ।"
एलिसिया हिचकिचाई। उसने उसकी तरफ देखा, फिर फैसला किया। वह थोड़ा लड़खड़ाते हुए कमरे में दाखिल हुई। वह एक कुर्सी पर बिल्ली की तरह चुपचाप बैठ गई, उसके कांपते हाथ उसकी गोद में थे।
मैं दरवाजा बंद करने ही वाला था, लेकिन यूरी नहीं गया। मैंने अपनी आवाज धीमी कर ली।
"मैं इसे यहाँ से संभाल लूँगा, धन्यवाद।"

यूरी चिंतित लग रही थी। “लेकिन वह तो अकेले में है। और प्रोफेसर ने कहा था।”

—”

“मैं पूरी जिम्मेदारी लेता हूँ। कोई बात नहीं।” मैंने अपनी जेब से अपना पर्सनल अटैक अलार्म निकाला। “देखो, मेरे पास यह है—लेकिन मुझे इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी।”
मैंने एलिसिया की तरफ देखा। उसने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया कि उसने मेरी बात सुनी भी हो।
यूरी ने कंधे उचकाए, जाहिर तौर पर नाखुश होकर बोला, "मैं दरवाजे के दूसरी तरफ रहूंगा, अगर आपको मेरी जरूरत पड़े तो।"
"इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, लेकिन धन्यवाद।"
यूरी चला गया, और मैंने दरवाज़ा बंद कर दिया। मैंने अलार्म को डेस्क पर रख दिया। मैं एलिसिया के सामने बैठ गई। उसने ऊपर नहीं देखा। मैंने कुछ पल उसे निहारा। उसका चेहरा भावहीन, खाली था। मानो किसी दवा का मुखौटा हो। मैं सोचने लगी कि इसके पीछे क्या छिपा है।
“मुझे खुशी है कि आप मुझसे मिलने के लिए राजी हो गए।” मैंने जवाब का इंतज़ार किया। मुझे पता था कि कोई जवाब नहीं आएगा। “मुझे आपके बारे में आपसे ज़्यादा जानने का फ़ायदा है। आपकी शोहरत पहले से ही फैली हुई है—मेरा मतलब है, एक चित्रकार के तौर पर आपकी शोहरत। मैं आपके काम का प्रशंसक हूँ।” कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। मैं अपनी सीट पर थोड़ा सा हिल गया। “मैंने प्रोफ़ेसर डायोमेडेस से बात करने की गुज़ारिश की थी, और उन्होंने कृपा करके यह मुलाक़ात तय की। इसके लिए राज़ी होने के लिए धन्यवाद।”
मैं हिचकिचाया, किसी तरह की प्रतिक्रिया की उम्मीद में—पलक झपकाना, सिर हिलाना, भौंहें चढ़ाना। कुछ नहीं हुआ। मैंने अंदाज़ा लगाने की कोशिश की कि वह क्या सोच रही होगी। शायद वह नशे में इतनी चूर थी कि कुछ सोच ही नहीं पा रही थी। मुझे अपनी पुरानी थेरेपिस्ट रूथ की याद आई। वो क्या करतीं? वो कहती थीं कि हम अलग-अलग हिस्सों से बने हैं, कुछ अच्छे, कुछ बुरे, और एक स्वस्थ मन इस द्वंद्व को सहन कर सकता है और अच्छे और बुरे दोनों को एक साथ संभाल सकता है। मानसिक बीमारी ठीक इसी तरह के एकीकरण की कमी से जुड़ी है—हम अपने उन

हिस्सों से संपर्क खो देते हैं जिन्हें हम स्वीकार नहीं कर सकते। अगर मुझे एलिसिया की मदद करनी है, तो हमें उन हिस्सों को खोजना होगा जिन्हें उसने खुद से छिपा रखा है, चेतना की सीमाओं से परे, और उसके मानसिक परिदृश्य में मौजूद विभिन्न बिंदुओं को जोड़ना होगा। तभी हम उस रात की भयानक घटनाओं को समझ पाएंगे जब उसने अपने पति की हत्या की थी। यह एक धीमी, श्रमसाध्य प्रक्रिया होगी।

आम तौर पर जब किसी मरीज़ का इलाज शुरू किया जाता है, तो कोई जल्दबाजी नहीं होती, कोई पूर्व निर्धारित उपचार योजना नहीं होती। आमतौर पर हम कई महीनों तक बातचीत से शुरुआत करते हैं। एक आदर्श स्थिति में, एलिसिया मुझे अपने बारे में, अपने जीवन के बारे में, अपने बचपन के बारे में बताती। मैं सुनता, धीरे-धीरे एक पूरी तस्वीर बनाता, जब तक कि वह मेरे लिए सटीक और उपयोगी व्याख्या करने के लिए पर्याप्त न हो जाती। इस मामले में, न तो बातचीत होगी, न ही सुनना। मुझे जो जानकारी चाहिए, वह मुझे गैर-मौखिक संकेतों के माध्यम से जुटानी होगी, जैसे कि मेरा काउंटरट्रांसफरेंस—सेशन के दौरान एलिसिया द्वारा मुझमें उत्पन्न भावनाएँ—और अन्य स्रोतों से जो भी जानकारी मैं जुटा सकता हूँ।

दूसरे शब्दों में कहें तो, मैंने एलिसिया की मदद करने की योजना तो बना ली थी, लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि इसे कैसे लागू करना है। अब मुझे सिर्फ साबित करना ही नहीं था, बल्कि करके दिखाना भी था।

मैं खुद को डायोमेडेस के प्रति समर्पित करूं, लेकिन उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है एलिसिया के प्रति अपना कर्तव्य निभाना: उसकी मदद करना।

मेरे सामने बैठी उस लड़की को देखकर, जो दवा के नशे में चूर थी, मुँह के आसपास लार टपक रही थी, उंगलियाँ गंदी पतंगों की तरह फड़फड़ा रही थीं, मुझे अचानक और अप्रत्याशित रूप से दुख का एक झटका लगा। मुझे उसके लिए और उसके जैसी सभी के लिए, हम सभी के लिए, सभी घायलों और खोए हुए लोगों के लिए बहुत दुख हुआ।

बेशक, मैंने उससे इनमें से कुछ भी नहीं कहा। इसके बजाय मैंने वही किया जो रूथ करती।

और हम बस चुपचाप बैठे रहे।

अध्याय आठ

मैंने अपनी डेस्क पर एलिसिया की फाइल खोली। डायोमेडेस ने इसे मुझे पढ़ने के लिए कहा था: "तुम्हें मेरे नोट्स पढ़ने चाहिए। इनसे तुम्हें मदद मिलेगी।"
मुझे उनके नोट्स पढ़ने की कोई इच्छा नहीं थी; मुझे पहले से ही पता था कि डायोमेडेस क्या सोचते हैं; मुझे बस यह पता लगाना था कि मैं क्या सोचता हूँ। फिर भी मैंने इसे विनम्रतापूर्वक स्वीकार कर लिया।
“धन्यवाद। इससे बहुत मदद मिलेगी।”
मेरा दफ्तर छोटा और कम साज-सज्जा वाला था, जो इमारत के पिछले हिस्से में, आग से बचने वाली सीढ़ी के पास स्थित था। मैंने खिड़की से बाहर देखा। एक छोटी काली चिड़िया बाहर ज़मीन पर जमी हुई घास के एक टुकड़े को बेमन से चोंच मार रही थी, मानो उसे कोई उम्मीद ही न हो।
मुझे ठंड लग रही थी। कमरा बेहद ठंडा था। खिड़की के नीचे लगा छोटा रेडिएटर टूटा हुआ था—यूरी ने कहा कि वह इसे ठीक करवाने की कोशिश करेगा, लेकिन मेरे लिए सबसे अच्छा यही होगा कि मैं स्टेफ़नी से बात करूँ या अगर बात न बने तो कम्युनिटी में इस बारे में बात करूँ। मुझे अचानक एलिफ और टूटी हुई पूल क्यू को बदलवाने के उसके संघर्ष के प्रति सहानुभूति महसूस हुई।
मैंने एलिसिया की फाइल को बिना किसी खास उम्मीद के देखा। मुझे जो जानकारी चाहिए थी, उसका अधिकांश हिस्सा ऑनलाइन डेटाबेस में मौजूद था। हालांकि, डायोमेडेस, कई पुराने कर्मचारियों की तरह, अपनी रिपोर्ट हाथ से लिखना पसंद करते थे और (स्टेफ़नी के बार-बार मना करने के बावजूद) ऐसा करना जारी रखा।
—इसलिए मेरे सामने यह मुड़ी-तुड़ी फाइल पड़ी है।
मैंने डायोमेडेस के नोट्स को सरसरी तौर पर देखा, उनकी कुछ हद तक पुराने ज़माने की मनोविश्लेषणात्मक व्याख्याओं को नज़रअंदाज़ करते हुए, और नर्सों पर ध्यान केंद्रित किया।
मुझे एलिसिया के दैनिक व्यवहार की रिपोर्ट सौंपी गई। मैंने उन रिपोर्टों को ध्यानपूर्वक पढ़ा। मुझे तथ्य, आंकड़े, विवरण चाहिए थे—मुझे ठीक-ठीक जानना था कि मैं किस स्थिति में पड़ रहा हूँ, मुझे किन चीजों से निपटना होगा, और कहीं कोई अप्रत्याशित घटना तो नहीं होगी।

फाइल से बहुत कम जानकारी मिली। जब एलिसिया को पहली बार भर्ती किया गया, तो उसने अपनी कलाई पर दो बार वार किया और जो कुछ भी उसके हाथ लगा, उससे खुद को चोट पहुँचाई। पहले छह महीनों तक उसे दो नर्सों की निगरानी में रखा गया—यानी दो नर्सें हर समय उस पर नज़र रखती थीं—जिसे बाद में कम करके एक नर्स की निगरानी में कर दिया गया। एलिसिया ने मरीजों या कर्मचारियों से बातचीत करने की कोई कोशिश नहीं की, वह हमेशा अलग-थलग और अकेली रही और ज्यादातर समय दूसरे मरीज उसे अकेला छोड़ देते थे। अगर लोग आपसे बात करने पर जवाब नहीं देते और कभी बातचीत शुरू नहीं करते, तो आप जल्द ही भूल जाते हैं कि वे वहाँ हैं। एलिसिया जल्दी ही गुमनामी में घुलमिल गई, जैसे अदृश्य हो गई हो।

केवल एक घटना सबसे अलग थी। यह घटना एलिसिया के अस्पताल में भर्ती होने के कुछ सप्ताह बाद कैंटीन में घटी। एलिफ ने एलिसिया पर उसकी सीट पर बैठने का आरोप लगाया। वास्तव में क्या हुआ था यह स्पष्ट नहीं था, लेकिन टकराव तेजी से बढ़ गया।

ऐसा प्रतीत होता है कि एलिसिया हिंसक हो गई थी—उसने एक प्लेट तोड़ दी और उसके नुकीले किनारे से एलिफ का गला काटने की कोशिश की। एलिसिया को काबू में करना पड़ा, उसे बेहोश करने की दवा दी गई और एकांतवास में रखा गया।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इस घटना ने मेरा ध्यान क्यों खींचा। लेकिन मुझे कुछ ठीक नहीं लगा। मैंने एलिफ से बात करने और उससे इस बारे में पूछने का फैसला किया।

मैंने पैड से एक कागज फाड़ा और कलम उठाई। विश्वविद्यालय में बनी एक पुरानी आदत—कलम से कागज पर लिखने से मुझे अपने विचारों को व्यवस्थित करने में मदद मिलती है। मुझे हमेशा से ही अपनी राय को लिखकर रखने से पहले उसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में कठिनाई होती रही है।

मैंने विचार, नोट्स, लक्ष्य लिखने शुरू किए—हमला करने की योजना बनाने लगी। एलिसिया की मदद करने के लिए, मुझे उसे और गैब्रियल के साथ उसके रिश्ते को समझना ज़रूरी था। क्या वह उससे प्यार करती थी? या नफ़रत करती थी? ऐसा क्या हुआ था कि उसने उसे मार डाला? उसने हत्या के बारे में—या किसी और बात के बारे

में—बात करने से इनकार क्यों किया था? कोई जवाब नहीं, अभी तक नहीं—सिर्फ़ सवाल।
मैंने एक शब्द लिखा और उसे रेखांकित किया: एल्सेस्टिस।
आत्मचित्र—यह किसी न किसी तरह महत्वपूर्ण था, मुझे यह पता था, और इसका कारण समझना इस रहस्य को सुलझाने की कुंजी थी। यह चित्र एलिसिया का एकमात्र संवाद था, उसकी एकमात्र गवाही। यह कुछ ऐसा कह रहा था जिसे मैं अभी तक समझ नहीं पाया था। मैंने चित्र को दोबारा देखने के लिए गैलरी में फिर से जाने का मन बना लिया।
मैंने एक और शब्द लिखा: बचपन। अगर मुझे गैब्रियल की हत्या को समझना था, तो मुझे न केवल उस रात की घटनाओं को समझना था।
एलिसिया ने उसे मार डाला, लेकिन साथ ही सुदूर अतीत की घटनाओं को भी। अपने पति को गोली मारने के उन कुछ मिनटों में जो कुछ हुआ, उसके बीज शायद वर्षों पहले बोए गए थे। हत्या का क्रोध, जानलेवा क्रोध, वर्तमान में पैदा नहीं होता। यह स्मृति से परे की भूमि में, बचपन की दुनिया में, दुर्व्यवहार और दुर्व्यवहार से उत्पन्न होता है, जो वर्षों तक बढ़ता रहता है, जब तक कि यह विस्फोट नहीं हो जाता - अक्सर गलत लक्ष्य पर। मुझे यह पता लगाना था कि उसके बचपन ने उसे कैसे आकार दिया, और अगर एलिसिया मुझे बता नहीं सकती थी या बताना नहीं चाहती थी, तो मुझे किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढना था जो बता सके। कोई ऐसा व्यक्ति जो हत्या से पहले एलिसिया को जानता हो, जो मुझे उसके इतिहास को समझने में मदद कर सके, कि वह कौन थी, और वह इस तरह कैसे बन गई।
फाइल में एलिसिया के निकटतम संबंधी के रूप में उसकी चाची - लिडिया रोज़ - का नाम दर्ज था।
एलिसिया की मां की कार दुर्घटना में मृत्यु के बाद, उसका पालन-पोषण करने वाली महिला ने किया। एलिसिया भी उस दुर्घटना में घायल हो गई थी, लेकिन बच गई। उस सदमे ने उस छोटी बच्ची पर गहरा असर डाला होगा। मुझे उम्मीद थी कि लिडिया मुझे इसके बारे में बता पाएगी।
एकमात्र संपर्क एलिसिया के वकील मैक्स बेरेन्सन से था। मैक्स, गैब्रियल बेरेन्सन का भाई था। वह उनकी शादी को करीब से देखने के लिए बिल्कुल उपयुक्त था। मैक्स

बेरेन्सन मुझसे अपनी बातें साझा करेगा या नहीं, यह एक अलग बात थी। एलिसिया के मनोचिकित्सक द्वारा उसके परिवार से बिना अनुमति के संपर्क करना कम से कम असामान्य तो था ही। मुझे हल्का सा आभास था कि डायोमेडेस इसे स्वीकार नहीं करेगा। मैंने सोचा कि बेहतर होगा कि मैं उसकी अनुमति न मांगूं, कहीं वह मना न कर दे।

जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो एलिसिया के साथ व्यवहार में यह मेरी पहली पेशेवर गलती थी—जिसने आगे आने वाली घटनाओं के लिए एक दुर्भाग्यपूर्ण मिसाल कायम की। मुझे वहीं रुक जाना चाहिए था। लेकिन तब भी बहुत देर हो चुकी थी। कई मायनों में मेरा भाग्य पहले ही तय हो चुका था—जैसे किसी ग्रीक त्रासदी में होता है।

मैंने फोन उठाया। मैंने एलिसिया की फाइल में दर्ज संपर्क नंबर का उपयोग करके मैक्स बेरेन्सन को उनके कार्यालय में फोन किया। कई बार घंटी बजी, फिर कहीं से फोन उठा।

"ये इलियट, बैरो और बेरेंसन के कार्यालय हैं," एक रिसेप्शनिस्ट ने कहा, जिसे ज़ुकाम था।

"श्रीमान बेरेनसन, कृपया।"

“क्या मैं पूछ सकता हूँ कि कौन कॉल कर रहा है?”

“मेरा नाम थियो फैबर है। मैं ग्रोव में मनोचिकित्सक हूं। मैं सोच रहा था कि क्या श्री बेरेंसन से उनकी भाभी के बारे में बात करना संभव होगा।”

जवाब देने से पहले उसने थोड़ी देर रुककर कहा, "ओह। मैं समझ गई। अच्छा, श्रीमान..."

बेरेंसन इस सप्ताह के बाकी दिनों के लिए ऑफिस से बाहर हैं। वे एक क्लाइंट से मिलने एडिनबर्ग गए हैं। अगर आप अपना नंबर छोड़ दें, तो मैं उनसे कहूँगा कि वे लौटने पर आपको कॉल करें।

मैंने उसे अपना नंबर दिया और फोन काट दिया।

मैंने फाइल में अगला नंबर डायल किया—एलिसिया की चाची, लिडिया रोज़ का नंबर।

पहली ही घंटी बजते ही जवाब मिल गया। एक बुजुर्ग महिला की आवाज़ हांफती हुई और थोड़ी चिड़चिड़ी लग रही थी। "जी? क्या बात है?"

"क्या वह श्रीमती रोज हैं?"
"आप कौन हैं?"
“मैं आपकी भतीजी एलिसिया बेरेंसन के बारे में बात करने के लिए फोन कर रहा हूँ। मैं एक मनोचिकित्सक हूँ और यहाँ काम करता हूँ—”
“दफा हो जाओ।” उसने फोन काट दिया।
मैंने मन ही मन भौंहें सिकोड़ीं।
अच्छी शुरुआत नहीं।
अध्याय नौ
मुझे सिगरेट की सख्त जरूरत थी। जब मैं ग्रोव से निकला, तो मैंने अपने कोट की जेबों में सिगरेट ढूंढी, लेकिन वे वहां नहीं थीं।
"कुछ की तलाश?"
मैंने पीछे मुड़कर देखा। यूरी मेरे ठीक पीछे खड़ा था। मैंने उसकी आवाज नहीं सुनी थी और उसे इतना करीब देखकर मैं थोड़ा चौंक गया।
“मुझे ये नर्स स्टेशन में मिले।” उसने मुस्कुराते हुए मुझे सिगरेट का पैकेट पकड़ा दिया। “शायद तुम्हारी जेब से गिर गए होंगे।”
“धन्यवाद।” मैंने उन्हें लिया और एक सिगरेट जलाई। मैंने उसे सिगरेट का पैकेट भी दे दिया।
यूरी ने सिर हिलाया। “मैं धूम्रपान नहीं करता। कम से कम सिगरेट तो नहीं।” वह हँसा। “लगता है तुम्हें कुछ पीने की ज़रूरत है। चलो, मैं तुम्हें एक पाइंट पिला देता हूँ।”
मैं हिचकिचाई। मेरा मन तो मना करने को कह रहा था—मुझे कभी भी सहकर्मियों के साथ मेलजोल करने की आदत नहीं थी। और मुझे शक था कि यूरी और मुझमें ज़्यादा कुछ समानता होगी। लेकिन शायद वो एलिसिया को ग्रोव में बाकी सब लोगों से बेहतर जानता था।
और उनकी अंतर्दृष्टि उपयोगी साबित हो सकती है।
“ज़रूर,” मैंने कहा। “क्यों नहीं?”
हम स्टेशन के पास एक पब में गए, जिसका नाम था स्लॉटर्ड लैम्ब। अंधेरा और गंदा सा, वह पब कभी बेहतर हालत में था; और वहाँ बैठे बूढ़े लोग भी अपनी आधी खाली

बियर पर ऊंघ रहे थे। यूरी ने हमारे लिए दो बियर मंगवाईं और हम पीछे की तरफ एक मेज पर बैठ गए।
यूरी ने बीयर का एक लंबा घूंट लिया और अपना मुंह पोंछा। "तो? मुझे एलिसिया के बारे में बताओ।"
“एलिसिया?”
“तुम्हें वह कैसे मिली?”
मुझे यकीन नहीं है कि मैंने उसे ढूंढ लिया है।
यूरी ने मुझे हैरानी भरी नजरों से देखा, फिर मुस्कुराई। "वह नहीं चाहती कि उसे कोई ढूंढे? हां, यह सच है। वह छिप रही है।"
“तुम उसके काफी करीब हो। मैं यह देख सकता हूँ।”
मैं उसका विशेष ख्याल रखता हूँ। उसे मेरे जितना कोई नहीं जानता, प्रोफेसर डायोमेडेस भी नहीं।
उसकी आवाज़ में घमंड का भाव था। पता नहीं क्यों, इससे मुझे चिढ़ हुई—मैं सोच रही थी कि वह उसे कितनी अच्छी तरह जानता है, या वह सिर्फ़ शेखी बघार रहा है।
“उसकी चुप्पी का आप क्या अर्थ निकालते हैं? आपके विचार से इसका क्या मतलब है?”
यूरी ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मुझे लगता है कि इसका मतलब है कि वह अभी बात करने के लिए तैयार नहीं है। जब वह तैयार होगी तब बात करेगी।"
“किस बात के लिए तैयार?”
"सच का सामना करने के लिए तैयार रहो, मेरे दोस्त।"
और वह क्या है?
यूरो ने अपना सिर थोड़ा एक तरफ झुकाया और मुझे गौर से देखने लगा। उसके मुंह से निकला सवाल मुझे चौंका गया।
“क्या तुम शादीशुदा हो, थियो?”
मैंने सिर हिलाया। "हाँ, मैं हूँ।"
“हाँ, मुझे भी ऐसा ही लगा। मेरी भी एक बार शादी हुई थी। हम लातविया से यहाँ आए थे। लेकिन वो मेरे जैसे घुल-मिल नहीं पाई। उसने कोई कोशिश नहीं की, तुम्हें पता है, उसने अंग्रेज़ी नहीं सीखी। खैर, बात ये नहीं थी... मैं खुश नहीं था—लेकिन मैं सच्चाई

को मानने से इनकार कर रहा था, खुद से झूठ बोल रहा था...” उसने अपना गिलास खाली किया और अपनी बात पूरी की। “जब तक मुझे प्यार नहीं हो गया।”
"शायद आपका मतलब अपनी पत्नी से नहीं है?"
यूरी हँसा और सिर हिलाया। “नहीं। मेरे पड़ोस में रहने वाली एक महिला। बहुत खूबसूरत महिला। पहली नज़र में ही प्यार हो गया था। मैंने उसे सड़क पर देखा था। उससे बात करने की हिम्मत जुटाने में मुझे बहुत समय लगा। मैं उसका पीछा करता था...”
मैं कभी-कभी उसे बिना बताए देखता था। मैं उसके घर के बाहर खड़ा होकर देखता रहता था, इस उम्मीद में कि वह खिड़की पर दिखाई देगी। वह हँस पड़ा।
यह कहानी मुझे असहज महसूस कराने लगी थी। मैंने अपनी बियर खत्म की और घड़ी पर नज़र डाली, उम्मीद थी कि यूरी इशारा समझ जाएगा, लेकिन उसने नहीं समझा।
“एक दिन मैंने उससे बात करने की कोशिश की। लेकिन उसे मुझमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। मैंने कई बार कोशिश की, लेकिन उसने मुझे उसे परेशान करना बंद करने के लिए कहा।”
मैंने सोचा, मैं उसे दोष नहीं दे सकती। मैं बहाने बनाने ही वाली थी, लेकिन यूरी बोलती रही।
“इसे स्वीकार करना बहुत मुश्किल था। मुझे पूरा यकीन था कि हम एक-दूसरे के लिए ही बने हैं।”
उसने मेरा दिल तोड़ दिया। मुझे उस पर बहुत गुस्सा आया। बहुत गुस्सा आया।
“और क्या हुआ?” मैं अनजाने में ही उत्सुक हो गया।
"कुछ नहीं।"
“कुछ नहीं? आप अपनी पत्नी के साथ ही रहे?”
यूरी ने सिर हिलाया। "नहीं। उसके साथ सब कुछ खत्म हो चुका था। लेकिन इस महिला के प्यार में पड़ने के बाद ही मैंने यह स्वीकार किया... अपने और अपनी पत्नी के बारे में सच्चाई का सामना किया।"
कभी-कभी ईमानदारी बरतने के लिए हिम्मत और लंबा समय चाहिए होता है।

“मैं समझ गया। और आपको लगता है कि एलिसिया अपनी शादी की सच्चाई का सामना करने के लिए तैयार नहीं है? क्या आपका यही मतलब है? आप शायद सही हों।”
यूरी ने कंधे उचकाते हुए कहा, “और अब मेरी सगाई हंगरी की एक प्यारी लड़की से हो गई है। वह एक स्पा में काम करती है। वह अच्छी अंग्रेजी बोलती है। हम दोनों एक-दूसरे के लिए बिल्कुल सही हैं। हम खूब मज़े करते हैं।”
मैंने सिर हिलाया और अपनी घड़ी दोबारा देखी। मैंने अपना कोट उठाया। "मुझे जाना होगा। मुझे अपनी पत्नी से मिलने में देर हो रही है।"
“ठीक है, कोई बात नहीं... उसका नाम क्या है? आपकी पत्नी?”
किसी कारणवश, मैं उसे बताना नहीं चाहता था। मैं नहीं चाहता था कि यूरी को उसके बारे में कुछ भी पता चले। लेकिन यह बेवकूफी थी।
“कैथरीन। उसका नाम कैथरीन है। लेकिन मैं उसे कैथी कहकर बुलाती हूँ।”
यूरी ने मुझे एक अजीब सी मुस्कान दी। “मैं तुम्हें कुछ सलाह देता हूँ। अपनी पत्नी के पास घर जाओ। कैथी के पास घर जाओ, जो तुमसे प्यार करती है... और एलिसिया को पीछे छोड़ दो।”
अध्याय दस
मैं कैथी से मिलने साउथ बैंक स्थित नेशनल थिएटर के कैफे में गया, जहाँ कलाकार अक्सर रिहर्सल के बाद इकट्ठा होते थे। वह कैफे के पिछले हिस्से में कुछ साथी अभिनेत्रियों के साथ बैठी हुई थीं और गहरी बातचीत में मग्न थीं। जैसे ही मैं उनके पास पहुँचा, उन्होंने मेरी तरफ देखा।
"क्या तुम्हारे कान जल रहे हैं, डार्लिंग?" कैथी ने मुझे चूमते हुए कहा।
"क्या उन्हें ऐसा होना चाहिए?"
मैं लड़कियों को तुम्हारे बारे में सब कुछ बता रही हूँ।
“अरे। क्या मुझे चले जाना चाहिए?”
“मज़ाक मत करो। बैठ जाओ—यह बिल्कुल सही समय है। मुझे अभी-अभी बताना है कि हम कैसे मिले थे।”
मैं बैठ गया, और कैथी ने अपनी कहानी जारी रखी। यह एक ऐसी कहानी थी जिसे सुनाने में उसे आनंद आता था। वह कभी-कभी मेरी ओर देखती और मुस्कुराती, मानो

मुझे भी शामिल करना चाहती हो—लेकिन यह भाव मात्र औपचारिक था, क्योंकि यह उसकी कहानी थी, मेरी नहीं।

“मैं एक बार में बैठी थी जब वह आखिरकार आ गया। आखिरकार, जब मैंने उसे ढूंढने की सारी उम्मीद छोड़ दी थी—वह अंदर आ गया, मेरे सपनों का राजकुमार।”

देर आए दुरुस्त आए। मैंने सोचा था कि पच्चीस साल की उम्र तक मेरी शादी हो जाएगी, है ना? तीस साल की उम्र तक मेरे दो बच्चे, एक छोटा कुत्ता और एक बड़ा घर होगा। लेकिन अब मैं तैंतीस साल की हो चुकी हूँ और चीजें योजना के मुताबिक नहीं चल रही हैं।” कैथी ने यह बात एक शरारती मुस्कान के साथ कही और लड़कियों को आँख मारी।

“खैर, मैं डेनियल नाम के एक ऑस्ट्रेलियाई लड़के से मिल रही थी। लेकिन वो अभी शादी या बच्चे पैदा करने के मूड में नहीं था, इसलिए मुझे पता था कि मैं अपना समय बर्बाद कर रही हूँ। एक रात हम बाहर थे, तभी अचानक वो हुआ—मेरा सपनों का राजकुमार अंदर आ गया।” कैथी ने मेरी तरफ देखा, मुस्कुराई और आँखें घुमाईं। “अपनी गर्लफ्रेंड के साथ।”

कहानी के इस हिस्से को सावधानीपूर्वक प्रस्तुत करना आवश्यक था ताकि दर्शकों की सहानुभूति बनी रहे। जब हम मिले थे तब कैथी और मैं दोनों ही किसी और के साथ डेटिंग कर रहे थे। एक साथ दो लोगों का बेवफ़ा होना किसी रिश्ते की सबसे आकर्षक या शुभ शुरुआत नहीं होती, खासकर तब जब हम दोनों का परिचय हमारे तत्कालीन पार्टनर्स ने कराया था। वे दोनों एक-दूसरे को किसी कारण से जानते थे, मुझे सटीक विवरण याद नहीं हैं।

मैरिएन का डेनियल के फ्लैटमेट के साथ कभी अफेयर रहा होगा, या शायद डेनियल का मैरिएन के साथ। मुझे ठीक से याद नहीं कि हमारी मुलाकात कैसे हुई, लेकिन कैथी को देखते ही मुझे वो पल याद है जब मुझे बिजली का झटका लगा था। मुझे उसके लंबे काले बाल, तीखी हरी आँखें, उसका मुँह याद है— वो बेहद खूबसूरत, लाजवाब थी। मानो कोई फरिश्ता हो।

कहानी सुनाते-सुनाते कैथी रुक गई, मुस्कुराई और मेरा हाथ पकड़ लिया। "याद है, थियो? हमारी बातचीत कैसे शुरू हुई थी? तुमने कहा था कि तुम मनोचिकित्सक बनने

की ट्रेनिंग ले रहे हो। और मैंने कहा था कि मैं पागल हूँ—तो हम दोनों की जोड़ी स्वर्ग में बनी थी।"
यह सुनकर लड़कियाँ ज़ोर से हँस पड़ीं। कैथी भी हँसी और उसने मेरी तरफ़ गंभीरता से, चिंता से देखा, उसकी आँखें मेरी आँखों में कुछ ढूँढ़ रही थीं। "नहीं, लेकिन... डार्लिंग..."
सच में, ये तो पहली नजर में प्यार था। है ना?
यही मेरा इशारा था। मैंने सिर हिलाया और उसके गाल पर चुंबन लिया। "बेशक ऐसा ही था।"
सच्चा प्यार।"
इस पर उसके दोस्तों ने सहमति जताई। लेकिन मैं कोई दिखावा नहीं कर रहा था। वह सही थी, यह पहली नज़र का प्यार था—खैर, वासना ही थी।
उस रात मैं मैरिएन के साथ थी, फिर भी कैथी से मेरी नज़रें नहीं हट रही थीं। मैं दूर से उसे डेनियल से जोश भरी बातें करते हुए देख रही थी—और फिर मैंने उसके होंठों को "भाड़ में जाओ" कहते हुए देखा। वे बहस कर रहे थे। माहौल गरमागरम लग रहा था।
डेनियल मुड़ा और बाहर चला गया।
“तुम चुप क्यों हो?” मैरिएन ने कहा। “क्या बात है?”
"कुछ नहीं।"
"चलो घर चलते हैं। मैं थक गया हूँ।"
“अभी नहीं।” मैं उनकी बात आधी-अधूरी सुन रहा था। “चलिए एक और ड्रिंक लेते हैं।”
"अब मुझे जाना हैं।"
"तो जाओ।"
मैरिएन ने मुझे गुस्से भरी नजरों से देखा, फिर अपना जैकेट उठाया और बाहर चली गई। मुझे पता था कि अगले दिन झगड़ा होगा, लेकिन मुझे परवाह नहीं थी।
मैं बार में कैथी के पास गया। "क्या डेनियल वापस आ रहा है?"
नहीं। मैरिएन के बारे में क्या ख्याल है?
मैंने सिर हिलाकर कहा, "नहीं। क्या आप एक और ड्रिंक लेना चाहेंगे?"

"हाँ मैं।"
तो हमने दो और ड्रिंक्स ऑर्डर किए। हम बार में खड़े होकर बातें कर रहे थे। मुझे याद है, हमने मेरी मनोचिकित्सा की ट्रेनिंग के बारे में चर्चा की। कैथी ने मुझे ड्रामा स्कूल में बिताए अपने समय के बारे में बताया—वह वहाँ ज़्यादा दिन नहीं रुकी, क्योंकि उसने पहले साल के अंत में ही एक एजेंट के साथ कॉन्ट्रैक्ट कर लिया था और तब से वह पेशेवर तौर पर अभिनय कर रही थी। मुझे बिना किसी कारण के यह ख्याल आया कि वह शायद एक अच्छी अभिनेत्री रही होगी।
उन्होंने कहा, "पढ़ाई मेरे लिए नहीं थी। मैं बाहर जाकर कुछ करना चाहती थी।"
-आपको पता है?"
“क्या करें? अभिनय करें?”
“नहीं। जियो।” कैथी ने अपना सिर झुकाया, अपनी गहरी पलकों के नीचे से झाँकते हुए, उसकी पन्ना-हरी आँखें शरारती अंदाज़ में मेरी ओर देख रही थीं। “तो, थियो।”
आपमें लगातार पढ़ाई करने का धैर्य कहाँ से आता है?
"शायद मैं बाहर जाकर 'जीना' नहीं चाहता। शायद मैं कायर हूँ।"
“नहीं। अगर तुम डरपोक होते, तो अपनी प्रेमिका के साथ घर चले जाते।” कैथी हंस पड़ी, एक आश्चर्यजनक रूप से शरारती हंसी।
मैं उसे पकड़कर ज़ोर से चूमना चाहता था। मैंने पहले कभी ऐसी तीव्र शारीरिक इच्छा का अनुभव नहीं किया था; मैं उसे अपने करीब खींचना चाहता था, उसके होंठों और उसके शरीर की गर्मी को अपने शरीर से महसूस करना चाहता था।
“मुझे माफ कर दो,” उसने कहा। “मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था। मैं हमेशा वही बोलती हूँ जो मेरे दिमाग में आता है। मैंने तुम्हें बताया भी था, मैं थोड़ी सनकी हूँ।”
कैथी अक्सर ऐसा करती थी, अपने पागलपन का विरोध करते हुए कहती थी, "मैं पागल हूँ," "मैं सनकी हूँ।"
“मैं पागल हूँ”—लेकिन मैंने कभी उसकी बात पर विश्वास नहीं किया। वह इतनी आसानी से और इतनी बार हँसती थी कि मुझे यकीन ही नहीं होता था कि उसने कभी उस तरह के अंधकार का सामना किया होगा जैसा मैंने किया था। उसमें एक सहजता थी, एक हल्कापन था—वह जीवन का आनंद लेती थी और जीवन से हमेशा खुश

रहती थी। उसके विरोध के बावजूद, वह मुझे अब तक के सबसे कम पागल लोगों में से एक लगती थी। उसके आसपास मैं खुद को ज़्यादा समझदार महसूस करता था।
कैथी अमेरिकी थी। उसका जन्म और पालन-पोषण मैनहट्टन के अपर वेस्ट साइड में हुआ था। उसकी अंग्रेज़ माँ ने उसे दोहरी नागरिकता दी थी, लेकिन कैथी ज़रा भी अंग्रेज़ नहीं लगती थी। वह दृढ़ता से, स्पष्ट रूप से गैर-अंग्रेज़ थी—न केवल बोलने के तरीके में, बल्कि दुनिया को देखने के उसके नज़रिए में भी।
दुनिया और जिस तरह से वह इसे देखती थी। कितना आत्मविश्वास, कितना उत्साह। मैंने उसके जैसी किसी से कभी मुलाकात नहीं की थी।
हम बार से निकले, एक टैक्सी रोकी; मैंने अपने फ्लैट का पता दिया। हमने चुपचाप छोटी सी यात्रा तय की। जब हम पहुँचे, तो उसने धीरे से अपने होंठ मेरे होंठों से लगा दिए। मैंने अपनी झिझक तोड़कर उसे अपनी ओर खींच लिया। हम चुंबन करते रहे और मैं सामने के दरवाजे की चाबी ढूंढने में लगा रहा। अंदर पहुँचते ही हम कपड़े उतारने लगे, लड़खड़ाते हुए बेडरूम में गए और बिस्तर पर गिर पड़े।
वो रात मेरे जीवन की सबसे कामुक, आनंदमयी रात थी। मैंने घंटों कैथी के शरीर को निहारते हुए बिताए। हमने भोर तक पूरी रात प्रेम किया। मुझे याद है चारों ओर कितनी सफेदी थी: पर्दों के किनारों से छनकर आती सफेद धूप, सफेद दीवारें, सफेद चादरें; उसकी आँखों की सफेदी, उसके दाँत, उसकी त्वचा। मैंने कभी नहीं सोचा था कि त्वचा इतनी चमकदार, इतनी पारदर्शी हो सकती है: हाथीदांत जैसी सफेद, जिसकी सतह के ठीक नीचे कहीं-कहीं नीली नसें दिखाई दे रही थीं, जैसे सफेद संगमरमर में रंग के धागे। वह एक मूर्ति थी; मेरे हाथों में एक ग्रीक देवी जीवंत हो उठी थी।
हम एक-दूसरे की बाहों में लिपटे हुए लेटे थे। कैथी मेरी ओर मुंह करके लेटी थी, उसकी आंखें इतनी करीब थीं कि साफ दिखाई नहीं दे रही थीं। मैं धुंधले हरे समुद्र की ओर देख रहा था। "तो?"
उसने कहा।
"कुंआ?"
“मैरिएन के बारे में क्या?”
“मैरिएन?”

चेहरे पर हल्की सी मुस्कान। "तुम्हारी प्रेमिका।"
“ओह, हाँ। हाँ।” मैं हिचकिचाई, अनिश्चित थी। “मुझे मैरिएन के बारे में नहीं पता। और डैनियल के बारे में?”
कैथी ने आंखें घुमाईं। "डेनियल को भूल जाओ। मैं उसे भूल चुकी हूँ।"
"क्या सचमुच?"
कैथी ने मुझे चूमकर जवाब दिया।
कैथी के जाने से पहले, उसने स्नान किया। जब वह स्नान कर रही थी, मैंने मैरिएन को फोन किया। मैं उससे मिलने का समय तय करना चाहता था, ताकि उससे आमने-सामने बात कर सकूँ।
लेकिन वह पिछली रात की बात से नाराज़ थी और ज़िद कर रही थी कि हम वहीं, फ़ोन पर ही इस बारे में बात कर लें। मैरिएन को मुझसे ब्रेकअप की उम्मीद नहीं थी। लेकिन मैंने वही किया, जितना हो सके नरमी से। वह रोने लगी और नाराज़ व गुस्सा हो गई। मैंने फ़ोन काट दिया। क्रूर, हाँ—और निर्दयी भी। मैं नहीं हूँ
मुझे उस फोन कॉल पर गर्व है। लेकिन मुझे लगा कि यही एकमात्र सही कदम था। मुझे अब भी नहीं पता कि मैं क्या अलग कर सकता था।

*

On our first proper date, Kathy and I met at Kew Gardens. It was her idea.

वह यह जानकर हैरान थी कि मैं कभी वहाँ नहीं गई थी। “मज़ाक कर रही हो? तुम कभी ग्रीनहाउस नहीं गई? वहाँ एक बहुत बड़ा ग्रीनहाउस है जिसमें ढेर सारे उष्णकटिबंधीय ऑर्किड हैं और उसे इतना गर्म रखते हैं कि वह भट्टी जैसा लगता है। जब मैं ड्रामा स्कूल में थी, तो मैं वहाँ जाकर थोड़ी देर आराम करती थी, बस गर्मी पाने के लिए। काम खत्म होने के बाद हम वहाँ मिलें?” फिर वह हिचकिचाई, अचानक असमंजस में पड़ गई। “या फिर तुम्हारे लिए वहाँ जाना बहुत दूर है?”
"तुम्हारे लिए मैं क्यू गार्डन्स से भी आगे जा सकता हूँ, डार्लिंग।"
“बेवकूफ।” उसने मुझे चूमा।

जब मैं पहुंचा तो कैथी अपने विशाल कोट और स्कार्फ में प्रवेश द्वार पर मेरा इंतजार कर रही थी, और एक उत्साहित बच्चे की तरह हाथ हिला रही थी। "आओ, आओ, मेरे पीछे आओ।"

वह मुझे जमी हुई कीचड़ से होते हुए उस विशाल कांच की इमारत तक ले गई जिसमें उष्णकटिबंधीय पौधे रखे थे, और दरवाजा खोलकर अंदर घुस गई। मैं भी उसके पीछे गई और तुरंत ही तापमान में अचानक हुई वृद्धि, भीषण गर्मी से दंग रह गई। मैंने अपना स्कार्फ और कोट उतार दिया।

कैथी मुस्कुराई। "देखा? मैंने कहा था ना, ये तो सौना जैसा है। है ना कमाल की बात?"

हम अपने कोट लिए, हाथ पकड़े हुए, पगडंडियों पर घूमते रहे और अनोखे फूलों को देखते रहे।

मुझे उसकी संगति में होने मात्र से एक अपरिचित खुशी का अनुभव हुआ, मानो कोई गुप्त द्वार खुल गया हो, और कैथी ने मुझे दहलीज पार करके एक जादुई दुनिया में बुला लिया हो - जहाँ गर्माहट, प्रकाश और रंग बिखरे हुए थे, और नीले, लाल और पीले रंगों की चकाचौंध भरी छटा में सैकड़ों ऑर्किड खिले हुए थे।

मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मैं गर्मी में पिघल रहा हूँ, मेरा व्यक्तित्व नरम पड़ रहा है, ठीक वैसे ही जैसे कोई कछुआ लंबी सर्दियों की नींद के बाद सूरज की रोशनी में निकलता है, पलकें झपकाता है और जाग जाता है। कैथी ने मेरे लिए यही किया—वह मेरे लिए जीवन का निमंत्रण थी, जिसे मैंने दोनों हाथों से थाम लिया।

तो बस यही है, मुझे याद है मैंने यही सोचा था। यही प्यार है।

मैंने इसे बिना किसी संदेह के पहचान लिया और मुझे स्पष्ट रूप से पता था कि मैंने इससे पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं किया था। मेरे पिछले प्रेम प्रसंग संक्षिप्त और सभी के लिए असंतोषजनक रहे थे। एक छात्र के रूप में मैंने...

काफी शराब की मदद से हिम्मत जुटाकर मैंने कनाडाई समाजशास्त्र की छात्रा मेरेडिथ के साथ अपना कौमार्य खो दिया। मेरेडिथ ने नुकीले धातु के ब्रेसेस पहन रखे थे जो चुंबन के दौरान मेरे होंठों को चुभ रहे थे। इसके बाद कई नीरस रिश्ते रहे। मुझे कभी वह खास जुड़ाव नहीं मिला जिसकी मुझे चाह थी। मुझे लगता था कि मैं बहुत टूटा हुआ हूँ, अंतरंगता के काबिल नहीं हूँ।

लेकिन अब जब भी मैं कैथी की संक्रामक हंसी सुनता, तो मेरे अंदर उत्साह की लहर दौड़ जाती। एक तरह से जैसे-जैसे मैं उसके युवा जोश, उसकी निडरता और आनंद को आत्मसात करता गया। मैं उसके हर सुझाव और हर इच्छा पर हां कह देता था। मैं खुद को पहचान नहीं पा रहा था। मुझे यह नया इंसान, यह निडर पुरुष जो कैथी ने मुझे बनने के लिए प्रेरित किया था, बहुत पसंद आ रहा था। हम हर समय शारीरिक संबंध बनाते थे। मैं वासना से ग्रस्त था, लगातार, उसके लिए बेताब भूखा रहता था। मुझे उसे छूते रहने की ज़रूरत थी; मैं उसके और करीब नहीं जा सकता था।

उस दिसंबर में कैथी मेरे साथ केंटिश टाउन में मेरे एक कमरे वाले अपार्टमेंट में रहने आ गई। सीलन से भरे, मोटे कालीन वाले तहखाने के फ्लैट में खिड़कियाँ तो थीं, लेकिन बाहर का कोई नज़ारा नहीं दिखता था। साथ में हमारी पहली क्रिसमस थी, और हमने ठान लिया था कि इसे अच्छे से मनाएँगे। हमने ट्यूब स्टेशन के पास वाली दुकान से एक क्रिसमस ट्री खरीदा और उसे बाज़ार से ढेर सारी सजावट की चीज़ों और बत्तियों से सजाया।

मुझे चीड़ की पत्तियों, लकड़ी और जलती मोमबत्तियों की खुशबू आज भी स्पष्ट रूप से याद है, और कैथी की आँखें मेरी आँखों में टकटकी लगाए हुए थीं, पेड़ पर लगी रोशनी की तरह चमक रही थीं। मैंने बिना सोचे-समझे बोल दिया। शब्द बस अपने आप निकल आए:

"क्या आप करेंगे मुझसे शादी?"

कैथी ने मेरी तरफ घूरकर देखा। "क्या?"

“मैं तुमसे प्यार करता हूँ, कैथी। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?”

कैथी हंस पड़ी। फिर, मेरी खुशी और हैरानी के बीच, उसने कहा, "हां।"

अगले दिन हम बाहर गए और उसने एक अंगूठी चुनी। तब मुझे वास्तविकता का अहसास हुआ। हमारी सगाई हो चुकी थी।

अजीब बात है, सबसे पहले मेरे दिमाग में मेरे माता-पिता का ख्याल आया। मैं कैथी को उनसे मिलवाना चाहता था। मैं चाहता था कि वे देखें कि मैं कितना खुश था, कि आखिरकार मैं भाग निकला था, कि मैं आज़ाद था। इसलिए हम सरे के लिए ट्रेन में सवार हो गए। बाद में मुझे एहसास हुआ कि यह एक बुरा विचार था। शुरू से ही नाकामयाब।

मेरे पिता ने हमेशा की तरह शत्रुतापूर्ण लहजे में मेरा स्वागत किया। "तुम बहुत खराब दिख रहे हो, थियो।"
तुम बहुत पतले हो। तुम्हारे बाल बहुत छोटे हैं। तुम किसी अपराधी की तरह दिखते हो।
“धन्यवाद पिताजी। आपको देखकर भी अच्छा लगा।”
मेरी माँ हमेशा से ज़्यादा उदास लग रही थीं। शांत, मानो जैसे वो वहाँ थीं ही नहीं। पिताजी का व्यवहार गंभीर, रूखा, घूरता हुआ और बिना मुस्कुराए हुए था। उन्होंने कैथी पर अपनी ठंडी, गहरी निगाहें टिकाए रखीं। दोपहर का भोजन असहज था। ऐसा लग रहा था कि वे कैथी को पसंद नहीं करते, और न ही हमारे लिए कोई खास खुशी दिखा रहे थे। मुझे नहीं पता कि मुझे आश्चर्य क्यों हुआ।
दोपहर के भोजन के बाद, मेरे पिता अपने अध्ययन कक्ष में चले गए। वे फिर बाहर नहीं आए। जब मेरी माँ ने अलविदा कहा, तो उन्होंने मुझे बहुत देर तक, बहुत कसकर पकड़ रखा था, और उनके पैर लड़खड़ा रहे थे। मुझे बहुत दुख हुआ। जब कैथी और मैं घर से निकले, तो मुझे पता था कि मेरा एक हिस्सा घर से निकला नहीं था, बल्कि वहीं रह गया था।
मैं हमेशा एक बच्ची ही बनी रही, फँसी हुई। मैं खोई हुई, निराश और रोने के कगार पर थी। तभी कैथी ने हमेशा की तरह मुझे चौंका दिया। उसने मुझे बाहों में भर लिया और गले लगा लिया। "अब मैं समझ गई हूँ," उसने मेरे कान में फुसफुसाया। "मैं सब कुछ समझ गई हूँ। अब मैं तुमसे और भी ज़्यादा प्यार करती हूँ।"
उसने आगे कुछ नहीं बताया। उसे बताने की ज़रूरत भी नहीं थी।

*

We were married in April, in a small registry office off Euston Square. No parents invited. And no God. Nothing religious, at Kathy’s insistence. But I said a secret prayer during the ceremony. I silently thanked Him for giving me such unexpected, undeserved happiness. I saw things clearly now, I understood His greater purpose. God hadn’t abandoned me during my childhood, when I had felt so alone and so

scared—He had been keeping Kathy hidden up His sleeve, waiting to produce her, like a deft magician.

हमने साथ में जो भी पल बिताए, उन सबके लिए मेरे मन में विनम्रता और कृतज्ञता का भाव था। मुझे इस बात का एहसास था कि मैं कितनी भाग्यशाली हूँ, मुझे ऐसा प्यार मिला है, यह कितना दुर्लभ है, और दूसरों को इतना सौभाग्य नहीं मिलता। मेरे अधिकांश मरीज़ों को प्यार नहीं मिला था। एलिसिया बेरेंसन को भी नहीं।
कैथी और एलिसिया से ज्यादा अलग दो महिलाओं की कल्पना करना मुश्किल है।
कैथी को याद करके मुझे प्रकाश, गर्माहट, रंग और हंसी की याद आती है। वहीं एलिसिया के बारे में सोचकर मुझे सिर्फ गहराई, अंधकार और उदासी ही याद आती है।
मौन का।
भाग दो
अनकहे भाव कभी मरते नहीं। वे जिंदा दफन हो जाते हैं और बाद में और भी भयावह रूपों में सामने आते हैं।
-सिगमंड फ्रायड
अध्याय एक
एलिसिया बेरेंसन की डायरी
16 जुलाई
मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे बारिश की इतनी चाहत होगी। भीषण गर्मी का यह चौथा हफ्ता है और ऐसा लगता है जैसे कोई परीक्षा हो। हर दिन पिछले दिन से ज़्यादा गर्म लगता है। यह इंग्लैंड जैसा नहीं लगता। बल्कि किसी दूसरे देश जैसा लगता है—ग्रीस या कहीं और।
मैं यह लेख हैम्पस्टेड हीथ पर लिख रहा हूँ। पूरा पार्क लाल चेहरे वाले, अधनंगे शरीरों से भरा पड़ा है, मानो कोई समुद्र तट या युद्धक्षेत्र हो, लोग कंबलों पर, बेंचों पर या घास पर फैले हुए हैं। मैं एक पेड़ के नीचे, छाँव में बैठा हूँ।
शाम के छह बज चुके हैं और मौसम ठंडा होने लगा है। सूरज नीचे की ओर लाल रंग का है और आसमान सुनहरा है—इस रोशनी में पार्क का नज़ारा कुछ अलग ही है—

गहरी परछाइयाँ और चमकीले रंग। घास ऐसी लग रही है मानो आग लगी हो, मेरे पैरों के नीचे लपटें उठ रही हों।
यहां आते समय मैंने अपने जूते उतार दिए और नंगे पैर चली। इससे मुझे अपने बचपन की याद आ गई जब मैं बाहर खेलती थी। मुझे एक और गर्मी की याद आ गई, बिल्कुल इस गर्मी जैसी—जिस गर्मी में माँ का निधन हुआ—पॉल के साथ बाहर खेलना, जंगली डेज़ी से भरे सुनहरे खेतों में साइकिल चलाना, वीरान घरों और भूतिया बागों की खोज करना। वह गर्मी मेरी यादों में हमेशा के लिए बसी है। मुझे माँ और उनके रंगीन टॉप याद हैं, पीले धागे वाले स्ट्रैप वाले, इतने पतले और नाज़ुक—बिल्कुल उनकी तरह। वह इतनी पतली थीं, जैसे कोई छोटी चिड़िया। वह रेडियो चलातीं और मुझे गोद में उठाकर पॉप गानों पर नचातीं। मुझे याद है उनके शरीर से शैम्पू, सिगरेट और निविया हैंड क्रीम की खुशबू आती थी, जिसमें हमेशा वोदका की हल्की सी महक भी होती थी। तब उनकी उम्र कितनी थी? अट्ठाईस? उनतीस? वह तब मुझसे छोटी थीं।
यह एक अजीब विचार है।
यहां आते समय मैंने रास्ते में एक छोटी चिड़िया को पेड़ की जड़ों के पास लेटे देखा। मुझे लगा कि वह अपने घोंसले से गिर गई होगी। वह हिल नहीं रही थी और मुझे लगा कि शायद उसके पंख टूट गए हों। मैंने धीरे से अपनी उंगली से उसके सिर को सहलाया। उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। मैंने उसे थोड़ा हिलाकर पलटा तो देखा कि चिड़िया का निचला हिस्सा गायब था, पूरी तरह से खाया हुआ था, और अंदर एक खाली जगह थी जो कीड़ों से भरी थी। मोटे, सफेद, चिकने कीड़े... मरोड़ते, घूमते, छटपटाते... मेरा पेट खराब हो गया - मुझे लगा कि मुझे उल्टी आ जाएगी। यह इतना घिनौना, इतना भयानक था - मानो मौत हो गई हो।
मैं इसे अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रहा हूँ।
17 जुलाई
गर्मी से बचने के लिए मैंने मुख्य सड़क पर स्थित एक वातानुकूलित कैफे, कैफे डे ल'आर्टिस्टा में शरण लेना शुरू कर दिया है। अंदर इतनी ठंड है, मानो फ्रिज में घुस गए हों। खिड़की के पास एक मेज है जो मुझे बहुत पसंद है, जहाँ बैठकर मैं ठंडी कॉफी पीता हूँ।

कभी-कभी मैं पढ़ता हूँ, रेखाचित्र बनाता हूँ या नोट्स लिखता हूँ। ज़्यादातर मैं बस अपने मन को भटकने देता हूँ, ठंडक का आनंद लेता हूँ। काउंटर के पीछे खड़ी खूबसूरत लड़की ऊबी हुई सी लग रही है, अपने फोन को घूर रही है, घड़ी देख रही है और बीच-बीच में आहें भर रही है। कल दोपहर, उसकी आहें कुछ ज़्यादा ही लंबी लग रही थीं—और मुझे एहसास हुआ कि वह मेरे जाने का इंतज़ार कर रही थी, ताकि वह दुकान बंद कर सके। मैं अनिच्छा से चला गया।

इस भीषण गर्मी में चलना कीचड़ में चलने जैसा लगता है। मैं पूरी तरह से थक चुका हूँ, बुरी तरह से पिट चुका हूँ। हम इसके लिए तैयार नहीं हैं, कम से कम इस देश में तो बिल्कुल नहीं।

गैब्रियल और मेरे घर में एयर कंडीशनिंग नहीं है—किसके घर में होती है? लेकिन इसके बिना सोना नामुमकिन है। रात को हम चादर हटाकर अंधेरे में नंगे बदन पसीने से भीगे लेटे रहते हैं। खिड़कियाँ खुली छोड़ देते हैं, लेकिन हवा का नामोनिशान नहीं। बस गर्म, घुटन भरी हवा।

मैंने कल एक इलेक्ट्रिक पंखा खरीदा। मैंने उसे बिस्तर के निचले हिस्से में अलमारी के ऊपर रख दिया।

गैब्रियल ने तुरंत शिकायत करना शुरू कर दिया। “इससे बहुत शोर होता है। हम कभी सो नहीं पाएंगे।”

“वैसे भी हमें नींद नहीं आ रही है। कम से कम हम यहां गर्म पानी के कुंड में तो नहीं लेटे रहेंगे।”

गैब्रियल बड़बड़ाया, लेकिन मुझसे पहले ही सो गया। मैं लेटा हुआ पंखे की आवाज़ सुनता रहा। मुझे उसकी हल्की-हल्की सरसराहट अच्छी लगती है। मैं आँखें बंद करके उसमें खो जाता हूँ और जैसे कहीं खो जाता हूँ।

मैं पंखा घर में अपने साथ लेकर घूम रहा हूँ, इधर-उधर जाते समय उसे प्लग में लगाता और निकालता रहता हूँ। आज दोपहर मैं उसे बगीचे के आखिर में बने स्टूडियो में ले गया। पंखे की वजह से गर्मी थोड़ी कम हुई। लेकिन फिर भी इतनी गर्मी है कि काम करना मुश्किल है। मेरा काम छूट रहा है—लेकिन इतनी गर्मी है कि परवाह करने का मन नहीं करता।

मुझे आखिरकार समझ आ गया कि यीशु की तस्वीर में क्या गड़बड़ है। यह तस्वीर असरदार क्यों नहीं है। समस्या तस्वीर की रचना में नहीं है—सूली पर यीशु—समस्या यह है कि यह यीशु की तस्वीर है ही नहीं। यह उनके जैसी दिखती भी नहीं है—चाहे वे कैसे भी दिखते हों। क्योंकि यह यीशु नहीं हैं।

यह गैब्रियल है।

यह अविश्वसनीय है कि मैंने इसे पहले नहीं देखा। अनजाने में ही मैंने गैब्रियल को वहाँ रख दिया है। मैंने उसका चेहरा, उसका शरीर चित्रित किया है। क्या यह पागलपन नहीं है? इसलिए मुझे इसे स्वीकार करना होगा और पेंटिंग की मांग के अनुसार काम करना होगा।

अब मुझे पता है कि जब मेरे मन में किसी तस्वीर को लेकर कोई पूर्व-निर्धारित योजना होती है, कोई विचार होता है कि वह कैसी बननी चाहिए, तो वह कभी सफल नहीं होती। वह जन्म से ही बेजान, निर्जीव रह जाती है। लेकिन अगर मैं सचमुच ध्यान दूं, सचमुच सचेत रहूं, तो कभी-कभी मुझे एक धीमी सी आवाज़ सुनाई देती है जो मुझे सही दिशा दिखाती है। और अगर मैं उस आवाज़ को विश्वास के साथ मान लूं, तो वह मुझे कहीं अनपेक्षित जगह ले जाती है, जहां मैं जाना नहीं चाहता था, बल्कि किसी बेहद जीवंत, शानदार जगह पर ले जाती है—और परिणाम मुझसे स्वतंत्र होता है, उसकी अपनी एक अलग जीवन शक्ति होती है।

मुझे लगता है कि मुझे अज्ञात के आगे झुकने से डर लगता है। मुझे यह जानना अच्छा लगता है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। इसीलिए मैं हमेशा इतने सारे रेखाचित्र बनाता हूँ—परिणाम को नियंत्रित करने की कोशिश करता हूँ—इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि कुछ भी साकार नहीं होता—क्योंकि मैं वास्तव में अपने सामने जो हो रहा है उस पर ध्यान नहीं दे रहा हूँ। मुझे अपनी आँखें खोलकर देखना होगा—और जीवन को वैसे ही देखना होगा जैसे वह घटित हो रहा है, न कि केवल वैसे जैसे मैं चाहता हूँ।

अब मुझे पता है कि यह गैब्रियल का चित्र है, मैं इस पर वापस जा सकता हूँ। मैं फिर से शुरू कर सकता हूँ।

मैं उनसे मेरे लिए पोज़ देने को कहूँगा। उन्होंने बहुत समय से मेरे लिए पोज़ नहीं दिया है। मुझे उम्मीद है कि उन्हें यह विचार पसंद आएगा और वे इसे अपवित्र या कुछ और नहीं समझेंगे।

वह कभी-कभी इस तरह से मजाकिया हो सकता है।

18 जुलाई

आज सुबह मैं पहाड़ी से नीचे कैमडेन बाज़ार गया। मैं सालों से वहाँ नहीं गया था, तब से नहीं जब एक दोपहर गैब्रियल और मैं उसकी खोई हुई जवानी की तलाश में साथ गए थे। वो किशोरावस्था में वहाँ जाया करता था, जब वो और उसके दोस्त रात भर नाचते-गाते, शराब पीते और बातें करते रहते थे। वे सुबह-सुबह बाज़ार पहुँच जाते और व्यापारियों को अपनी दुकानें लगाते देखते और कैमडेन लॉक के पास पुल पर बैठे रस्ताफ़ेरियन डीलरों से गांजा खरीदने की कोशिश करते। जब गैब्रियल और मैं गए तो वे डीलर वहाँ नहीं थे—गैब्रियल को बहुत निराशा हुई। उसने कहा, "अब मैं इसे पहचान नहीं पाता। ये तो बस पर्यटकों को लुभाने वाली जगह बन गई है।"

आज घूमते-घूमते मुझे लगा कि समस्या शायद बाज़ार के बदलने में नहीं, बल्कि गैब्रियल के बदलने में है। आज भी वहाँ सोलह साल के किशोर धूप का आनंद लेते हुए नहर के दोनों किनारों पर फैले हुए हैं, शरीरों का एक अजीब सा जमावड़ा—लड़के शॉर्ट्स में नंगे बदन, लड़कियाँ बिकिनी या ब्रा में—हर तरफ त्वचा, जलती हुई, लाल होती हुई। यौन ऊर्जा स्पष्ट रूप से महसूस हो रही थी—जीवन के लिए उनकी भूखी, बेचैन प्यास। मुझे अचानक गैब्रियल के लिए एक तीव्र इच्छा हुई—उसके शरीर और उसकी मजबूत टांगों के लिए, उसकी मोटी जांघें मेरी जांघों पर टिकी हुई थीं।

जब हम यौन संबंध बनाते हैं, तो मुझे हमेशा उसके लिए एक अतृप्त भूख महसूस होती है—हमारे बीच एक प्रकार के मिलन के लिए—कुछ ऐसा जो मुझसे बड़ा है, हमसे बड़ा है, शब्दों से परे है—कुछ पवित्र सा।

अचानक मेरी नज़र एक बेघर आदमी पर पड़ी, जो मेरे पास फुटपाथ पर बैठा मुझे घूर रहा था। उसकी पतलून रस्सी से बंधी थी और जूते टेप से जुड़े थे। उसकी त्वचा पर घाव थे और चेहरे पर दाने निकले हुए थे। मुझे अचानक उदासी और घृणा महसूस हुई। उससे बासी पसीने और पेशाब की बदबू आ रही थी। एक पल के लिए मुझे लगा कि वह मुझसे बात कर रहा है। लेकिन वह बस अपने आप से कुछ बुदबुदा रहा था। उसकी सांसों से लगातार "फकिंग" की आवाजें आ रही थीं। मैंने अपने बैग में से कुछ खुले पैसे निकाले और उसे दे दिए।

फिर मैं घर की ओर चल पड़ा, पहाड़ी पर धीरे-धीरे, कदम-दर-कदम चढ़ता हुआ। अब वह रास्ता बहुत ज़्यादा ढलान वाला लग रहा था। चिलचिलाती गर्मी में तो जैसे मानो मानो समय ही नहीं बीत रहा था। न जाने क्यों मैं उस बेघर आदमी के बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रहा था। दया के अलावा, एक और भावना थी, जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर पा रहा था—एक तरह का डर। मैंने उसे अपनी माँ की गोद में एक बच्चे के रूप में देखा। क्या उस माँ ने कभी सोचा होगा कि उसका बच्चा पागल, गंदा और बदबूदार होकर, फुटपाथ पर दुबका हुआ, गालियाँ बड़बड़ाता हुआ मिलेगा?
मुझे अपनी माँ की याद आई। क्या वो पागल थीं? क्या इसीलिए उन्होंने ऐसा किया? क्यों उन्होंने मुझे अपनी पीली मिनी कार की यात्री सीट पर बिठाया और हमें उस लाल ईंट की दीवार की ओर तेज़ी से भगाया? मुझे वो कार हमेशा से पसंद थी, उसका चटख पीला रंग। बिल्कुल वैसा ही पीला रंग जैसा मेरे पेंट बॉक्स में होता था। अब मुझे उस रंग से नफ़रत है—जब भी मैं उसे इस्तेमाल करती हूँ, मुझे मौत याद आ जाती है।
उसने ऐसा क्यों किया? मुझे लगता है कि मैं कभी नहीं जान पाऊँगी। पहले तो मुझे लगता था कि उसने आत्महत्या की है।
अब मुझे लगता है कि यह हत्या का प्रयास था। क्योंकि मैं भी तो कार में था, है ना?
कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं ही उसका निशाना था—वह मुझे मारना चाहती थी, खुद को नहीं। लेकिन यह तो पागलपन है। वह मुझे क्यों मारना चाहेगी?
पहाड़ी पर चढ़ते हुए मेरी आँखों में आँसू भर आए। मैं अपनी माँ के लिए नहीं रो रही थी—न ही अपने लिए—और न ही उस बेचारे बेघर आदमी के लिए। मैं हम सबके लिए रो रही थी। हर जगह इतना दर्द है, और हम बस उससे आँखें मूंद लेते हैं। सच तो यह है कि हम सब डरे हुए हैं। हम एक-दूसरे से डरे हुए हैं। मैं खुद से डरी हुई हूँ—और अपने अंदर की माँ से भी। क्या उसका पागलपन मेरे खून में है? क्या सच में? क्या मैं—
नहीं। रुको। रुको—
मैं उस बारे में नहीं लिख रहा हूँ। बिलकुल नहीं।
20 जुलाई
कल रात गैब्रियल और मैं डिनर के लिए बाहर गए थे। हम आमतौर पर शुक्रवार को ऐसा करते हैं।

वह इसे "डेट नाइट" कहता है, और वह भी एक अजीब से अमेरिकी लहजे में।
गैब्रियल हमेशा अपनी भावनाओं को कम करके दिखाता है और किसी भी ऐसी चीज़ का मज़ाक उड़ाता है जिसे वह भावुकतापूर्ण समझता है। वह खुद को सनकी और भावनाहीन समझना पसंद करता है। लेकिन सच्चाई यह है कि वह दिल से बेहद रोमांटिक है, भले ही वह बातों में ऐसा न लगे। कहते हैं ना, कर्म शब्दों से कहीं ज़्यादा असरदार होते हैं? और गैब्रियल के कर्म मुझे पूरी तरह से प्यार का एहसास कराते हैं।
मैंने पूछा, "तुम कहाँ जाना चाहते हो?"
तीन अनुमान लगाइए।
“ऑगस्टो का?”
"एक ही बार में समझ आ गया।"
ऑगस्टो हमारा स्थानीय इतालवी रेस्तरां है, जो सड़क के ठीक नीचे है। यह कोई खास जगह नहीं है, लेकिन हमारे लिए घर जैसा है, और हमने वहां कई खुशनुमा शामें बिताई हैं। हम लगभग आठ बजे गए थे। एयर कंडीशनर काम नहीं कर रहा था, इसलिए हम खुली खिड़की के पास गर्म, उमस भरी हवा में बैठे और ठंडी सूखी सफेद वाइन पी। आखिर तक मुझे काफी नशा सा हो गया था, और हम खूब हंसे, वैसे तो बिना किसी बात के। हमने रेस्तरां के बाहर किस किया और घर आकर हमने शारीरिक संबंध बनाए।
शुक्र है, गैब्रियल को पोर्टेबल पंखा पसंद आने लगा है, कम से कम जब हम बिस्तर पर होते हैं। मैंने उसे हमारे सामने रख दिया, और हम ठंडी हवा में एक-दूसरे की बाहों में लिपटे हुए लेट गए। उसने मेरे बालों को सहलाया और मुझे चूमा। "मैं तुमसे प्यार करता हूँ," उसने धीरे से कहा। मैंने कुछ नहीं कहा; मुझे कहने की ज़रूरत नहीं थी। वह जानता है कि मैं कैसा महसूस करती हूँ।
लेकिन मैंने मूर्खतापूर्ण और अनाड़ीपन से माहौल खराब कर दिया—यह पूछकर कि क्या वह मेरे लिए बैठेंगे।
मैंने कहा, "मैं तुम्हारी तस्वीर बनाना चाहता हूँ।"
“फिर से? आप तो पहले ही कर चुके हैं।”
“यह चार साल पहले की बात है। मैं तुम्हें फिर से चित्रित करना चाहता हूँ।”
“हम्म।” वह उत्साहित नहीं लग रहा था। “तुम्हारे मन में किस तरह की बात है?”

मैं हिचकिचाया—और फिर कहा कि यह यीशु की तस्वीर के लिए है। गैब्रियल उठ बैठा और एक दबी हुई हंसी हंसा।
"अरे, चलो भी, एलिसिया।"
"क्या?
“मुझे इसके बारे में पता नहीं है, प्रिय। मुझे ऐसा नहीं लगता।”
"क्यों नहीं?"
“आपको क्या लगता है, ऐसा क्यों? मुझे सूली पर चढ़ाने का क्या मतलब है? लोग क्या कहेंगे?”
"तुम कब से लोगों की बातों की परवाह करने लगे हो?"
"मैं ऐसा नहीं सोचता, ज्यादातर चीजों के बारे में नहीं, लेकिन—मेरा मतलब है, वे सोच सकते हैं कि आप मुझे इसी तरह देखते हैं।"
मैं हँस पड़ा। “मुझे नहीं लगता कि आप ईश्वर के पुत्र हैं, अगर आपका यही मतलब है। यह महज़ एक छवि है—चित्र बनाते समय अनायास ही मेरे मन में आ गई। मैंने इसके बारे में जानबूझकर नहीं सोचा था।”
"अच्छा, शायद आपको इस बारे में सोचना चाहिए।"
“क्यों? यह न तो आपके बारे में कोई टिप्पणी है, न ही हमारी शादी के बारे में।”
"ओर भला क्या?"
मुझे कैसे पता चलेगा?
यह सुनकर गैब्रियल हँस पड़ा और उसने अपनी आँखें घुमाईं। "ठीक है। भाड़ में जाए। अगर तुम चाहो तो।"
हम कोशिश कर सकते हैं। मुझे लगता है कि आपको पता है कि आप क्या कर रहे हैं।
यह कोई बहुत बड़ी तारीफ नहीं लगती। लेकिन मुझे पता है कि गैब्रियल मुझ पर और मेरी प्रतिभा पर विश्वास करता है—अगर वह न होता तो मैं कभी चित्रकार न बन पाती। अगर उसने मुझे चिढ़ाया, प्रोत्साहित किया और तंग न किया होता, तो कॉलेज के बाद के उन शुरुआती कुछ सालों में, जब मैं जीन-फेलिक्स के साथ दीवारों पर चित्रकारी कर रही थी, मैं कभी आगे न बढ़ पाती। गैब्रियल से मिलने से पहले, मैं कहीं न कहीं अपना रास्ता भटक गई थी—मैं खुद को खो बैठी थी। मुझे उन नशेड़ी पार्टी करने वालों की याद नहीं आती जो मेरी जवानी में दोस्त होने का दिखावा करते थे। मैं

उन्हें सिर्फ रात में ही देखती थी—वे सुबह होते ही गायब हो जाते थे, जैसे पिशाच रोशनी से भागते हैं। जब मैं गैब्रियल से मिली, तो वे गायब हो गए, और मुझे पता भी नहीं चला। मुझे उनकी अब ज़रूरत नहीं थी; अब मुझे किसी की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि वह मेरे साथ था। उसने मुझे बचाया—यीशु की तरह। शायद पेंटिंग इसी बारे में है। गैब्रियल मेरी पूरी दुनिया है—और उस दिन से है जब से वह मेरे जीवन में आया है।

हम मिले। मैं उससे हर हाल में प्यार करूंगी, चाहे वो कुछ भी करे, चाहे कुछ भी हो जाए—चाहे वो मुझे कितना भी परेशान करे—चाहे वो कितना भी लापरवाह या अस्त-व्यस्त हो—चाहे कितना भी बेपरवाह, कितना भी स्वार्थी हो। मैं उसे वैसे ही स्वीकार करूंगी जैसा वो है।

जीवन के अंत तक।

21 जुलाई

आज गैब्रियल स्टूडियो में आकर मेरे साथ बैठा।

उन्होंने कहा, "मैं अब कई दिनों तक ऐसा नहीं करने वाला। हम कितने समय की बात कर रहे हैं?"

"इसे ठीक से करने के लिए एक से अधिक सत्र लगेंगे।"

क्या यह सिर्फ साथ में अधिक समय बिताने की एक चाल है? अगर ऐसा है, तो क्यों न हम भूमिका को छोड़ दें और सीधे बिस्तर पर चले जाएं?

मैं हँस पड़ी। "शायद बाद में। अगर तुम अच्छे बच्चे बनो और ज्यादा बेचैन न हो।"

मैंने उसे पंखे के सामने खड़ा कर दिया। हवा के झोंके से उसके बाल लहरा रहे थे।

“मुझे कैसा दिखना चाहिए?” उसने एक मुद्रा बनाई।

“ऐसा नहीं। बस जैसे हो वैसे ही रहो।”

"क्या आप नहीं चाहते कि मैं व्यथित भाव प्रकट करूं?"

“मुझे नहीं लगता कि यीशु व्यथित थे। मैं उन्हें उस रूप में नहीं देखता। कोई मुँह मत बनाओ—बस वहीं खड़े रहो। और हिलना मत।”

"तुम मालिक हो।"

वह लगभग बीस मिनट तक खड़ा रहा। फिर उसने खड़े रहना छोड़ दिया और कहा कि वह थक गया है।

“तो बैठ जाओ। लेकिन बात मत करो। मैं चेहरे पर काम कर रहा हूँ।”
जब मैं काम कर रही थी, गैब्रियल चुपचाप कुर्सी पर बैठा रहा। मुझे उसका चेहरा रंगना अच्छा लग रहा था। उसका चेहरा वाकई खूबसूरत था। मजबूत जबड़ा, उभरी हुई गाल की हड्डियाँ, आकर्षक नाक। स्पॉटलाइट पड़ने पर वह किसी यूनानी मूर्ति जैसा लग रहा था। मानो कोई महान नायक हो।
लेकिन कुछ गड़बड़ थी। पता नहीं क्या—शायद मैं कुछ ज़्यादा ही ज़ोर लगा रही थी। मैं उसकी आँखों का आकार और रंग ठीक से नहीं बना पा रही थी। गैब्रियल को देखकर सबसे पहले जो बात मेरी नज़र में आई थी, वो थी उसकी आँखों की चमक—जैसे हर पुतली में एक छोटा सा हीरा हो। लेकिन अब पता नहीं क्यों, वो चमक उसमें नहीं दिख रही थी। शायद मैं उतनी कुशल नहीं हूँ—या शायद गैब्रियल में कुछ ऐसा खास है जिसे रंगों में नहीं उतारा जा सकता। आँखें बेजान, निर्जीव सी लग रही थीं। मुझे गुस्सा आने लगा था।
मैंने कहा, "धिक्कार है! हालात ठीक नहीं हैं।"
“क्या अब आराम करने का समय है?”
“हाँ। अब थोड़ा आराम करने का समय है।”
"क्या हम सेक्स करें?"
यह सुनकर मुझे हंसी आ गई। "ठीक है।"
गैब्रियल उछल पड़ा, मुझे पकड़ लिया और मुझे चूम लिया। हमने स्टूडियो में, वहीं फर्श पर प्रेम किया।
मैं पूरे समय गैब्रियल के चित्र में मौजूद निर्जीव आंखों पर नजर डालता रहा।
वे मुझे घूर रहे थे, मानो मुझे भेद रहे हों। मुझे उनसे नज़रें हटानी पड़ीं।
लेकिन मुझे अब भी महसूस हो रहा था कि वे मुझे देख रहे हैं।
अध्याय दो
मैं एलिसिया के साथ अपनी मुलाकात की रिपोर्ट देने के लिए डायोमेडेस को ढूंढने गया था। वह अपने दफ्तर में शीट संगीत के ढेरों को छांट रहा था।
“अच्छा”—उसने ऊपर नहीं देखा—“कैसा रहा?”
"दरअसल, ऐसा नहीं हुआ।"
डायोमेडेस ने मुझे एक प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

मैं हिचकिचाया। "अगर मुझे उसके साथ कुछ हासिल करना है, तो मुझे एलिसिया को सोचने और महसूस करने में सक्षम होने की जरूरत है।"
“बिल्कुल। और आपकी चिंता क्या है...?”
"जब कोई व्यक्ति इतनी अधिक दवाइयों के असर में हो, तो उससे बात करना नामुमकिन है। ऐसा लगता है जैसे वह पानी में छह फीट नीचे डूबी हुई हो।"
डायोमेडेस ने भौंहें चढ़ा लीं। "मैं इतनी दूर तक नहीं जाऊंगा। मुझे ठीक-ठीक पता नहीं है कि वह कितनी खुराक ले रही है—"
मैंने यूरी से पता किया। सोलह मिलीग्राम रिस्पेरिडोन। एक घोड़े के लिए पर्याप्त मात्रा।
डायोमेडेस ने अपनी भौंहें उठाईं। "हाँ, यह तो वाकई काफी ज़्यादा है। इसे शायद कम किया जा सकता है। आप जानते हैं, क्रिश्चियन एलिसिया की देखभाल टीम का मुखिया है।"
आपको उससे इस बारे में बात करनी चाहिए।
मुझे लगता है कि यह बात आपके मुंह से सुनने में ज्यादा अच्छी लगेगी।
“हम्म।” डायोमेडेस ने मुझे संदेह भरी नज़रों से देखा। “तुम और क्रिश्चियन पहले से एक-दूसरे को जानते थे, है ना? ब्रॉडमूर में?”
"बहुत थोड़ा सा।"
डायोमेडेस ने तुरंत जवाब नहीं दिया। उन्होंने अपनी मेज पर रखी चीनी वाले बादामों की एक छोटी कटोरी की ओर हाथ बढ़ाया और मुझे एक बादाम दिया।
मैंने अपना सिर हिलाया।
उसने एक बादाम मुंह में डाला और चबाते हुए मेरी ओर देखने लगा। "बताओ, क्या तुम्हारे और क्रिश्चियन के बीच सब ठीक है?"
“यह तो अजीब सवाल है। आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं?”
"क्योंकि मुझे कुछ शत्रुता का आभास हो रहा है।"
"मेरी तरफ से नहीं।"
लेकिन उस पर?
आपको उनसे ही पूछना होगा। मुझे क्रिश्चियन से कोई समस्या नहीं है।

हम्म। शायद मैं यह सब सोच रहा हूँ। लेकिन मुझे कुछ महसूस हो रहा है... इस पर नज़र रखना। किसी भी तरह की आक्रामकता या प्रतिस्पर्धा काम में बाधा डालती है। आप दोनों को एक दूसरे के साथ मिलकर काम करना चाहिए, न कि एक दूसरे के खिलाफ।
मुझे इस बात की जानकारी है।
“खैर, इस चर्चा में क्रिश्चियन को भी शामिल करना होगा। आप चाहते हैं कि एलिसिया को महसूस हो, हाँ। लेकिन याद रखें, जितनी अधिक भावनाएँ होंगी, उतना ही अधिक खतरा भी होगा।”
“किसके लिए खतरा?”
“एलिसिया के लिए, बिल्कुल।” डायोमेडेस ने मेरी ओर उंगली हिलाते हुए कहा। “यह मत भूलिए कि जब हम उसे पहली बार यहाँ लाए थे, तब वह आत्महत्या करने के बेहद करीब थी। उसने कई बार अपनी जान लेने की कोशिश की थी। और दवा उसे स्थिर रखती है। यह उसे ज़िंदा रखती है। अगर हम खुराक कम कर दें, तो पूरी संभावना है कि वह अपनी भावनाओं से अभिभूत हो जाएगी और उनसे निपटने में असमर्थ हो जाएगी। क्या आप यह जोखिम उठाने के लिए तैयार हैं?”
मैंने डायोमेडेस की बात को गंभीरता से लिया। लेकिन मैंने सिर हिलाया। "मुझे लगता है कि यह एक ऐसा जोखिम है जिसे हमें उठाना ही होगा, प्रोफेसर। नहीं तो हम कभी उस तक नहीं पहुँच पाएंगे।"
डायोमेडेस ने कंधे उचकाते हुए कहा, "तो मैं तुम्हारी तरफ से क्रिश्चियन से बात कर लूंगा।"
"धन्यवाद।"
“देखते हैं उनका क्या रिएक्शन होता है। मनोचिकित्सक अक्सर अपने मरीजों को दवा देने के तरीके बताए जाने पर अच्छी प्रतिक्रिया नहीं देते। बेशक, मैं उनकी बात नहीं मानूंगा, लेकिन मैं ऐसा करना पसंद नहीं करता—चलिए, मैं उनसे इस विषय पर धीरे से बात करता हूं। मैं आपको बताऊंगा कि वे क्या कहते हैं।”
"जब आप उससे बात करें तो मेरा जिक्र न करना ही बेहतर होगा।"
“मैं समझ गया।” डायोमेडेस ने अजीब सी मुस्कान के साथ कहा। “ठीक है, मैं ऐसा नहीं करूँगा।”

उसने अपनी मेज से एक छोटा सा डिब्बा निकाला और ढक्कन हटाकर उसमें रखी सिगारों की कतार दिखाई। उसने मुझे एक सिगार दी। मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया।
“आप सिगरेट नहीं पीते?” वह आश्चर्यचकित लग रहा था। “आप मुझे सिगरेट पीने वाले जैसे लगते हैं।”
“नहीं, नहीं। कभी-कभार ही सिगरेट पी लेता हूँ... मैं छोड़ने की कोशिश कर रहा हूँ।”
“बहुत बढ़िया, आपके लिए अच्छा है।” उसने खिड़की खोली। “तुम्हें वो मज़ाक याद है ना, कि कोई थेरेपिस्ट होकर सिगरेट क्यों नहीं पी सकता? क्योंकि इसका मतलब है कि तुम अभी भी दिमागी रूप से परेशान हो।” वो हँसा और एक सिगार मुँह में डाल लिया। “मुझे लगता है कि हम सब यहाँ थोड़े पागल हैं। तुम्हें वो साइन याद है जो पहले दफ्तरों में लगा होता था? ‘यहाँ काम करने के लिए पागल होना ज़रूरी नहीं है, लेकिन अगर हो तो मदद मिलती है’?”
डायोमेडेस फिर हँसा। उसने सिगार जलाया और धुआँ बाहर उड़ाते हुए कश लिया। मैं उसे ईर्ष्या से देखता रहा।
अध्याय तीन
दोपहर के भोजन के बाद मैं गलियारों में इधर-उधर भटक रहा था, बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ रहा था। मेरा इरादा चुपके से बाहर जाकर सिगरेट पीने का था, लेकिन इंदिरा ने मुझे आग से बचने वाली सीढ़ी पर देख लिया। उसे लगा कि मैं रास्ता भटक गया हूँ।
“चिंता मत करो, थियो,” उसने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा। “मुझे यहाँ का रास्ता समझने में महीनों लग गए। जैसे कोई भूलभुलैया हो जिसका कोई हल न हो। मैं अब भी कभी-कभी रास्ता भटक जाती हूँ और मुझे यहाँ आए दस साल हो गए हैं।” वह हँसी। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, वह मुझे ऊपर “सुनहरे मछली के कटोरे” जैसे कमरे में चाय पिलाने के लिए ले गई।
मैं केतली चढ़ा देती हूँ। मौसम कितना खराब है, है ना? काश बर्फ गिर जाए और ये सब खत्म हो जाए... बर्फ एक बहुत ही शक्तिशाली कल्पनात्मक प्रतीक है, है ना? ये सब कुछ साफ कर देती है। क्या आपने ध्यान दिया है कि मरीज़ इसके बारे में कितनी बातें करते रहते हैं? ध्यान देना। ये दिलचस्प है।

मुझे आश्चर्य हुआ जब उसने अपने बैग में हाथ डाला और क्लिंग फिल्म में लिपटा हुआ केक का एक मोटा टुकड़ा निकाला। उसने उसे मेरे हाथ में थमाते हुए कहा, “इसे ले लो। अखरोट का केक। मैंने इसे कल रात तुम्हारे लिए बनाया था।”
“ओह, धन्यवाद, मैं—”
"मुझे पता है कि यह अपरंपरागत है, लेकिन अगर मैं मुश्किल मरीजों को सेशन के दौरान केक का एक टुकड़ा दे दूं तो मुझे हमेशा बेहतर परिणाम मिलते हैं।"
मैं हँस पड़ी। "मुझे यकीन है कि आप ऐसा ही करती हैं। क्या मैं एक मुश्किल मरीज़ हूँ?"
इंदिरा हंस पड़ीं। “नहीं, हालांकि मुझे लगता है कि यह मुश्किल कर्मचारियों पर भी उतना ही असरदार होता है—वैसे, आप भी वैसी नहीं हैं। थोड़ी सी चीनी मूड को बहुत अच्छा कर देती है। मैं कैंटीन के लिए केक बनाती थी, लेकिन फिर स्टेफ़नी ने इतना हंगामा मचा दिया, बाहर से खाना लाने पर स्वास्थ्य और सुरक्षा को लेकर ये सब बकवास। ऐसा लगता था जैसे मैं कोई फाइल तस्करी कर रही हूँ। लेकिन मैं अब भी छुप-छुप कर केक बनाती हूँ। तानाशाही सरकार के खिलाफ मेरा विद्रोह।”
इसे अजमाएं।"
यह कोई सवाल नहीं, बल्कि एक आदेश था। मैंने एक निवाला लिया। यह स्वादिष्ट था। चबाने में स्वादिष्ट, मेवेदार, मीठा। मेरा मुंह भरा हुआ था, इसलिए बोलते समय मैंने उसे हाथ से ढक लिया।
मुझे लगता है इससे आपके मरीजों का मूड जरूर अच्छा हो जाएगा।
इंदिरा हँसी और खुश दिखीं। मुझे समझ आया कि मैं उन्हें क्यों पसंद करती थी—उनमें मातृत्व की शांति झलकती थी। उन्होंने मुझे मेरी पुरानी थेरेपिस्ट रूथ की याद दिला दी। उन्हें परेशान या दुखी देखना मुश्किल था।
जब वह चाय बना रही थी, मैंने कमरे में एक नज़र डाली। नर्स स्टेशन हमेशा मनोरोग इकाई का केंद्र होता है, उसका दिल: कर्मचारी वहाँ आते-जाते रहते हैं, और यहीं से वार्ड का रोज़मर्रा का कामकाज चलता है; कम से कम सभी व्यावहारिक निर्णय यहीं लिए जाते हैं। नर्सें इस स्टेशन को 'गोल्डफिश बाउल' कहकर पुकारती थीं, क्योंकि इसकी दीवारें मज़बूत कांच की बनी थीं—मतलब, सैद्धांतिक रूप से, कर्मचारी मनोरंजन कक्ष में मौजूद मरीज़ों पर नज़र रख सकते थे। व्यवहार में, मरीज़ बेचैनी से

बाहर मंडराते रहते थे, अंदर घूरते रहते थे, हमें देखते रहते थे, इसलिए हम ही लगातार निगरानी में रहते थे। छोटी सी जगह में पर्याप्त कुर्सियाँ नहीं थीं, और जो कुर्सियाँ थीं, उन पर आमतौर पर नर्सें नोट्स टाइप करती रहती थीं। इसलिए आप ज़्यादातर कमरे के बीच में खड़े रहते थे या किसी डेस्क से अजीब तरह से टिके रहते थे, जिससे जगह हमेशा भीड़भाड़ वाली लगती थी, चाहे वहाँ कितने भी लोग हों।
“ये लो, प्यारी।” इंदिरा ने मुझे चाय का मग थमा दिया।
"धन्यवाद।"
क्रिश्चियन धीरे-धीरे अंदर आया और उसने मुझे सिर हिलाकर अभिवादन किया। उसके मुंह से पुदीने की च्युइंग गम की तेज़ गंध आ रही थी, जिसे वह हमेशा चबाता रहता था। मुझे याद आया कि जब हम ब्रॉडमूर में साथ थे, तब वह खूब सिगरेट पीता था; यही एक चीज़ थी जो हम दोनों में समान थी। तब से क्रिश्चियन ने सिगरेट पीना छोड़ दिया था, शादी कर ली थी और उसकी एक बेटी भी हो गई थी। मैं सोच रही थी कि वह किस तरह का पिता होगा। वह मुझे खास दयालु तो नहीं लगा।
उसने मुझे एक ठंडी मुस्कान दी। "तुम्हें फिर से इस हालत में देखकर अजीब लग रहा है, थियो।"
"छोटी सी दुनिया।"
“मानसिक स्वास्थ्य के लिहाज़ से, हाँ।” क्रिश्चियन ने यह बात इस तरह कही मानो वह यह जताना चाह रहा हो कि वह शायद और भी व्यापक क्षेत्रों में मौजूद हो सकता है। मैंने कल्पना करने की कोशिश की कि वे क्षेत्र क्या हो सकते हैं। मैं उसे केवल जिम में या रग्बी मैदान पर स्क्रैम में ही देख पाया।
क्रिश्चियन ने कुछ सेकंड तक मेरी ओर देखा। मैं उसकी इस आदत को भूल गया था कि वह अक्सर काफी देर तक रुकता था, जिससे मुझे जवाब देने से पहले सोचना पड़ता था।
ब्रॉडमूर की तरह ही इसने मुझे यहां भी उतना ही परेशान किया।
अंत में उन्होंने कहा, "आप एक बेहद दुर्भाग्यपूर्ण समय पर टीम में शामिल हो रहे हैं। इस जंगल पर संकट की तलवार लटक रही है।"
"क्या आपको लगता है कि यह इतना बुरा है?"

“यह तो बस समय की बात है। ट्रस्ट हमें देर-सवेर बंद करवा ही देगा। तो सवाल यह है कि आप यहां क्या कर रहे हैं?”
"आपका क्या मतलब है?"
"खैर, चूहे डूबते जहाज को छोड़ देते हैं। वे उस पर चढ़ते नहीं हैं।"
क्रिश्चियन की खुली आक्रामकता देखकर मैं चौंक गया। मैंने उसके बहकावे में न आने का फैसला किया। मैंने कंधे उचका दिए। "शायद। लेकिन मैं मुखबिर नहीं हूँ।"
क्रिश्चियन के जवाब देने से पहले ही, एक ज़ोरदार धमाके की आवाज़ से हम चौंक गए। एलिफ शीशे के दूसरी तरफ थी और मुट्ठियों से उस पर वार कर रही थी। उसका चेहरा शीशे से सटा हुआ था, जिससे उसकी नाक दब गई थी, चेहरे के हाव-भाव बिगड़ गए थे और वह लगभग राक्षसी लग रही थी।
मैं अब ये सब बकवास बर्दाश्त नहीं करूँगा। मुझे इन गोलियों से नफरत है, यार—"
क्रिश्चियन ने शीशे में एक छोटा सा छेद खोला और उसके ज़रिए बोला, "अभी इस बारे में बात करने का समय नहीं है, एलिफ।"
मैं तुमसे कह रहा हूँ, मैं अब इन्हें नहीं लूंगा, इनसे मुझे बहुत उल्टी आती है—"
मैं अभी इस बारे में बात नहीं कर रहा हूँ। मुझसे मिलने के लिए अपॉइंटमेंट लें। कृपया दूर हट जाइए।
एलिफ ने तेवर चढ़ाए और कुछ पल सोच-विचार करने लगी। फिर वह मुड़ी और लड़खड़ाते हुए चली गई, जहाँ उसकी नाक शीशे से लगी थी, वहाँ हल्की सी नमी का निशान रह गया।
मैंने कहा, "अद्भुत व्यक्ति है।"
क्रिश्चियन ने धीमी आवाज़ में कहा, "मुश्किल है।"
इंदिरा ने सिर हिलाया। "बेचारी एलिफ।"
उसे किसलिए जेल हुई है?
“दोहरा हत्याकांड,” क्रिश्चियन ने कहा। “उसने अपनी माँ और अपनी बहन की हत्या कर दी।”
उन्होंने सोते समय उनका दम घोंट दिया।
मैंने शीशे से झाँका। एलिफ अन्य मरीजों के साथ शामिल हो गई। वह उनसे काफी लंबी थी। उनमें से एक ने उसके हाथ में कुछ पैसे दिए, जिन्हें उसने जेब में रख लिया।

तभी मैंने कमरे के दूसरे छोर पर एलिसिया को खिड़की के पास अकेले बैठे हुए देखा, वह बाहर देख रही थी। मैंने कुछ देर तक उसे देखा।
क्रिश्चियन ने मेरी नज़र का पीछा करते हुए कहा, "वैसे, मैं एलिसिया के बारे में प्रोफेसर डायोमेडेस से बात कर रहा था। मैं देखना चाहता हूँ कि रिस्पेरिडोन की कम खुराक पर उसका क्या हाल रहता है। मैंने उसकी खुराक घटाकर पाँच मिलीग्राम कर दी है।"
"अच्छा ऐसा है।"
"मुझे लगा कि आप यह जानना चाहेंगे—क्योंकि मैंने सुना है कि आपने उनसे एक सेशन के लिए मुलाकात की थी।"
"हाँ।"
"हमें उस पर कड़ी नजर रखनी होगी कि वह इस बदलाव पर कैसी प्रतिक्रिया देती है।"
और हाँ, अगली बार जब आपको मेरे मरीजों को दवा देने के तरीके से कोई समस्या हो, तो सीधे मुझसे बात करना। मेरी पीठ पीछे डियोमेडेस के पास मत जाना।”
क्रिश्चियन ने मुझे घूरकर देखा।
मैंने भी उसे देखकर मुस्कुरा दिया। “मैं कहीं छिपकर नहीं आई थी। मुझे आपसे सीधे बात करने में कोई दिक्कत नहीं है, क्रिश्चियन।”
कुछ देर तक असहज सन्नाटा छाया रहा। क्रिश्चियन ने मानो मन ही मन फैसला कर लिया हो, वैसे ही खुद से सिर हिलाया। "तुम्हें पता है एलिसिया को बॉर्डरलाइन पर्सनैलिटी डिसऑर्डर है? थेरेपी से उस पर कोई असर नहीं पड़ेगा। तुम अपना समय बर्बाद कर रहे हो।"
"अगर वह बोल ही नहीं सकती तो आपको कैसे पता चलेगा कि वह बॉर्डरलाइन पर्सनैलिटी डिसऑर्डर से पीड़ित है?"
बात नहीं करेंगे।
"क्या आपको लगता है कि वह नाटक कर रही है?"
"जी हां, वास्तव में, मैं करता हूं।"
"अगर वह नाटक कर रही है, तो वह बॉर्डरलाइन पर्सनैलिटी डिसऑर्डर की मरीज कैसे हो सकती है?"
क्रिश्चियन चिढ़ गया था।

इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, इंदिरा ने बीच में ही टोकते हुए कहा, “मैं पूरी इज़्ज़त के साथ कहना चाहती हूँ कि मुझे नहीं लगता कि 'बॉर्डरलाइन' जैसे व्यापक शब्द ज़्यादा मददगार हैं। इनसे हमें कोई उपयोगी जानकारी नहीं मिलती।” उसने क्रिश्चियन की ओर देखा। “यह एक ऐसा विषय है जिस पर क्रिश्चियन और मैं अक्सर असहमत होते हैं।”

मैंने उससे पूछा, "एलिसिया के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?"

इंदिरा ने कुछ पल इस सवाल पर विचार किया। “मुझे उसके प्रति मातृत्व की भावना महसूस होती है। यह मेरा प्रति-स्थानांतरण है, यही वह भावना है जो वह मुझमें जगाती है—मुझे लगता है कि उसे किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो उसकी देखभाल करे।” इंदिरा ने मेरी तरफ मुस्कुराते हुए कहा, “और अब उसके पास कोई है। उसके पास आप हैं।”

क्रिश्चियन अपनी उस चिड़चिड़ी हंसी हंसा। "मुझे माफ करना, मैं इतना नासमझ हूं, लेकिन अगर एलिसिया बात ही नहीं करेगी तो उसे थेरेपी से फायदा कैसे होगा?"

इंदिरा ने कहा, “थेरेपी सिर्फ बातचीत करने के बारे में नहीं है। यह एक सुरक्षित माहौल प्रदान करने के बारे में है। जैसा कि आप जानते ही होंगे, अधिकांश संचार गैर-मौखिक होता है।”

क्रिश्चियन ने मेरी तरफ आंखें घुमाईं। "शुभकामनाएं, दोस्त। तुम्हें इसकी जरूरत पड़ेगी।"

चौथा अध्याय

“हैलो, एलिसिया,” मैंने कहा।

दवा की खुराक कम किए हुए अभी कुछ ही दिन बीते थे, लेकिन एलिसिया में बदलाव साफ दिखने लगा था। उसकी चाल-ढाल पहले से कहीं अधिक सहज हो गई थी। उसकी आँखें पहले से ज़्यादा साफ थीं। धुंधली निगाहें गायब हो गई थीं। वह बिल्कुल एक अलग ही इंसान लग रही थी।

वह यूरी के साथ दरवाजे पर खड़ी थी और झिझक रही थी। वह मुझे घूर रही थी, मानो मुझे पहली बार देख रही हो, मुझे परख रही हो, मेरा आकलन कर रही हो। मैं सोच रहा था कि वह क्या निष्कर्ष निकाल रही है। जाहिर है, उसने अंदर जाना सुरक्षित समझा और अंदर चली गई। बिना कुछ कहे, वह बैठ गई।

मैंने यूरी को जाने का इशारा किया। उसने एक पल सोचा, फिर दरवाजा बंद कर लिया।
मैं एलिसिया के सामने बैठ गया। एक पल के लिए सन्नाटा छा गया। बाहर बारिश की बेचैन करने वाली आवाज़ के अलावा और कुछ नहीं था, बारिश की बूँदें खिड़की पर टकरा रही थीं।
अंततः मैंने बोलना शुरू किया।
"तुम कैसा महसूस कर रहे हो?"
कोई प्रतिक्रिया नहीं। एलिसिया मुझे घूरती रही। उसकी आँखें दीपक की तरह थीं, पलकें नहीं झपका रही थीं।
मैंने अपना मुंह खोला और फिर बंद कर दिया। मैंने बोलने की इच्छा को रोकने का पक्का इरादा कर लिया था। इसके बजाय, चुप रहकर और बस वहीं बैठे रहकर, मैं कुछ और, कुछ बिना बोले, कुछ कहना चाहती थी: कि हमारा इस तरह साथ बैठना ठीक है, कि मैं उसे चोट नहीं पहुँचाऊँगी, कि वह मुझ पर भरोसा कर सकती है। एलिसिया को बोलने के लिए राजी करने के लिए, मुझे उसका भरोसा जीतना ज़रूरी था। और इसमें समय लगेगा—कुछ भी रातोंरात नहीं हो सकता। यह धीरे-धीरे आगे बढ़ेगा, जैसे कोई ग्लेशियर, लेकिन आगे बढ़ेगा ज़रूर।
हम चुपचाप बैठे रहे, तभी मेरे सिर के कनपटी में तेज़ दर्द होने लगा। सिरदर्द की शुरुआत हो रही थी। एक स्पष्ट लक्षण। मुझे रूथ की याद आई, जो कहा करती थी, "एक अच्छा थेरेपिस्ट बनने के लिए, आपको अपने मरीज़ों की भावनाओं को समझने और उनके प्रति संवेदनशील होना चाहिए।"
मरीजों की भावनाओं को समझें—लेकिन उन्हें अपने ऊपर हावी न होने दें—वे आपकी भावनाएं नहीं हैं—
ये तुम्हारे नहीं हैं।" दूसरे शब्दों में, मेरे सिर में ये लगातार हो रही धड़कन मेरी नहीं थी; ये एलिसिया की थी। और उदासी की ये अचानक लहर—मरने की ये इच्छा—भी मेरी नहीं थी। ये उसकी थी, पूरी तरह उसकी। मैं वहाँ बैठी रही, उसके लिए ये सब महसूस करती रही, मेरा सिर दर्द कर रहा था, मेरा पेट मरोड़ रहा था, मानो घंटों बीत गए हों। आखिरकार, पचास मिनट पूरे हो गए।
मैंने अपनी घड़ी देखी। "हमें अब इसे खत्म करना होगा।"

एलिसिया ने अपना सिर नीचे झुकाया और अपनी गोद की ओर देखने लगी। मैं झिझक गई। मैंने अपना संयम खो दिया। मैंने अपनी आवाज़ धीमी की और दिल से बोली।

“मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ, एलिसिया। मैं चाहता हूँ कि तुम इस बात पर विश्वास करो। सच तो यह है कि मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से देखने में मदद करना चाहता हूँ।”

यह देखकर एलिसिया ने ऊपर देखा। उसने मुझे घूरकर देखा—जैसे वह मुझे भेद ही न रही हो।

उसकी आँखों ने चीखते हुए कहा, "तुम मेरी मदद नहीं कर सकते। खुद को देखो, तुम तो खुद की भी मदद नहीं कर सकते। तुम इतना ज्ञान और बुद्धिमत्ता का दिखावा करते हो, लेकिन मेरी जगह तुम्हें यहाँ बैठना चाहिए था। सनकी। धोखेबाज। झूठा। झूठा।"

जब उसने मेरी ओर देखा, तो मुझे वह बात समझ में आ गई जो पूरे सेशन के दौरान मुझे परेशान कर रही थी। इसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है, लेकिन एक मनोचिकित्सक शारीरिक हावभाव, बोलने के तरीके और आँखों की चमक से मानसिक पीड़ा को जल्दी पहचान लेता है—कुछ डरावना, भयभीत, पागलपन भरा। और यही बात मुझे परेशान कर रही थी: सालों तक दवा लेने के बावजूद, उसने जो कुछ भी सहा और झेला था, उसके बावजूद एलिसिया की नीली आँखें गर्मियों के दिन की तरह साफ और निर्मल थीं। वह पागल नहीं थी। तो फिर वह क्या थी? उसकी आँखों में क्या भाव था? सही शब्द क्या था? यह था—

इससे पहले कि मैं अपना विचार पूरा कर पाती, एलिसिया कुर्सी से उछल पड़ी। उसने अपने हाथ पंजों की तरह फैलाकर मेरी ओर झपट्टा मारा। मुझे हिलने या बचने का समय ही नहीं मिला। वह मेरे ऊपर गिर पड़ी, जिससे मेरा संतुलन बिगड़ गया। हम दोनों ज़मीन पर गिर पड़े।

मेरे सिर का पिछला हिस्सा धड़ाम से दीवार से टकराया। उसने मेरा सिर बार-बार दीवार पर पटका और खरोंचने, थप्पड़ मारने और नोचने लगी।

उसे नीचे गिराने में मुझे अपनी पूरी ताकत लगानी पड़ी।

मैं ज़मीन पर रेंगता हुआ मेज तक पहुँचा। मैंने अलार्म ढूंढने की कोशिश की। जैसे ही मेरी उंगलियाँ उसे पकड़ने वाली थीं, एलिसिया मुझ पर कूद पड़ी और अलार्म मेरे हाथ

से छीन लिया।
“एलिसिया—”
उसकी उंगलियाँ मेरी गर्दन पर कसकर जकड़ी हुई थीं, दम घोंट रही थीं—मैंने अलार्म तक पहुँचने की कोशिश की लेकिन पहुँच नहीं पाई। उसके हाथ और गहरे धंस गए—मैं साँस नहीं ले पा रही थी। मैंने फिर से झपट्टा मारा—इस बार मैं अलार्म को पकड़ने में कामयाब हो गई। मैंने उसे दबा दिया।
एक चीखती हुई आवाज़ अचानक मेरे कानों में गूंज उठी, जिससे मेरे कान सुन्न हो गए। मुझे दूर से एक दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनाई दी और यूरी ने मदद के लिए पुकारा। एलिसिया को मुझसे दूर खींच लिया गया, उसने मेरा गला दबाना छोड़ दिया —और मैं हांफते हुए सांस लेने लगी।
एलिसिया को काबू में रखने के लिए चार नर्सों की ज़रूरत पड़ी। वह बुरी तरह छटपटा रही थी, लात मार रही थी और किसी पागल प्राणी की तरह लड़ रही थी। वह इंसान जैसी नहीं, बल्कि किसी जंगली जानवर जैसी लग रही थी; किसी भयानक चीज़ जैसी। तभी क्रिश्चियन आया और उसने उसे बेहोश कर दिया। वह अचेत हो गई।
अंततः सन्नाटा छा गया।
अध्याय पाँच
"इससे थोड़ी तकलीफ तो होगी।"
यूरो मछली के कटोरे में मेरे खून बहते हुए खरोंचों की देखभाल कर रहा था। उसने एंटीसेप्टिक की बोतल खोली और उसे रुई पर लगाया। दवा की गंध मुझे स्कूल के बीमार कक्ष में ले गई, जहाँ मुझे खेल के मैदान में लगी लड़ाइयों के निशान, छिले हुए घुटने और कोहनियों की यादें ताजा हो गईं। मुझे मैट्रन की देखभाल, पट्टी बांधने और मेरी बहादुरी के लिए उबली हुई मिठाई मिलने का गर्मजोशी भरा और आरामदायक एहसास याद आया। फिर एंटीसेप्टिक की जलन ने मुझे अचानक वर्तमान में वापस ला दिया, जहाँ मेरे घावों का इलाज इतनी आसानी से नहीं हो सकता था। मैं दर्द से कराह उठा।
"ऐसा लग रहा है जैसे उसने मेरे सिर पर हथौड़े से वार किया हो।"
“यह बहुत बुरी चोट है। कल तक यहाँ सूजन आ जाएगी। हमें इस पर नज़र रखनी चाहिए।” यूरी ने सिर हिलाया। “मुझे तुम्हें उसके साथ अकेला नहीं छोड़ना चाहिए

था।”
मैंने तुम्हें कोई विकल्प नहीं दिया था।
उसने धीमी आवाज़ में कहा, "यह बात कुछ हद तक सही है।"
“यह न कहने के लिए धन्यवाद कि ‘मैंने तो पहले ही कहा था।’ इसे ध्यान में रखा गया है और इसकी सराहना की जाती है।”
यूरी ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है, दोस्त। प्रोफेसर खुद ही कह देंगे।"
उन्होंने आपको अपने कार्यालय में मिलने के लिए कहा है।
“आह।”
"उसके हावभाव से तो लगता है कि यह काम तुम करोगे, मैं नहीं।"
मैं उठने लगा।
यूरी मुझे ध्यान से देख रहा था। “जल्दी मत करो। एक मिनट लो। सुनिश्चित करो कि तुम तैयार हो। अगर चक्कर या सिरदर्द हो तो मुझे बताना।”
मैं ठीक हूँ। सचमुच।
यह पूरी तरह सच नहीं था, लेकिन मैं जितना दिख रहा था उतना बुरा महसूस नहीं कर रहा था। खून से सने खरोंच और गले के आसपास काले निशान थे जहाँ उसने मुझे गला घोंटने की कोशिश की थी।
उसने अपनी उंगलियों से इतनी गहराई तक खोदा था कि खून निकल आया था।
मैंने प्रोफेसर के दरवाजे पर दस्तक दी। मुझे देखकर डायोमेडेस की आँखें चौड़ी हो गईं। उन्होंने कहा, "पो पो पो। क्या तुम्हें टांके लगवाने की ज़रूरत है?"
“नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं। मैं ठीक हूँ।”
डायोमेडेस ने अविश्वास भरी नज़रों से मुझे देखा और अंदर ले गया। "अंदर आओ, थियो। बैठ जाओ।"
बाकी लोग पहले से ही वहां मौजूद थे। क्रिश्चियन और स्टेफ़नी खड़े थे।
इंदिरा खिड़की के पास बैठी थी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई औपचारिक स्वागत समारोह हो रहा हो, और मुझे चिंता होने लगी कि कहीं मुझे नौकरी से निकाल तो नहीं दिया जाएगा।

डायोमेडेस अपनी मेज के पीछे बैठे थे। उन्होंने मुझे खाली कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। मैं बैठ गया। वे कुछ पल चुपचाप मुझे देखते रहे, अपनी उंगलियों को थपथपाते रहे, यह सोचते हुए कि क्या कहें या कैसे कहें। लेकिन इससे पहले कि वे कुछ तय कर पाते, स्टेफ़नी ने उनसे पहले ही बोलना शुरू कर दिया।
“यह एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। बेहद दुर्भाग्यपूर्ण।” वह मेरी ओर मुड़ी। “ज़ाहिर है, हम सभी को राहत मिली है कि आप सुरक्षित हैं। लेकिन इससे यह तथ्य नहीं बदलता कि इससे कई सवाल उठते हैं। और पहला सवाल यह है कि आप एलिसिया के साथ अकेले क्या कर रहे थे?”
“यह मेरी गलती थी। मैंने यूरी को जाने के लिए कहा था। मैं इसकी पूरी जिम्मेदारी लेता हूँ।”
“आपने यह निर्णय किसके अधिकार से लिया? यदि आप दोनों में से कोई भी गंभीर रूप से घायल हो जाता तो—”
डायोमेडेस ने बीच में ही टोकते हुए कहा, “कृपया इसे इतना नाटकीय न बनाएं। शुक्र है कि किसी को चोट नहीं आई।” उन्होंने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा, “कुछ मामूली खरोंचों के लिए तो कोर्ट-मार्शल की ज़रूरत नहीं है।”
स्टेफ़नी ने मुंह बनाया। "मुझे नहीं लगता कि चुटकुले सुनाना उचित है, प्रोफ़ेसर। मुझे बिल्कुल भी ऐसा नहीं लगता।"
“कौन मज़ाक कर रहा है?” डायोमेडेस मेरी तरफ मुड़ा। “मैं बिल्कुल गंभीर हूँ। बताओ, थियो। क्या हुआ?”
मुझे महसूस हुआ कि सबकी निगाहें मुझ पर टिकी हैं; मैंने डायोमेडेस से बात की। मैंने सोच-समझकर शब्द चुने। “खैर, उसने मुझ पर हमला किया। यही हुआ था।”
“यह तो स्पष्ट है। लेकिन क्यों? मेरा मानना है कि यह बिना किसी उकसावे के हुआ था?”
“हां। कम से कम, सचेत रूप से।”
“और अनजाने में?”
"खैर, जाहिर है एलिसिया किसी न किसी स्तर पर मेरी प्रतिक्रिया दे रही थी। मेरा मानना है कि इससे पता चलता है कि वह कितना संवाद करना चाहती है।"
क्रिश्चियन हँस पड़ा। "क्या आप इसे संचार कहते हैं?"

“हां, मैं करता हूं। क्रोध एक शक्तिशाली संचार माध्यम है। अन्य मरीज—वे लोग जो बस खाली बैठे रहते हैं, जैसे कोई आत्मा—उन्होंने हार मान ली है। एलिसिया ने नहीं मानी है।”
उसके हमले से हमें कुछ ऐसा पता चलता है जिसे वह सीधे तौर पर व्यक्त नहीं कर सकती—उसके दर्द, उसकी हताशा, उसकी पीड़ा के बारे में। वह मुझसे कह रही थी कि मैं उस पर उम्मीद न छोड़ूँ। अभी नहीं।
क्रिश्चियन ने आंखें घुमाईं। “इसका एक कम काव्यात्मक अर्थ यह हो सकता है कि उसने अपनी दवाइयां लेना बंद कर दिया था और उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया था।” वह डायोमेडेस की ओर मुड़ा। “मैंने आपको पहले ही बता दिया था कि ऐसा होगा, प्रोफेसर। मैंने आपको खुराक कम करने के बारे में चेतावनी दी थी।”
“सच में, क्रिश्चियन?” मैंने कहा। “मुझे लगा यह तुम्हारा ही विचार था।”
क्रिश्चियन ने आंखें घुमाकर मेरी बात को खारिज कर दिया। मुझे लगा कि वह पूरी तरह से मनोचिकित्सक है। मेरा मतलब यह है कि मनोचिकित्सक मनोविश्लेषणात्मक सोच से सावधान रहते हैं। वे अधिक जैविक, रासायनिक और सबसे बढ़कर व्यावहारिक दृष्टिकोण को प्राथमिकता देते हैं—जैसे कि एलिसिया को हर भोजन के साथ दी जाने वाली गोलियों का प्याला। क्रिश्चियन की रूखी, संकीर्ण निगाहों ने मुझे बता दिया कि मैं इसमें कुछ भी योगदान नहीं दे सकता।
लेकिन डायोमेडेस ने मुझे अधिक ध्यानपूर्वक देखा। "इससे तुम्हारा मन तो नहीं बदला, थियो, आखिर हुआ क्या?"
मैंने सिर हिलाया। "इसके विपरीत, मुझे प्रोत्साहन मिला है।"
डायोमेडेस ने संतुष्ट होकर सिर हिलाया। “अच्छा। मैं सहमत हूँ, आपके प्रति ऐसी तीव्र प्रतिक्रिया की जाँच करना निश्चित रूप से ज़रूरी है। मुझे लगता है कि आपको आगे बढ़ते रहना चाहिए।”
यह सुनकर स्टेफ़नी खुद को और रोक नहीं पाई। "यह तो बिलकुल नामुमकिन है।"
डायोमेडेस ऐसे बोलता रहा जैसे उसने कुछ कहा ही न हो। वह लगातार मेरी तरफ देखता रहा।
"क्या आपको लगता है कि आप उसे बोलने के लिए मना सकते हैं?"

इससे पहले कि मैं जवाब दे पाता, पीछे से एक आवाज आई, "मुझे विश्वास है कि वह कर सकता है, हाँ।"
वो इंदिरा थी। मैं लगभग भूल ही गई थी कि वो वहाँ थी। मैं पीछे मुड़ी।
इंदिरा ने कहा, "और एक तरह से, एलिसिया ने बोलना शुरू कर दिया है। वह थियो के माध्यम से संवाद कर रही है - वह उसका हिमायती है। यह पहले से ही हो रहा है।"
डायोमेडेस ने सिर हिलाया। वह एक पल के लिए सोच में डूबा हुआ सा लग रहा था। मैं जानता था कि उसके मन में क्या चल रहा है—एलिसिया बेरेंसन एक प्रसिद्ध मरीज़ और एक शक्तिशाली महिला थी।
ट्रस्ट के साथ सौदेबाजी का एक जरिया। अगर हम उनके साथ ठोस प्रगति कर पाते हैं, तो ग्रोव को बंद होने से बचाने में हमारी स्थिति काफी मजबूत हो जाएगी।
“परिणाम देखने में कितना समय लगेगा?” डायोमेडेस ने पूछा।
मैंने कहा, "मैं इसका जवाब नहीं दे सकता। आप भी यह बात मुझसे बेहतर जानते हैं। इसमें जितना समय लगना चाहिए, उतना लगेगा। छह महीने। एक साल। शायद उससे भी ज़्यादा—साल भी लग सकते हैं।"
आपके पास छह सप्ताह हैं।
स्टेफ़नी ने खुद को सीधा किया और अपनी बाहें मोड़ लीं। "मैं इस यूनिट की मैनेजर हूँ, और मैं इसे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकती—"
“मैं ग्रोव का क्लिनिकल डायरेक्टर हूं। यह मेरा फैसला है, आपका नहीं। यहां हमारे धैर्यवान चिकित्सक को होने वाली किसी भी चोट की पूरी जिम्मेदारी मेरी है,” डायोमेडेस ने मेरी ओर आंख मारते हुए कहा।
स्टेफ़नी ने आगे कुछ नहीं कहा। उसने डायोमेडेस को घूरा, फिर मुझे। वह मुड़ी और बाहर चली गई।
“अरे बाप रे,” डायोमेडेस ने कहा। “लगता है तुमने स्टेफ़नी को अपना दुश्मन बना लिया है। कितना दुर्भाग्यपूर्ण है।” उसने इंदिरा के साथ मुस्कुराते हुए कहा, फिर मुझे गंभीरता से देखा। “छह सप्ताह। मेरी देखरेख में। समझे?”
मैं सहमत हो गया—मेरे पास सहमत होने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। "छह सप्ताह।"
"अच्छा।"

क्रिश्चियन गुस्से में खड़ा हो गया। "एलिसिया छह सप्ताह में भी नहीं बोलेगी, या साठ साल में भी नहीं। आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं।"
वह बाहर चला गया। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्रिश्चियन को इतना यकीन क्यों था कि मैं असफल हो जाऊंगी।
लेकिन इसने मुझे सफल होने के लिए और भी अधिक दृढ़ संकल्पित कर दिया।
अध्याय छह
मैं थका हुआ घर पहुँचा। आदत के चलते मैंने दालान की बत्ती जला दी, हालाँकि बल्ब फ्यूज हो चुका था। हम इसे बदलने की सोच रहे थे, लेकिन भूलते रहते थे।
मुझे तुरंत पता चल गया कि कैथी वहाँ नहीं थी। बहुत सन्नाटा था; वह सन्नाटे में नहीं रह सकती थी। वह शोर मचाने वाली नहीं थी, लेकिन उसकी दुनिया आवाज़ों से भरी थी। फोन पर बातें करना, संवाद दोहराना, फिल्में देखना, गाना गाना, गुनगुनाना, ऐसे बैंड सुनना जिनके बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना था। लेकिन अब फ्लैट एकदम सन्नाटे में था।
मैंने उसका नाम पुकारा। शायद आदत के चलते—या फिर शायद दोषी अंतरात्मा के कारण, यह सुनिश्चित करने के लिए कि मैं कोई कदम उठाने से पहले अकेला हूँ?
“कैथी?”
कोई जवाब नहीं मिला।
मैं लड़खड़ाते हुए अंधेरे में लिविंग रूम तक पहुंचा। मैंने लाइट जला दी।
कमरा मुझे एकदम से चौंका गया, जैसे नया फर्नीचर हमेशा चौंका देता है, जब तक कि आप उससे अभ्यस्त न हो जाएं: नई कुर्सियाँ, नए तकिए; नए रंग, लाल और पीले, जहाँ पहले काला और सफेद हुआ करता था। मेज पर गुलाबी लिली का एक गुलदस्ता रखा था—कैथी के पसंदीदा फूल—उनकी तेज़ खुशबू से हवा घनी और साँस लेने में मुश्किल हो रही थी।
समय क्या हुआ था? साढ़े आठ बजे। वह कहाँ थी? रिहर्सल में? वह आरएससी में ओथेलो के एक नए प्रोडक्शन में थी, और वह कुछ खास अच्छा नहीं चल रहा था।
लगातार रिहर्सल का उन पर बुरा असर पड़ रहा था। वह साफ़ तौर पर थकी हुई, पीली पड़ी हुई, सामान्य से दुबली लग रही थीं और उन्हें सर्दी भी हो गई थी। उन्होंने कहा, "मैं हर समय बहुत बीमार रहती हूँ। मैं पूरी तरह से थक चुकी हूँ।"

यह सच था; वह हर रात रिहर्सल से देर से लौटती थी, बुरी हालत में; वह जम्हाई लेती और सीधे बिस्तर पर गिर जाती। इसलिए वह कम से कम दो घंटे तक घर नहीं लौट पाएगी। मैंने जोखिम उठाने का फैसला किया।

मैंने गांजे का जार उसके छिपे हुए स्थान से निकाला और एक जॉइंट बनाना शुरू कर दिया।

मैं यूनिवर्सिटी के दिनों से ही मारिजुआना पी रहा था। पहली बार इसका सामना मुझे अपने पहले सेमेस्टर में हुआ, जब मैं अकेला था और मेरे कोई दोस्त नहीं थे। मैं अपने आस-पास के खूबसूरत और आत्मविश्वासी युवाओं से बात शुरू करने से इतना डर रहा था कि हिम्मत ही नहीं हो रही थी। मैं वहाँ से निकलने की सोच ही रहा था कि मेरे बगल में खड़ी लड़की ने मुझे कुछ दिया। मुझे लगा कि यह सिगरेट है, लेकिन तभी मुझे तीखा, तेज़, काले धुएँ की गंध आई। शर्म के मारे मना नहीं कर पाया, इसलिए मैंने उसे ले लिया और जॉइंट को अपने होठों से लगाया। वह ठीक से रोल नहीं किया गया था और किनारे से खुल रहा था। उसका सिरा गीला था और उस पर उसकी लिपस्टिक के लाल रंग के धब्बे थे। इसका स्वाद सिगरेट से अलग था; यह ज़्यादा गाढ़ा, ज़्यादा तीखा और ज़्यादा अनोखा था। मैंने गाढ़ा धुआँ निगल लिया और खाँसी रोकने की कोशिश की। शुरू में मुझे बस हल्का सा चक्कर आया। सेक्स की तरह, मारिजुआना को लेकर ज़रूरत से ज़्यादा चर्चा थी। फिर—लगभग एक मिनट बाद—कुछ हुआ। कुछ अविश्वसनीय। ऐसा लगा जैसे मैं खुशी की एक ज़बरदस्त लहर में भीग गया हूँ। मुझे सुरक्षित, तनावमुक्त, पूरी तरह से सहज, मूर्खतापूर्ण और आत्म-सचेत महसूस हुआ।

बस, यही बात थी। देखते ही देखते मैं हर दिन गांजा पीने लगा। यह मेरा सबसे अच्छा दोस्त, मेरी प्रेरणा, मेरा सहारा बन गया। गांजा लपेटने, चाटने और जलाने का एक अंतहीन सिलसिला। मैं तो बस कागज़ों की सरसराहट और उस मदहोश कर देने वाले नशे की उम्मीद से ही मदहोश हो जाता था।

नशे की लत की उत्पत्ति के बारे में कई तरह के सिद्धांत सामने रखे गए हैं। यह आनुवंशिक हो सकता है; यह रासायनिक हो सकता है; यह मनोवैज्ञानिक हो सकता है। लेकिन मारिजुआना मुझे शांत करने से कहीं अधिक कर रहा था: महत्वपूर्ण रूप

से, इसने मेरे भावनाओं को अनुभव करने के तरीके को बदल दिया; इसने मुझे एक लाड़ले बच्चे की तरह सुरक्षित और सुरक्षित रखा।
दूसरे शब्दों में कहें तो, उसमें मैं समाहित था।
मनोविश्लेषक डब्ल्यू. आर. बायोन ने शिशु के दर्द को संभालने की माँ की क्षमता का वर्णन करने के लिए 'संयम' शब्द का प्रयोग किया। याद रखें, शिशुकाल आनंद का समय नहीं होता; यह भय का समय होता है। शिशु के रूप में हम एक अजीब, अपरिचित दुनिया में फँसे होते हैं, ठीक से देख नहीं पाते, अपने शरीर को देखकर लगातार आश्चर्यचकित होते हैं, भूख, गैस और मल त्याग से चिंतित होते हैं, और अपनी भावनाओं से अभिभूत होते हैं। हम सचमुच आक्रमण के अधीन होते हैं। हमें अपनी माँ की आवश्यकता होती है जो हमारी पीड़ा को शांत करे और हमारे अनुभव को अर्थ दे। ऐसा करते हुए, हम धीरे-धीरे अपनी शारीरिक और भावनात्मक स्थितियों को स्वयं संभालना सीखते हैं।
लेकिन खुद को नियंत्रित करने की हमारी क्षमता सीधे तौर पर हमारी माँ की हमें नियंत्रित करने की क्षमता पर निर्भर करती है—अगर उन्होंने खुद कभी अपनी माँ से इस तरह का नियंत्रण नहीं पाया, तो वे हमें वह कैसे सिखा सकती हैं जो उन्हें खुद नहीं पता? जो व्यक्ति खुद को नियंत्रित करना नहीं सीख पाता, वह जीवन भर चिंता से ग्रस्त रहता है, ऐसी भावनाएँ जिन्हें बियोन ने सही ही नाम दिया है - अनाम भय। ऐसा व्यक्ति लगातार बाहरी स्रोतों से इस अतृप्त नियंत्रण की तलाश करता रहता है—उसे इस अंतहीन चिंता को कम करने के लिए शराब या गांजे की ज़रूरत होती है। इसीलिए मुझे गांजे की लत लग गई।
मैंने थेरेपी के दौरान मारिजुआना के बारे में बहुत बात की। मैं इसे छोड़ने के विचार से जूझ रहा था और सोच रहा था कि यह विचार मुझे इतना डरा क्यों रहा है। रूथ ने कहा कि ज़बरदस्ती और पाबंदी से कभी कुछ अच्छा नहीं होता, और खुद को मारिजुआना के बिना जीने के लिए मजबूर करने के बजाय, बेहतर शुरुआत यह स्वीकार करना हो सकता है कि मैं अब इस पर निर्भर हो गया हूँ, और इसे छोड़ना नहीं चाहता या छोड़ नहीं सकता। रूथ ने तर्क दिया कि मारिजुआना मेरे लिए जो भी कर रहा था, वह अभी भी काम कर रहा था—जब तक कि वह दिन न आ जाए जब इसकी उपयोगिता खत्म हो जाए, और तब शायद मैं इसे आसानी से छोड़ दूँगा।

रूथ सही थी। जब मैं कैथी से मिला और मुझे उससे प्यार हो गया, तो गांजा मेरे लिए भुला दिया गया। मैं स्वाभाविक रूप से प्यार के नशे में चूर था, मुझे अच्छा महसूस करने के लिए कृत्रिम रूप से कुछ करने की ज़रूरत नहीं थी। कैथी का गांजा न पीना भी मददगार साबित हुआ। उसकी राय में, गांजा पीने वाले कमज़ोर इच्छाशक्ति वाले और आलसी होते हैं और उनकी ज़िंदगी धीमी गति से चलती है—अगर आप उन्हें चुभोते, तो छह दिन बाद वे कहते, "आउच!" कैथी के मेरे फ्लैट में आने के दिन से ही मैंने गांजा पीना छोड़ दिया। और—जैसा कि रूथ ने भविष्यवाणी की थी—एक बार जब मैं सुरक्षित और खुश हो गया, तो यह आदत मुझसे अपने आप ही छूट गई, जैसे जूते से सूखी मिट्टी उतर जाती है।

अगर हम कैथी की दोस्त निकोल की विदाई पार्टी में न गए होते, जो न्यूयॉर्क जा रही थी, तो शायद मैंने फिर कभी सिगरेट न पी होती। कैथी अपने सभी अभिनेता दोस्तों के बीच घिरी हुई थी, और मैं अकेला रह गया। नियॉन-गुलाबी चश्मा पहने एक छोटे कद के आदमी ने मुझे कोहनी मारी और कहा,

“कुछ चाहिए?” मैं उसकी उंगलियों के बीच मौजूद जॉइंट को मना करने ही वाली थी कि अचानक कुछ हुआ और मैं रुक गई। पता नहीं क्या हुआ। क्या यह मेरी एक क्षणिक इच्छा थी? या कैथी पर मेरा अवचेतन गुस्सा, जिसने मुझे इस भयानक पार्टी में आने के लिए मजबूर किया और फिर मुझे अकेला छोड़ दिया? मैंने चारों ओर देखा, और वह कहीं नज़र नहीं आ रही थी।

मैंने सोचा, भाड़ में जाए। मैंने सिगरेट को अपने होठों से लगाया और कश लिया।

बस यूं ही, मैं वहीं लौट आया जहां से शुरू किया था, मानो कोई विराम हुआ ही न हो। मेरी लत इतने समय से एक वफादार कुत्ते की तरह धैर्यपूर्वक मेरा इंतजार कर रही थी। मैंने कैथी को अपने किए के बारे में नहीं बताया और उसे अपने दिमाग से निकाल दिया। दरअसल, मैं एक अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, और छह सप्ताह बाद, वह अवसर मेरे सामने आ गया। कैथी एक सप्ताह के लिए निकोल से मिलने न्यूयॉर्क गई। कैथी के प्रभाव के बिना, अकेला और ऊबा हुआ, मैं प्रलोभन के आगे झुक गया। मेरे पास अब कोई डीलर नहीं था, इसलिए मैंने वही किया जो मैं एक छात्र के रूप में करता था - और कैमडेन टाउन बाजार की ओर चल पड़ा।

जैसे ही मैं स्टेशन से निकला, हवा में गांजे की महक फैल गई, जो अगरबत्ती की खुशबू और प्याज तल रहे खाने के स्टॉलों की गंध के साथ मिली हुई थी। मैं कैमडेन लॉक के पास बने पुल की ओर चल पड़ा। मैं वहाँ अजीब तरह से खड़ा रहा, पुल पर लगातार आ-जा रहे पर्यटकों और किशोरों की भीड़ मुझे धक्का दे रही थी।
मैंने भीड़ पर नज़र गड़ा दी। पुल पर कतार लगाकर खड़े होकर गुज़रते हुए आपको आवाज़ देने वाले डीलरों में से कोई भी नज़र नहीं आया। मैंने कुछ पुलिस अधिकारियों को देखा, जो अपनी चमकीली पीली जैकेट में आसानी से पहचाने जा रहे थे, भीड़ में गश्त लगा रहे थे। वे पुल से दूर थाने की ओर चले गए। तभी मुझे अपने बगल में एक धीमी आवाज़ सुनाई दी:
"कुछ पैसे चाहिए, दोस्त?"
मैंने नीचे देखा तो वहाँ एक छोटा सा आदमी था। पहले तो मुझे लगा कि वह बच्चा है, वह इतना दुबला-पतला था। लेकिन उसका चेहरा किसी ऊबड़-खाबड़ इलाके के नक्शे जैसा था, झुर्रियों और लकीरों से भरा हुआ, मानो कोई लड़का समय से पहले बूढ़ा हो गया हो। उसके सामने के दो दांत गायब थे, जिससे उसकी आवाज़ में हल्की सी सीटी जैसी आवाज़ आ रही थी। "हरा?" उसने दोहराया।
मेंने सिर हिलाया।
उसने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया। वह भीड़ के बीच से निकलकर कोने से घूमकर एक सुनसान गली में चला गया। वह एक पुराने पब में घुस गया और मैं भी उसके पीछे-पीछे गया। अंदर सन्नाटा पसरा हुआ था, गंदा और जर्जर, और उल्टी और पुरानी सिगरेट के धुएं की बदबू आ रही थी।
“एक बियर दो,” उसने बार के पास खड़े होकर कहा। उसकी लंबाई इतनी कम थी कि वह बार के ऊपर से देख भी नहीं पा रहा था। मैंने अनिच्छा से उसे आधा पाइंट बियर खरीदकर दी। वह उसे कोने में एक मेज पर ले गया। मैं उसके सामने बैठ गया। उसने इधर-उधर चुपके से देखा, फिर मेज के नीचे हाथ डालकर मुझे सेलोफेन में लिपटा एक छोटा सा पैकेट दिया। मैंने उसे कुछ पैसे दिए।
मैं घर गया और मैंने पैकेट खोला, मुझे आधा शक था कि मेरे साथ धोखा हुआ है, लेकिन एक जानी-पहचानी तीखी गंध मेरी नाक में आई। मैंने सुनहरी धारियों वाली

छोटी-छोटी हरी कलियाँ देखीं। मेरा दिल इतनी तेज़ी से धड़कने लगा जैसे मैं किसी बिछड़े हुए दोस्त से मिल गया हूँ; और शायद सच में मिल ही गया था।
उसके बाद से, मैं कभी-कभार नशा कर लेता था, जब भी मैं कुछ घंटों के लिए फ्लैट में अकेला होता था, और मुझे यकीन होता था कि कैथी जल्द ही वापस नहीं आएगी।
उस रात, जब मैं थका-हारा और निराश होकर घर लौटा और कैथी को रिहर्सल में पाया, तो मैंने झटपट एक जॉइंट बनाया। मैंने उसे बाथरूम की खिड़की से बाहर पी लिया। लेकिन मैंने ज़रूरत से ज़्यादा और बहुत जल्दी पी लिया—इसका असर मुझ पर ज़ोरदार हुआ, जैसे किसी ने आँखों के बीचों-बीच मुक्का मार दिया हो। मैं इतना नशे में था कि चलना भी मुश्किल लग रहा था, जैसे किसी चिपचिपी चीज़ में चल रहा हो। मैंने अपनी रोज़ की साफ़-सफ़ाई की रस्में पूरी कीं—एयर फ्रेशनर का इस्तेमाल किया, दाँत ब्रश किए, नहाया—और धीरे-धीरे खुद को लिविंग रूम तक ले गया। मैं सोफ़े पर बैठ गया।
मैंने टीवी रिमोट ढूंढा लेकिन वह नहीं मिला। फिर मुझे वह मिल गया, कॉफी टेबल पर कैथी के खुले लैपटॉप के पीछे से झाँक रहा था। मैंने उसे उठाने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन नशे में इतना चूर था कि लैपटॉप गिर गया। मैंने लैपटॉप को फिर से सीधा खड़ा किया।
और स्क्रीन चालू हो गई। उसका ईमेल अकाउंट खुल गया था। पता नहीं क्यों, मैं उसे घूरता ही रहा। मैं स्तब्ध रह गया—उसका इनबॉक्स मुझे एक खाली छेद की तरह घूर रहा था। मैं नज़रें नहीं हटा पा रहा था। इससे पहले कि मुझे समझ आता कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ, कई चीज़ें सामने आ गईं: ईमेल के शीर्षकों में "सेक्सी" और "फक" जैसे शब्द—और BADBOY22 के बार-बार आए ईमेल।
काश मैं वहीं रुक जाता। काश मैं उठकर चला जाता—लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया।
मैंने सबसे हालिया ईमेल पर क्लिक किया और उसे खोला:
विषय: पुनः: छोटी लड़की
प्रेषक: कटेरामा_1
प्रति: बैडबॉय22
मैं बस में हूँ। तुम्हारे लिए बहुत कामुक महसूस कर रही हूँ। मुझे अपने ऊपर तुम्हारी खुशबू आ रही है। मुझे लग रहा है जैसे मैं एक वेश्या हूँ! Kxx

मेरे आईफोन से भेजा गया

_____

विषय: पुनः: पुनः: पुनः: छोटी लड़की कमीनी प्रेषक: BADBOY22
प्रति: कटेरामा_1
तुम एक बदचलन औरत हो! हाहा। बाद में मिलते हैं? रिहर्सल के बाद?

_____

विषय: पुनः: पुनः: पुनः: पुनः: पुनः: छोटी लड़की कमीनी
प्रेषक: बैडबॉय22
प्रति: कटेरामा_1
ठीक है। मैं देखूंगी कि मुझे कब समय मिलता है। मैं तुम्हें मैसेज कर दूंगी।

_____

विषय: पुनः: पुनः: पुनः: पुनः: छोटी लड़की कमीनी
प्रेषक: कटेरामा_1
प्रति: बैडबॉय22
ठीक है। 8:30? 9? xx
मेरे आईफोन से भेजा गया

_____

मैंने लैपटॉप को मेज से उठाया। मैं उसे गोद में लेकर बैठ गया और उसे घूरने लगा। पता नहीं मैं कितनी देर तक ऐसे ही बैठा रहा। दस मिनट? बीस मिनट? आधा घंटा? शायद उससे भी ज़्यादा। समय मानो रेंगता हुआ सा लग रहा था।
मैंने जो कुछ देखा था उसे समझने की कोशिश की, लेकिन मैं अभी भी इतना नशे में था कि मुझे यकीन नहीं था कि मैंने क्या देखा था। क्या यह सच था? या किसी तरह की गलतफहमी?
कोई ऐसा मजाक था जो मुझे समझ नहीं आ रहा था क्योंकि मैं नशे में था?
मैंने खुद को मजबूर करके एक और ईमेल पढ़ा।
और एक और।
मैंने कैथी के BADBOY22 को भेजे गए सभी ईमेल पढ़े। कुछ ईमेल कामुक थे, यहाँ तक कि अश्लील भी। कुछ लंबे थे, ज़्यादा आत्म-प्रशंसा वाले, भावुक और ऐसा लग

रहा था जैसे कैथी नशे में हो—शायद ये देर रात लिखे गए थे, मेरे सोने के बाद। मैंने कल्पना की कि मैं अपने बेडरूम में सो रहा हूँ, जबकि कैथी बाहर इस अजनबी को अंतरंग संदेश लिख रही है। इस अजनबी के साथ वो संबंध बना रही थी।
समय अचानक से पटरी पर आ गया। अचानक ही मेरा नशा उतर गया।
मैं बुरी तरह से, बेहद दर्दनाक रूप से होश में था।
मेरे पेट में असहनीय दर्द हो रहा था। मैंने लैपटॉप एक तरफ फेंक दिया। मैं दौड़कर बाथरूम में घुस गया।
मैं शौचालय के सामने घुटनों के बल गिर गया और उल्टी कर दी।
अध्याय सात
मैंने कहा, "यह पिछली बार से काफी अलग लग रहा है।"
कोई जबाव नहीं।
एलिसिया मेरे सामने कुर्सी पर बैठी थी, उसका सिर थोड़ा खिड़की की ओर मुड़ा हुआ था। वह एकदम स्थिर बैठी थी, उसकी रीढ़ की हड्डी अकड़ी हुई और सीधी थी। वह किसी सेलो वादक या सैनिक जैसी लग रही थी।
“मैं सोच रहा हूँ कि पिछला सत्र कैसे समाप्त हुआ। जब आपने मुझ पर शारीरिक हमला किया और आपको काबू में करना पड़ा।”
कोई जवाब नहीं मिला। मैं हिचकिचाया।
“मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने इसे किसी तरह की परीक्षा के तौर पर किया? यह देखने के लिए कि मैं किस काबिल हूँ? मुझे लगता है कि आपको यह जानना ज़रूरी है कि मैं आसानी से डरने वाला नहीं हूँ। आप मुझ पर जो भी मुसीबत डालेंगे, मैं उसका सामना कर सकता हूँ।”
एलिसिया ने खिड़की से सलाखों के पार धूसर आकाश की ओर देखा। मैंने एक पल इंतजार किया।
“मुझे तुम्हें कुछ बताना है, एलिसिया। कि मैं तुम्हारे साथ हूँ।”
उम्मीद है एक दिन आप इस बात पर यकीन करेंगे। बेशक, भरोसा कायम करने में समय लगता है।
मेरे पुराने थेरेपिस्ट कहा करते थे कि आत्मीयता के लिए बार-बार प्रतिक्रिया मिलने का अनुभव आवश्यक होता है—और यह रातोंरात नहीं होता।

एलिसिया बिना पलक झपकाए, एक रहस्यमय निगाहों से मुझे घूरती रही। मिनट बीतते गए। यह किसी थेरेपी सेशन से ज़्यादा एक सहनशक्ति परीक्षण जैसा लग रहा था।

ऐसा लग रहा था कि मैं किसी भी दिशा में प्रगति नहीं कर रहा था। शायद सब कुछ निराशाजनक था। क्रिश्चियन ने सही कहा था कि चूहे डूबते जहाज को छोड़कर भाग जाते हैं।

मैं आखिर इस डूबे हुए जहाज पर चढ़कर, खुद को मस्तूल से बांधकर, डूबने की तैयारी क्यों कर रहा था?

जवाब मेरे सामने ही था। जैसा कि डायोमेडेस ने कहा था, एलिसिया एक खामोश जलपरी थी, जो मुझे मेरे विनाश की ओर खींच रही थी।

मुझे अचानक बेबसी महसूस हुई। मैं उस पर चिल्लाना चाहती थी, कुछ बोलो।

कुछ भी। बस बात करो।

लेकिन मैंने ऐसा नहीं कहा। इसके बजाय, मैंने चिकित्सा की परंपरा को तोड़ दिया। मैंने नरमी से बात करना बंद कर दिया और सीधे मुद्दे पर आ गया:

मैं आपकी चुप्पी के बारे में बात करना चाहता हूँ। इसका क्या मतलब है... यह कैसा महसूस होता है। और विशेष रूप से आपने बोलना क्यों बंद कर दिया।

एलिसिया ने मेरी तरफ देखा तक नहीं। क्या वो सुन भी रही थी?

“जब मैं तुम्हारे साथ यहाँ बैठी हूँ, तो मेरे मन में एक तस्वीर बार-बार उभर रही है—किसी की मुट्ठी भींचने की, चीख को रोकने की, चीख को निगलने की। मुझे याद है जब मैंने पहली बार थेरेपी शुरू की थी, तो मुझे रोना बहुत मुश्किल लगता था। मुझे डर था कि मैं बाढ़ में बह जाऊँगी, पूरी तरह डूब जाऊँगी। शायद तुम्हें भी ऐसा ही महसूस हो रहा होगा। इसीलिए यह ज़रूरी है कि तुम खुद को सुरक्षित महसूस करने के लिए समय लो और भरोसा रखो कि तुम इस बाढ़ में अकेले नहीं हो—मैं तुम्हारे साथ यहाँ खड़ी हूँ।”

मौन।

मैं खुद को एक संबंधपरक चिकित्सक मानता हूँ। क्या आप जानते हैं इसका क्या मतलब है?

मौन।

“इसका मतलब है कि मुझे लगता है कि फ्रायड कुछ बातों में गलत थे। मेरा मानना है कि एक थेरेपिस्ट कभी भी पूरी तरह से खाली स्लेट नहीं हो सकता, जैसा कि उन्होंने कल्पना की थी। हम अनजाने में ही अपने बारे में कई तरह की जानकारी दे देते हैं—जैसे मेरे मोजों का रंग, बैठने का तरीका या बात करने का ढंग। बस आपके साथ यहां बैठे-बैठे ही मैं अपने बारे में बहुत कुछ बता रहा हूं। अपनी पूरी कोशिश के बावजूद, मैं आपको दिखा रहा हूं कि मैं कौन हूं।”

एलिसिया ने ऊपर देखा। उसने मेरी ओर घूरकर देखा, उसकी ठुड्डी थोड़ी झुकी हुई थी—क्या उसकी उस नज़र में कोई चुनौती थी? आखिरकार उसका ध्यान मेरी ओर गया। मैं अपनी सीट पर थोड़ा हिल गया।

सवाल यह है कि हम इसके बारे में क्या कर सकते हैं? हम इसे अनदेखा कर सकते हैं, इससे इनकार कर सकते हैं और यह दिखावा कर सकते हैं कि यह थेरेपी पूरी तरह से आपके बारे में है। या हम यह स्वीकार कर सकते हैं कि यह एक दोतरफा मामला है और उसी के अनुसार काम कर सकते हैं। और तब हम वास्तव में कुछ हासिल करना शुरू कर सकते हैं।

मैंने अपना हाथ ऊपर उठाया। मैंने अपनी शादी की अंगूठी की ओर इशारा किया।

"यह अंगूठी कुछ न कुछ तो बताती है, है ना?"

एलिसिया की आंखें बहुत धीरे-धीरे अंगूठी की दिशा में घूमने लगीं।

“इससे पता चलता है कि मैं शादीशुदा हूँ। इससे पता चलता है कि मेरी एक पत्नी है। हमारी शादी को लगभग नौ साल हो गए हैं।”

कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली, फिर भी वह अंगूठी को घूरती रही।

"आपकी शादी को करीब सात साल हो गए थे, है ना?"

कोई जवाब नहीं मिला।

मैं अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता हूँ। क्या आप अपने पति से प्यार करती थीं?

एलिसिया की निगाहें घूमीं। वे अचानक मेरे चेहरे पर टिक गईं। हम एक-दूसरे को घूरते रहे।

"प्यार में हर तरह की भावनाएं शामिल होती हैं, है ना? अच्छी और बुरी। मैं अपनी पत्नी से प्यार करता हूँ—उसका नाम कैथी है—लेकिन कभी-कभी मुझे उस पर गुस्सा भी आता है।"

कभी-कभी... मुझे उससे नफरत होती है।
एलिसिया मुझे घूरती रही; मैं जैसे किसी अंधेरी जगह में फंसी खरगोश की तरह जम गई थी, न नज़र हटा पा रही थी न हिल पा रही थी। अटैक अलार्म मेज पर रखा था, बिल्कुल पास में। मैंने उसे न देखने की पूरी कोशिश की।
मुझे पता था कि मुझे बोलना बंद कर देना चाहिए—मुझे चुप हो जाना चाहिए—लेकिन मैं खुद को रोक नहीं पाई। मैं बेकाबू होकर बोलती रही:
और जब मैं कहती हूँ कि मैं उससे नफरत करती हूँ, तो मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं पूरी तरह से उससे नफरत करती हूँ। बस मेरा एक हिस्सा उससे नफरत करता है। बात दोनों हिस्सों को एक साथ थामे रखने की है। तुम्हारा एक हिस्सा गैब्रियल से प्यार करता था। तुम्हारा दूसरा हिस्सा उससे नफरत करता था।
एलिसिया ने ना में सिर हिलाया। एक क्षणिक हलचल, लेकिन निश्चित। आखिरकार—एक प्रतिक्रिया। मुझे अचानक रोमांच महसूस हुआ। मुझे वहीं रुक जाना चाहिए था, लेकिन मैं नहीं रुका।
मैंने और भी दृढ़ता से कहा, "तुम्हारे मन का एक हिस्सा उससे नफरत करता था।"
उसने एक बार फिर सिर हिलाया। उसकी निगाहें मुझ पर गड़गड़ा रही थीं। मुझे लगा, वह गुस्सा हो रही है।
“यह सच है, एलिसिया। वरना तुम उसे मारती नहीं।”
एलिसिया अचानक उछल पड़ी। मुझे लगा जैसे वो मुझ पर झपटने वाली है। मेरा शरीर आशंका से तन गया। लेकिन इसके बजाय वो मुड़ी और दरवाजे की ओर चल पड़ी।
उसने मुट्ठियों से उस पर प्रहार किया।
चाबी घूमने की आवाज आई और यूरी ने दरवाजा खोल दिया।
मुझे फर्श पर एलिसिया द्वारा गला घोंटते हुए न देखकर वह राहत महसूस कर रहा था। एलिसिया उसे धक्का देकर गलियारे की ओर भाग गई।
“संभलकर, धीरे चलो, जान।” उसने मेरी तरफ देखा। “सब ठीक है? क्या हुआ?”
मैंने कोई जवाब नहीं दिया। यूरी ने मुझे अजीब नज़र से देखा और चली गई। मैं अकेली रह गई।

मैंने मन ही मन सोचा, "बेवकूफ! तुम बेवकूफ हो! मैं क्या कर रहा था? मैंने उसे हद से ज्यादा, हद से ज्यादा, हद से जल्दी परेशान कर दिया था। यह बेहद गैर-पेशेवर था, और साथ ही पूरी तरह से नासमझी भरा भी। इससे उसकी मानसिक स्थिति से कहीं ज्यादा मेरी मानसिक स्थिति का पता चला।"
लेकिन एलिसिया ने तुम्हारे लिए यही किया। उसकी चुप्पी एक दर्पण की तरह थी—खुद को ही प्रतिबिंबित करते हुए।
और यह अक्सर एक भद्दा दृश्य होता था।
अध्याय आठ
यह संदेह करने के लिए आपको मनोचिकित्सक होने की आवश्यकता नहीं है कि कैथी ने अपना लैपटॉप खुला छोड़ दिया था क्योंकि - कम से कम अवचेतन रूप से - वह चाहती थी कि मुझे उसकी बेवफाई के बारे में पता चल जाए।
अब मुझे पता चल गया था। अब मुझे जानकारी मिल गई थी।
पिछली रात से मैंने उससे बात नहीं की थी। उसके लौटने पर मैंने सोने का नाटक किया और सुबह उसके जागने से पहले ही फ्लैट से निकल गई। मैं उससे बच रही थी—खुद से बच रही थी। मैं सदमे में थी। मुझे पता था कि मुझे खुद को समझना होगा—वरना खुद को खोने का खतरा था। "खुद को संभालो," मैंने धीरे से बुदबुदाते हुए एक जॉइंट बनाया। मैंने उसे खिड़की से बाहर फेंक दिया और फिर, पूरी तरह से नशे में, रसोई में जाकर एक गिलास वाइन डाली।
जैसे ही मैंने गिलास उठाया, वह मेरे हाथ से फिसल गया। गिरते ही मैंने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन मेरा हाथ सीधे कांच के टुकड़े में जा लगा, जो मेज पर गिरकर टूट गया और मेरी उंगली से मांस का एक टुकड़ा कट गया।
अचानक चारों ओर खून ही खून था: मेरी बांह से खून टपक रहा था, टूटे हुए कांच पर खून था, मेज पर सफेद शराब में खून मिल रहा था। मैंने किसी तरह रसोई का कागज फाड़ा और अपनी उंगली को कसकर बांध लिया ताकि खून बहना बंद हो जाए। मैंने अपना हाथ सिर के ऊपर उठाया और खून को अपनी बांह से छोटी-छोटी धाराओं में बहते हुए देखा, जो मेरी त्वचा के नीचे नसों के पैटर्न की नकल कर रही थीं।
मुझे कैथी की याद आ गई।

संकट के क्षणों में, जब मुझे सहानुभूति, दिलासा या किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत होती जो मेरे दर्द को कम कर दे, तो मैं कैथी के पास ही जाती थी। मैं चाहती थी कि वह मेरा ख्याल रखे। मैंने उसे फोन करने के बारे में सोचा, लेकिन जैसे ही यह विचार आया, मुझे लगा कि कोई दरवाज़ा तेज़ी से बंद हो रहा है, ज़ोर से पटक रहा है और उसे मेरी पहुँच से बाहर कर रहा है।

कैथी चली गई थी—मैंने उसे खो दिया था। मैं रोना चाहती थी, लेकिन रो नहीं सकी—मैं अंदर से पूरी तरह टूट चुकी थी, कीचड़ और गंदगी से भरी हुई थी।

मैं बार-बार अपने मन में दोहराता रहा, "धिक्कार है, धिक्कार है।"

मुझे घड़ी की टिक-टिक सुनाई देने लगी। अब वो आवाज़ पहले से ज़्यादा तेज़ लग रही थी। मैंने उस पर ध्यान केंद्रित करने और अपने उलझे हुए विचारों को स्थिर करने की कोशिश की: टिक, टिक, टिक—लेकिन मेरे दिमाग में आवाज़ों का शोर बढ़ता ही गया और शांत नहीं हुआ। मैंने सोचा, वो बेवफ़ा ज़रूर होगी, ऐसा होना ही था, ये तो होना ही था—मैं उसके लिए कभी अच्छा नहीं था, मैं बेकार, बदसूरत, निकम्मा, कुछ भी नहीं था—वो आखिरकार मुझसे ऊब ही जाएगी—मैं उसके लायक नहीं था, मैं किसी भी चीज़ के लायक नहीं था—ये सब चलता रहा, एक के बाद एक भयानक विचार मुझे चोट पहुँचाते रहे।

मैं उसे कितना कम जानती थी। उन ईमेल से पता चला कि मैं एक अजनबी के साथ रह रही थी। अब मुझे सच्चाई का पता चल गया। कैथी ने मुझे नहीं बचाया था—वह किसी को भी बचाने में सक्षम नहीं थी। वह कोई प्रशंसनीय नायिका नहीं थी—बस एक डरी हुई, बिखरी हुई लड़की, एक धोखेबाज झूठी। हमारे बारे में मैंने जो भी मिथक गढ़ा था, हमारी आशाएँ और सपने, पसंद-नापसंद, भविष्य के लिए हमारी योजनाएँ; एक ऐसा जीवन जो इतना सुरक्षित, इतना मजबूत लगता था, अब पल भर में ढह गया—जैसे हवा के झोंके में ताश के पत्तों का घर।

मेरा मन कॉलेज के उस ठंडे कमरे में चला गया, इतने साल पहले—बेढंगी, सुन्न उंगलियों से पैरासिटामोल के पैकेट फाड़ना। वही सुन्नपन अब मुझ पर हावी हो गया, वही सिकुड़कर मर जाने की इच्छा। मैंने अपनी माँ के बारे में सोचा। क्या मैं उन्हें फोन कर सकती थी? क्या मैं अपनी इस हताशा और ज़रूरत के पल में उनका सहारा ले सकती थी? मैंने कल्पना की कि वह फोन उठा रही हैं, उनकी आवाज़ कांप रही है;

कितनी कांप रही है, यह मेरे पिता के मिजाज पर और इस बात पर निर्भर करता है कि उन्होंने शराब पी है या नहीं। वह शायद सहानुभूति से मेरी बात सुनें, लेकिन उनका ध्यान कहीं और होगा, एक नज़र मेरे पिता और उनके गुस्से पर। वह मेरी मदद कैसे कर सकती हैं? एक डूबता हुआ चूहा दूसरे डूबते हुए चूहे को कैसे बचा सकता है?
मुझे बाहर निकलना ही था। मैं यहाँ, इस बदबूदार लिली के बीच, साँस नहीं ले पा रही थी। मुझे ताज़ी हवा चाहिए थी। मुझे साँस लेने की ज़रूरत थी।
मैं फ्लैट से निकल गया। मैंने अपने हाथ जेब में डाले और सिर नीचे झुकाए रखा। मैं गलियों में तेज़ी से चलता रहा, कहीं नहीं जा रहा था। मेरे मन में बार-बार हमारे रिश्ते की हर घटना घूम रही थी, उसे याद कर रहा था, परख रहा था, हर पहलू को खंगाल रहा था, सुराग ढूंढ रहा था। मुझे अनसुलझे झगड़े, बिना वजह की गैरमौजूदगी और बार-बार देर से आना याद आ रहा था। लेकिन मुझे उसकी छोटी-छोटी दयालुता की बातें भी याद आ रही थीं—प्यार भरे नोट जो वह मेरे लिए अनजान जगहों पर छोड़ जाती थी, मीठे पल और सच्चा प्यार। यह कैसे मुमकिन था? क्या वह हमेशा नाटक कर रही थी? क्या उसने कभी मुझसे प्यार किया था?
मुझे उसके दोस्तों से मिलने पर मेरे मन में उठे संदेह की क्षणिक अनुभूति याद आ गई।
वे सब अभिनेता थे; शोर मचाने वाले, आत्ममुग्ध, दिखावा करने वाले, लगातार अपने बारे में और उन लोगों के बारे में बातें करते रहते थे जिन्हें मैं नहीं जानता था। अचानक मैं स्कूल के दिनों में वापस चला गया, खेल के मैदान के किनारे अकेला खड़ा होकर दूसरे बच्चों को खेलते हुए देखता था। मैंने खुद को यकीन दिलाया कि कैथी उनसे बिलकुल अलग थी—लेकिन साफ तौर पर वह वैसी ही थी। अगर मैं उनसे उस पहली रात बार में मिला होता जब मैं उससे मिला था, तो क्या वे मुझे उससे दूर कर देते? मुझे शक है। हमारे मिलन को कोई नहीं रोक सकता था: जिस पल मैंने कैथी को देखा, मेरा भाग्य लिखा जा चुका था।
मुझे क्या करना चाहिए?
उससे सामना करो, बिल्कुल। उसे सब कुछ बताओ जो मैंने देखा है। वह पहले तो इनकार करेगी—फिर, जब उसे लगेगा कि कोई उम्मीद नहीं है, तो वह सच कबूल

कर लेगी और पश्चाताप से व्याकुल होकर मेरे सामने घुटने टेक देगी। वह मुझसे माफी मांगेगी, है ना?
अगर उसने ऐसा नहीं किया तो? अगर उसने मुझे ठुकरा दिया तो? अगर वह हँसी, मुड़ी और चली गई तो? तब क्या होगा?
हम दोनों में से सबसे ज़्यादा नुकसान मेरा ही था, यह तो ज़ाहिर था। कैथी बच जाएगी —वह अक्सर कहती थी कि वह बहुत मज़बूत है। वह खुद को संभाल लेगी, हिम्मत जुटाएगी और मुझे पूरी तरह भूल जाएगी। लेकिन मैं उसे नहीं भूल पाऊंगा। भला कैसे भूल पाऊं? कैथी के बिना मैं फिर से उसी खाली, अकेलेपन भरे जीवन में लौट जाऊंगा जो मैंने पहले जिया था। मुझे उसके जैसी कोई और कभी नहीं मिलेगी, न ही मुझे कभी किसी दूसरे इंसान से वैसा जुड़ाव महसूस होगा और न ही उसके लिए वैसी गहरी भावनाएँ। वह मेरे जीवन का प्यार थी—वह मेरी ज़िंदगी थी—और मैं उसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। अभी नहीं। भले ही उसने मुझे धोखा दिया था, फिर भी मैं उससे प्यार करता था।
शायद मैं ही पागल था, आखिरकार।
मेरे सिर के ऊपर एक अकेला पक्षी चीख उठा, जिससे मैं चौंक गया। मैं रुक गया और चारों ओर देखा। मैं जितना सोचा था उससे कहीं ज़्यादा दूर आ गया था। स्तब्ध होकर मैंने देखा कि मेरे पैर मुझे कहाँ ले आए थे—मैं रूथ के घर के सामने वाले दरवाजे से बस कुछ ही गलियों की दूरी पर आ गया था।
अनजाने में ही, मैं मुश्किल के समय में अपनी पुरानी थेरेपिस्ट के पास पहुँच गई, जैसा कि मैंने पहले भी कई बार किया था। मेरी परेशानी का यही कारण था कि मैंने उनके दरवाजे पर जाकर घंटी बजाने और मदद मांगने के बारे में सोचा।
और क्यों नहीं? मैंने अचानक सोचा; हाँ, यह गैर-पेशेवर और बेहद अनुचित व्यवहार था, लेकिन मैं हताश थी और मुझे मदद की ज़रूरत थी। देखते ही देखते, मैं रूथ के हरे दरवाजे के सामने खड़ी थी और मेरा हाथ घंटी की ओर बढ़ा और मैंने उसे दबा दिया।
उसे जवाब देने में कुछ पल लगे। गलियारे में एक बत्ती जल उठी, फिर उसने दरवाजा खोला, लेकिन ताला लगा रहने दिया।

रूथ ने दरार से बाहर झाँका। वह उम्रदराज लग रही थी। अब वह अस्सी के आसपास होगी; पहले से छोटी, दुबली-पतली और थोड़ी झुकी हुई। उसने हल्के गुलाबी रंग के नाइटगाउन के ऊपर एक ग्रे रंग का कार्डिगन पहना हुआ था।
“हेलो?” उसने घबराकर कहा। “कौन है वहाँ?”
"हैलो, रूथ।" मैं रोशनी में आ गया।
उसने मुझे पहचान लिया और हैरानी से देखने लगी। “थियो? ये क्या हो रहा है—” उसकी नज़र मेरे चेहरे से हटकर मेरी उंगली पर लगी बेतरतीब, कामचलाऊ पट्टी पर पड़ी, जिसमें से खून रिस रहा था। “क्या तुम ठीक हो?”
“नहीं, ऐसा नहीं है। क्या मैं अंदर आ सकता हूँ? मुझे आपसे बात करनी है।”
रूथ ने ज़रा भी संकोच नहीं किया, बस चिंता से सिर हिलाया। "बेशक।"
अंदर आ जाओ। उसने जंजीर खोली और दरवाजा खोल दिया।
मैं अंदर चला गया।
अध्याय नौ
रूथ मुझे बैठक कक्ष में ले गई। "क्या आप एक कप चाय पीना चाहेंगे?"
कमरा वैसा ही था जैसा हमेशा से था, जैसा मुझे हमेशा से याद था—कालीन, भारी पर्दे, शेल्फ पर टिक-टिक करती चांदी की घड़ी, आरामकुर्सी, फीका नीला सोफा। मुझे तुरंत तसल्ली मिली।
सच कहूं तो, मुझे इससे भी कुछ अधिक शक्तिशाली चीज की जरूरत है।
रूथ ने मुझे एक संक्षिप्त, तीखी नज़र से देखा, लेकिन कोई टिप्पणी नहीं की। और न ही उसने इनकार किया, जैसा कि मुझे कुछ हद तक उम्मीद थी।
उसने मेरे लिए शेरी का एक गिलास भरा और मुझे थमा दिया। मैं सोफे पर बैठ गया। आदत के चलते मैं वहीं बैठ गया जहाँ मैं हमेशा थेरेपी के लिए बैठता था, एकदम बाईं ओर, और अपना हाथ आर्मरेस्ट पर टिका लिया। मेरी उंगलियों के नीचे का कपड़ा कई मरीजों के बेचैनी भरे रगड़ने से घिस चुका था, जिनमें मैं भी शामिल था।
मैंने शेरी का एक घूंट लिया। यह गर्म, मीठी और थोड़ी सी अजीब सी थी, लेकिन मैंने इसे पी लिया, इस बात का एहसास था कि रूथ मुझे लगातार देख रही थी। उसकी निगाहें स्पष्ट थीं, लेकिन भारी या असहज नहीं थीं; बीस सालों में रूथ ने मुझे कभी

असहज महसूस नहीं कराया था। शेरी खत्म होने और गिलास खाली होने तक मैंने दोबारा कुछ नहीं बोला।
"हाथ में गिलास लेकर यहाँ बैठे रहना थोड़ा अजीब लग रहा है। मुझे पता है कि आपको अपने मरीजों को पेय पदार्थ देने की आदत नहीं है।"
“अब तुम मेरे मरीज नहीं हो। बस एक दोस्त हो—और तुम्हें देखकर तो यही लगता है।”
उसने कोमल स्वर में कहा, "तुम्हें इस समय एक दोस्त की जरूरत है।"
क्या मैं इतनी बुरी दिखती हूँ?
“मुझे लगता है कि आप जानते हैं। और यह गंभीर मामला होना चाहिए, वरना आप इस तरह बिना बुलाए नहीं आते। खासकर रात के दस बजे तो बिल्कुल नहीं।”
“आप सही कह रहे हैं। मुझे लगा—मुझे लगा कि मेरे पास कोई विकल्प नहीं था।”
“क्या बात है, थियो? क्या हुआ?”
मुझे नहीं पता कि मैं आपको कैसे बताऊं। मुझे नहीं पता कि शुरुआत कहां से करूं।
"शुरुआत कैसी रहेगी?"
मैंने सिर हिलाया। मैंने गहरी सांस ली और बोलना शुरू किया। मैंने उसे सब कुछ बताया जो हुआ था; मैंने उसे बताया कि मैंने दोबारा गांजा पीना शुरू कर दिया था, और कैसे मैं छुपकर इसका सेवन कर रहा था—और कैसे इसी वजह से मुझे कैथी के ईमेल और उसके अफेयर के बारे में पता चला। मैं जल्दी-जल्दी, हांफते हुए बोल रहा था, मानो अपने दिल का बोझ हल्का करना चाहता था। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं अपने पापों का प्रायश्चित कर रहा हूँ।
रूथ ने मेरी बात पूरी होने तक बिना रुके सुना। उसके चेहरे के भावों को समझना मुश्किल था। अंत में उसने कहा, "मुझे बहुत दुख है कि ऐसा हुआ, थियो।"
मुझे पता है कि कैथी आपके लिए कितनी मायने रखती है। आप उससे कितना प्यार करते हैं।"
“हाँ। मैं प्यार करती हूँ—” मैं रुक गई, उसका नाम नहीं ले पाई। मेरी आवाज़ काँप रही थी। रूथ ने इसे भाँप लिया और टिशू का डिब्बा मेरी तरफ बढ़ा दिया। पहले जब वह ऐसा करती थी तो मुझे गुस्सा आता था; मैं उस पर मुझे रुलाने की कोशिश करने

का आरोप लगाती थी। आमतौर पर वह कामयाब भी हो जाती थी। लेकिन आज रात नहीं।
आज रात मेरे आंसू जम गए थे। बर्फ के भंडार की तरह।
कैथी से मिलने से पहले मैं काफी समय से रूथ के साथ रिश्ते में था, और हमारे रिश्ते के पहले तीन सालों तक मैंने थेरेपी जारी रखी। मुझे याद है जब कैथी और मैं पहली बार साथ आए थे, तब रूथ ने मुझे क्या सलाह दी थी: “प्रेमी चुनना काफी हद तक थेरेपिस्ट चुनने जैसा है। हमें खुद से पूछना चाहिए, क्या यह ऐसा व्यक्ति है जो मेरे साथ ईमानदार रहेगा, आलोचना सुनेगा, अपनी गलतियाँ स्वीकार करेगा और असंभव वादे नहीं करेगा?”
मैंने उस समय यह सब कैथी को बताया, और उसने सुझाव दिया कि हम एक समझौता कर लें।
हमने एक-दूसरे से कभी झूठ न बोलने की कसम खाई थी। कभी दिखावा न करने की। हमेशा सच बोलने की।
मैंने कहा, “क्या हुआ? क्या गड़बड़ हुई?”
बोलने से पहले रूथ हिचकिचाई। उसने जो कहा, उससे मैं हैरान रह गया।
मुझे लगता है कि आपको इसका जवाब पता है। बस आपको इसे खुद स्वीकार कर लेना चाहिए।
“मुझे नहीं पता।” मैंने सिर हिलाया। “मुझे नहीं पता।”
मैं गहरी चुप्पी में डूब गया—फिर भी अचानक मेरे मन में कैथी की वो सारी ईमेल लिखने की छवि उभर आई, और वो कितनी जोशीली और आवेशपूर्ण थीं, मानो उन्हें लिखने में, उस आदमी के साथ अपने गुप्त रिश्ते में एक अलग ही आनंद मिल रहा हो। उसे झूठ बोलने और छुप-छुपकर काम करने में मज़ा आता था: ये एक तरह का अभिनय था, लेकिन पर्दे के पीछे।
मैंने आखिरकार कहा, "मुझे लगता है कि वह ऊब गई है।"
"क्या सोच कर तुम यह कह रहे हो?"
क्योंकि उसे रोमांच चाहिए। ड्रामा चाहिए। हमेशा से ही। वह काफी समय से शिकायत कर रही है कि अब हमारे बीच कोई मज़ा नहीं रहा, मैं हमेशा तनाव में रहती हूँ, और बहुत ज़्यादा काम करती हूँ। हाल ही में हमारी इस बात पर लड़ाई भी हुई थी।

वह बार-बार आतिशबाजी शब्द का इस्तेमाल कर रही थी।
“आतिशबाजी?”
"मतलब, हमारे बीच कोई नहीं है।"
“अहा। मैं समझ गई।” रूथ ने सिर हिलाया। “हमने इस बारे में पहले भी बात की है, है ना?”
“पटाखों के बारे में?”
प्यार के बारे में। इस बारे में कि हम अक्सर प्यार को आतिशबाजी, नाटक और गड़बड़ी समझ लेते हैं। लेकिन सच्चा प्यार बहुत शांत, बहुत स्थिर होता है। अगर इसे नाटकीय नज़रिए से देखा जाए तो यह उबाऊ लगता है। प्यार गहरा, शांत और स्थिर होता है। मुझे लगता है कि आप कैथी को प्यार देते हैं—शब्द के सच्चे अर्थों में।
क्या वह आपको वह लौटाने में सक्षम है या नहीं, यह एक अलग सवाल है।
मैंने अपने सामने मेज पर रखे टिशू के डिब्बे को घूर कर देखा। मुझे रूथ की बात समझ नहीं आ रही थी। मैंने उसका ध्यान भटकाने की कोशिश की।
“दोनों तरफ से गलती हुई है। मैंने भी उससे झूठ बोला था। गांजे के बारे में।”
रूथ उदास होकर मुस्कुराई। “मुझे नहीं पता कि किसी दूसरे इंसान के साथ लगातार यौन और भावनात्मक विश्वासघात करना, कभी-कभार नशा करने के बराबर है या नहीं। मुझे लगता है कि यह एक बिल्कुल अलग तरह के व्यक्ति की ओर इशारा करता है।”
जो बार-बार और कुशलता से झूठ बोल सकता है, जो बिना किसी पछतावे के अपने साथी को धोखा दे सकता है—"
“तुम्हें यह पता नहीं है।” मेरी आवाज़ में उतनी ही दयनीयता झलक रही थी जितनी मुझे अंदर से महसूस हो रही थी। “उसे बहुत बुरा लग सकता है।”
लेकिन जब मैंने यह कहा, तब भी मुझे इस पर विश्वास नहीं हुआ।
रूथ भी ऐसा नहीं सोचती थी। “मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है कि उसका व्यवहार दर्शाता है कि वह काफी मानसिक रूप से विक्षिप्त है—उसमें सहानुभूति, ईमानदारी और साधारण दयालुता की कमी है।”
आपमें मौजूद सभी गुणों से भरपूर हैं।"
मैंने अपना सिर हिलाया। "यह सच नहीं है।"

“यह सच है, थियो।” रूथ हिचकिचाई। “क्या आपको नहीं लगता कि आप पहले भी यहाँ आ चुके हैं?”
“कैथी के साथ?”
रूथ ने सिर हिलाया। "मेरा मतलब वो नहीं है। मेरा मतलब तुम्हारे माता-पिता से है।" जब आप छोटे थे। अगर यहां बचपन की कोई घटना है जिसे आप शायद दोहरा रहे हों।
“नहीं।” मुझे अचानक गुस्सा आ गया। “कैथी के साथ जो कुछ भी हो रहा है, उसका मेरे बचपन से कोई लेना-देना नहीं है।”
“अरे, सच में?” रूथ ने अविश्वास भरे लहजे में कहा। “किसी अप्रत्याशित, भावनात्मक रूप से अनुपलब्ध, लापरवाह, निर्दयी व्यक्ति को खुश करने की कोशिश करना—उन्हें खुश रखना, उनका प्यार जीतना—क्या यह कोई पुरानी कहानी नहीं है, थियो? एक जानी-पहचानी कहानी?”
मैंने मुट्ठी भींच ली और कुछ नहीं बोला।
रूथ हिचकिचाते हुए बोली, “मैं जानती हूँ कि तुम कितने दुखी हो। लेकिन मैं चाहती हूँ कि तुम इस संभावना पर विचार करो कि यह दुख तुम्हें कैथी से मिलने से बहुत पहले से महसूस हो रहा था। यह दुख तुम कई सालों से अपने साथ लिए घूम रहे हो। जानते हो, थियो, यह स्वीकार करना सबसे मुश्किल होता है कि जब हमें सबसे ज़्यादा प्यार की ज़रूरत थी, तब हमें प्यार नहीं मिला। प्यार न मिलने का दर्द बहुत भयानक होता है।”
वह सही थी। मैं अपने भीतर के उस अस्पष्ट विश्वासघात के एहसास, उस भयानक खोखलेपन को व्यक्त करने के लिए सही शब्दों की तलाश कर रही थी, और जब रूथ ने इसे कहा—"प्यार न मिलने का दर्द"—तो मैंने देखा कि यह मेरे पूरे मन पर व्याप्त था और एक ही समय में मेरे अतीत, वर्तमान और भविष्य की कहानी थी।
यह सिर्फ कैथी के बारे में नहीं था: यह मेरे पिता के बारे में था, और मेरे बचपन में महसूस किए गए परित्याग के बारे में; उन सभी चीजों के लिए मेरा दुख जो मुझे कभी नहीं मिलीं और मेरे दिल में, मुझे अब भी लगता था कि मुझे कभी नहीं मिलेंगी। रूथ कह रही थी कि इसीलिए मैंने कैथी को चुना। मेरे पिता को सही साबित करने का इससे बेहतर तरीका और क्या हो सकता था?

क्या मैं इस बात को स्वीकार कर लूं कि मैं बेकार और प्यार के लायक नहीं हूं—बजाय इसके कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति का पीछा करूं जो मुझे कभी प्यार नहीं करेगा?
मैंने अपना सिर हाथों में छिपा लिया। “तो ये सब होना ही था? यही तो तुम कह रहे हो —मैंने खुद ही ये सब किया? ये तो बिलकुल ही निराशाजनक है?”
“यह निराशाजनक नहीं है। अब तुम अपने पिता की दया पर निर्भर रहने वाले लड़के नहीं हो।”
अब तुम एक समझदार आदमी हो—और तुम्हारे पास एक विकल्प है। इसे अपनी अक्षमता की एक और पुष्टि के रूप में लो—या फिर अतीत से नाता तोड़ लो। इसे बार-बार दोहराने से खुद को मुक्त करो।
मैं ऐसा कैसे करूँ? क्या आपको लगता है कि मुझे उसे छोड़ देना चाहिए?
मुझे लगता है कि यह बहुत ही कठिन परिस्थिति है।
"लेकिन आपको लगता है कि मुझे चले जाना चाहिए, है ना?"
“तुम यहाँ तक आ चुकी हो और बहुत मेहनत कर चुकी हो, अब बेईमानी, सच्चाई से मुंह मोड़ने और भावनात्मक शोषण से भरी जिंदगी में वापस लौटना तुम्हारे लिए मुमकिन नहीं है। तुम ऐसे किसी इंसान की हकदार हो जो तुम्हारे साथ बेहतर, बहुत बेहतर व्यवहार करे।”
“बस कह दो, रूथ। कह दो। तुम्हें लगता है कि मुझे चले जाना चाहिए।”
रूथ ने मेरी आँखों में देखा। उसने मेरी निगाहें थाम लीं। "मुझे लगता है कि आपको जाना चाहिए।"
और मैं ये बात आपके पुराने थेरेपिस्ट के तौर पर नहीं, बल्कि आपके पुराने दोस्त के तौर पर कह रहा हूँ। मुझे नहीं लगता कि आप चाहकर भी वापस जा सकते हैं। शायद कुछ समय के लिए ठीक रहे, लेकिन कुछ महीनों में कुछ और हो जाएगा और आप फिर से यहीं सोफे पर बैठे होंगे। थियो, कैथी और इस स्थिति के बारे में खुद से ईमानदार रहो, और झूठ और असत्य पर बनी हर चीज़ तुमसे दूर हो जाएगी। याद रखो, जिस प्यार में ईमानदारी न हो, उसे प्यार नहीं कहा जा सकता।
मैंने हताश, निराश और थकी हुई सी आह भरी।
“धन्यवाद, रूथ—आपकी ईमानदारी के लिए। इसका बहुत महत्व है।”

जब मैं जाने लगा तो रूथ ने दरवाजे पर मुझे गले लगा लिया। उसने पहले कभी ऐसा नहीं किया था।
मेरी बाहों में वह बहुत नाजुक थी, उसकी हड्डियाँ इतनी कोमल थीं; मैंने उसकी हल्की फूलों जैसी खुशबू और उसके ऊनी दुपट्टे को महसूस किया और फिर से रोने का मन हुआ। लेकिन मैं रोई नहीं, या रो नहीं सकी।
इसके बजाय मैं वहां से चला गया और पीछे मुड़कर नहीं देखा।
मैं घर वापस जाने के लिए बस में बैठ गया। मैं खिड़की के पास बैठा, बाहर देखता रहा, कैथी के बारे में सोचता रहा, उसकी गोरी त्वचा और उन खूबसूरत हरी आँखों के बारे में। मेरे मन में एक गहरी तड़प थी—उसके होठों के मीठे स्वाद के लिए, उसकी कोमलता के लिए। लेकिन रूथ सही थी। जिस प्यार में ईमानदारी न हो, उसे प्यार कहना उचित नहीं है।
मुझे घर जाकर कैथी का सामना करना पड़ा।
मुझे उसे छोड़ना पड़ा।
अध्याय दस
जब मैं घर लौटा तो कैथी वहीं थी। वह सोफे पर बैठी मैसेज कर रही थी।
“तुम कहाँ थे?” उसने बिना ऊपर देखे पूछा।
“बस थोड़ी देर टहलना था। रिहर्सल कैसी रही?”
“ठीक है। थकाने वाला।”
मैं उसे मैसेज करते हुए देख रही थी और सोच रही थी कि वह किसे मैसेज कर रही है। मुझे पता था कि बोलने का यही सही समय है। मुझे पता है तुम्हारा किसी और के साथ अफेयर चल रहा है—मैं तलाक चाहती हूँ।
मैंने बोलने के लिए अपना मुंह खोला। लेकिन मुझे पता चला कि मैं गूंगी हो गई हूँ। इससे पहले कि मैं अपनी आवाज़ वापस पा पाती, कैथी ने मुझसे पहले ही बोल दिया। उसने मैसेज करना बंद कर दिया और अपना फोन नीचे रख दिया।
“थियो, हमें बात करनी है।”
"किस बारे में?"
“क्या तुम्हें मुझे कुछ बताना नहीं है?” उसकी आवाज में सख्ती थी।

मैंने उसकी ओर देखने से परहेज किया, कहीं वो मेरे मन की बात न पढ़ ले। मुझे शर्म और झिझक महसूस हो रही थी—जैसे कि कोई गुनाह का राज़ मेरे पास ही छिपा हो। और जहाँ तक उसकी बात थी, मैं ठीक ही था। कैथी ने सोफे के पीछे हाथ बढ़ाया और कुछ उठाया। देखते ही मेरा दिल बैठ गया। उसके हाथ में वह छोटा जार था जिसमें मैं घास रखता था। उंगली कटने के बाद मैं उसे वापस दूसरे कमरे में रखना भूल गया था।

“यह क्या है?” उसने इसे ऊपर उठाया।

“यह गांजा है।”

मुझे इसकी जानकारी है। यह यहाँ क्या कर रहा है?

मैंने कुछ खरीदा। मुझे वह पसंद आया।

“क्या मन में आया? नशा करने का? क्या तुम सच में ऐसा सोच रहे हो?”

मैंने एक शरारती बच्चे की तरह उसकी नजरों से बचते हुए कंधे उचका दिए।

“ये क्या बकवास है? मतलब, हे भगवान—” कैथी ने गुस्से से अपना सिर हिलाया।

कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं जानता।

मैं उसे मारना चाहता था। मैं उस पर झपटकर उसे मुक्कों से पीटना चाहता था। मैं कमरे में तोड़फोड़ करना चाहता था, फर्नीचर को दीवारों से टकराकर तोड़ देना चाहता था। मैं रोना-चिल्लाना चाहता था और उसकी बाहों में खुद को छिपा लेना चाहता था।

मैंने इनमें से कुछ भी नहीं किया।

मैंने कहा, "चलो सोने चलते हैं," और मैं बाहर निकल गया।

हम चुपचाप बिस्तर पर चले गए। मैं अंधेरे में उसके बगल में लेटा रहा। मैं घंटों जागता रहा, उसके शरीर की गर्मी महसूस करता रहा, सोते हुए उसे देखता रहा।

तुम मेरे पास क्यों नहीं आए? मैं कहना चाहती थी। तुमने मुझसे बात क्यों नहीं की? मैं तुम्हारी सबसे अच्छी दोस्त थी। अगर तुमने बस एक शब्द कह दिया होता, तो हम सब कुछ सुलझा सकते थे। तुमने मुझसे बात क्यों नहीं की? मैं यहीं हूँ। मैं बिल्कुल यहीं हूँ।

मैं उसे गले लगाना चाहता था, उसे अपने करीब खींचना चाहता था। मैं उसे पकड़ना चाहता था। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका। कैथी जा चुकी थी—जिस इंसान से मैं

इतना प्यार करता था, वह हमेशा के लिए गायब हो गई थी, और उसकी जगह एक अजनबी को छोड़ गई थी।
मेरे गले में एक सिसकी सी उठ खड़ी हुई। आखिरकार, आंसू बहने लगे और मेरे गालों पर पानी की धारा बहने लगी।
मैं चुपचाप, अंधेरे में रोया।

*

The next morning, we got up and performed the usual routine—she went into the bathroom while I made coffee. I handed her a cup when she came into the kitchen.

“तुम रात में अजीब आवाजें निकाल रहे थे,” उसने कहा। “तुम नींद में बातें कर रहे थे।”
मैंने क्या कहा?
“मुझे नहीं पता। कुछ भी नहीं। समझ में नहीं आया। शायद इसलिए क्योंकि तुम बहुत नशे में थी।” उसने मुझे गुस्से भरी नज़रों से देखा और अपनी घड़ी पर नज़र डाली। “मुझे जाना होगा। मुझे देर हो जाएगी।”
कैथी ने अपनी कॉफ़ी खत्म की और कप सिंक में रख दिया। उसने मेरे गाल पर जल्दी से एक चुंबन दिया। उसके होठों के स्पर्श से मैं लगभग सिहर उठा।
उसके जाने के बाद, मैंने स्नान किया। मैंने पानी का तापमान इतना बढ़ा दिया कि वह लगभग झुलसा देने वाला हो गया। गर्म पानी मेरे चेहरे पर ज़ोर से पड़ रहा था और मैं रो रही थी, मानो मेरे नादानी आँसू बह रहे हों। बाद में जब मैंने खुद को सुखाया, तो मेरी नज़र आईने में अपनी परछाई पर पड़ी। मैं दंग रह गई—मेरा चेहरा पीला पड़ गया था, मैं सिकुड़ गई थी, रातोंरात तीस साल बूढ़ी हो गई थी। मैं बूढ़ी, थकी हुई लग रही थी, मेरी जवानी गायब हो गई थी।
मैंने वहीं पर फैसला ले लिया।
कैथी को छोड़ना किसी अंग को काट देने जैसा होगा। मैं खुद को इस तरह से चोट पहुँचाने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। रूथ चाहे कुछ भी कहे। रूथ अचूक नहीं

थी। कैथी मेरे पिता नहीं थे; मैं अतीत को दोहराने के लिए अभिशप्त नहीं था। मैं भविष्य बदल सकता था। कैथी और मैं पहले खुश थे; हम फिर से खुश हो सकते थे। एक दिन शायद वह मुझसे सब कुछ कबूल कर ले, मुझे सब कुछ बता दे, और मैं उसे माफ कर दूँ। हम इस मुश्किल से निकल आएंगे।
मैं कैथी को जाने नहीं देती। इसके बजाय, मैं कुछ नहीं कहती। मैं ऐसा दिखावा करती कि मैंने वो ईमेल कभी पढ़े ही नहीं। किसी तरह, मैं भूल जाती। मैं इसे दबा देती। मेरे पास आगे बढ़ने के अलावा कोई चारा नहीं था। मैंने इसके आगे हार मानने से इनकार कर दिया; मैंने टूटकर बिखरने से इनकार कर दिया।
आखिरकार, मैं सिर्फ अपनी ही जिम्मेदारी नहीं निभा रहा था। मेरे अधीन मरीजों का क्या? कुछ लोग तो मुझ पर निर्भर थे।
मैं उन्हें निराश नहीं कर सकता था।
अध्याय ग्यारह
मैं एलिफ को ढूंढ रहा हूँ, क्या आपको पता है कि वह कहाँ मिल सकती है?
यूरी ने मुझे उत्सुकता भरी नजरों से देखा। "क्या कोई वजह है कि तुम उसे चाहते हो?"
"बस जल्दी से नमस्कार करने आया हूँ। मैं सभी मरीजों से मिलना चाहता हूँ—उन्हें बताना चाहता हूँ कि मैं कौन हूँ, मैं यहाँ हूँ।"
यूरी थोड़ा संशय में था। “ठीक है। अगर वो ज्यादा दिलचस्पी न दिखाए तो इसे दिल पर मत लेना।” उसने दीवार पर लगी घड़ी पर नज़र डाली। “साढ़े दो बज चुके हैं, तो वो अभी-अभी आर्ट थेरेपी से निकली होगी। तुम्हारे लिए सबसे अच्छा विकल्प रिक्रिएशन रूम है।”
"धन्यवाद।"
मनोरंजन क्षेत्र एक बड़ा गोलाकार कमरा था जिसमें जर्जर सोफे, नीची मेजें और फटी-पुरानी किताबों से भरी अलमारी थी जिन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता था। कमरे में बासी चाय और पुराने सिगरेट के धुएं की गंध थी जिससे फर्नीचर पर दाग लग गए थे। एक कोने में कुछ मरीज बैकगैमोन खेल रहे थे।
एलिफ पूल टेबल पर अकेली थी। मैं मुस्कुराते हुए उसके पास गया।
"हैलो, एलिफ।"
उसने भयभीत और अविश्वास भरी आँखों से ऊपर देखा। "क्या?"

“चिंता मत करो, कुछ भी गलत नहीं है। मैं बस थोड़ी देर बात करना चाहता हूँ।”
“तुम मेरे डॉक्टर नहीं हो। मेरे पास पहले से ही एक डॉक्टर है।”
मैं डॉक्टर नहीं हूँ। मैं मनोचिकित्सक हूँ।
एलिफ ने तिरस्कारपूर्वक कहा, "मुझे भी उनमें से एक मिला है।"
मैं मुस्कुराई, मन ही मन राहत महसूस कर रही थी कि वह इंदिरा की मरीज़ थी, मेरी नहीं। पास से देखने पर एलिफ और भी डरावनी लग रही थी। सिर्फ़ उसका विशाल शरीर ही नहीं, बल्कि उसके चेहरे पर गहरी लकीरें थीं - एक स्थायी गुस्से वाली शिकन और काली, गुस्से से भरी आँखें, जो साफ़ तौर पर परेशान थीं। उसके शरीर से पसीने और सिगरेट की बदबू आ रही थी, जो वह हमेशा पीती रहती थी, जिससे उसकी उंगलियों के सिरे काले और नाखून व दांत गहरे पीले हो गए थे।
"अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं आपसे एलिसिया के बारे में कुछ सवाल पूछना चाहता हूँ।"
एलिफ ने तेवर चढ़ाए और क्यू को मेज पर पटक दिया। वह दूसरे खेल के लिए गेंदों को सजाने लगी। फिर वह रुक गई। वह चुपचाप, खोई-खोई सी खड़ी रही।
“एलिफ?”
उसने कोई जवाब नहीं दिया। मैं उसके चेहरे के भाव से समझ गया कि क्या गड़बड़ है।
“क्या तुम्हें आवाजें सुनाई दे रही हैं, एलिफ?”
एक संदेह भरी निगाह। एक कंधे उचकाना।
"वो क्या कह रहे थे?"
“तुम सुरक्षित नहीं हो। मुझे सावधान रहने के लिए कह रहे हो।”
“मैं समझ गया। बिल्कुल सही। आप मुझे नहीं जानते—इसलिए मुझ पर भरोसा न करना ही समझदारी है।”
अभी नहीं। शायद समय के साथ यह बदल जाए।
एलिफ ने मुझे ऐसी नजर से देखा जिससे लगा कि उसे इस बात पर शक है।
मैंने पूल टेबल की ओर इशारा करते हुए सिर हिलाया। "एक गेम खेलना चाहोगे?"
"नहीं।"
"क्यों नहीं?"

उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "दूसरा क्यू टूट गया है। उन्होंने अभी तक उसे बदला नहीं है।"
"लेकिन मैं आपका संकेत साझा कर सकता हूँ, है ना?"
क्यू टेबल पर रखा था। मैंने उसे छूने की कोशिश की, लेकिन उसने झट से उसे मेरी पहुँच से दूर कर दिया। "ये मेरा क्यू है! अपना खुद का ले लो!"
उसकी प्रतिक्रिया की तीव्रता देखकर मैं घबराकर पीछे हट गया। उसने काफी ताकत से शॉट खेला। मैंने कुछ देर उसे खेलते देखा। फिर मैंने दोबारा कोशिश की।
“मैं सोच रहा था कि क्या आप मुझे उस घटना के बारे में कुछ बता सकते हैं जो तब हुई थी जब एलिसिया को पहली बार ग्रोव में भर्ती कराया गया था। क्या आपको याद है?”
एलिफ ने अपना सिर हिलाया।
“मैंने उसकी फाइल में पढ़ा कि कैंटीन में आपका झगड़ा हुआ था। क्या आप पर हमला हुआ था?”
"ओह, हाँ, हाँ, उसने मुझे जान से मारने की कोशिश की थी, है ना? मेरा गला काटने की कोशिश की थी।"
"हैंडओवर नोट्स के अनुसार, हमले से पहले एक नर्स ने आपको एलिसिया से कुछ फुसफुसाते हुए देखा था। मैं जानना चाहता था कि आपने क्या कहा था?"
“नहीं।” एलिफ ने गुस्से से अपना सिर हिलाया। “मैंने कुछ नहीं कहा।”
“मेरा यह कहने का इरादा नहीं है कि आपने उसे उकसाया। मैं बस उत्सुक हूँ। बात क्या थी?”
मैंने उससे कुछ पूछा था, तो इसमें क्या बड़ी बात है?
"क्या पूछा था तुमने?"
मैंने उससे पूछा कि क्या वह इसके लायक था।
"कौन?"
“वो। उसका प्रेमी।” एलिफ मुस्कुराई, हालाँकि यह वास्तव में मुस्कान नहीं थी, बल्कि एक विकृत सी मुस्कराहट थी।
“आपका मतलब उसके पति से है?” मैं हिचकिचाया, यह सोचकर कि मैं समझ पा रहा हूँ या नहीं। “आपने एलिसिया से पूछा कि क्या उसके पति को मार डालना उचित था?”

एलिफ़ ने सिर हिलाया और एक शॉट खेला। “और मैंने पूछा कि वह कैसा दिखता था। जब उसने उसे गोली मारी और उसकी खोपड़ी टूट गई, और उसका सारा दिमाग बाहर निकल आया।” एलिफ़ हंस पड़ी।
मुझे अचानक घृणा की एक लहर महसूस हुई—ठीक वैसी ही भावनाएँ जैसी मैंने कल्पना की थी कि एलिफ ने एलिसिया में पैदा की होंगी। एलिफ आपको घृणा और नफरत का एहसास कराती थी—यही उसकी विकृति थी, यही वह भावना थी जो उसकी माँ ने उसे बचपन में सिखाई थी।
घृणास्पद और घृणित। इस प्रकार एलिफ ने अनजाने में ही आपको उससे नफरत करने के लिए उकसाया।
और ज्यादातर मामलों में वह सफल रही।
“और अब सब कैसा चल रहा है? क्या आप और एलिसिया के बीच अच्छे संबंध हैं?”
“ओह, हाँ यार। हम बहुत अच्छे दोस्त हैं। पक्के दोस्त।” एलिफ फिर हंस पड़ी।
इससे पहले कि मैं कुछ जवाब दे पाता, मुझे अपनी जेब में फोन वाइब्रेट होता हुआ महसूस हुआ। मैंने उसे चेक किया। मुझे वह नंबर पहचाना हुआ नहीं लगा।
मुझे इसका जवाब देना चाहिए। धन्यवाद। आपने बहुत मदद की है।
एलिफ ने कुछ अस्पष्ट सा बुदबुदाया और वापस अपने खेल में लग गई।

*

I walked into the corridor and answered the phone. “Hello?”

"क्या यह थियो फैबर है?"
मैं बोल रहा हूँ। कौन बोल रहा है?
"मैक्स बेरेंसन बोल रहा हूं, आपकी कॉल का जवाब दे रहा हूं।"
“ओह, हाँ। हाय। मुझे वापस कॉल करने के लिए धन्यवाद। मैं सोच रही थी कि क्या हम एलिसिया के बारे में बात कर सकते हैं?”
“क्यों? क्या हुआ है? क्या कुछ गड़बड़ है?”
नहीं। मेरा मतलब है, बिलकुल नहीं—मैं उसका इलाज कर रहा हूँ, और मैं उसके बारे में आपसे कुछ सवाल पूछना चाहता था। जब भी आपको सुविधाजनक लगे।”

“मुझे नहीं लगता कि हम फोन पर बात कर पाएंगे? मैं काफी व्यस्त हूँ।”
"यदि संभव हो तो मैं आमने-सामने बात करना पसंद करूंगा।"
मैक्स बेरेन्सन ने फोन पर किसी से बात करते हुए आह भरी और कुछ बुदबुदाया। फिर बोला, "कल शाम सात बजे, मेरे दफ्तर में।"
मैं पता पूछने ही वाला था कि उसने फोन काट दिया।
अध्याय बारह
मैक्स बेरेनसन की रिसेप्शनिस्ट को ज़ुकाम था। उसने टिश्यू पेपर लिया, नाक पोंछी और मुझे इंतज़ार करने का इशारा किया।
“वह फोन पर बात कर रहा है। वह एक मिनट में बाहर आ जाएगा।”
मैंने सिर हिलाया और प्रतीक्षा कक्ष में बैठ गया। कुछ असुविधाजनक सीधी कुर्सियाँ, एक कॉफी टेबल जिस पर पुरानी पत्रिकाओं का ढेर लगा था। मैंने सोचा, सभी प्रतीक्षा कक्ष एक जैसे ही दिखते हैं; मैं किसी वकील से मिलने के लिए भी उतनी ही आसानी से प्रतीक्षा कर सकता था जितनी कि किसी डॉक्टर या अंतिम संस्कार प्रबंधक से मिलने के लिए।
गलियारे के उस पार का दरवाजा खुला। मैक्स बेरेन्सन प्रकट हुए और मुझे अपने पास बुलाया। फिर वे अपने कार्यालय में चले गए। मैं उठा और उनके पीछे-पीछे अंदर चला गया।
फोन पर उनके रूखे व्यवहार को देखते हुए मुझे सबसे बुरे की आशंका थी। लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने माफी मांगते हुए बात शुरू की।
"अगर बातचीत के दौरान मेरी बात थोड़ी अटपटी लगी हो तो मुझे माफ़ करना। यह हफ़्ता काफ़ी लंबा रहा है और मेरी तबीयत थोड़ी खराब है। क्या आप बैठ नहीं सकते?"
मैं डेस्क के दूसरी तरफ वाली कुर्सी पर बैठ गया। "धन्यवाद। और मुझसे मिलने के लिए आपका भी धन्यवाद।"
“खैर, पहले तो मुझे यकीन नहीं था कि मुझे ऐसा करना चाहिए या नहीं। मुझे लगा कि आप एक पत्रकार हैं और एलिसिया के बारे में मुझसे बात करवाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन फिर मैंने ग्रोव में फोन करके पता किया कि आप वहां काम करते हैं या नहीं।”

“मैं समझ गया। क्या ऐसा अक्सर होता है? मेरा मतलब पत्रकारों से है?”
“हाल ही में नहीं। पहले हुआ करता था। मैंने सावधान रहना सीख लिया है—” वह कुछ और कहने ही वाला था कि उसे छींक आ गई। उसने टिशू का डिब्बा उठाया। “माफ़ कीजिए—मुझे परिवार की तरह सर्दी-ज़ुकाम हो गया है।”
उसने अपनी नाक साफ की। मैंने उसे और करीब से देखा। अपने छोटे भाई के विपरीत, मैक्स बेरेंसन आकर्षक नहीं था। मैक्स हट्टा-कट्टा था, उसके बाल झड़ रहे थे और उसका चेहरा गहरे मुहांसों के निशानों से भरा हुआ था। उसने एक पुराना-
उन्होंने पुरुषों के लिए खास तरह का खुशबूदार परफ्यूम बनाया था, जैसा मेरे पिताजी इस्तेमाल करते थे। उनका दफ्तर भी पारंपरिक था और उसमें चमड़े के फर्नीचर, लकड़ी और किताबों की मनमोहक खुशबू फैली हुई थी। यह गैब्रियल की दुनिया से बिलकुल अलग था—रंगों और खूबसूरती की दुनिया, जो सिर्फ खूबसूरती के लिए थी। जाहिर है, गैब्रियल और मैक्स में ज़रा भी समानता नहीं थी।
डेस्क पर गैब्रियल की एक फ्रेम लगी तस्वीर थी। एक अनौपचारिक तस्वीर—
शायद मैक्स ने खींची हो? गैब्रियल एक खेत में बाड़ पर बैठा था, उसके बाल हवा में लहरा रहे थे और गले में कैमरा लटका हुआ था। वह फोटोग्राफर से ज़्यादा एक अभिनेता लग रहा था। या फिर एक अभिनेता जो फोटोग्राफर का किरदार निभा रहा हो।
मैक्स ने मुझे तस्वीर देखते हुए देख लिया और मानो मेरे मन की बात पढ़ ली हो, उसने सिर हिलाकर कहा, “मेरे भाई को बाल और शक्ल मिली है। मुझे दिमाग मिला है।”
मैक्स हँस पड़ा। “मैं मज़ाक कर रहा था। असल में, मुझे गोद लिया गया था। हमारा खून का रिश्ता नहीं था।”
मुझे यह पता नहीं था। क्या आप दोनों गोद लिए हुए थे?
“नहीं, सिर्फ मैं। हमारे माता-पिता को लगता था कि उनके बच्चे नहीं हो सकते। लेकिन मुझे गोद लेने के बाद, उन्होंने जल्द ही खुद एक बच्चे को जन्म दिया। ऐसा लगता है कि यह काफी आम बात है। शायद तनाव कम करने से इसका कुछ संबंध है।”
"क्या आप और गैब्रियल करीबी दोस्त थे?"

"अधिकांश लोगों की तुलना में मैं ज़्यादा करीब था। हालाँकि, ज़ाहिर है, उन्होंने ही मुख्य भूमिका निभाई। मैं उनके सामने कुछ हद तक फीका पड़ गया था।"
"ऐसा क्यों था?"
"खैर, ऐसा न होना मुश्किल था। गैब्रियल बचपन से ही खास था।"
मैक्स को अपनी शादी की अंगूठी से खेलने की आदत थी। बात करते-करते वह उसे अपनी उंगली पर घुमाता रहता था। “गैब्रियल अपना कैमरा हर जगह साथ रखता था, तस्वीरें खींचता रहता था। मेरे पिताजी को लगता था कि वह पागल है। लेकिन पता चला कि मेरा भाई तो वाकई प्रतिभाशाली था। क्या आप उसका काम जानते हैं?”
मैंने कूटनीतिक मुस्कान दी। मुझे गैब्रियल की एक फोटोग्राफर के रूप में खूबियों पर चर्चा करने की कोई इच्छा नहीं थी।
इसके बजाय मैंने बातचीत को वापस एलिसिया की ओर मोड़ दिया। "आप उसे काफी अच्छी तरह से जानती होंगी?"
“एलिसिया? क्या मुझे ऐसा करना ही पड़ेगा?” एलिसिया का नाम सुनते ही मैक्स के अंदर कुछ बदल गया। उसकी गर्मजोशी गायब हो गई। उसकी आवाज़ ठंडी पड़ गई। “मुझे नहीं पता कि मैं आपकी मदद कर सकता हूँ या नहीं। मैंने अदालत में एलिसिया का प्रतिनिधित्व नहीं किया था। अगर आपको मुकदमे के बारे में जानकारी चाहिए, तो मैं आपको अपने सहयोगी पैट्रिक डोहर्टी से मिलवा सकता हूँ।”
मुझे उस तरह की जानकारी नहीं चाहिए।
“नहीं?” मैक्स ने मुझे हैरानी भरी नज़रों से देखा। “एक मनोचिकित्सक के तौर पर, अपने मरीज़ के वकील से मिलना आम बात तो नहीं होती?”
"अगर मेरी मरीज खुद बोल सकती है, तो नहीं।"
मैक्स इस बारे में सोच-विचार करता हुआ प्रतीत हुआ। "ठीक है। खैर, जैसा कि मैंने कहा, मुझे नहीं पता कि मैं कैसे मदद कर सकता हूँ, इसलिए—"
मुझे बस कुछ सवाल पूछने हैं।
“बहुत खूब। शुरू कीजिए।”
"मुझे याद है कि मैंने उस समय प्रेस में पढ़ा था कि आपने हत्या से एक रात पहले गैब्रियल और एलिसिया को देखा था?"
"हां, हमने साथ में डिनर किया था।"

वे कैसे दिखते थे?
मैक्स की आंखें भावहीन हो गईं। शायद उससे यह सवाल सैकड़ों बार पूछा जा चुका था, और उसका जवाब बिना सोचे-समझे अपने आप आ जाता था।
“सामान्य। बिलकुल सामान्य।”
और एलिसिया?
“सामान्य।” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “शायद थोड़ा ज्यादा घबराया हुआ हूँ, लेकिन...”
"लेकिन?"
"कुछ नहीं।"
मुझे आभास हुआ कि अभी और भी कुछ है। मैंने इंतजार किया।
कुछ देर बाद मैक्स ने आगे कहा, "मुझे नहीं पता कि आप उनके रिश्ते के बारे में कितना जानते हैं।"
"सिर्फ वही जो मैंने अखबारों में पढ़ा है।"
और आपने क्या पढ़ा?
वे खुश थे।
“खुश?” मैक्स ने ठंडी मुस्कान के साथ कहा। “ओह, वे खुश थे। गैब्रियल ने उसे खुश करने के लिए हर संभव कोशिश की।”
“मैं समझ गया।” लेकिन मैं नहीं समझ पाया। मुझे नहीं पता था कि मैक्स कहाँ जा रहा था।
मैं शायद उलझन में दिख रहा था, इसलिए उसने कंधे उचका दिए। "मैं इस पर विस्तार से बात नहीं करूंगा। अगर आपको गपशप चाहिए, तो जीन-फेलिक्स से बात करें, मुझसे नहीं।"
“जीन-फेलिक्स?”
“जीन-फेलिक्स मार्टिन। एलिसिया का गैलरिस्ट। वे एक दूसरे को सालों से जानते थे। बहुत गहरे दोस्त थे। सच कहूँ तो, मुझे वह कभी ज्यादा पसंद नहीं आया।”
“मुझे गपशप में कोई दिलचस्पी नहीं है।” मैंने जल्द से जल्द जीन-फेलिक्स से बात करने का मन बना लिया। “मुझे आपकी निजी राय जानने में ज़्यादा दिलचस्पी है। क्या मैं...?”

क्या मैं आपसे सीधा सवाल पूछ सकता हूँ?
मुझे लगा कि तुमने अभी-अभी ऐसा किया है।
"क्या आपको एलिसिया पसंद आई?"
बोलते समय मैक्स ने भावहीन होकर मेरी ओर देखा। "बेशक मैंने किया।"
मुझे उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ। "मुझे लगता है कि तुम दो अलग-अलग भूमिकाएँ निभा रहे हो। एक वकील की भूमिका, जो स्वाभाविक रूप से विवेकपूर्ण है। और दूसरी भाई की भूमिका। मैं तो भाई से मिलने आया हूँ।"
कुछ पल का सन्नाटा छा गया। मुझे लगा जैसे मैक्स मुझे जाने के लिए कहने वाला है। ऐसा लग रहा था कि वह कुछ कहने ही वाला था, लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया। फिर अचानक वह डेस्क से उठा और खिड़की के पास गया। उसने खिड़की खोल दी। ठंडी हवा का एक झोंका आया। मैक्स ने गहरी सांस ली, मानो कमरे में घुटन हो रही हो।
अंत में उसने धीमी आवाज में कहा, "सच तो यह है कि... मैं उससे नफरत करता था... मैं उससे घृणा करता था।"
मैंने कुछ नहीं कहा। मैंने उसके बोलने का इंतजार किया।
वह खिड़की से बाहर देखता रहा और धीरे से बोला, "गैब्रियल सिर्फ मेरा भाई नहीं था, वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त था। वह अब तक मिले सबसे दयालु इंसान थे।"
बहुत दयालु था। और उसकी सारी प्रतिभा, उसकी अच्छाई, जीवन के प्रति उसका जुनून—उस कमीनी की वजह से सब कुछ नष्ट हो गया। उसने सिर्फ उसकी जिंदगी ही नहीं, मेरी जिंदगी भी बर्बाद कर दी।
"भगवान का शुक्र है कि मेरे माता-पिता इसे देखने के लिए जीवित नहीं रहे।" मैक्स अचानक भावुक होकर भर्रा गया।
उनकी पीड़ा को महसूस करना मुश्किल नहीं था, और मुझे उन पर तरस आया। "एलिसिया का बचाव करना आपके लिए बेहद मुश्किल रहा होगा।"
मैक्स ने खिड़की बंद की और डेस्क पर लौट आया। उसने खुद पर काबू पा लिया था। वह फिर से वकील की भूमिका में आ गया था। तटस्थ, संतुलित, भावहीन।
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "यही तो गैब्रियल चाहता होगा। वह हमेशा एलिसिया का भला चाहता था। वह उससे बहुत प्यार करता था। एलिसिया भी उससे बहुत प्यार

करती थी।"
"क्या आपको लगता है कि वह पागल थी?"
"आप ही बताइए—आप तो उसके मनोचिकित्सक हैं।"
"आप क्या सोचते हैं?"
मुझे पता है मैंने क्या देखा।
और वह क्या था?
"मनोदशा में उतार-चढ़ाव। क्रोध। हिंसक दौरे। वह चीजें तोड़ देती थी, सामान तहस-नहस कर देती थी।"
गैब्रिएल ने मुझे बताया कि उसने कई बार उसे जान से मारने की धमकी दी थी। मुझे चाहिए
मैंने उसकी बात सुनी होती, कुछ किया होता—जब उसने आत्महत्या करने की कोशिश की, तो मुझे दखल देना चाहिए था, उसे मदद दिलाने पर ज़ोर देना चाहिए था। लेकिन मैंने नहीं किया। गैब्रियल उसे बचाने के लिए दृढ़ था, और एक मूर्ख की तरह, मैंने उसे ऐसा करने दिया।
मैक्स ने आह भरी और अपनी घड़ी देखी—यह मेरे लिए बातचीत समाप्त करने का संकेत था।
लेकिन मैं उसे बस खाली निगाहों से देखता रहा। “एलिसिया ने आत्महत्या करने की कोशिश की? तुम्हारा क्या मतलब है? कब? तुम्हारा मतलब हत्या के बाद से है?”
मैक्स ने सिर हिलाया। "नहीं, उससे कई साल पहले। आपको नहीं पता? मुझे लगा था कि आपको पता होगा।"
"ये कब था?"
"उसके पिता की मृत्यु के बाद, उसने ज़रूरत से ज़्यादा दवा ले ली... गोलियां या कुछ और। मुझे ठीक से याद नहीं है। उसे मानसिक आघात लगा था।"
मैं उससे और कुछ पूछने ही वाला था कि तभी दरवाजा खुला। रिसेप्शनिस्ट सामने आई और नाक सिकोड़ते हुए बोली, "डार्लिंग, हमें चलना चाहिए। हमें देर हो जाएगी।"
ठीक है। आ रहा हूँ, प्रिये।
दरवाजा बंद हो गया। मैक्स खड़ा हो गया और मुझे माफी भरी नजरों से देखते हुए बोला, "हमारे पास थिएटर के टिकट हैं।" मैं शायद चौंक गया था, क्योंकि वह हंस

पड़ा। "हम—"
तान्या और मेरी शादी पिछले साल हुई थी।
"ओह, मैं समझा।"
“गैब्रियल की मौत ने हमें एक साथ ला दिया। उसके बिना मैं इस मुश्किल दौर से नहीं गुजर पाती।”
मैक्स के फोन की घंटी बजी, जिससे उसका ध्यान भटक गया।
मैंने उसे फोन उठाने का इशारा किया। "धन्यवाद, आपने बहुत मदद की।"
मैं ऑफिस से चुपके से निकल गया। मैंने रिसेप्शन में बैठी तान्या को गौर से देखा। वह सुनहरे बालों वाली, सुंदर और कद में काफी छोटी थी। उसने अपनी नाक साफ की, और मैंने उसकी शादी की उंगली पर लगा बड़ा हीरा देखा।
मुझे आश्चर्य हुआ जब वह उठी और भौंहें चढ़ाकर मेरी ओर चलने लगी। उसने धीमी आवाज़ में जल्दबाजी से कहा, "अगर तुम एलिसिया के बारे में जानना चाहते हो, तो उसके चचेरे भाई पॉल से बात करो—वह उसे सबसे बेहतर जानता है।"
मैंने उसकी चाची, लिडिया रोज़ को फोन करने की कोशिश की। वह कुछ खास सहयोग नहीं कर रही थी।
“लिडिया को भूल जाओ। कैम्ब्रिज जाओ। पॉल से बात करो। उससे एलिसिया और दुर्घटना के बाद वाली रात के बारे में पूछो, और—”
ऑफिस का दरवाजा खुला। तान्या तुरंत चुप हो गई। मैक्स बाहर आया और वह मुस्कुराते हुए तेजी से उसके पास गई।
“तैयार हो, डार्लिंग?” उसने पूछा।
तान्या मुस्कुरा रही थी, लेकिन उसकी आवाज़ में घबराहट झलक रही थी। मुझे लगा कि वह मैक्स से डरती है। मैंने सोचा, ऐसा क्यों?
अध्याय तेरह
एलिसिया बेरेंसन की डायरी
22 जुलाई
मुझे इस बात से नफरत है कि घर में बंदूक है।
कल रात इस बारे में हमारी फिर बहस हुई। कम से कम मुझे तो यही लगा कि हम इसी बात पर लड़ रहे थे—अब मुझे इतना यकीन नहीं है।

गैब्रियल ने कहा कि हमारी लड़ाई मेरी गलती थी। शायद थी ही। मुझे उसे इतना परेशान और दुखी आँखों से मेरी तरफ देखते देखना बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था। मुझे उसे दुख पहुँचाना बिल्कुल पसंद नहीं है—फिर भी कभी-कभी मेरा उसे चोट पहुँचाने का बहुत मन करता है, और मुझे नहीं पता क्यों।

उन्होंने कहा कि मैं बहुत खराब मूड में घर आई थी। मैं ऊपर गई और उन पर चिल्लाने लगी। शायद मैंने ऐसा किया हो। मुझे लगता है कि मैं परेशान थी। मुझे ठीक से याद नहीं कि क्या हुआ था। मैं अभी-अभी पार्क से लौटी थी। मुझे रास्ते का ज़्यादा कुछ याद नहीं है—मैं ख्यालों में खोई हुई थी, काम के बारे में सोच रही थी, यीशु की तस्वीर के बारे में सोच रही थी। मुझे याद है कि घर आते समय मैं एक घर के पास से गुज़री थी।

दो लड़के एक पाइप से खेल रहे थे। उनकी उम्र सात या आठ साल से ज़्यादा नहीं रही होगी। बड़ा लड़का छोटे पर पानी की तेज़ धार से पानी छिड़क रहा था, जिससे इंद्रधनुषी रंगों की छटा जगमगा रही थी। एकदम सुंदर इंद्रधनुष। छोटा लड़का हंसते हुए अपने हाथ फैला रहा था। मैं वहां से गुज़री और मुझे एहसास हुआ कि मेरे गाल आंसुओं से भीगे हुए थे।

तब तो मैंने इसे नज़रअंदाज़ कर दिया था, लेकिन अब जब मैं इसके बारे में सोचती हूँ, तो यह बात साफ़ लगती है। मैं खुद से यह सच स्वीकार नहीं करना चाहती कि मेरे जीवन का एक बहुत बड़ा हिस्सा अधूरा है। मैंने यह मानने से इनकार कर दिया है कि मुझे बच्चे चाहिए, यह दिखावा किया है कि मुझे उनमें कोई दिलचस्पी नहीं है, कि मुझे सिर्फ़ अपनी कला की परवाह है। और यह सच नहीं है। यह सिर्फ़ एक बहाना है - सच तो यह है कि मुझे बच्चे पैदा करने से डर लगता है। मुझे बच्चों की ज़िम्मेदारी नहीं सौंपी जा सकती।

मेरी रगों में मेरी मां का खून बह रहा है, तब तो नहीं।

घर पहुँचते ही मेरे मन में यही बात चल रही थी, चाहे होश में हो या अचेतन रूप से। गैब्रियल सही था, मेरी हालत बहुत खराब थी।

लेकिन अगर मैंने उसे बंदूक साफ करते हुए न देखा होता तो मैं इतना गुस्सा न करती। मुझे बहुत बुरा लगता है कि वह बंदूक उसके पास है। और मुझे इस बात का भी दुख है कि चाहे मैं कितनी भी बार उससे विनती करूं, वह उसे फेंकना नहीं

चाहता। वह हमेशा एक ही बात कहता है—कि यह उसके पिता की पुरानी राइफल थी जो उनके खेत में थी और उन्होंने उसे सोलह साल की उम्र में दी थी, कि इससे उसकी भावनात्मक लगाव है वगैरह वगैरह। मुझे उसकी बात पर यकीन नहीं होता। मुझे लगता है कि इसे रखने के पीछे कोई और वजह है। मैंने उससे ऐसा कहा भी। और गैब्रियल ने कहा कि सुरक्षित रहना—अपने घर और पत्नी की रक्षा करना—गलत नहीं है। अगर कोई घर में घुस जाए तो क्या होगा?

“तो फिर हम पुलिस को बुलाएंगे,” मैंने कहा। “हम उन्हें गोली नहीं मारेंगे!”

मैंने अपनी आवाज़ ऊंची की, लेकिन उसने मुझसे भी ऊंची आवाज़ में बोलना शुरू कर दिया, और देखते ही देखते हम एक-दूसरे पर चिल्लाने लगे। शायद मैं थोड़ा बेकाबू हो गई थी। लेकिन मैं तो बस उसकी प्रतिक्रिया दे रही थी—गैब्रियल का एक आक्रामक पहलू भी है, उसका एक ऐसा रूप जिसे मैं कभी-कभार ही देख पाती हूँ, और जब भी देखती हूँ, तो डर जाती हूँ। उन कुछ पलों के लिए ऐसा लगता है जैसे किसी अजनबी के साथ रह रही हूँ। और यह बहुत डरावना है।

हमने बाकी की शाम एक शब्द भी नहीं बोला। हम चुपचाप सो गए।

आज सुबह हमने शारीरिक संबंध बनाए और सुलह कर ली। लगता है हम हमेशा बिस्तर पर ही अपनी समस्याओं का समाधान करते हैं। पता नहीं क्यों, जब आप नग्न अवस्था में हों और चादर के नीचे अधनी नींद में हों, तो धीरे से "मुझे माफ़ कर दो" कहना और दिल से कहना कितना आसान होता है। सारे बहाने और झूठे तर्क सब धरे के धरे, हमारे कपड़ों के साथ ज़मीन पर पड़े होते हैं।

“शायद हमें यह नियम बना लेना चाहिए कि हम हमेशा बिस्तर पर ही बहस करें।” उसने मुझे चूमा। “मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मैं राइफल से छुटकारा पा लूँगा, वादा करता हूँ।”

“नहीं,” मैंने कहा। “कोई बात नहीं, भूल जाओ। सब ठीक है। सचमुच।”

गैब्रियल ने मुझे फिर चूमा और मुझे अपने करीब खींच लिया। मैंने उसे कसकर पकड़ लिया और अपना नग्न शरीर उसके ऊपर रख दिया। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और उस कोमल चट्टान पर लेट गई जो मेरे आकार में ढली हुई थी। और अंततः मुझे शांति का अनुभव हुआ।

23 जुलाई

मैं यह कैफे डे ल'आर्टिस्टा में लिख रहा हूँ। मैं आजकल लगभग हर दिन यहाँ आता हूँ। मुझे घर से बाहर निकलने की बहुत ज़रूरत महसूस होती है। जब मैं दूसरे लोगों के बीच होता हूँ, भले ही यहाँ सिर्फ़ ऊबी हुई वेट्रेस ही क्यों न हो, तो मुझे किसी न किसी तरह दुनिया से जुड़ाव महसूस होता है, जैसे मैं एक इंसान हूँ।
अन्यथा मेरा अस्तित्व ही समाप्त होने का खतरा है। जैसे कि मैं गायब हो जाऊँगा।
कभी-कभी मेरा मन करता है कि मैं गायब हो जाऊं—जैसे आज रात। गैब्रियल ने अपने भाई को रात के खाने पर बुलाया है। उसने मुझे आज सुबह अचानक बताया। उन्होंने कहा, "हमने मैक्स को बहुत समय से नहीं देखा है। जोएल के गृहप्रवेश समारोह के बाद से नहीं।"
मैं बारबेक्यू बनाऊंगा।" गैब्रियल ने मेरी तरफ अजीब नज़र से देखा। "आपको कोई आपत्ति तो नहीं है?"
मुझे क्या आपत्ति होगी?
गैब्रियल हँसा। "तुम झूठ बोलने में बहुत बुरे हो, जानते हो? मैं तुम्हारा चेहरा एक छोटी किताब की तरह पढ़ सकता हूँ।"
और इसमें क्या लिखा है?
"तुम्हें मैक्स पसंद नहीं है। तुम्हें कभी पसंद नहीं आया।"
"यह सच नहीं है।" मुझे लगा जैसे मेरा चेहरा लाल हो रहा है। मैंने कंधे उचकाए और दूसरी तरफ देखने लगी। "बेशक मुझे मैक्स पसंद है। उससे मिलना अच्छा लगेगा। आप मेरे लिए दोबारा कब बैठेंगी? मुझे तस्वीर पूरी करनी है।"
गेब्रियल मुस्कुराया। "इस सप्ताहांत कैसा रहेगा? और पेंटिंग के बारे में—मेरी एक प्लीज़। मैक्स को मत दिखाना, ठीक है? मैं नहीं चाहता कि वह मुझे यीशु के रूप में देखे—मैं इसे कभी नहीं भूल पाऊंगा।"
"मैक्स इसे नहीं देख पाएगा। यह अभी तैयार नहीं है।"
और अगर ऐसा होता भी, तो मैक्स वो आखिरी व्यक्ति है जिसे मैं अपने स्टूडियो में देखना चाहता हूँ। मैंने ये सोचा तो था, पर कहा नहीं।
अब मुझे घर जाने से डर लग रहा है। मैं यहीं इस वातानुकूलित कैफे में रहना चाहती हूँ और मैक्स के जाने तक यहीं छिपना चाहती हूँ। लेकिन वेट्रेस पहले से ही बेचैनी भरी आवाजें निकाल रही है और बार-बार अपनी घड़ी देख रही है। मुझे जल्द ही बाहर

निकाल दिया जाएगा। और इसका मतलब है कि पागलों की तरह पूरी रात सड़कों पर भटकने के अलावा मेरे पास घर जाने और अंजाम भुगतने के अलावा कोई चारा नहीं है। और मैक्स का सामना करने के अलावा भी।

24 जुलाई

मैं वापस कैफे में आ गया हूँ। कोई मेरी टेबल पर बैठा था, और वेट्रेस ने मुझे सहानुभूति भरी नज़र से देखा—कम से कम मुझे लगता है कि वह यही जताना चाह रही थी, एकजुटता का भाव, लेकिन मैं गलत भी हो सकता हूँ। मैंने एयर कंडीशनिंग यूनिट के पास, अंदर की ओर मुंह करके, बाहर की ओर नहीं, एक और टेबल ले ली। यहाँ ज़्यादा रोशनी नहीं है—ठंड और अंधेरा है, जो मेरे मूड के अनुकूल है।

कल रात बहुत भयानक थी। मेरी कल्पना से भी बदतर।

मैक्स जब आया तो मैं उसे पहचान नहीं पाई—मुझे नहीं लगता कि मैंने उसे पहले कभी सूट के बिना देखा था। शॉर्ट्स में वह थोड़ा अजीब लग रहा था। स्टेशन से पैदल चलने के बाद उसे बहुत पसीना आ रहा था—उसका गंजा सिर लाल और चमकदार हो गया था, और बगल से काले धब्बे फैल रहे थे। उसने पहले तो मेरी तरफ देखा ही नहीं। या शायद मेरी ही गलती थी कि मैं उसे देख नहीं पा रही थी?

उसने घर की बहुत तारीफ की, कहा कि यह कितना अलग दिख रहा है, और उसे बुलाए हुए कितना समय हो गया था कि उसे लगने लगा था कि हम दोबारा कभी नहीं बुलाएंगे। गैब्रियल बार-बार माफी मांगता रहा, कहता रहा कि हम कितने व्यस्त थे, मैं आने वाली प्रदर्शनी में और वह काम में, और हम किसी से मिल नहीं पाए। गैब्रियल मुस्कुरा रहा था, लेकिन मैं समझ गई कि मैक्स के इस बात को इतना बढ़ा-चढ़ाकर बताने से वह नाराज़ था।

मैंने शुरू में काफी अच्छा दिखावा किया। मैं सही मौके का इंतजार कर रहा था।

और फिर मुझे वो मिल गया। मैक्स और गैब्रियल बगीचे में गए और बारबेक्यू जलाने लगे। मैं सलाद बनाने के बहाने रसोई में ही रुकी रही। मुझे पता था कि मैक्स कोई बहाना बनाकर मुझसे मिलने आएगा। और मैं सही थी। करीब पाँच मिनट बाद, मुझे उसके भारी-भारी कदमों की आहट सुनाई दी। वो गैब्रियल की तरह बिल्कुल नहीं चलता—गैब्रियल तो इतना शांत है, बिल्ली की तरह, मुझे घर में उसके चलने की आवाज़ बिल्कुल भी नहीं आती।

“एलिसिया,” मैक्स ने कहा।
टमाटर काटते समय मुझे एहसास हुआ कि मेरे हाथ कांप रहे हैं। मैंने चाकू नीचे रख दिया। मैं उसकी ओर मुड़ी।
मैक्स ने अपनी खाली बीयर की बोतल ऊपर उठाई और मुस्कुराया। वह अब भी मेरी तरफ नहीं देख रहा था।
मैं एक और लेने आया हूँ।
मैंने सिर हिलाया। मैंने कुछ नहीं कहा। उसने फ्रिज खोला और एक और बियर निकाली। वह बोतल खोलने वाला यंत्र ढूंढने लगा। मैंने काउंटर पर रखे हुए यंत्र की ओर इशारा किया।
बीयर की बोतल खोलते समय उसने मुझे एक अजीब सी मुस्कान दी, मानो कुछ कहने वाला हो। लेकिन मैंने उससे पहले ही बोल दिया:
मैं गैब्रियल को सब कुछ बताऊंगी। मुझे लगा कि तुम्हें पता होना चाहिए।
मैक्स की मुस्कान गायब हो गई। उसने पहली बार मेरी तरफ देखा, उसकी आंखें सांप जैसी थीं।
"क्या?"
मैं गैब्रियल को बता रहा हूँ। जोएल के यहाँ जो कुछ हुआ उसके बारे में।
मुझे नहीं पता कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं।
क्या आप ऐसा नहीं सोचते?
मुझे याद नहीं है। मुझे डर है कि मैं काफी नशे में था।
"बकवास।"
“यह सच है।”
“तुम्हें मुझे चूमना याद नहीं है? तुम्हें मुझे पकड़ना याद नहीं है?”
“एलिसिया, ऐसा मत करो।”
“क्या न करूँ? इसे लेकर इतना हंगामा क्यों मचाऊँ? तुमने मुझ पर हमला किया है।”
मुझे गुस्सा आने लगा था। अपनी आवाज़ पर काबू रखना और चिल्लाना न चाहना मेरे लिए एक बड़ी चुनौती थी। मैंने खिड़की से बाहर देखा। गैब्रियल बगीचे के आखिरी छोर पर बारबेक्यू के पास खड़ा था। धुएँ और गर्म हवा के कारण वह ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था, और उसका चेहरा गुस्से से सिकुड़ा हुआ था।

मैंने कहा, "वह आपको अपना आदर्श मानता है। आप उसके बड़े भाई हैं। जब मैं उसे यह बात बताऊंगा तो उसे बहुत दुख होगा।"
“तो फिर मत बताओ। उसे बताने जैसा कुछ नहीं है।”
उसे सच्चाई जानने की जरूरत है। उसे यह जानने की जरूरत है कि उसका भाई असल में कैसा है।
आप-"
इससे पहले कि मैं अपनी बात पूरी कर पाती, मैक्स ने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया और मुझे अपनी ओर खींच लिया।
मेरा संतुलन बिगड़ गया और मैं उस पर गिर पड़ी। उसने अपनी मुट्ठी उठाई और मुझे लगा कि वह...
मुझे घूंसा मारने जा रहा था। "मैं तुमसे प्यार करता हूँ," उसने कहा, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मैं तुमसे प्यार करता हूँ—"
इससे पहले कि मैं कुछ प्रतिक्रिया कर पाती, उसने मुझे चूम लिया। मैंने दूर हटने की कोशिश की, लेकिन उसने मुझे जाने नहीं दिया। मैंने उसके खुरदुरे होंठ अपने होंठों पर महसूस किए, और उसकी जीभ मेरे मुंह में घुसने लगी। सहज प्रवृत्ति हावी हो गई। मैंने उसकी जीभ को पूरी ताकत से काट लिया।
मैक्स चिल्लाया और मुझे धक्का देकर दूर कर दिया। जब उसने ऊपर देखा तो उसका मुंह खून से भरा हुआ था।
“कमीनी कुतिया!” उसकी आवाज लड़खड़ा रही थी, उसके दांत लाल थे। वह मुझे किसी घायल जानवर की तरह घूर रहा था।
मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा कि मैक्स गैब्रियल का भाई है। उसमें गैब्रियल के अच्छे गुण, शालीनता, दयालुता, कुछ भी नहीं है। मैक्स से मुझे घृणा होती है—और मैंने ये बात कह भी दी।
“एलिसिया, गैब्रियल से कुछ मत कहना,” उसने कहा। “मैं सच कह रहा हूँ। मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ।”
मैंने एक शब्द भी नहीं कहा। मुझे उसकी खून की गंध अपनी जीभ पर महसूस हो रही थी, इसलिए मैंने नल खोला और तब तक कुल्ला किया जब तक वह गंध पूरी तरह से चली नहीं गई। फिर मैं बगीचे में चला गया।

कभी-कभी मुझे ऐसा लगता था कि मैक्स रात के खाने के दौरान मुझे घूर रहा है। मैं ऊपर देखती और उसकी नज़रें मुझसे मिलतीं, तो वह नज़रें हटा लेता। मैंने कुछ नहीं खाया। खाने के ख्याल से ही मुझे उल्टी आने लगती थी। मुझे लगातार उसके खून का स्वाद अपने मुँह में महसूस हो रहा था।

मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं। मैं गैब्रियल से झूठ नहीं बोलना चाहती। न ही मैं इसे छुपाना चाहती हूं। लेकिन अगर मैंने गैब्रियल को बता दिया, तो वो मैक्स से फिर कभी बात नहीं करेगा। उसे ये जानकर बहुत दुख होगा कि उसने अपने भाई पर भरोसा करके गलती की थी।

क्योंकि वह मैक्स पर भरोसा करता है। वह उसे अपना आदर्श मानता है। और उसे ऐसा नहीं करना चाहिए।

मुझे नहीं लगता कि मैक्स मुझसे प्यार करता है। मुझे लगता है कि वह गैब्रियल से नफरत करता है, बस इतना ही। मुझे लगता है कि वह उससे बुरी तरह जलता है और गैब्रियल की हर चीज़ छीनना चाहता है, जिसमें मैं भी शामिल हूँ। लेकिन अब जब मैंने उसका सामना कर लिया है, तो मुझे नहीं लगता कि वह मुझे फिर से परेशान करेगा—कम से कम मैं यही उम्मीद करती हूँ। कम से कम कुछ समय के लिए तो नहीं।

इसलिए, फिलहाल मैं चुप रहूंगा।

बेशक, गैब्रियल मुझे एक खुली किताब की तरह पढ़ सकता है। या शायद मैं अच्छी अभिनेत्री नहीं हूँ। कल रात, जब हम सोने की तैयारी कर रहे थे, उसने कहा कि मैक्स के वहाँ रहने के दौरान मैं पूरे समय अजीब व्यवहार कर रही थी।

मैं बस थक गया था।

“नहीं, बात इससे कहीं ज़्यादा थी। तुम बहुत ही बेरुखी से पेश आ रहे थे। तुम्हें थोड़ी और कोशिश करनी चाहिए थी। हम उससे बहुत कम ही मिलते हैं। मुझे समझ नहीं आता कि तुम्हें उससे इतनी परेशानी क्यों है।”

“नहीं, मुझे नहीं पता। इसका मैक्स से कोई लेना-देना नहीं था। मेरा ध्यान कहीं और था, मैं काम के बारे में सोच रही थी। प्रदर्शनी के काम में मैं पीछे चल रही हूँ—बस उसी के बारे में सोच रही हूँ।” मैंने पूरी दृढ़ता से ये बात कही।

गैब्रियल ने अविश्वास भरी नज़रों से मेरी ओर देखा, लेकिन फिलहाल उसने इस बात को नज़रअंदाज़ कर दिया। अगली बार जब हम मैक्स से मिलेंगे, तब मुझे फिर से इस

बात का सामना करना पड़ेगा—लेकिन मुझे लगता है कि ऐसा होने में अभी काफी समय लगेगा।
इसे लिख लेने से मुझे अच्छा लग रहा है। कागज़ पर होने से मुझे किसी तरह की सुरक्षा का एहसास हो रहा है। इसका मतलब है कि मेरे पास कुछ सबूत है—कुछ प्रमाण है।
अगर कभी ऐसी नौबत आई तो।
26 जुलाई
आज मेरा जन्मदिन है। मैं तैंतीस साल का हो गया हूँ।
यह अजीब है—मैं अपनी उम्र को जितना समझती थी, उससे कहीं ज़्यादा उम्र की हूँ; मेरी कल्पना तो बस यहीं तक सीमित थी। अब मैं अपनी माँ से भी ज़्यादा जी चुकी हूँ —उनसे ज़्यादा उम्र होना एक अजीब सा एहसास है। वह बत्तीस साल की हुईं और फिर रुक गईं। अब मैं उनसे भी ज़्यादा जी चुकी हूँ, और रुकूँगी नहीं। मैं और बूढ़ी होती जाऊँगी।
लेकिन वह ऐसा नहीं करेगी।
आज सुबह गैब्रियल बहुत प्यारा था—उसने मुझे चूमकर जगाया और तैंतीस लाल गुलाब दिए। वे बहुत खूबसूरत थे। उसने एक गुलाब के कांटे से अपनी उंगली में चुभो ली। खून की बूंद जैसा लाल गुलाब। यह बिल्कुल अद्भुत था।
फिर वो मुझे नाश्ते के लिए पार्क में पिकनिक पर ले गया। सूरज अभी-अभी निकला था, इसलिए गर्मी असहनीय नहीं थी। पानी से ठंडी हवा आ रही थी।
हवा में कटी हुई घास की महक थी। हम तालाब के किनारे, एक झुके हुए विलो पेड़ के नीचे, मेक्सिको से खरीदी हुई नीली चादर पर लेटे थे। विलो की शाखाओं ने हमारे ऊपर एक छत्र बना रखा था, और सूरज की हल्की किरणें पत्तियों से छनकर आ रही थीं। हमने शैम्पेन पी और स्मोक्ड सैल्मन और ब्रेड के पतले टुकड़ों के साथ छोटे मीठे टमाटर खाए। मेरे मन के किसी कोने में, एक जानी-पहचानी सी अनुभूति थी, एक अजीब सा एहसास, जिसे मैं ठीक से समझ नहीं पा रहा था। शायद यह बचपन की कहानियों, परियों की कहानियों और जादुई पेड़ों की याद थी, जो दूसरी दुनिया के द्वार हुआ करते थे। शायद यह कुछ और ही साधारण सी बात थी।
और फिर मुझे वह याद वापस आ गई:

मुझे याद है जब मैं बहुत छोटी थी, कैम्ब्रिज में हमारे बगीचे में विलो के पेड़ की शाखाओं के नीचे बैठी रहती थी। मैं घंटों वहाँ छिपकर बिताती थी। शायद मैं एक खुशमिजाज बच्ची नहीं थी, लेकिन विलो के पेड़ के नीचे बिताए उन पलों में मुझे वैसी ही संतुष्टि मिलती थी जैसी गैब्रियल के साथ यहाँ लेटने पर मिलती है। और अब ऐसा लग रहा था मानो अतीत और वर्तमान एक साथ एक परिपूर्ण क्षण में विद्यमान हों।
मैं चाहती थी कि वो पल हमेशा के लिए ठहर जाए। गैब्रियल सो गया, और मैंने उसका स्केच बनाया, उसके चेहरे पर पड़ती धूप की हल्की-हल्की किरणों को कैद करने की कोशिश की। इस बार मैंने उसकी आँखें बेहतर बनाईं। आँखें बंद होने की वजह से बनाना आसान था—लेकिन कम से कम उनकी आकृति तो सही बनी। वो एक छोटे बच्चे जैसा लग रहा था, जो सिकुड़कर सो रहा हो और धीरे-धीरे साँस ले रहा हो, उसके मुँह के आसपास रोटी के टुकड़े चिपके हों।
हमने पिकनिक खत्म की, घर गए और शारीरिक संबंध बनाए। गैब्रियल ने मुझे अपनी बाहों में भर लिया और कुछ चौंकाने वाली बात कही:
“एलिसिया, मेरी प्यारी, सुनो। मेरे मन में कुछ ऐसा है जिसके बारे में मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ।”
उसके बोलने के तरीके से ही मैं तुरंत घबरा गई। मैंने खुद को संभाला, सबसे बुरे की आशंका से। "आगे बोलो।"
मैं चाहती हूं कि हमारा एक बच्चा हो।
मुझे बोलने में थोड़ा समय लगा। मैं इतना अचंभित हो गया था कि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ।
लेकिन—आप तो बच्चे नहीं चाहते थे। आपने कहा था—”
“इसे भूल जाओ। मैंने अपना मन बदल लिया है। मैं चाहती हूँ कि हम साथ में एक बच्चा पैदा करें। तो?”
आप क्या कहते हैं?"
गैब्रियल ने आशा भरी निगाहों से मेरी ओर देखा, मानो मेरी प्रतिक्रिया का इंतज़ार कर रहा हो। मेरी आँखों में आँसू भर आए। “हाँ,” मैंने कहा, “हाँ, हाँ, हाँ...”
हमने एक दूसरे को गले लगाया, रोए और हंसे।

वो अब बिस्तर पर सो रहा है। मुझे चुपके से आकर ये सब लिखना पड़ा—मैं इस दिन को ज़िंदगी भर याद रखना चाहती हूँ। इसका हर एक पल।
मुझे खुशी महसूस हो रही है। मैं आशा से भरा हुआ महसूस कर रहा हूँ।
अध्याय चौदह
मैं लगातार मैक्स बेरेन्सन की कही बातों के बारे में सोच रहा था—अपने पिता की मृत्यु के बाद एलिसिया द्वारा आत्महत्या के प्रयास के बारे में। उसकी फाइल में इसका कोई जिक्र नहीं था, और मुझे आश्चर्य हुआ कि ऐसा क्यों था।
मैंने अगले दिन मैक्स को फोन किया और ठीक उसी समय उससे बात की जब वह ऑफिस से निकल रहा था।
"अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं आपसे कुछ और सवाल पूछना चाहता हूँ।"
मैं सचमुच दरवाजे से बाहर निकल रहा हूँ।
इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा।
मैक्स ने आह भरी और फोन नीचे रखकर तान्या से कुछ अस्पष्ट सी बात कही।
उन्होंने कहा, "पांच मिनट। बस इतना ही समय मिलेगा।"
"धन्यवाद, मैं इसकी सराहना करता हूँ। आपने एलिसिया के आत्महत्या के प्रयास का जिक्र किया। मैं जानना चाहता था कि किस अस्पताल में उसका इलाज हुआ था?"
उन्हें अस्पताल में भर्ती नहीं कराया गया था।
“क्या वह नहीं थी?”
नहीं। वह घर पर ही ठीक हो गई। मेरे भाई ने उसकी देखभाल की।
"लेकिन—क्या उसने डॉक्टर को नहीं दिखाया? आपने कहा था कि यह ओवरडोज था?"
“हाँ। और बेशक गैब्रियल ने एक डॉक्टर को बुलाया। और उसने... डॉक्टर ने—
उन्होंने इसे गुप्त रखने पर सहमति जताई।
“वह डॉक्टर कौन था? क्या आपको उसका नाम याद है?”
मैक्स ने कुछ देर सोचा और फिर बोला, "माफ़ कीजिए, मैं आपको नहीं बता सकता... मुझे याद नहीं आ रहा।"
क्या यह उनके डॉक्टर का डॉक्टर था?

“नहीं, मुझे यकीन है कि ऐसा नहीं था। मेरा और मेरे भाई का डॉक्टर एक ही था। मुझे याद है कि गैब्रियल ने मुझसे खास तौर पर कहा था कि मैं इस बारे में उससे बात न करूं।”
"और आपको यकीन है कि आपको नाम याद नहीं है?"
मुझे खेद है। बस इतना ही? मुझे जाना होगा।
"बस एक और बात... मुझे गैब्रियल की वसीयत की शर्तों के बारे में जानने की उत्सुकता थी।"
एक हल्की सी साँस लेते ही मैक्स का स्वर तुरंत तीखा हो गया। "उसकी इच्छा?"
मुझे तो इसकी प्रासंगिकता बिल्कुल समझ नहीं आती—"
"क्या एलिसिया को सबसे ज्यादा फायदा हुआ?"
मुझे कहना पड़ेगा, मुझे यह सवाल कुछ अजीब सा लगता है।
“ठीक है, मैं समझने की कोशिश कर रहा हूँ—”
“क्या समझना है?” मैक्स ने जवाब का इंतज़ार किए बिना, चिढ़ते हुए पूछा। “मैं मुख्य लाभार्थी था। एलिसिया को अपने पिता से बहुत सारा पैसा विरासत में मिला था, इसलिए गैब्रियल को लगा कि उसकी ज़रूरतें पूरी हो चुकी हैं। और इसीलिए उसने अपनी अधिकांश संपत्ति मुझे दे दी। ज़ाहिर है, उसे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उसकी मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति इतनी मूल्यवान हो जाएगी। बस इतना ही?”
“और एलिसिया की वसीयत का क्या होगा? उसकी मृत्यु के बाद, वसीयत किसे मिलेगी?”
“यह सब मैं आपको बता नहीं सकता। और मुझे पूरी उम्मीद है कि यह हमारी आखिरी बातचीत होगी।” मैक्स ने दृढ़ता से कहा।
फोन रखते ही एक क्लिक की आवाज़ आई। लेकिन उसकी आवाज़ से मुझे समझ आ गया कि मैक्स बेरेंसन से यह मेरी आखिरी बातचीत नहीं होगी।
मुझे ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा।

*

Diomedes called me into his office after lunch. He looked up when I walked in but didn't smile. "What is the matter with you?"

"मेरे साथ?"
"बेवकूफ मत बनो। तुम्हें पता है आज सुबह मुझे किसका फोन आया था?"
मैक्स बेरेंसन। उनका कहना है कि आपने उनसे दो बार संपर्क किया और कई व्यक्तिगत सवाल पूछे।
मैंने उनसे एलिसिया के बारे में कुछ जानकारी मांगी। उन्हें इसमें कोई आपत्ति नहीं थी।
"अब उसकी हालत ठीक नहीं है। वह इसे उत्पीड़न बता रहा है।"
"ओह अब छोड़िए भी-"
"हमें किसी वकील के बेवजह हंगामा करने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। आप जो कुछ भी करेंगे, वह यूनिट की सीमाओं के भीतर और मेरी देखरेख में ही होना चाहिए।"
समझा?"
मुझे गुस्सा तो आया, लेकिन मैंने सिर हिलाया। मैं एक उदास किशोर की तरह फर्श को घूर रहा था।
डायोमेडेस ने उचित प्रतिक्रिया देते हुए मुझे पिता तुल्य भाव से कंधे पर थपथपाया। "थियो, मैं तुम्हें कुछ सलाह देना चाहता हूँ। तुम इस मामले को गलत तरीके से सुलझा रहे हो। तुम सवाल पूछ रहे हो, सुराग खोज रहे हो, जैसे कोई जासूसी कहानी हो।" वह हँसे और सिर हिलाया। "इस तरह से तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी।"
"किस बात तक पहुँचना है?"
"सच यही है। बियोन की बात याद रखें: 'कोई स्मृति नहीं—कोई इच्छा नहीं।' कोई पूर्व-नियोजित उद्देश्य नहीं—एक चिकित्सक के रूप में, आपका एकमात्र लक्ष्य है कि जब आप उसके साथ बैठे हों तो उसकी भावनाओं के प्रति सचेत और ग्रहणशील रहें। बस इतना ही करना है। बाकी सब अपने आप ठीक हो जाएगा।"
मुझे पता है। आप सही कह रहे हैं।

“हां, मैं हूं। और मुझे ये मत बताना कि तुम एलिसिया के रिश्तेदारों से मिलने जा रहे हो, समझे?”
"में अपनी ज़बान देता हूँ।"
अध्याय पंद्रह
उस दोपहर मैं एलिसिया के चचेरे भाई पॉल रोज़ से मिलने कैम्ब्रिज गया।
जैसे ही ट्रेन स्टेशन के पास पहुँची, ज़मीन समतल हो गई और खेतों से ठंडी नीली रोशनी का एक विशाल विस्तार दिखाई देने लगा। लंदन से बाहर निकलकर मुझे बहुत खुशी हुई।
आसमान का घुटन भरा माहौल कम हो गया था, और मैं आसानी से सांस ले पा रहा था।
कुछ छात्रों और पर्यटकों के साथ मैं ट्रेन से उतरा और अपने फोन पर नक्शे की मदद से आगे बढ़ा। सड़कें सुनसान थीं; फुटपाथ पर मेरे कदमों की गूंज सुनाई दे रही थी। अचानक सड़क खत्म हो गई। सामने एक बंजर भूमि थी, कीचड़ भरी मिट्टी और घास नदी की ओर जा रही थी।
नदी के किनारे बस एक अकेला घर खड़ा था। हठी और भव्य, मानो कीचड़ में धंसी हुई कोई बड़ी लाल ईंट हो। वह बदसूरत था, किसी विक्टोरियन राक्षस जैसा। दीवारें लताओं से ढकी हुई थीं, और बगीचा भी पौधों, खासकर खरपतवारों से भरा हुआ था। मुझे ऐसा लगा जैसे प्रकृति अपना अधिकार जमा रही हो, उस ज़मीन पर फिर से कब्ज़ा कर रही हो जो कभी उसकी थी। यही वह घर था जहाँ एलिसिया का जन्म हुआ था। यहीं उसने अपने जीवन के पहले अठारह साल बिताए थे। इन्हीं दीवारों के भीतर उसके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ था: उसके वयस्क जीवन की जड़ें, सभी कारण और बाद के सभी विकल्प, यहीं दफ़न थे। कभी-कभी यह समझना मुश्किल होता है कि वर्तमान के उत्तर अतीत में क्यों छिपे होते हैं। एक सरल उदाहरण मददगार हो सकता है: यौन शोषण के क्षेत्र में एक प्रमुख मनोचिकित्सक ने एक बार मुझसे कहा था कि बाल यौन शोषण करने वालों के साथ तीस वर्षों के व्यापक कार्य के दौरान, उन्हें ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला जो खुद बचपन में शोषण का शिकार न हुआ हो। इसका मतलब यह नहीं है कि सभी शोषित बच्चे बड़े होकर शोषण करने वाले बन जाते हैं,

लेकिन यह असंभव है कि कोई व्यक्ति जो शोषण का शिकार न हुआ हो, वह शोषण करने वाला बन जाए। कोई भी जन्म से बुरा नहीं होता। जैसा कि विनिकॉट ने कहा,
"एक बच्चा अपनी माँ से तब तक नफरत नहीं कर सकता, जब तक कि माँ पहले बच्चे से नफरत न करे।"
शिशु अवस्था में हम मासूम स्पंज की तरह होते हैं, कोरी स्लेट की तरह, जिनमें केवल बुनियादी ज़रूरतें ही मौजूद होती हैं: खाना, शौच करना, प्यार करना और प्यार पाना। लेकिन कुछ न कुछ गड़बड़ हो जाती है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम किन परिस्थितियों में पैदा हुए हैं और हमारा घर कैसा है।
जिसके साथ हम बड़े होते हैं। एक प्रताड़ित, शोषित बच्चा वास्तविकता में कभी बदला नहीं ले सकता, क्योंकि वह शक्तिहीन और असहाय होता है, लेकिन वह अपनी कल्पना में प्रतिशोध की भावनाएँ पाल सकता है—और उसे पालना ही चाहिए। क्रोध, भय की तरह, एक प्रतिक्रियात्मक भावना है।
एलिसिया के साथ कुछ बुरा हुआ था, शायद उसके बचपन के शुरुआती दिनों में, जिसने उन हत्यारी प्रवृत्तियों को जन्म दिया जो इतने वर्षों बाद सामने आईं।
चाहे जो भी उकसावा हो, इस दुनिया में हर कोई बंदूक उठाकर गेब्रियल के चेहरे पर बिल्कुल करीब से गोली नहीं चला सकता था—ज्यादातर लोग ऐसा नहीं कर सकते थे।
एलिसिया का ऐसा करना उसके आंतरिक जगत में कुछ गड़बड़ी का संकेत देता है। इसीलिए मेरे लिए यह समझना बेहद जरूरी था कि इस घर में उसका जीवन कैसा रहा था, यह पता लगाना कि किन घटनाओं ने उसे आकार दिया, उसे वह व्यक्ति बनाया जो वह बनी - एक ऐसा व्यक्ति जो हत्या करने में सक्षम थी।
मैं झाड़ियों से भरे बगीचे में और आगे बढ़ गया, खरपतवारों और लहराते जंगली फूलों के बीच से गुज़रते हुए, और घर के किनारे-किनारे चलने लगा। पीछे एक विशाल विलो का पेड़ था—एक खूबसूरत, भव्य पेड़, जिसकी लंबी, नंगी शाखाएँ ज़मीन तक फैली हुई थीं। मैंने एलिसिया को बचपन में उसके आसपास खेलते हुए और उसकी शाखाओं के नीचे की रहस्यमयी, जादुई दुनिया में खोते हुए कल्पना की। मैं मुस्कुराया।
फिर अचानक मुझे बेचैनी महसूस हुई। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मुझे घूर रहा हो।

मैंने घर की ओर देखा। ऊपर की खिड़की पर एक चेहरा दिखाई दिया। एक बदसूरत चेहरा, एक बूढ़ी औरत का चेहरा, शीशे से सटा हुआ—सीधे मेरी ओर घूर रहा था। मुझे डर की एक अजीब, अकथनीय सिहरन महसूस हुई।
मुझे अपने पीछे कदमों की आहट तब तक सुनाई नहीं दी जब तक बहुत देर नहीं हो गई। एक ज़ोरदार धमाका हुआ—एक भारी आवाज़—और मेरे सिर के पिछले हिस्से में तेज़ दर्द हुआ।
सब कुछ अंधेरा हो गया।
अध्याय सोलह
मैं ठंडी, सख्त ज़मीन पर पीठ के बल लेटा हुआ जागा। सबसे पहले मुझे दर्द महसूस हुआ। मेरा सिर धड़क रहा था, चुभ रहा था, मानो मेरी खोपड़ी फट गई हो। मैंने हाथ बढ़ाकर धीरे से अपने सिर के पिछले हिस्से को छुआ।
“खून तो नहीं निकला,” एक आवाज ने कहा। “लेकिन कल तुम्हें एक भयंकर चोट का निशान होगा। साथ ही, सिरदर्द भी बहुत तेज होगा।”
मैंने ऊपर देखा और पहली बार पॉल रोज़ को देखा। वह मेरे ऊपर खड़ा था, उसके हाथ में बेसबॉल का बल्ला था। वह लगभग मेरी ही उम्र का था, लेकिन मुझसे लंबा और चौड़ा था। उसका चेहरा मासूम सा था और उसके बाल लाल रंग के थे, बिल्कुल एलिसिया के बालों जैसे।
उससे व्हिस्की की तेज गंध आ रही थी।
मैंने उठकर बैठने की कोशिश की लेकिन पूरी तरह से सफल नहीं हो पाया।
"वहीं रुकना बेहतर है। थोड़ी देर आराम कर लो।"
मुझे लगता है मुझे सिर में चोट लगी है।
"संभवतः।"
तुमने ऐसा किसलिए किया?
“तुम क्या उम्मीद कर रहे थे यार? मुझे लगा तुम चोर हो।”
"मैं नहीं हूँ।"
“अब मुझे पता चल गया है। मैंने तुम्हारा बटुआ खंगाला। तुम एक मनोचिकित्सक हो।”

उसने अपनी पिछली जेब में हाथ डाला और मेरा बटुआ निकाला। उसने उसे मेरी तरफ उछाला। वह मेरी छाती पर गिरा। मैंने उसे उठाने के लिए हाथ बढ़ाया।
मैंने आपका आईडी देखा। आप उस अस्पताल में हैं—ग्रोव में?
मैंने सिर हिलाया और इस हरकत से मेरे सिर में तेज दर्द होने लगा। "हाँ।"
"तो फिर आपको पता चल गया होगा कि मैं कौन हूं।"
“एलिसिया की चचेरी बहन?”
“पॉल रोज़।” उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। “लो, मैं तुम्हें उठने में मदद करता हूँ।”
उसने बड़ी आसानी से मुझे खड़ा कर दिया। वह ताकतवर था। मैं अपने पैरों पर ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही थी। मैंने धीरे से कहा, "तुम मुझे मार सकते थे।"
पॉल ने कंधे उचकाते हुए कहा, "तुम्हारे पास हथियार हो सकते थे। तुम अतिक्रमण कर रहे थे।"
आप क्या उम्मीद कर रहे थे? आप यहां क्यों हैं?
“मैं तुमसे मिलने आया था।” मैंने दर्द से मुंह बनाया। “काश मैं न आया होता।”
"अंदर आइए, थोड़ी देर बैठिए।"
मुझे इतना दर्द हो रहा था कि मैं उसके बताए रास्ते पर चलने के अलावा कुछ और नहीं कर सकता था।
हर कदम पर मेरा सिर दर्द कर रहा था। हम पीछे के दरवाजे से अंदर चले गए।
घर का भीतरी हिस्सा भी बाहर की तरह ही जर्जर था। रसोई की दीवारों पर नारंगी रंग का ज्यामितीय डिज़ाइन बना हुआ था जो चालीस साल पुराना लग रहा था। वॉलपेपर जगह-जगह से उखड़ रहा था, मुड़ रहा था, टेढ़ा-मेढ़ा हो रहा था और काला पड़ रहा था, मानो उसमें आग लग गई हो।
छत के कोनों में मकड़ी के जालों से सड़े हुए कीड़े-मकोड़े लटक रहे थे। फर्श पर इतनी मोटी धूल जमी थी कि वह किसी गंदे कालीन जैसा लग रहा था। और बिल्ली के पेशाब की हल्की सी बदबू से मुझे उल्टी जैसा महसूस हो रहा था। मैंने रसोई के आसपास कम से कम पाँच बिल्लियाँ गिनीं, जो कुर्सियों और सतहों पर सो रही थीं। फर्श पर, खुले प्लास्टिक के थैलों में बिल्ली के खाने के बदबूदार डिब्बे भरे पड़े थे।
“बैठ जाओ। मैं चाय बनाता हूँ।” पॉल ने बेसबॉल बैट को दरवाजे के पास दीवार से टिका दिया। मैं उस पर नज़र रखे हुए थी। मुझे उसके आसपास सुरक्षित महसूस नहीं

हो रहा था।
पॉल ने मुझे चाय से भरा एक टूटा हुआ मग पकड़ाया। "इसे पी लो।"
"क्या आपके पास कोई दर्द निवारक दवा है?"
“मेरे पास कहीं एस्पिरिन पड़ी है, मैं देख लेता हूँ। ये लो।” उसने मुझे व्हिस्की की एक बोतल दिखाई। “इससे आराम मिलेगा।”
उसने मग में थोड़ी व्हिस्की डाली। मैंने उसे एक घूंट पिया। वह गर्म, मीठी और तेज़ थी। पॉल ने चाय पीते हुए मेरी तरफ देखा और कुछ देर चुप रहा—मुझे एलिसिया और उसकी तीखी निगाहों की याद आ गई।
“वह कैसी है?” उसने आखिरकार पूछा। मेरे जवाब देने से पहले ही उसने आगे कहा, “मैं उनसे मिलने नहीं गई हूँ। उनसे दूर जाना आसान नहीं है... माँ की तबीयत ठीक नहीं है—मैं उन्हें अकेला छोड़ना नहीं चाहती।”
“ठीक है। आपने एलिसिया को आखिरी बार कब देखा था?”
“ओह, कई साल बीत गए। काफी समय से संपर्क टूट गया था। मैं उनकी शादी में गई थी, और उसके बाद मैंने उसे कुछ बार देखा भी था, लेकिन... मुझे लगता है कि गैब्रियल काफी अधिकार जताने वाला था। वैसे भी, शादी के बाद उसने फोन करना बंद कर दिया था।”
मैंने आना-जाना बंद कर दिया। सच कहूं तो मां को बहुत बुरा लगा।
मैं कुछ नहीं बोली। सिर में तेज दर्द के कारण मैं मुश्किल से सोच पा रही थी। मुझे महसूस हो रहा था कि वह मुझे देख रहा है।
तो आप मुझसे किसलिए मिलना चाहते थे?
"कुछ सवाल हैं... मैं आपसे एलिसिया के बारे में पूछना चाहता था। उसके बचपन के बारे में।"
पॉल ने सिर हिलाया और अपने मग में थोड़ी व्हिस्की डाली। अब वह थोड़ा शांत लग रहा था; व्हिस्की का असर मुझ पर भी हो रहा था, मेरा दर्द कम हो रहा था और मैं बेहतर सोच पा रहा था। मैंने खुद से कहा, सही रास्ते पर रहो। कुछ तथ्य जान लो। फिर यहाँ से निकल जाओ।
“क्या आप दोनों साथ पले-बढ़े हैं?”

पॉल ने सिर हिलाया। “मेरे पिताजी की मृत्यु के बाद मैं और माँ यहाँ रहने आ गए। मैं लगभग आठ या नौ साल का था। मुझे लगता है कि यह अस्थायी ही था—लेकिन फिर एलिसिया की माँ की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। इसलिए माँ एलिसिया और अंकल वर्नन की देखभाल करने के लिए यहीं रुक गईं।”
“वर्नन रोज़—एलिसिया के पिता?”
"सही।"
“और वर्नोन की मृत्यु कुछ साल पहले यहीं हुई थी?”
“हां। कई साल पहले।” पॉल ने माथे पर शिकन डालते हुए कहा। “उसने आत्महत्या कर ली थी। फांसी लगा ली थी। ऊपर अटारी में। मैंने उसका शव देखा था।”
"यह बहुत भयानक रहा होगा।"
“हाँ, ये बहुत मुश्किल था—खासकर एलिसिया के लिए। अब सोचता हूँ तो लगता है कि मैंने उसे आखिरी बार तभी देखा था। अंकल वर्नन के अंतिम संस्कार में। उसकी हालत बहुत खराब थी।” पॉल खड़ा हो गया। “एक और ड्रिंक चाहिए?”
मैंने मना करने की कोशिश की, लेकिन वह और व्हिस्की डालते हुए बोलता रहा। "मुझे इस पर कभी विश्वास नहीं हुआ, तुम्हें पता है। कि उसने गैब्रियल को मार डाला - यह बात मेरी समझ से परे थी।"
"क्यों नहीं?"
"खैर, वह बिल्कुल भी वैसी नहीं थी। वह हिंसक स्वभाव की नहीं थी।"
मैंने सोचा, अब वो बोल रही है। लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा। पॉल ने अपनी व्हिस्की की चुस्की ली। "वो अभी भी नहीं बोल रही?"
“नहीं। वह अभी भी बात नहीं कर रही है।”
“इसका कोई मतलब नहीं बनता। बिल्कुल भी नहीं। आप जानते हैं, मुझे लगता है कि वह—”
ऊपर वाले तल पर ज़ोरदार आवाज़ और धमाके की आवाज़ से हमारी बातचीत में खलल पड़ा। एक दबी हुई आवाज़ आ रही थी, एक महिला की आवाज़; उसके शब्द समझ में नहीं आ रहे थे।
पॉल उछलकर खड़ा हो गया। "बस एक पल।" वह बाहर चला गया। वह सीढ़ियों के नीचे की ओर भागा। उसने ऊँची आवाज़ में पूछा, "सब ठीक है ना, माँ?"

ऊपर से अस्पष्ट सी आवाज आई जिसे मैं समझ नहीं पाया।
“क्या? ओह, ठीक है। बस—बस एक मिनट।” उसकी आवाज़ में बेचैनी झलक रही थी।
पॉल ने गलियारे के उस पार मेरी तरफ देखा और भौंहें चढ़ा लीं। उसने मेरी तरफ सिर हिलाया। "वह चाहती है कि तुम ऊपर जाओ।"
अध्याय सत्रह
अपने पैरों पर थोड़ा संभलकर, लेकिन अभी भी कमजोरी महसूस करते हुए, मैं पॉल के पीछे-पीछे धूल भरी सीढ़ियों पर चढ़ गया।
लिडिया रोज़ सबसे ऊपर इंतज़ार कर रही थी। खिड़की से ही मैंने उसका गुस्से वाला चेहरा पहचान लिया। उसके लंबे सफेद बाल मकड़ी के जाले की तरह उसके कंधों पर फैले हुए थे। वह बहुत मोटी थी—उसकी गर्दन सूजी हुई थी, बांहें मांसल थीं, और उसके पैर पेड़ के तनों जैसे विशाल थे। वह अपनी छड़ी पर बहुत ज़्यादा सहारा लिए खड़ी थी, जो उसके वजन से झुक रही थी और ऐसा लग रहा था कि किसी भी क्षण टूट जाएगी।
“वह कौन है? वह कौन है?”
उसका तीखा सवाल पॉल से था, हालांकि वह मुझे घूर रही थी। उसने अपनी नज़रें मुझसे नहीं हटाईं। एक बार फिर, वही तीव्र निगाहें जो मैंने एलिसिया में देखी थीं।
पॉल ने धीमी आवाज़ में कहा, “माँ, परेशान मत होइए। वह एलिसिया के थेरेपिस्ट हैं, बस इतना ही। अस्पताल से। वह मुझसे बात करने आए हैं।”
“तुम? वो तुमसे किसलिए बात करना चाहता है? तुमने क्या किया है?”
वह बस एलिसिया के बारे में थोड़ी जानकारी हासिल करना चाहता है।
“वह एक पत्रकार है, तुम बेवकूफ।” उसकी आवाज चीख में बदल गई।
उसे बाहर निकालो!
“वह पत्रकार नहीं है। मैंने उसका पहचान पत्र देख लिया है, ठीक है? अब, माँ, कृपया। चलिए आपको वापस बिस्तर पर ले चलते हैं।”
बड़बड़ाते हुए, उसने खुद को वापस अपने बेडरूम में ले जाने दिया।
पॉल ने मुझे पीछे आने का इशारा किया।

लिडिया धड़ाम से पीछे गिर पड़ी। उसका वज़न बिस्तर पर पड़ा और वह काँप उठा। पॉल ने उसके तकिए ठीक किए। उसके पैरों के पास एक बूढ़ी बिल्ली सो रही थी, अब तक देखी सबसे बदसूरत बिल्ली—लड़ाई के निशानों से भरी, जगह-जगह से गंजी, एक कान कटा हुआ। वह नींद में गुर्रा रही थी।

मैंने कमरे में एक नज़र डाली। यह कबाड़ से भरा हुआ था—पुरानी पत्रिकाओं और पीले पड़ चुके अखबारों के ढेर, पुराने कपड़ों के गट्ठे। दीवार के पास एक ऑक्सीजन सिलेंडर रखा था, और बिस्तर के बगल वाली मेज पर दवाओं से भरा एक केक का डिब्बा रखा था।

मुझे हर समय लिडिया की शत्रुतापूर्ण निगाहें अपने ऊपर महसूस हो रही थीं। उसकी निगाहों में पागलपन था; मुझे इस बात का पूरा यकीन था।

“वह क्या चाहता है?” मेरी ओर देखते हुए उसकी आँखें बेचैनी से ऊपर-नीचे घूमने लगीं। “वह कौन है?”

“मैंने अभी आपको बताया, माँ। वह एलिसिया के बारे में कुछ पृष्ठभूमि जानना चाहता है, ताकि वह उसका इलाज कर सके। वह उसका मनोचिकित्सक है।”

लिडिया ने मनोचिकित्सकों के बारे में अपनी राय को लेकर कोई संदेह नहीं छोड़ा। उसने अपना सिर घुमाया, गला साफ किया और मेरे सामने फर्श पर थूक दिया।

पॉल कराह उठा। "माँ, कृपया—"

"चुप रहो।" लिडिया ने मुझे घूरकर देखा। "एलिसिया अस्पताल में रहने लायक नहीं है।"

“नहीं?” मैंने कहा। “वह कहाँ होनी चाहिए?”

“तुम्हें क्या लगता है? जेल।” लिडिया ने मुझे तिरस्कार भरी निगाहों से देखा। “तुम एलिसिया के बारे में सुनना चाहते हो? मैं तुम्हें उसके बारे में बताती हूँ। वो एक बदतमीज़ लड़की है। बचपन से ही ऐसी रही है।”

मेरा सिर दर्द से कराह रहा था, और मैं लिडिया की बढ़ती हुई क्रोध भरी बातों को सुनता रहा:

“मेरा बेचारा भाई, वर्नन। वह ईवा की मौत से कभी उबर नहीं पाया। मैंने उसकी देखभाल की। मैंने एलिसिया की देखभाल की। और क्या वह शुक्रगुजार थी?”

ज़ाहिर है, किसी जवाब की ज़रूरत नहीं थी। वैसे भी, लिडिया किसी जवाब का इंतज़ार नहीं कर रही थी।
“तुम्हें पता है एलिसिया ने मुझे कैसे चुकाया? मेरी सारी दयालुता का? तुम्हें पता है उसने मेरे साथ क्या किया?”
“माँ, कृपया—”
“चुप रहो, पॉल!” लिडिया मेरी तरफ मुड़ी। मुझे उसकी आवाज़ में इतना गुस्सा देखकर हैरानी हुई। “उस कमीनी ने मेरी तस्वीर बनाई। उसने मेरी जानकारी या अनुमति के बिना मेरी तस्वीर बनाई। मैं उसकी प्रदर्शनी में गई थी—और वहाँ वह तस्वीर टंगी हुई थी। घिनौनी, भयानक—एक अश्लील मज़ाक।”
लिडिया गुस्से से कांप रही थी, और पॉल चिंतित दिख रहा था। उसने मुझे नाखुशी भरी नज़र से देखा। "शायद अब तुम्हारा जाना ही बेहतर होगा, दोस्त। माँ का नाराज़ होना ठीक नहीं है।"
मैंने सिर हिलाया। लिडिया रोज़ की तबीयत ठीक नहीं थी, इसमें कोई शक नहीं था। मुझे वहां से निकलकर बहुत खुशी हुई।
मैं सूजे हुए सिर और असहनीय सिरदर्द के साथ घर से निकलकर वापस ट्रेन स्टेशन की ओर चल पड़ा। समय की कितनी बर्बादी! मुझे कुछ भी पता नहीं चला—सिवाय इसके कि यह स्पष्ट था कि एलिसिया उस घर से जितनी जल्दी हो सके क्यों निकल गई थी। इसने मुझे अठारह साल की उम्र में अपने पिता से भागकर घर से निकलने की याद दिला दी। यह बिल्कुल स्पष्ट था कि एलिसिया किससे भाग रही थी—लिडिया रोज़ से।
मैंने एलिसिया द्वारा बनाई गई लिडिया की पेंटिंग के बारे में सोचा। उसने इसे "एक भद्दा मज़ाक" कहा था। खैर, अब एलिसिया की गैलरी जाकर यह पता लगाने का समय आ गया है कि उस तस्वीर ने उसकी चाची को इतना परेशान क्यों किया था।
कैम्ब्रिज से निकलते समय, मेरे मन में आखिरी ख्याल पॉल का ही था। मुझे उस पर तरस आ रहा था, उस क्रूर औरत के साथ रहना, उसका बेरोज़गार गुलाम बनकर रहना। उसकी ज़िंदगी बहुत अकेली थी—मुझे नहीं लगता कि उसके ज़्यादा दोस्त होंगे। या कोई प्रेमिका। अगर वो अभी भी कुंवारा हो तो मुझे हैरानी नहीं होगी। उसके कद-काठी के बावजूद, उसमें कुछ अधूरापन सा रह गया था; कुछ दबा हुआ सा।

मुझे लिडिया से तुरंत ही तीव्र घृणा हो गई थी—शायद इसलिए कि वह मुझे मेरे पिता की याद दिलाती थी। अगर मैं उस घर में रहता, अगर मैं सरे में अपने माता-पिता के साथ रहता, एक पागल आदमी के इशारों पर चलता, तो मेरा भी हाल पॉल जैसा ही होता।

लंदन वापस आते समय मुझे पूरे रास्ते उदासी महसूस होती रही। दुखी, थकी हुई, रोने के कगार पर। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं पॉल की उदासी महसूस कर रही थी या अपनी खुद की।

अध्याय अठारह

जब मैं घर लौटा तो कैथी घर पर नहीं थी।

मैंने उसका लैपटॉप खोला और उसके ईमेल तक पहुंचने की कोशिश की—लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। वह लॉग आउट हो चुकी थी।

मुझे यह बात माननी पड़ी कि शायद वह अपनी गलती कभी न दोहराए। क्या मैं बार-बार जाँच करता रहूँगा, जुनून में डूबकर खुद को पागल कर लूँगा? मुझमें इतनी आत्म-जागरूकता थी कि मैं उस घिसे-पिटे किरदार को समझ सकूँ जो मैं बन चुका था—एक ईर्ष्यालु पति—और यह विडंबना भी मेरी नज़र से नहीं छूटी थी कि कैथी इस समय ओथेलो में डेसडेमोना की भूमिका का अभ्यास कर रही थी।

मुझे ईमेल पढ़ते ही पहली रात को उन्हें खुद को फॉरवर्ड कर देना चाहिए था। तब मेरे पास कुछ ठोस सबूत होते। यही मेरी गलती थी। अब तो मैं जो देख रहा था उस पर शक करने लगा था। क्या मेरी याददाश्त पर भरोसा किया जा सकता है? आखिर मैं नशे में धुत था—क्या मैंने जो पढ़ा था उसे गलत समझा था? मैं कैथी की बेगुनाही साबित करने के लिए अजीबोगरीब सिद्धांत गढ़ने लगा था। शायद यह सिर्फ एक एक्टिंग का अभ्यास था—

वह ओथेलो की तैयारी में अपने किरदार के अनुरूप लिख रही थी। ऑल माय संस की तैयारी के दौरान उसने छह सप्ताह तक अमेरिकी लहजे में बोलने का अभ्यास किया था। संभव है कि यहाँ भी कुछ ऐसा ही हो रहा हो। फर्क सिर्फ इतना था कि ईमेल पर कैथी के हस्ताक्षर थे, डेसडेमोना के नहीं।

काश, ये सब मेरी कल्पना ही होती, तो मैं इसे भूल सकती थी, जैसे सपने को भूल जाते हैं—मैं जाग जाती और वो सब गायब हो जाता। लेकिन मैं अविश्वास, शक और डर के

इस अंतहीन दुःस्वप्न में फंसी हुई थी। वैसे तो ऊपर से कुछ खास नहीं बदला था। हम अब भी रविवार को साथ टहलने जाते थे। हम पार्क में टहलते हुए दूसरे जोड़ों की तरह ही दिखते थे। शायद हमारी खामोशी पहले से ज़्यादा लंबी होती थी, लेकिन फिर भी सहज लगती थी। लेकिन खामोशी के नीचे, मेरे दिमाग में एकतरफा, बेचैनी भरी बातचीत चल रही थी। मैं मन में लाखों सवाल दोहरा रही थी। उसने ऐसा क्यों किया? वो ऐसा कैसे कर सकती थी?

वह मुझसे प्यार करने और शादी करने, मेरे साथ शारीरिक संबंध बनाने और मेरे साथ बिस्तर साझा करने का दावा क्यों करती थी—फिर मेरे सामने झूठ बोलती थी, और साल दर साल झूठ बोलती रहती थी? यह सब कब से चल रहा था?

क्या वह उस आदमी से प्यार करती थी? क्या वह उसके लिए मुझे छोड़ने वाली थी?

मैंने उसके नहाते समय उसके फोन में दो-तीन बार मैसेज ढूंढने की कोशिश की, लेकिन कुछ नहीं मिला। अगर उसे कोई आपत्तिजनक मैसेज मिले भी थे, तो उसने उन्हें डिलीट कर दिया था। जाहिर है, वह बेवकूफ नहीं थी, बस कभी-कभी लापरवाह हो जाती थी।

यह संभव था कि मुझे कभी सच पता ही न चले। शायद मुझे कभी पता ही न चले।

एक तरह से, मुझे उम्मीद थी कि ऐसा नहीं होगा।

सैर के बाद सोफे पर बैठते ही कैथी ने मेरी तरफ गौर से देखा। "क्या तुम ठीक हो?"

"आपका क्या मतलब है?"

मुझे नहीं पता। तुम कुछ उदास लग रहे हो।

"आज?"

“सिर्फ आज ही नहीं, बल्कि हाल ही में।”

मैंने उसकी नजरों से नज़रें बचाईं। "बस काम। मेरे दिमाग में बहुत कुछ चल रहा है।"

कैथी ने सिर हिलाया। उसने सहानुभूति से मेरा हाथ हल्के से दबाया। वह एक अच्छी अभिनेत्री थी। मुझे लगभग यकीन हो गया था कि उसे मेरी परवाह है।

“रिहर्सल कैसी चल रही हैं?”

“बेहतर। टोनी ने कुछ अच्छे सुझाव दिए हैं। हम अगले सप्ताह देर तक बैठकर उन पर चर्चा करेंगे।”

"सही।"

मुझे अब उसकी किसी बात पर विश्वास नहीं रहा। मैंने हर वाक्य का विश्लेषण किया, ठीक वैसे ही जैसे मैं किसी मरीज़ का करता हूँ। मैं छिपे हुए अर्थ को समझने की कोशिश कर रहा था, शब्दों के बीच छिपे संकेतों को पढ़ रहा था—सूक्ष्म उतार-चढ़ाव, टालमटोल, बातों को छिपाना। झूठ।

टोनी कैसा है?

“ठीक है।” उसने कंधे उचका दिए, मानो यह जता रही हो कि उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ। वह अपने निर्देशक टोनी को बहुत मानती थी और हमेशा उसके बारे में बात करती रहती थी—कम से कम पहले तो करती थी; हाल ही में उसने उसके बारे में इतनी बातें नहीं की थीं।

उन्होंने नाटकों, अभिनय और रंगमंच के बारे में बातें कीं—एक ऐसी दुनिया जो मेरी समझ से परे थी। मैंने टोनी के बारे में बहुत कुछ सुना था, लेकिन रिहर्सल के बाद कैथी से मिलने जाते समय बस एक बार ही उनसे थोड़ी देर के लिए मुलाकात हुई थी। मुझे अजीब लगा कि कैथी ने हमारा परिचय नहीं कराया। वह शादीशुदा थे और उनकी पत्नी एक अभिनेत्री थीं; मुझे लगा कि कैथी उन्हें ज़्यादा पसंद नहीं करती थीं। शायद उनकी पत्नी को उनसे जलन होती थी।

मैं अपने रिश्ते में थी। मैंने हम चारों को डिनर पर बाहर जाने का सुझाव दिया, लेकिन कैथी को यह विचार कुछ खास पसंद नहीं आया। कभी-कभी मुझे लगता था कि शायद वह हमें अलग करने की कोशिश कर रही थी।

मैंने कैथी को अपना लैपटॉप खोलते हुए देखा। टाइप करते समय उसने स्क्रीन को मुझसे दूर कर लिया। मुझे उसकी उंगलियों की टैपिंग की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह किसे लिख रही थी?

टोनी?

“तुम क्या कर रहे हो?” मैंने जम्हाई ली।

मैं अभी अपनी चचेरी बहन को ईमेल कर रही थी... वो इस समय सिडनी में है।

“क्या वो है? उसे मेरा प्यार देना।”

"मैं करूँगा।"

कैथी ने थोड़ी देर और टाइप किया, फिर टाइप करना बंद कर दिया और लैपटॉप नीचे रख दिया। "मैं नहाने जा रही हूँ।"

मैंने सिर हिलाया। "ठीक है।"
उसने मुझे मुस्कुराते हुए देखा। "खुश हो जाओ, प्यारे। क्या तुम सच में ठीक हो?"
मैंने मुस्कुराकर सिर हिलाया। वह खड़ी हुई और बाहर चली गई। मैंने तब तक इंतज़ार किया जब तक मुझे बाथरूम का दरवाज़ा बंद होने और पानी बहने की आवाज़ सुनाई नहीं दी। मैं धीरे से उसके पास गई जहाँ वह बैठी थी। मैंने उसका लैपटॉप उठाया। उसे खोलते समय मेरी उंगलियाँ काँप रही थीं। मैंने उसका ब्राउज़र दोबारा खोला और उसके ईमेल लॉगिन पेज पर गई।
लेकिन वह लॉग आउट कर चुकी थी।
मैंने लैपटॉप को गुस्से से दूर धकेल दिया। ये सब बंद होना चाहिए, मैंने सोचा। इस रास्ते पर तो पागलपन ही चलता है। या शायद मैं पहले से ही पागल हो चुका था?
मैं बिस्तर पर लेट रहा था, चादर हटा रहा था, तभी कैथी अपने दांत ब्रश करते हुए बेडरूम में दाखिल हुई।
मैं आपको बताना भूल गया था। निकोल अगले हफ्ते लंदन वापस आ रही है।
“निकोल?”
“तुम्हें निकोल याद है ना? हम उसकी विदाई पार्टी में गए थे।”
"ओह, हाँ। मुझे लगा कि वह न्यूयॉर्क चली गई है।"
“हाँ, उसने किया। और अब वह वापस आ गई है।” एक पल का विराम। “वह चाहती है कि मैं उससे गुरुवार को मिलूँ... गुरुवार की रात रिहर्सल के बाद।”
मुझे नहीं पता कि किस बात ने मेरे मन में संदेह पैदा किया। क्या यह कैथी का मेरी ओर देखना था लेकिन मुझसे नज़रें न मिलाना था? मुझे लगा कि वह झूठ बोल रही है।
मैंने कुछ नहीं कहा। उसने भी कुछ नहीं कहा। वह दरवाजे से गायब हो गई।
मैं उसे बाथरूम में टूथपेस्ट थूकते और मुंह धोते हुए सुन सकता था।
शायद इसमें कुछ भी सच्चाई नहीं थी। शायद यह पूरी तरह से निर्दोष था और कैथी सचमुच गुरुवार को निकोल से मिलने जा रही थी।
शायद।
पता लगाने के लिए केवल एक ही तरीका है।
अध्याय उन्नीस

इस बार एलिसिया की गैलरी के बाहर कोई कतार नहीं थी, जैसा कि छह साल पहले उस दिन थी जब मैं एल्सेस्टिस को देखने गया था। अब खिड़की में एक अलग कलाकार की कलाकृति लगी थी, और उसकी संभावित प्रतिभा के बावजूद, उसमें एलिसिया जैसी प्रसिद्धि और उसके परिणामस्वरूप भीड़ को आकर्षित करने की क्षमता का अभाव था।

जैसे ही मैं गैलरी में दाखिल हुआ, मुझे कंपकंपी छूट गई; यहाँ सड़क से भी ज़्यादा ठंड थी। तापमान के साथ-साथ वातावरण में भी एक अजीब सी ठंडक थी; खुली हुई स्टील की बीमों और कंक्रीट के फर्श की गंध आ रही थी। मुझे लगा, यह जगह बेजान है। खाली।

गैलरी मालिक अपनी मेज के पीछे बैठा था। मेरे पास आते ही वह खड़ा हो गया।

जीन-फेलिक्स मार्टिन लगभग चालीस वर्ष के थे, काले रंग की आंखों और बालों वाले एक आकर्षक व्यक्ति थे, और उन्होंने लाल खोपड़ी वाली एक तंग टी-शर्ट पहनी हुई थी। मैंने उन्हें अपना परिचय और आने का कारण बताया। मुझे आश्चर्य हुआ कि वे एलिसिया के बारे में बात करने में बेहद खुश लग रहे थे। उनकी बोली में फ्रांसीसी लहजा था। मैंने उनसे पूछा कि क्या वे फ्रांसीसी हैं।

“मैं मूल रूप से पेरिस का रहने वाला हूँ। लेकिन मैं यहाँ छात्र जीवन से ही रह रहा हूँ—कम से कम बीस साल से। आजकल मैं खुद को ज़्यादा ब्रिटिश मानता हूँ।” उन्होंने मुस्कुराते हुए पीछे के कमरे की ओर इशारा किया। “अंदर आइए, हम कॉफ़ी पी सकते हैं।”

"धन्यवाद।"

जीन-फेलिक्स मुझे एक ऐसे कार्यालय में ले गया जो असल में एक भंडारगृह था, जो चित्रों के ढेरों से भरा हुआ था।

“एलिसिया कैसी है?” उसने एक जटिल सी दिखने वाली कॉफी मशीन का इस्तेमाल करते हुए पूछा। “क्या वह अभी भी बात नहीं कर रही है?”

मैंने इनकार करते हुए अपना सर हिलाया।"

उसने सिर हिलाया और आह भरी। “बहुत दुख की बात है। बैठ जाइए क्या? आप क्या जानना चाहते हैं? मैं पूरी ईमानदारी से जवाब देने की कोशिश करूंगा।” जीन-

फेलिक्स ने मुझे जिज्ञासा से भरी एक व्यंग्यात्मक मुस्कान दी। “हालांकि मुझे पूरी तरह से समझ नहीं आ रहा कि आप मेरे पास क्यों आए हैं।”
“आप और एलिसिया काफी करीबी थे, है ना? आपके पेशेवर रिश्ते के अलावा—”
"किसने कहा तुमसे ये?"
“गैब्रियल के भाई, मैक्स बेरेंसन। उन्होंने ही मुझे आपसे बात करने का सुझाव दिया था।”
जीन-फेलिक्स ने आंखें घुमाईं। "ओह, तो तुमने मैक्स को देखा, है ना? कितना उबाऊ आदमी है।"
उन्होंने इतनी बेअदबी से कहा कि मुझे हँसी आ गई। "क्या आप मैक्स बेरेंसन को जानते हैं?"
“ठीक है। जितना मैं चाहता था उससे बेहतर।” उन्होंने मुझे एक छोटी सी कप कॉफी पकड़ा दी। “एलिसिया और मैं बहुत करीब थे। बेहद करीब। हम एक दूसरे को सालों से जानते थे।”
—गैब्रियल से मिलने से बहुत पहले।"
मुझे इस बात का एहसास नहीं था।
“ओह, हाँ। हम कला विद्यालय में साथ पढ़ते थे। और स्नातक होने के बाद, हमने साथ में पेंटिंग की।”
"आपका मतलब है कि आपने सहयोग किया?"
“वैसे, ऐसा नहीं है।” जीन-फेलिक्स हँसा। “मेरा मतलब है, हमने साथ में दीवारें रंगी थीं। घर की पेंटिंग करने वालों के तौर पर।”
मैं मुस्कुराया। "ओह, अब समझ आया।"
“मुझे पता चला कि मैं पेंटिंग करने से ज़्यादा दीवारों पर पेंटिंग करने में माहिर था। इसलिए मैंने पेंटिंग करना छोड़ दिया, लगभग उसी समय जब एलिसिया की कला को सचमुच पहचान मिलने लगी थी। और जब मैंने इस जगह को संभालना शुरू किया, तो एलिसिया की कलाकृतियों को प्रदर्शित करना मेरे लिए स्वाभाविक लगा। यह एक बहुत ही सहज और स्वाभाविक प्रक्रिया थी।”
“हां, ऐसा ही लगता है। और गैब्रियल के बारे में क्या?”
"उसकी क्या खबर है?"

मुझे यहाँ एक तरह की झिझक महसूस हुई, एक रक्षात्मक प्रतिक्रिया जिसने मुझे बताया कि यह एक ऐसा रास्ता है जिस पर विचार करना चाहिए। "खैर, मुझे आश्चर्य है कि वह इस परिदृश्य में कैसे फिट बैठता है।"
शायद आप उन्हें अच्छी तरह जानते थे?
"ज़रूरी नहीं।"
"नहीं?"
“नहीं।” जीन-फेलिक्स एक पल के लिए हिचकिचाया। “गैब्रियल ने मुझे जानने के लिए समय नहीं निकाला। वह बहुत ही... आत्ममग्न था।”
"लगता है आपको वह पसंद नहीं था।"
“मुझे खास तौर पर ऐसा नहीं लगा। मुझे नहीं लगता कि वह मुझे पसंद करता था। वास्तव में, मुझे पता है कि वह मुझे पसंद नहीं करता था।”
"ऐसा क्यों था?"
"मुझे पता नहीं है।"
"क्या आपको लगता है कि शायद वह ईर्ष्या कर रहा था? एलिसिया के साथ आपके रिश्ते को लेकर?"
जीन-फेलिक्स ने अपनी कॉफी की चुस्की ली और सिर हिलाया। "हाँ, हो सकता है।"
"शायद वह आपको खतरा समझता था?"
आप ही बताइए। ऐसा लगता है कि आपको सभी सवालों के जवाब पता हैं।
मुझे इशारा समझ आ गया। मैंने इस पर और ज़ोर नहीं दिया। इसके बजाय मैंने एक अलग तरीका अपनाया। "मुझे लगता है कि आपने हत्या से कुछ दिन पहले एलिसिया को देखा था?"
“हां। मैं उससे मिलने घर गया था।”
"क्या आप मुझे इसके बारे में थोड़ा बता सकते हैं?"
"दरअसल, उसकी एक प्रदर्शनी होने वाली थी, और वह अपने काम में पिछड़ रही थी। उसकी चिंता जायज थी।"
“आपने कोई भी नया काम नहीं देखा था?”
“नहीं। वह मुझे काफी समय से टाल रही थी। मैंने सोचा कि मुझे उससे पूछताछ कर लेनी चाहिए। मुझे उम्मीद थी कि वह बगीचे के अंत में स्थित स्टूडियो में होगी। लेकिन

वह वहां नहीं थी।”
"नहीं?"
नहीं, मैंने उसे घर में पाया।
“तुम अंदर कैसे आए?”
जीन-फेलिक्स सवाल सुनकर हैरान रह गया। "क्या?" मैं समझ गया कि वह मन ही मन कुछ सोच रहा था। फिर उसने सिर हिलाया। "ओह, मैं समझ गया। दरअसल, सड़क से पीछे के बगीचे की ओर जाने वाला एक गेट था।"
वह दरवाजा आमतौर पर खुला रहता था। और बगीचे से मैं पीछे के दरवाजे से रसोई में जाता था। वह दरवाजा भी खुला रहता था। "आपकी बातें किसी मनोचिकित्सक से ज़्यादा किसी जासूस जैसी लगती हैं।"
मैं एक मनोचिकित्सक हूँ।
क्या कोई अंतर है?
मैं बस एलिसिया की मानसिक स्थिति को समझने की कोशिश कर रहा हूँ। आपने उसके मूड को कैसे महसूस किया?
जीन-फेलिक्स ने कंधे उचकाते हुए कहा, "वह ठीक लग रही थी। काम को लेकर थोड़ी तनाव में थी।"
"बस इतना ही?"
“अगर आपका मतलब यही है तो, वह कुछ दिनों में अपने पति को गोली मारने वाली नहीं लग रही थी। वह ठीक लग रही थी।” उसने अपनी कॉफी पी ली और
एक विचार मन में आते ही वह झिझक गया। "क्या आप उसकी कुछ पेंटिंग्स देखना चाहेंगे?" जवाब का इंतज़ार किए बिना, जीन-फेलिक्स उठकर दरवाजे की ओर चल पड़ा और मुझे भी पीछे आने का इशारा किया।
"चलो भी।"
अध्याय बीस
मैं जीन-फेलिक्स के पीछे-पीछे एक स्टोर रूम में गया। वह एक बड़े से बक्से के पास गया, उसमें से एक टिका हुआ रैक निकाला और उसमें से कंबल में लिपटी तीन पेंटिंग निकालीं।

उसने उन्हें सहारा देकर खड़ा किया। उसने सावधानीपूर्वक एक-एक करके उन्हें खोला। फिर वह पीछे हट गया और बड़े ही सलीके से पहला मुझे भेंट किया।
“वाह!”
मैंने उसे देखा। उस पेंटिंग में भी एलिसिया की बाकी कलाकृतियों की तरह ही फोटो-रियलिस्टिक गुणवत्ता थी। यह उस कार दुर्घटना को दर्शाती थी जिसमें उसकी माँ की मृत्यु हुई थी।
एक महिला का शव मलबे में पड़ा था, स्टीयरिंग व्हील पर झुका हुआ। वह खून से लथपथ थी और स्पष्ट रूप से मृत प्रतीत हो रही थी। उसकी आत्मा, उसकी प्राण शक्ति, शव से ऐसे उभर रही थी मानो पीले पंखों वाला कोई विशाल पक्षी आकाश की ओर उड़ रहा हो।
“क्या यह शानदार नहीं है?” जीन-फेलिक्स ने इसे निहारते हुए कहा। “ये सारे पीले, लाल और हरे रंग—मैं तो इनमें खो ही जाता हूँ। यह बेहद आनंददायक है।”
खुशी शब्द का चुनाव मैं नहीं करती। शायद बेचैनी भरा। मुझे खुद भी नहीं पता था कि मुझे कैसा महसूस हो रहा है।
मैं अगली तस्वीर की ओर बढ़ा। क्रूस पर यीशु की एक पेंटिंग। या फिर वह पेंटिंग नहीं थी?
“यह गैब्रियल है,” जीन-फेलिक्स ने कहा। “यह उससे काफी मिलता-जुलता है।”
यह गेब्रियल था—लेकिन गेब्रियल को यीशु के रूप में चित्रित किया गया था, जिसे सूली पर चढ़ाया गया था, क्रॉस से लटका हुआ था, उसके घावों से खून टपक रहा था, और उसके सिर पर कांटों का ताज था।
उसकी आँखें झुकी हुई नहीं थीं, बल्कि एकटक देख रही थीं—बिना पलक झपकाए, पीड़ा से भरी, निर्लज्जता से निंदा करती हुई। ऐसा लग रहा था मानो वो आँखें मुझे भेद रही हों। मैंने तस्वीर को और करीब से देखा—गैब्रियल के धड़ से बंधी उस विचित्र वस्तु को। एक राइफल।
"क्या यही वो बंदूक है जिससे उसकी हत्या हुई?"
जीन-फेलिक्स ने सिर हिलाया। "हाँ। मुझे लगता है कि यह उसी का था।"
"और यह चित्र उनकी हत्या से पहले बनाया गया था?"

“लगभग एक महीने पहले की बात है। इससे पता चलता है कि एलिसिया के मन में क्या चल रहा था, है ना?” जीन-फेलिक्स तीसरी तस्वीर की ओर बढ़े। यह बाकी तस्वीरों से बड़ी थी। “यह सबसे अच्छी है। ज़रा पीछे हटकर देखिए।”
मैंने उसकी बात मानी और कुछ कदम पीछे हट गया। फिर मैंने मुड़कर देखा।
जैसे ही मैंने वह पेंटिंग देखी, मुझे अनायास ही हंसी आ गई।
मामला एलिसिया की चाची, लिडिया रोज़ का था। यह स्पष्ट था कि वह इस घटना से इतनी परेशान क्यों थीं। लिडिया नग्न अवस्था में एक छोटे से पलंग पर लेटी हुई थीं। उनके वजन से पलंग झुक रहा था। वह बेहद मोटी थीं—मांस का एक ऐसा विस्फोट जो पलंग से बाहर निकलकर फर्श तक जा रहा था और पूरे कमरे में फैल रहा था, भूरे रंग के कस्टर्ड की लहरों की तरह लहराता और मुड़ता हुआ।
हे भगवान! यह तो बहुत ही क्रूरता है।
“मुझे तो यह बहुत ही प्यारा लगा।” जीन-फेलिक्स ने दिलचस्पी से मेरी तरफ देखा। “क्या तुम लिडिया को जानते हो?”
"हां, मैं उससे मिलने गया था।"
“मैं समझ गया।” वह मुस्कुराया। “तुमने अपना होमवर्क अच्छे से किया है। मैं लिडिया से कभी नहीं मिला। तुम्हें पता है, एलिसिया उससे नफरत करती थी।”
“हां।” मैंने पेंटिंग को घूरकर देखा। “हां, मैं देख सकता हूँ।”
जीन-फेलिक्स ने तस्वीरों को सावधानीपूर्वक दोबारा लपेटना शुरू कर दिया।
“और एल्सेस्टिस?” मैंने कहा। “क्या मैं उसे देख सकता हूँ?”
“बिल्कुल। मेरे पीछे आइए।”
जीन-फेलिक्स मुझे संकरे रास्ते से होते हुए गैलरी के अंत तक ले गया।
वहाँ एल्सेस्टिस की पेंटिंग एक दीवार पर अकेली खड़ी थी। यह उतनी ही सुंदर और रहस्यमयी थी जितनी मुझे याद थी। एलिसिया स्टूडियो में नग्न अवस्था में, एक खाली कैनवास के सामने, गहरे लाल रंग के ब्रश से पेंटिंग कर रही थी। मैंने एलिसिया के चेहरे के भावों को गौर से देखा। एक बार फिर, उनकी व्याख्या करना मुश्किल था। मैंने भौंहें सिकोड़ीं।
उसे समझना नामुमकिन है।
“यही तो बात है—यह टिप्पणी करने से इनकार है। यह मौन के बारे में एक पेंटिंग है।”

मुझे यकीन नहीं है कि मैं आपकी बात समझ पा रहा हूँ।
“खैर, कला के मूल में एक रहस्य छिपा होता है। एलिसिया की चुप्पी ही उसका रहस्य है।”
धार्मिक दृष्टि से, यही उसका रहस्य था। इसीलिए उसने इसका नाम एल्सेस्टिस रखा। क्या तुमने इसे पढ़ा है? यूरिपिड्स द्वारा लिखित।” उसने मुझे जिज्ञासा भरी नज़र से देखा। “इसे पढ़ो।”
तब आपको समझ आ जाएगा।
मैंने सिर हिलाया—और फिर मुझे पेंटिंग में कुछ ऐसा दिखा जो मैंने पहले नहीं देखा था।
मैंने ध्यान से देखने के लिए आगे झुककर देखा। तस्वीर के पीछे मेज पर फलों का एक कटोरा रखा था—सेब और नाशपाती का संग्रह। लाल सेबों पर कुछ छोटे-छोटे सफेद धब्बे थे—चिकने सफेद धब्बे फलों के बीच और आसपास रेंग रहे थे।
मैंने उनकी ओर इशारा करते हुए पूछा, "क्या वे...?"
“कीड़े?” जीन-फेलिक्स ने सिर हिलाया। “हाँ।”
“बहुत दिलचस्प। मुझे आश्चर्य है कि इसका क्या मतलब है।”
“यह अद्भुत है। एक उत्कृष्ट कृति। सचमुच।” जीन-फेलिक्स ने आह भरी और चित्र के पार से मेरी ओर देखा। उन्होंने अपनी आवाज़ धीमी कर ली, मानो एलिसिया हमारी बातें सुन सकती हो। “यह अफ़सोस की बात है कि आप उन्हें तब नहीं जान पाए। वह मेरी अब तक की सबसे दिलचस्प शख्सियत थीं। ज़्यादातर लोग, आप जानते हैं, असल में, जीवंत नहीं होते—बस नींद में चलते हुए ज़िंदगी गुज़ारते हैं। लेकिन एलिसिया इतनी जीवंत थीं... उनसे नज़रें हटाना मुश्किल था।” जीन-फेलिक्स ने अपना सिर वापस चित्र की ओर घुमाया और एलिसिया के नग्न शरीर को निहारा। “कितनी सुंदर हैं!”
मैंने एलिसिया के शरीर की ओर देखा। लेकिन जहाँ जीन-फेलिक्स को सुंदरता दिखाई दी, वहीं मुझे केवल दर्द दिखाई दिया; मुझे स्वयं द्वारा पहुँचाए गए घाव और आत्म-हानि के निशान दिखाई दिए।
क्या उसने कभी आपसे अपने आत्महत्या के प्रयास के बारे में बात की थी?

मैं मछली पकड़ने की कोशिश कर रहा था, लेकिन जीन-फेलिक्स ने चारा ले लिया।
"ओह, आपको इसके बारे में पता है?"
हाँ बिल्कुल।"
“उसके पिता की मृत्यु के बाद?”
“वह पूरी तरह टूट गई थी।” जीन-फेलिक्स ने सिर हिलाया। “सच तो यह है कि एलिसिया बुरी तरह से टूट चुकी थी। एक कलाकार के रूप में नहीं, बल्कि एक इंसान के रूप में वह बेहद संवेदनशील थी। जब उसके पिता ने आत्महत्या कर ली, तो यह उसके लिए असहनीय हो गया। वह इसे सहन नहीं कर पाई।”
वह उससे बहुत प्यार करती होगी।
जीन-फेलिक्स ने एक दबी हुई हंसी हंसी। उसने मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे मैं पागल हो गया हूँ। "तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"
"आपका क्या मतलब है?"
“एलिसिया उससे प्यार नहीं करती थी। वह अपने पिता से नफरत करती थी। वह उससे घृणा करती थी।”
मैं यह सुनकर दंग रह गया। "क्या एलिसिया ने तुम्हें यह बताया?"
“बेशक वह उससे नफरत करती थी। वह बचपन से ही उससे नफरत करती थी—जबसे उसकी माँ की मृत्यु हुई थी।”
लेकिन फिर उनकी मृत्यु के बाद आत्महत्या करने की कोशिश क्यों की? अगर यह शोक नहीं था, तो फिर क्या था?
जीन-फेलिक्स ने कंधे उचका दिए। "शायद अपराधबोध? कौन जाने?"
मुझे लगा कि वह मुझसे कुछ छुपा रहा है। कुछ तो गड़बड़ थी। कुछ तो गलत था।
उनका फ़ोन बजा। “एक पल रुकिए।” उन्होंने फ़ोन उठाने के लिए मुझसे नज़रें हटा लीं। दूसरी तरफ़ एक महिला की आवाज़ थी। उन्होंने थोड़ी देर बात की और मिलने का समय तय किया। “मैं तुम्हें बाद में कॉल करूँगा, बेबी,” उन्होंने कहा और फ़ोन रख दिया।
जीन-फेलिक्स मेरी ओर मुड़ा। "उसके लिए क्षमा करें।"
कोई बात नहीं। तुम्हारी गर्लफ्रेंड?
वह मुस्कुराया। "बस एक दोस्त... मेरे बहुत सारे दोस्त हैं।"

मुझे पूरा यकीन है कि तुम ऐसा करोगे, मैंने सोचा। मुझे थोड़ी सी नापसंदगी महसूस हुई; मुझे यकीन नहीं था कि क्यों।
जब वह मुझे बाहर छोड़ने जा रहा था, तो मैंने उससे आखिरी सवाल पूछा। "बस एक और बात।"
क्या एलिसिया ने कभी आपसे डॉक्टर के बारे में बात की थी?
"एक डॉक्टर?"
"ऐसा प्रतीत होता है कि आत्महत्या के प्रयास के समय के आसपास उसने एक डॉक्टर से परामर्श लिया था।"
मैं उसे ढूंढने की कोशिश कर रहा हूँ।
“हम्म।” जीन-फेलिक्स ने भौंहें चढ़ाईं। “शायद—वहाँ कोई था...”
"क्या आपको उसका नाम याद है?"
उसने एक पल सोचा और सिर हिलाया। "मुझे माफ करना। नहीं, मैं सचमुच ऐसा नहीं कर सकता।"
"अच्छा, अगर आपको इसके बारे में कोई जानकारी मिलती है, तो शायद आप मुझे बता सकते हैं?"
“ज़रूर। लेकिन मुझे शक है।” उसने मेरी तरफ देखा और हिचकिचाया। “क्या आपको कुछ सलाह चाहिए?”
मुझे कुछ मिलने पर खुशी होगी।
“अगर आप सचमुच एलिसिया से बात करवाना चाहते हैं... तो उसे कुछ रंग और ब्रश दे दीजिए। उसे पेंटिंग करने दीजिए। यही एकमात्र तरीका है जिससे वह आपसे बात करेगी। अपनी कला के माध्यम से।”
“यह एक दिलचस्प विचार है... आपने बहुत मदद की है। धन्यवाद, श्रीमान।”
मार्टिन।"
"मुझे जीन-फेलिक्स कहकर बुलाओ। और जब तुम एलिसिया से मिलो, तो उसे बताना कि मैं उससे प्यार करता हूँ।"
वह मुस्कुराया, और मुझे फिर से थोड़ी घृणा महसूस हुई: मुझे जीन-फेलिक्स के बारे में कुछ ऐसा लगा जिसे पचाना मुश्किल था। मैं समझ गया था कि वह वास्तव में उसके बहुत करीब था।

एलिसिया; वे एक-दूसरे को लंबे समय से जानते थे, और वह स्पष्ट रूप से उसकी ओर आकर्षित था। क्या वह उससे प्यार करता था? मुझे पक्का यकीन नहीं था। मुझे जीन-फेलिक्स का चेहरा याद आया जब वह एल्सेस्टिस को देख रहा था। हाँ, उसकी आँखों में प्यार झलक रहा था।

लेकिन प्रेम चित्र के प्रति था, चित्रकार के प्रति नहीं। जीन-फेलिक्स कला से प्रेम करता था। अन्यथा वह एलिसिया से मिलने ग्रोव गया होता। वह उसका साथ देता—यह बात मुझे निश्चित रूप से पता थी। कोई पुरुष किसी स्त्री को इस तरह नहीं छोड़ता।

नहीं, अगर वह उससे प्यार करता है।

अध्याय इक्कीस

मैं काम पर जाते समय वाटरस्टोन्स में गया और वहां से मैंने एल्सेस्टिस की एक प्रति खरीदी।

प्रस्तावना में कहा गया था कि यह यूरिपिड्स की सबसे पुरानी मौजूदा त्रासदी है, और उनकी सबसे कम मंचित रचनाओं में से एक है।

मैंने इसे मेट्रो में पढ़ना शुरू किया। यह कोई बहुत ही रोचक किताब नहीं थी। एक अजीब नाटक था।

नायक एडमेटस को भाग्य की देवियों द्वारा मृत्युदंड दिया जाता है। लेकिन अपोलो के हस्तक्षेप से उसे एक रास्ता मिल जाता है—एडमेटस मृत्यु से बच सकता है यदि वह किसी और को अपने बदले मरने के लिए मना ले। वह अपने माता-पिता से अपने बदले मरने का अनुरोध करता है, लेकिन वे स्पष्ट रूप से इनकार कर देते हैं। एडमेटस के व्यवहार को समझना मुश्किल है। यह बिल्कुल भी वीरतापूर्ण नहीं है, और प्राचीन यूनानियों ने उसे मूर्ख ही समझा होगा। लेकिन एल्सेस्टिस का साहस निडर है—वह आगे आती है और अपने पति के लिए मरने की स्वेच्छा से पेशकश करती है।

शायद उसे उम्मीद नहीं थी कि एडमेटस उसका प्रस्ताव स्वीकार करेगा—लेकिन वह स्वीकार कर लेता है, और एल्सेस्टिस की मृत्यु हो जाती है और वह हेड्स के लिए प्रस्थान करती है।

लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं होती। एक तरह से सुखद अंत होता है, मानो कोई चमत्कार हो गया हो। हेराक्लेस एल्सेस्टिस को पाताल लोक से छुड़ाकर विजयी रूप

से जीवितों की दुनिया में वापस ले आता है। वह फिर से जीवित हो उठती है। अपनी पत्नी से दोबारा मिलकर एडमेटस की आँखों में आँसू आ जाते हैं। एल्सेस्टिस की भावनाओं को समझना थोड़ा मुश्किल है।
वह चुप रहती है। वह कुछ नहीं बोलती।
यह पढ़ते ही मैं एकदम चौंककर उठ बैठा। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था।
मैंने नाटक का अंतिम पृष्ठ फिर से धीरे-धीरे, ध्यान से पढ़ा: एल्केस्टिस मृत्यु से लौट आती है, फिर से जीवित हो जाती है। और वह चुप रहती है—अपने अनुभव के बारे में बोलने में असमर्थ या अनिच्छुक। एडमेटस हताशा में हेराक्लेस से विनती करता है:
"लेकिन मेरी पत्नी यहाँ खड़ी क्यों है, और कुछ बोल क्यों नहीं रही है?"
कोई जवाब नहीं मिलता। त्रासदी का अंत इस प्रकार होता है कि एडमेटस चुपचाप एल्सेस्टिस को वापस घर ले जाता है।
क्यों? वह क्यों नहीं बोलती?
अध्याय बाईस
एलिसिया बेरेंसन की डायरी
2 अगस्त
आज तो और भी ज्यादा गर्मी है। लगता है लंदन में एथेंस से भी ज्यादा गर्मी है। लेकिन कम से कम एथेंस में एक समुद्र तट तो है।
पॉल ने आज मुझे कैम्ब्रिज से फोन किया। उसकी आवाज सुनकर मैं हैरान रह गया। हमने महीनों से बात नहीं की थी। मेरा पहला ख्याल यही आया कि आंटी लिडिया की मौत हो गई होगी—मुझे यह कहने में कोई शर्म नहीं है कि मुझे थोड़ी राहत महसूस हुई।
लेकिन पॉल ने इस वजह से फोन नहीं किया था। सच कहूँ तो मुझे अब भी ठीक से पता नहीं कि उसने मुझे फोन क्यों किया। वह बात टाल रहा था। मैं उसके सीधे मुद्दे पर आने का इंतज़ार करती रही, पर उसने कुछ नहीं कहा। वह बस यही पूछता रहा कि मैं ठीक हूँ या नहीं, गैब्रियल ठीक है या नहीं, और लिडिया के हमेशा की तरह होने के बारे में कुछ बुदबुदाया।
मैंने कहा, "मैं मिलने आऊंगा। मैं बहुत समय से नहीं आया हूँ, आने का मन तो था।"

सच तो यह है कि घर जाने और लिडिया और पॉल के साथ घर पर रहने को लेकर मेरे मन में कई तरह की उलझनें हैं। इसलिए मैं वापस जाने से बचता हूँ—और अंत में मुझे अपराधबोध होता है, इसलिए किसी भी तरह से मेरी जीत नहीं होती।
“आपसे मिलकर अच्छा लगेगा,” मैंने कहा। “मैं जल्द ही आपसे मिलने आऊंगा। मैं अभी बाहर जा रहा हूँ, इसलिए—”
फिर पॉल इतनी धीमी आवाज में बोला कि मैं उसे सुन नहीं सका।
"खेद है आप उसको दोहरा सकते हैं?"
मैंने कहा, "मैं मुसीबत में हूँ, एलिसिया। मुझे तुम्हारी मदद चाहिए।"
"क्या बात क्या बात?"
मैं फोन पर इस बारे में बात नहीं कर सकता। मुझे आपसे मिलना होगा।
"बात बस इतनी सी है कि मुझे यकीन नहीं है कि मैं इस समय कैम्ब्रिज जा पाऊंगा।"
मैं आज दोपहर तुम्हारे पास आऊंगा। ठीक है?
पॉल की आवाज़ में कुछ ऐसा था कि मैंने बिना सोचे-समझे ही उससे सहमति जता दी। वह बेहद हताश लग रहा था।
“ठीक है। क्या आप वाकई अभी मुझे इसके बारे में नहीं बता सकते?”
“फिर मिलेंगे।” पॉल ने फोन काट दिया।
मैं पूरी सुबह इसी बारे में सोचती रही। आखिर ऐसी कौन सी गंभीर बात हो सकती है कि पॉल ने मेरी तरफ ही क्यों ध्यान दिया? क्या यह लिडिया के बारे में था? या शायद घर के बारे में? कुछ समझ में नहीं आ रहा था।
दोपहर के भोजन के बाद मैं कोई काम नहीं कर पाई। मैंने गर्मी को इसका कारण बताया, लेकिन सच तो यह था कि मेरा ध्यान कहीं और था। मैं रसोई में इधर-उधर घूमती रही, खिड़कियों से बाहर देखती रही, तभी मुझे सड़क पर पॉल दिखाई दिया। उसने मेरी तरफ हाथ हिलाया। "एलिसिया, हाय।"
सबसे पहले तो मुझे उसकी हालत देखकर हैरानी हुई। उसका वज़न बहुत कम हो गया था, खासकर चेहरे, कनपटी और जबड़े के आसपास। वह कंकाल जैसा, बीमार, थका हुआ और डरा हुआ लग रहा था।
हम रसोई में पोर्टेबल पंखा चलाकर बैठे थे। मैंने उसे बीयर पीने के लिए कहा, लेकिन उसने कहा कि वह कुछ और तेज़ पीना पसंद करेगा, जिससे मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि

मुझे याद नहीं कि वह ज़्यादा शराब पीता था। मैंने उसे व्हिस्की की एक छोटी सी बोतल दी और जब उसे लगा कि मैं नहीं देख रही हूँ, तो उसने उसे फिर से भर लिया। पहले तो उसने कुछ नहीं कहा। हम थोड़ी देर चुपचाप बैठे रहे। फिर उसने वही दोहराया जो उसने फोन पर कहा था। बिल्कुल वही शब्द:
"मैं परेशानी में हूं।"
मैंने उससे पूछा कि उसका क्या मतलब था। क्या यह घर के बारे में था?
पॉल ने मेरी तरफ खाली निगाहों से देखा। नहीं, यह घर नहीं था।
"तब क्या?"
“यह मैं ही हूँ।” वह थोड़ा हिचकिचाया, फिर बोला, “मैं जुआ खेल रहा था। और मुझे डर है कि मैं बहुत हार रहा हूँ।”
वह कई सालों से नियमित रूप से जुआ खेल रहा था। उसने बताया कि इसकी शुरुआत घर से बाहर निकलने के एक तरीके के रूप में हुई थी—कहीं जाने के लिए, कुछ करने के लिए, थोड़ा मनोरंजन करने के लिए।
और मैं उसे दोष नहीं दे सकता। लिडिया के साथ रहते हुए, मनोरंजन की कमी तो होगी ही।
लेकिन वह लगातार हारता जा रहा था, और अब स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गई थी।
वह बचत खाते से पैसे निकाल रहा है। और वैसे भी शुरू में उसमें ज्यादा पैसे नहीं थे।
"आपको कितना चाहिए?"
बीस हजार।
मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। "तुमने बीस हज़ार डॉलर गंवा दिए?"
“एक साथ सब कुछ नहीं हुआ। मैंने कुछ लोगों से उधार लिया था—और अब वे उसे वापस मांग रहे हैं।”
“कौन से लोग?”
अगर मैंने उन्हें पैसे वापस नहीं किए तो मैं मुसीबत में पड़ जाऊंगा।
“क्या तुमने अपनी माँ को बताया?” मुझे पहले से ही जवाब पता था। पॉल भले ही उलझन में हो, लेकिन वह बेवकूफ नहीं है।
“बिल्कुल नहीं। माँ मुझे मार डालेंगी। मुझे तुम्हारी मदद चाहिए, एलिसिया। इसीलिए मैं यहाँ आया हूँ।”

"मेरे पास उतने पैसे नहीं हैं, पॉल।"
मैं इसे चुका दूंगा। मुझे एक साथ पूरी रकम की जरूरत नहीं है। बस कुछ रकम चाहिए।
मैंने कुछ नहीं कहा और वह गिड़गिड़ाता रहा। उन्हें आज रात कुछ चाहिए था।
वह खाली हाथ लौटने की हिम्मत नहीं कर रहा था। मैं उसे जो कुछ भी दे सकता था, सब कुछ लेकर आया।
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं। मैं उसकी मदद करना चाहता था, लेकिन मुझे शक था कि उसे पैसे देना इस समस्या का सही समाधान नहीं होगा। मुझे यह भी पता था कि उसके कर्ज को आंटी लिडिया से छुपाना मुश्किल होगा। मुझे नहीं पता कि अगर मैं पॉल होता तो क्या करता। लिडिया का सामना करना शायद सूदखोरों से भी ज्यादा डरावना था।
मैंने अंत में कहा, "मैं आपको चेक लिख दूंगा।"
पॉल बेहद आभारी लग रहा था और बार-बार बुदबुदा रहा था, "धन्यवाद, धन्यवाद।"
मैंने उसे दो हजार पाउंड का चेक लिखकर दिया, जो नकद भुगतान के लिए था। मुझे पता है कि वह ऐसा नहीं चाहता था, लेकिन यह सब मेरे लिए बिल्कुल नया अनुभव था।
और मुझे यकीन नहीं है कि मैंने उसकी कही हर बात पर विश्वास किया। उसकी बातों में कुछ सच्चाई नहीं थी।
मैंने कहा, "शायद गैब्रियल से बात करने के बाद मैं आपको और जानकारी दे सकूँ। लेकिन बेहतर होगा कि हम इस समस्या का कोई और हल निकालें। आपको पता है, गैब्रियल का भाई वकील है। शायद वह मदद कर सके—"
पॉल डर के मारे उछल पड़ा और अपना सिर हिलाने लगा। "नहीं, नहीं, नहीं। गेब्रियल को मत बताना।"
उसे इसमें शामिल मत करो। कृपया। मैं इससे निपटने का तरीका ढूंढ लूंगी। मैं इसका हल निकाल लूंगी।
“लिडिया के बारे में क्या? मुझे लगता है शायद आपको—”
पॉल ने गुस्से से अपना सिर हिलाया और बिल ले लिया। रकम देखकर वह निराश लग रहा था, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। थोड़ी देर बाद ही वह चला गया।

मुझे ऐसा लग रहा है कि मैंने उसे निराश किया है। बचपन से ही पॉल के बारे में मेरे मन में यही भावना रही है। मैं हमेशा उसकी उम्मीदों पर खरा उतरने में नाकाम रहा हूँ।
मुझे उसके लिए माँ जैसी भूमिका निभानी चाहिए। उसे मुझे इससे बेहतर तरीके से जानना चाहिए। मैं माँ जैसी भूमिका निभाने वाली नहीं हूँ।
जब गैब्रियल वापस आया तो मैंने उसे इसके बारे में बताया। वह मुझसे नाराज़ था। उसने कहा कि मुझे पॉल को पैसे नहीं देने चाहिए थे, कि मैं उसका कुछ भी ऋणी नहीं हूँ, वह मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है।
मुझे पता है गैब्रियल सही कह रहा है, लेकिन फिर भी मुझे अपराधबोध हो रहा है। मैं उस घर से और लिडिया से बच निकली—पॉल नहीं बच पाया। वह अभी भी वहीं फंसा हुआ है। वह अभी भी आठ साल का है। मैं उसकी मदद करना चाहती हूँ।
लेकिन मुझे नहीं पता कैसे।
6 अगस्त
मैंने पूरा दिन पेंटिंग करने और यीशु की तस्वीर के बैकग्राउंड के साथ प्रयोग करने में बिताया। मैं मेक्सिको में ली गई तस्वीरों से स्केच बना रही हूँ—लाल,
फटी हुई धरती, गहरे, कांटेदार झाड़ियाँ—उस गर्मी, उस तीव्र शुष्कता को कैसे कैद किया जाए, इसके बारे में सोच रहा था—और तभी मैंने जीन-फेलिक्स को मेरा नाम पुकारते हुए सुना।
मैंने एक पल के लिए उसे अनदेखा करने, मानो मैं वहाँ हूँ ही नहीं, ऐसा जताने के बारे में सोचा। लेकिन तभी मुझे गेट की खनक सुनाई दी, और तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मैंने अपना सिर बाहर निकाला और वह बगीचे में चल रहा था।
उसने मेरी तरफ हाथ हिलाया। "हे, जान। क्या मैं तुम्हें परेशान कर रहा हूँ? क्या तुम काम कर रही हो?"
"हाँ, बिल्कुल।"
“बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया। लगे रहो। प्रदर्शनी में बस छह हफ्ते ही बचे हैं, तुम्हें पता है ना।”
तुम बहुत पीछे हो।” वह अपनी चिड़चिड़ी हंसी हंसा। मेरे चेहरे के हाव-भाव से शायद मेरी पोल खुल गई, क्योंकि उसने झट से कहा, “मजाक कर रहा था। मैं यहां तुम्हारा

हालचाल पूछने नहीं आया हूं।”
मैंने कुछ नहीं कहा। मैं बस स्टूडियो में वापस चला गया, और वह मेरे पीछे आया। उसने पंखे के सामने एक कुर्सी खींच ली। उसने सिगरेट जलाई, और हवा में धुआँ उसके चारों ओर उड़ने लगा। मैं वापस ईज़ल के पास गया और अपना ब्रश उठा लिया। जीन-फेलिक्स काम करता रहा। उसने गर्मी की शिकायत करते हुए कहा कि लंदन इस तरह के मौसम का सामना करने के लिए नहीं बना है। उसने इसकी तुलना पेरिस और अन्य शहरों से की और उन्हें लंदन से कमतर बताया। थोड़ी देर बाद मैंने उसकी बातें सुनना बंद कर दिया।
वह लगातार शिकायत करता रहा, खुद को सही ठहराता रहा, खुद पर तरस खाता रहा, और मुझे इतना बोर कर दिया कि मैं मर ही गई। वह मुझसे कभी कुछ नहीं पूछता। उसे मुझमें कोई दिलचस्पी नहीं है। इतने सालों बाद भी, मैं उसके लिए सिर्फ एक साधन हूँ—जीन-फेलिक्स शो की एक दर्शक।
शायद यह कहना अनुचित होगा। वह मेरा पुराना दोस्त है—और वह हमेशा मेरे लिए मौजूद रहा है।
वो अकेला है, बस। मैं भी। खैर, गलत इंसान के साथ रहने से बेहतर है अकेला रहना। इसीलिए गैब्रियल से पहले मेरा कभी कोई गंभीर रिश्ता नहीं रहा। मैं गैब्रियल का इंतज़ार कर रही थी, किसी सच्चे इंसान का, जो बाकी सब झूठे लोगों की तरह ठोस और सच्चा हो। जीन-फेलिक्स हमेशा हमारे रिश्ते से जलता था। उसने इसे छिपाने की कोशिश की—और अब भी करता है—लेकिन मुझे साफ दिखता है कि वो गैब्रियल से नफरत करता है। वो हमेशा उसके बारे में बुरा-भला कहता रहता है, ये जताता रहता है कि गैब्रियल मुझसे कम प्रतिभाशाली है, कि वो घमंडी और अहंकारी है। मुझे लगता है जीन-फेलिक्स को लगता है कि एक दिन वो मुझे अपनी तरफ कर लेगा और मैं उसके कदमों में गिर जाऊंगी। लेकिन उसे ये एहसास नहीं है कि हर ताने और चुभने वाली बात से वो मुझे गैब्रियल की बाहों में और धकेल रहा है।
जीन-फेलिक्स हमेशा हमारी बहुत पुरानी दोस्ती का ज़िक्र करता रहता है—उसका मुझ पर जो प्रभाव है—उन शुरुआती सालों की तीव्रता, जब हम दोनों ही दुनिया के खिलाफ थे। लेकिन मुझे नहीं लगता कि जीन-फेलिक्स को इस बात का एहसास है कि वह मेरे जीवन के उस हिस्से को थामे हुए है जब मैं खुश नहीं थी। और जीन-फेलिक्स

के लिए मेरे मन में जो भी स्नेह है, वह उसी समय के लिए है। हम एक ऐसे विवाहित जोड़े की तरह हैं जिनका प्यार खत्म हो गया है। आज मुझे एहसास हुआ कि मैं उसे कितना नापसंद करती हूँ।
मैंने कहा, "मैं काम कर रहा हूँ। मुझे यह काम जल्दी करना है, इसलिए अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो..."
जीन-फेलिक्स ने मुंह बनाया। "क्या तुम मुझे जाने के लिए कह रहे हो? जब से तुमने ब्रश उठाया है, तब से मैं तुम्हें पेंटिंग करते देख रहा हूँ। अगर इतने सालों से मैं तुम्हारे लिए बाधा रहा हूँ, तो तुम्हें पहले ही कुछ कहना चाहिए था।"
मैं अब कुछ कह रहा हूँ।
मेरा चेहरा गर्म हो रहा था और मुझे गुस्सा आ रहा था। मैं इसे नियंत्रित नहीं कर पा रही थी। मैंने पेंटिंग करने की कोशिश की, लेकिन मेरा हाथ कांप रहा था। मुझे महसूस हो रहा था कि जीन-फेलिक्स मुझे देख रहा है—मैं लगभग उसके दिमाग की आवाज़ सुन सकती थी—टिक-टिक, चहचहाहट, चक्कर। "मैंने तुम्हें नाराज़ कर दिया है," उसने अंत में कहा। "क्यों?"
मैंने अभी तुम्हें बताया था। तुम इस तरह बार-बार नहीं आ सकते। तुम्हें पहले मुझे मैसेज करना होगा या कॉल करना होगा।
मुझे यह एहसास ही नहीं था कि अपने सबसे अच्छे दोस्त से मिलने के लिए मुझे लिखित निमंत्रण की आवश्यकता होगी।
कुछ पल का सन्नाटा छा गया। उसे बुरा लगा था। शायद इसके अलावा कोई और तरीका था ही नहीं। मैंने उसे इस तरह बताने का सोचा नहीं था—मैं उसे नरमी से बताना चाहती थी। लेकिन किसी तरह मैं खुद को रोक नहीं पाई। और मज़े की बात ये है कि मैं उसे चोट पहुँचाना चाहती थी। मैं बेरहमी से पेश आना चाहती थी।
"जीन-फेलिक्स, सुनो।"
मैं सुन रहा हूँ।
“यह कहना आसान नहीं है। लेकिन शो के बाद, बदलाव का समय आ गया है।”
“किस चीज़ में बदलाव?”
“गैलरी में बदलाव। मेरे लिए।”

जीन-फेलिक्स ने मेरी तरफ हैरानी से देखा। मुझे लगा जैसे वह एक छोटा बच्चा हो, जो रोने ही वाला हो, और मुझे खुद में झुंझलाहट के अलावा कुछ भी महसूस नहीं हुआ।
“अब नए सिरे से शुरुआत करने का समय है। हम दोनों के लिए।”
“मैं समझ गया।” उसने एक और सिगरेट जलाई। “और मुझे लगता है कि यह गैब्रियल का विचार है?”
गेब्रियल का इससे कोई लेना-देना नहीं है।
वह मुझसे बेहद नफरत करता है।
“बेवकूफी मत करो।”
“उसने मेरे खिलाफ तुम्हारे मन में जहर घोला। मैंने यह सब होते देखा है। वह सालों से ऐसा कर रहा है।”
"यह सच नहीं है।"
“इसके अलावा और क्या स्पष्टीकरण हो सकता है? मुझे पीठ में छुरा घोंपने का तुम्हारे पास और क्या कारण हो सकता है?”
“इतना नाटक मत करो। यह सिर्फ गैलरी के बारे में है। इसमें तुम्हारा और मेरा कोई लेना-देना नहीं है। हम अब भी दोस्त रहेंगे। हम अब भी साथ में समय बिता सकते हैं।”
“अगर मैं पहले मैसेज या कॉल करूँ तो?” वह हँसा और तेज़ी से बोलने लगा, मानो वह मेरे रोकने से पहले ही अपनी बात कह देना चाहता हो। “वाह, वाह, वाह। इतने समय तक मुझे सच में किसी बात पर भरोसा था, तुम्हें पता है, तुम पर और मुझ पर—और अब तुमने अचानक ही तय कर दिया कि कुछ भी नहीं था। बस यूँ ही। तुम्हें मेरी तरह कोई परवाह नहीं करता, तुम्हें पता है। कोई नहीं।”
“जीन-फेलिक्स, कृपया—”
मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि तुमने अचानक ऐसा फैसला कर लिया।
मैं तुम्हें यह बात काफी समय से बताना चाह रहा था।
यह कहना स्पष्ट रूप से गलत था। जीन-फेलिक्स स्तब्ध रह गया। "तुम्हारा मतलब क्या है, कुछ देर? कितना समय?"
मुझे नहीं पता। कुछ समय लगेगा।

“और तुम मेरे लिए अभिनय कर रही थी? बस इतना ही? हे भगवान, एलिसिया। इसे ऐसे खत्म मत करो। मुझे इस तरह मत छोड़ो।”
“मैं तुम्हें छोड़ नहीं रहा हूँ। इतना नाटक मत करो। हम हमेशा दोस्त रहेंगे।”
“चलिए, ज़रा रुकिए। आपको पता है मैं यहाँ क्यों आया हूँ? आपको शुक्रवार को थिएटर चलने के लिए कहने।” उन्होंने अपनी जैकेट से दो टिकट निकाले और मुझे दिखाए—ये नेशनल थिएटर में यूरिपिड्स के एक नाटक के टिकट थे। “मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ चलें। अलविदा कहने का यह ज़्यादा सभ्य तरीका है, है ना? पुरानी यादों के लिए। मना मत करना।”
मैं हिचकिचाई। मैं ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहती थी। लेकिन मैं उसे और परेशान नहीं करना चाहती थी। मुझे लगता है कि मैं किसी भी बात पर मान जाती—बस उसे वहाँ से निकालने के लिए। इसलिए मैंने हाँ कह दी।
रात 10:30:00 बजे।
जब गैब्रियल घर लौटा, तो मैंने उससे जीन-फेलिक्स के साथ हुई घटना के बारे में बात की। उसने कहा कि उसे हमारी दोस्ती कभी समझ ही नहीं आई। उसने कहा कि जीन-फेलिक्स अजीब है और उसे मेरा घूरना पसंद नहीं है।
और यह कैसे?
“जैसे कि वो तुम्हारा मालिक हो। मुझे लगता है कि तुम्हें अब गैलरी छोड़ देनी चाहिए।”
शो से पहले।"
“मैं ऐसा नहीं कर सकती—बहुत देर हो चुकी है। मैं नहीं चाहती कि वह मुझसे नफरत करे। आपको नहीं पता कि वह कितना प्रतिशोधी हो सकता है।”
ऐसा लगता है कि तुम उससे डरते हो।
“मैं ऐसा नहीं सोचता। इस तरह से धीरे-धीरे दूर हटना ज्यादा आसान है।”
"जितनी जल्दी हो उतना अच्छा। वह तुमसे प्यार करता है। तुम यह जानती हो ना?"
मैंने बहस नहीं की—लेकिन गैब्रियल गलत है। जीन-फेलिक्स मुझसे प्यार नहीं करता। वह मुझसे ज़्यादा मेरी पेंटिंग्स से जुड़ा हुआ है। और यही एक और कारण है कि मुझे उससे दूर हो जाना चाहिए। जीन-फेलिक्स को मेरी ज़रा भी परवाह नहीं है। हालांकि, गैब्रियल एक बात में सही था।

मुझे उससे डर लगता है।
अध्याय तेईस
मैंने डायोमेडेस को उनके कार्यालय में पाया। वे अपने वीणा के सामने एक स्टूल पर बैठे थे। वीणा का एक बड़ा और अलंकृत लकड़ी का फ्रेम था, जिस पर सुनहरे तारों की एक श्रृंखला लगी हुई थी।
मैंने कहा, "यह एक खूबसूरत वस्तु है।"
डायोमेडेस ने सिर हिलाया। "और इसे बजाना बहुत मुश्किल है।" उन्होंने अपनी उंगलियों को तारों पर प्यार से फेरते हुए प्रदर्शन किया। कमरे में एक मधुर सुर गूंज उठा। "क्या आप कोशिश करना चाहेंगे?"
मैंने मुस्कुराया और अपना सिर हिलाया।
वह हँसा। “मैं बार-बार पूछता रहता हूँ, इस उम्मीद में कि शायद आप अपना मन बदल लें। मैं अपनी बात पर अड़ा रहता हूँ।”
“मैं संगीत में बहुत अच्छा नहीं हूँ। मेरे स्कूल के संगीत शिक्षक ने मुझे यह बात स्पष्ट रूप से कह दी थी।”
"थेरेपी की तरह, संगीत भी एक रिश्ते के बारे में है, जो पूरी तरह से आपके द्वारा चुने गए शिक्षक पर निर्भर करता है।"
“इसमें कोई शक नहीं कि यह सच है।”
उसने खिड़की से बाहर देखा और अंधेरा होते आसमान की ओर इशारा करते हुए सिर हिलाया। "उन बादलों में बर्फ है।"
मुझे तो ये बारिश के बादल लग रहे हैं।
“नहीं, ये बर्फ है। मेरा यकीन मानिए, मैं यूनानी चरवाहों के एक लंबे वंश से आता हूँ। आज रात बर्फबारी होगी।”
डायोमेडेस ने बादलों को आखिरी बार आशा भरी नजर से देखा, फिर मेरी ओर मुड़ गया।
मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ, थियो?
"यह इस प्रकार है।"
मैंने नाटक की प्रति मेज पर सरका दी। उसने उसे गौर से देखा।
"यह क्या है?"

यूरिपिड्स द्वारा रचित एक त्रासदी।
मैं देख सकता हूँ। आप मुझे यह क्यों दिखा रहे हैं?
"खैर, यह एल्सेस्टिस है - यह वह शीर्षक है जो एलिसिया ने अपने उस आत्मचित्र को दिया था, जिसे उसने गैब्रियल की हत्या के बाद चित्रित किया था।"
“ओह, जी हाँ, जी हाँ, बिल्कुल।” डायोमेडेस ने इसे और अधिक रुचि से देखा।
खुद को एक दुखद नायिका के रूप में प्रस्तुत करना।
“शायद। मुझे मानना पड़ेगा, मैं थोड़ा असमंजस में हूँ। मुझे लगा था कि आप मुझसे बेहतर जानते होंगे।”
“क्योंकि मैं यूनानी हूँ?” वह हँसा। “क्या आपको लगता है कि मुझे हर यूनानी त्रासदी की पूरी जानकारी होगी?”
"खैर, कम से कम मुझसे तो बेहतर ही है।"
“मुझे समझ नहीं आता क्यों। यह तो ऐसा ही है जैसे यह मान लेना कि हर अंग्रेज शेक्सपियर की रचनाओं से परिचित है।” उन्होंने मुझे दया भरी मुस्कान दी। “सौभाग्य से, यही हमारे देशों में अंतर है। हर यूनानी शेक्सपियर की त्रासदियों को जानता है। ये त्रासदियां हमारी मिथक कथाएं हैं, हमारा इतिहास हैं—हमारे खून में बसी हैं।”
"तो फिर आप इस मामले में मेरी मदद कर पाएंगे।"
डायोमेडेस ने उसे उठाया और पन्ने पलटने लगा। "और आपकी समस्या क्या है?"
“मेरी समस्या यह है कि वह बोलती नहीं है। एल्सेस्टिस अपने पति के लिए मर जाती है। और अंत में, वह फिर से जीवित हो जाती है—लेकिन चुप ही रहती है।”
आह। एलिसिया की तरह।
"हाँ।"
मैं फिर से वही सवाल पूछता हूं—आपकी समस्या क्या है?
“खैर, जाहिर है कि कोई संबंध तो है—लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा। अंत में एल्केस्टिस क्यों नहीं बोलती?”
"अच्छा, आपको क्या लगता है ऐसा क्यों?"
मुझे नहीं पता। शायद वह भावनाओं से अभिभूत हो गई है?
“शायद। किस तरह की भावना?”
"आनंद?"

“जॉय?” वह हँसा। “थियो, सोचो। तुम्हें कैसा लगेगा? दुनिया में जिस इंसान से तुम सबसे ज़्यादा प्यार करते हो, वही अपनी कायरता के कारण तुम्हें मौत के घाट उतार दे। यह तो सरासर विश्वासघात है।”
“आप कह रहे हैं कि वह परेशान थी?”
"क्या आपको कभी धोखा नहीं मिला?"
उस सवाल ने मुझे चाकू की तरह भेद दिया। मेरा चेहरा लाल हो गया। मेरे होंठ हिले लेकिन कोई आवाज़ नहीं निकली।
डायोमेडेस मुस्कुराया। “मैं देख सकता हूँ कि तुमने ऐसा किया है। तो... मुझे बताओ। एल्सेस्टिस कैसा महसूस कर रही है?”
इस बार मुझे जवाब पता था। "गुस्से में है। वह... गुस्से में है।"
“हाँ।” डायोमेडेस ने सिर हिलाया। “गुस्से से भी ज़्यादा। वो तो जानलेवा गुस्से से भरी हुई है।” वह हँस पड़ा। “यह सोचना लाज़मी है कि भविष्य में एल्सेस्टिस और एडमेटस का रिश्ता कैसा होगा। एक बार विश्वास खो जाने पर उसे वापस पाना मुश्किल होता है।”
मुझे बोलने की हिम्मत जुटाने में कुछ सेकंड लगे। "और एलिसिया?"
“उसके बारे में क्या?”
“एल्सेस्टिस को उसके पति की कायरता के कारण मृत्युदंड दिया गया था। और एलिसिया—”
“नहीं, एलिसिया की मृत्यु नहीं हुई... शारीरिक रूप से नहीं।” उन्होंने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।
“मानसिक दृष्टि से, दूसरी ओर...”
"तुम्हारा मतलब है कि कुछ ऐसा हुआ जिसने उसकी आत्मा को मार डाला... उसके जीने के एहसास को ही खत्म कर दिया?"
"संभवतः।"
मुझे असंतोष महसूस हुआ। मैंने नाटक उठाया और उसे देखा। कवर पर एक शास्त्रीय प्रतिमा थी—संगमरमर में तराशी गई एक सुंदर महिला। मैं उसे घूरता रहा, जीन-फेलिक्स की कही बात याद करते हुए। “अगर एलिसिया मर चुकी है... एल्सेस्टिस की तरह, तो हमें उसे फिर से जीवित करना होगा।”

"सही।"
"मेरे मन में यह विचार आया कि अगर एलिसिया की कला उसकी अभिव्यक्ति का साधन है, तो क्यों न हम उसे अपनी बात कहने का मौका दें?"
और हम ऐसा कैसे करेंगे?
"क्यों न हम उसे पेंटिंग करने दें?"
डायोमेडेस ने मुझे हैरानी भरी नज़रों से देखा, फिर हाथ हिलाकर बात को टाल दिया।
"वह पहले से ही कला चिकित्सा ले रही है।"
“मैं कला चिकित्सा की बात नहीं कर रही हूँ। मैं एलिसिया के अपने तरीके से काम करने की बात कर रही हूँ—अकेले, अपनी रचना करने के लिए अपनी जगह में। उसे खुद को अभिव्यक्त करने दो, अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त करने दो। इससे चमत्कार हो सकता है।”
डायोमेडेस ने एक पल के लिए कोई जवाब नहीं दिया। वह इस पर विचार करने लगा।
“आपको उसकी कला चिकित्सक से बात करनी होगी। क्या आप उससे मिले हैं? रोवेना”
हार्ट? वो तो कमजोर नहीं है।
मैं उससे बात करूँगा। लेकिन क्या मुझे आपका आशीर्वाद प्राप्त है?
डायोमेडेस ने कंधे उचकाते हुए कहा, "अगर तुम रोवेना को मना सकते हो, तो मना लो। मैं अभी बता सकता हूँ—उसे यह विचार पसंद नहीं आएगा। उसे यह बिल्कुल भी पसंद नहीं आएगा।"
अध्याय चौबीस
रोवेना ने कहा, "मुझे लगता है यह एक बहुत अच्छा विचार है।"
“सच में?” मैंने हैरानी छिपाने की कोशिश की। “सच में?”
“ओह, हाँ। बस दिक्कत ये है कि एलिसिया इसके लिए तैयार नहीं है।”
"आप इतने निश्चित कैसे हैं?"
रोवेना ने तिरस्कार भरी हंसी हंसते हुए कहा, "क्योंकि एलिसिया सबसे कम प्रतिक्रियाशील और सबसे कम बोलने वाली औरत है जिसके साथ मैंने कभी काम किया है।"
“आह।”

मैं रोवेना के पीछे-पीछे कला कक्ष में गई। फर्श पर पेंट के छींटे पड़े थे, मानो कोई अमूर्त मोज़ेक बना हो, और दीवारें कलाकृतियों से सजी थीं—कुछ अच्छी थीं, अधिकतर अजीबोगरीब। रोवेना के छोटे सुनहरे बाल थे, चेहरे पर गहरी झुर्रियाँ थीं, और उनका व्यवहार थका हुआ और परेशान सा था, निस्संदेह उनके अनगिनत असहयोगी रोगियों के कारण। एलिसिया स्पष्ट रूप से उन्हीं में से एक निराशाजनक रोगी थी।

मैंने कहा, "क्या वह कला चिकित्सा में भाग नहीं लेती?"

“वह नहीं करती।” रोवेना बोलते हुए शेल्फ पर कलाकृतियाँ सजाती रही। “जब वह समूह में शामिल हुई थी, तब मुझे उससे बहुत उम्मीदें थीं—मैंने उसे सहज महसूस कराने के लिए हर संभव प्रयास किया—लेकिन वह बस खाली पन्ने को घूरती रहती है। कोई भी चीज़ उसे पेंटिंग करने या पेंसिल उठाकर चित्र बनाने के लिए प्रेरित नहीं करती।”

यह दूसरों के लिए एक बहुत बुरा उदाहरण है।

मैंने सहानुभूति से सिर हिलाया। कला चिकित्सा का उद्देश्य रोगियों को चित्र बनाने और पेंटिंग करने के लिए प्रेरित करना है, और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वे अपनी कलाकृतियों के बारे में बात करें, उन्हें अपनी भावनात्मक स्थिति से जोड़ें। यह उनके अवचेतन मन को कागज़ पर उतारने का एक शानदार तरीका है, जहाँ उस पर विचार और चर्चा की जा सकती है। हमेशा की तरह, अंततः यह चिकित्सक के कौशल पर निर्भर करता है।

रूथ कहा करती थी कि बहुत कम थेरेपिस्ट कुशल या सहज ज्ञान वाले होते हैं—अधिकांश तो बस कामचलाऊ होते हैं। मेरी राय में, रोवेना बिल्कुल एक कामचलाऊ ही थी।

जाहिर तौर पर एलिसिया द्वारा उपेक्षित महसूस कर रहा था। मैंने उसे यथासंभव शांत करने की कोशिश की।

मैंने धीरे से सुझाव दिया, "शायद उसे दर्द हो रहा हो।"

“दर्दनाक?”

"खैर, उनकी जैसी प्रतिभाशाली कलाकार के लिए अन्य मरीजों के साथ बैठकर पेंटिंग करना आसान नहीं हो सकता।"

“क्यों नहीं? क्योंकि वो इससे ऊपर है? मैंने उसका काम देखा है। मैं उसे बिल्कुल भी अच्छा नहीं मानती।” रोवेना ने मुंह ऐसे सिकोड़ा जैसे उसने कुछ अप्रिय चखा हो।
तो यही वजह थी कि रोवेना एलिसिया को नापसंद करती थी—ईर्ष्या के कारण।
रोवेना ने कहा, "कोई भी इस तरह से पेंटिंग कर सकता है। किसी चीज को फोटो-रियलिस्टिक तरीके से चित्रित करना मुश्किल नहीं है - मुश्किल तो उसके बारे में एक दृष्टिकोण रखना है।"
मैं एलिसिया की कला के बारे में बहस में नहीं पड़ना चाहता था। "तो आपका मतलब यह है कि अगर मैं उसे आपसे ले लूँ तो आपको राहत मिलेगी?"
रोवेना ने मुझे तीखी नज़र से देखा। "तुम उसे अपने पास रख सकते हो।"
“धन्यवाद। मैं आभारी हूँ।”
रोवेना ने तिरस्कारपूर्वक नाक सिकोड़ी। "कला सामग्री आपको ही लानी होगी। मेरा बजट तेल रंगों के लिए पर्याप्त नहीं है।"
अध्याय पच्चीस
"मुझे कबूल करना है।"
एलिसिया ने मेरी तरफ नहीं देखा।
मैंने उसे ध्यान से देखते हुए आगे कहा, “मैं कुछ दिन पहले सोहो में थी, तभी मेरी नज़र आपकी पुरानी गैलरी पर पड़ी। तो मैं अंदर चली गई। वहाँ के मैनेजर ने मुझे आपकी कुछ कलाकृतियाँ दिखाईं। क्या वो आपके पुराने दोस्त हैं? जीन-फेलिक्स मार्टिन?”
मैंने जवाब का इंतजार किया। कोई जवाब नहीं आया।
मुझे उम्मीद है कि आपको यह आपकी निजता का उल्लंघन नहीं लगा होगा। शायद मुझे पहले आपसे सलाह लेनी चाहिए थी। मुझे उम्मीद है कि आपको कोई आपत्ति नहीं होगी।
कोई जबाव नहीं।
“मैंने कुछ ऐसी पेंटिंग्स देखीं जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थीं। एक आपकी मां की... और दूसरी आपकी चाची, लिडिया रोज़ की।”
एलिसिया ने धीरे से अपना सिर उठाया और मेरी तरफ देखा। उसकी आँखों में एक ऐसा भाव था जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मैं ठीक से समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या था। क्या वह... मनोरंजन था?

"एक चिकित्सक के रूप में, मेरे लिए इसमें स्पष्ट रुचि तो है ही, इसके अलावा भी बहुत कुछ है।"
मुझे व्यक्तिगत स्तर पर ये चित्र बहुत प्रभावशाली लगे। ये बेहद सशक्त कलाकृतियाँ हैं।
एलिसिया की निगाहें झुक गईं। उसकी रुचि कम हो रही थी।
मैंने तुरंत दृढ़ता दिखाई। “कुछ बातें मुझे खटक गईं। आपकी माँ की कार दुर्घटना की पेंटिंग में कुछ कमी सी लग रही है।”
तुम। तुमने खुद को कार में नहीं रंगा, जबकि तुम वहां मौजूद थे।
कोई प्रतिक्रिया नहीं।
मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या इसका मतलब यह है कि आप इसे केवल उसकी त्रासदी के रूप में ही देख सकते हैं?
क्या उसकी मौत की वजह से? लेकिन असल में उस कार में एक छोटी बच्ची भी थी। एक ऐसी बच्ची जिसके दुख को न तो समझा गया और न ही पूरी तरह महसूस किया गया।
एलिसिया ने अपना सिर हिलाया। उसने मेरी तरफ देखा। उसकी नज़र चुनौती भरी थी। मुझे कुछ समझ आ रहा था। मैं आगे बढ़ता रहा।
“मैंने जीन-फेलिक्स से आपके आत्मचित्र, एल्सेस्टिस के बारे में पूछा। इसके अर्थ के बारे में।”
और उन्होंने मुझे इसे देखने का सुझाव दिया।
मैंने 'एल्सेस्टिस' नाटक की प्रति निकाली। मैंने उसे कॉफी टेबल पर सरका दिया।
एलिसिया ने उस पर एक नजर डाली।
“‘वह बोलती क्यों नहीं?’ यही सवाल एडमेटस पूछता है। और मैं तुमसे भी यही सवाल पूछ रहा हूँ, एलिसिया। ऐसी क्या बात है जो तुम कह नहीं सकती? तुम्हें चुप क्यों रहना पड़ता है?”
एलिसिया ने अपनी आँखें बंद कर लीं—जैसे मैं गायब हो गया। बातचीत खत्म। मैंने उसके पीछे दीवार पर लगी घड़ी पर नज़र डाली। सत्र लगभग समाप्त हो चुका था। बस कुछ ही मिनट बचे थे।

मैंने अब तक अपना तुरुप का पत्ता बचाकर रखा था। और मैंने उसे खेल दिया, इस घबराहट के साथ कि मुझे उम्मीद थी कि यह किसी को दिखाई नहीं देगी।
“जीन-फेलिक्स ने एक सुझाव दिया। मुझे वह काफी अच्छा लगा। उनका मानना था कि आपको पेंटिंग करने की अनुमति दी जानी चाहिए। क्या आप ऐसा चाहेंगे? हम आपको एक निजी स्थान, कैनवस, ब्रश और पेंट उपलब्ध करा सकते हैं।”
एलिसिया ने पलकें झपकाईं। उसकी आँखें खुल गईं। मानो उनमें रोशनी जगमगा उठी हो। वे एक बच्चे की आँखें थीं, बड़ी-बड़ी और मासूम, जिनमें तिरस्कार या संदेह का कोई भाव नहीं था। उसके चेहरे पर रंगत लौट आई। अचानक वह अद्भुत रूप से जीवंत प्रतीत हुई।
मैंने प्रोफेसर डायोमेडेस से बात की—वे सहमत हो गए हैं, और रोवेना भी... तो अब यह पूरी तरह से आप पर निर्भर है, एलिसिया। आपका क्या विचार है?
मैंने इंतजार किया। वह मुझे घूरती रही।
और फिर, आखिरकार, मुझे वह मिल गया जो मैं चाहता था—एक निश्चित प्रतिक्रिया —एक संकेत जिसने मुझे बताया कि मैं सही रास्ते पर हूं।
यह एक छोटा सा आंदोलन था। सचमुच बहुत छोटा। फिर भी, इसने बहुत कुछ कह दिया।
एलिसिया मुस्कुराई।
अध्याय छब्बीस
ग्रोव में कैंटीन सबसे गर्म कमरा था। दीवारों के किनारे गर्म हवा देने वाले रेडिएटर लगे थे, और उनके सबसे पास वाली बेंचें हमेशा सबसे पहले भर जाती थीं।
दोपहर का भोजन सबसे व्यस्त समय था, जिसमें कर्मचारी और मरीज साथ-साथ भोजन कर रहे थे। भोजन करने वालों की ऊंची आवाजों से शोरगुल मच रहा था, जो सभी मरीजों के एक ही स्थान पर होने से उपजे असहज उत्साह से उत्पन्न हो रहा था।
दो हंसमुख कैरेबियाई महिलाएँ हंसती-हंसती बातें करते हुए सॉसेज और मैश, फिश-एंड-चिप्स और चिकन करी परोस रही थीं, जिनकी खुशबू स्वाद से कहीं बेहतर थी। मैंने तीनों विकल्पों में से कम बुरा समझकर फिश-एंड-चिप्स को चुना। बैठने के लिए जाते समय मेरी मुलाकात एलिफ से हुई। वह अपने साथियों से घिरी हुई थी, जो देखने

में काफी चिड़चिड़े लग रहे थे। जब मैं उसकी मेज के पास से गुज़रा, तो वह खाने की शिकायत कर रही थी।
“मैं ये घटिया चीज़ नहीं खाऊंगी।” उसने अपनी ट्रे एक तरफ धकेल दी।
उसके दाहिनी ओर बैठी मरीज ने ट्रे को अपनी ओर खींचा और उसे एलिफ के हाथों से लेने की तैयारी कर रही थी, लेकिन एलिफ ने उसके सिर पर जोरदार प्रहार कर दिया।
“लालची कुतिया!” एलिफ चिल्लाई। “इसे वापस दे।”
इससे मेज पर बैठे सभी लोग जोर से हंस पड़े। एलिफ ने अपनी प्लेट पीछे खींची और नए सिरे से आनंद लेते हुए अपना भोजन करने लगी।
मैंने देखा कि एलिसिया कमरे के पीछे अकेली बैठी थी। वह एक दुबली-पतली चिड़िया की तरह मछली के एक छोटे से टुकड़े को कुरेद रही थी, उसे प्लेट में इधर-उधर घुमा रही थी लेकिन अपने मुंह तक नहीं ले जा रही थी। मेरा मन हुआ कि मैं उसके साथ बैठ जाऊं, लेकिन मैंने ऐसा न करने का फैसला किया। शायद अगर उसने ऊपर देखा होता और मुझसे नज़रें मिलाई होतीं, तो मैं उसके पास चला जाता। लेकिन उसने अपनी नज़रें नीचे रखी हुई थीं, मानो वह अपने आस-पास के माहौल और लोगों को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश कर रही हो। मुझे लगा कि बीच में आना निजता का उल्लंघन होगा, इसलिए मैं दूसरी मेज के एक कोने में, मरीजों से कुछ दूरी पर बैठ गया और अपनी फिश-एंड-चिप्स खाने लगा। मैंने बस एक निवाला उस गीली मछली का खाया, जो बेस्वाद थी, दोबारा गर्म की गई थी लेकिन फिर भी ठंडी थी।
केंद्र। मैं एलिफ के आकलन से सहमत थी। मैं इसे कूड़ेदान में फेंकने ही वाली थी कि तभी कोई मेरे सामने आकर बैठ गया।
मुझे आश्चर्य हुआ कि वह ईसाई था।
“सब ठीक है?” उसने सिर हिलाते हुए कहा।
"हां तुम?"
क्रिश्चियन ने कोई जवाब नहीं दिया। वह दृढ़ निश्चय के साथ सख्त चावल और करी को खा रहा था। "मैंने एलिसिया को पेंटिंग करवाने की तुम्हारी योजना के बारे में सुना है," उसने निवाले लेते हुए कहा।
मुझे लगता है कि खबरें बहुत तेजी से फैलती हैं।

“यहाँ तो ऐसा ही होता है। आपका विचार क्या है?”
मैं हिचकिचाया। "हाँ, ऐसा ही था। मुझे लगता है कि यह उसके लिए अच्छा होगा।"
क्रिश्चियन ने मुझे संदेह भरी नजरों से देखा। "सावधान रहना, दोस्त।"
"चेतावनी देने के लिए धन्यवाद। लेकिन यह कुछ हद तक अनावश्यक है।"
मैं बस इतना कह रहा हूँ। बॉर्डरलाइन पर्सनैलिटी डिसऑर्डर वाले लोग आकर्षक होते हैं। यहाँ यही हो रहा है।
मुझे नहीं लगता कि आप इसे पूरी तरह से समझ पाए हैं।
"वह मुझे बहकाने वाली नहीं है, क्रिश्चियन।"
वह हँसा। "मुझे लगता है कि उसने पहले ही ऐसा कर लिया है। तुम उसे वही दे रहे हो जो वह चाहती है।"
मैं उसे वही दे रहा हूँ जिसकी उसे ज़रूरत है। इसमें फर्क है।
“आपको कैसे पता कि उसे क्या चाहिए? आप उससे जरूरत से ज्यादा जुड़ाव महसूस कर रहे हैं।”
यह तो स्पष्ट है। मरीज तो वह है, आप नहीं।
मैंने अपनी घड़ी की ओर देखा और अपने गुस्से को छिपाने की कोशिश की। "मुझे जाना होगा।"
मैं खड़ा हुआ और अपनी ट्रे उठाई। मैं जाने लगा, लेकिन क्रिश्चियन ने मुझे पीछे से आवाज़ दी, “वो तुम पर पलटवार करेगी, थियो। बस इंतज़ार करो। ये मत कहना कि मैंने तुम्हें चेतावनी नहीं दी थी।”
मुझे गुस्सा आया। और वह गुस्सा पूरे दिन मेरे साथ बना रहा।

*

After work, I left the Grove and went to the small shop at the end of the road, to buy a pack of cigarettes. I put a cigarette in my mouth, lit it, and inhaled deeply, barely conscious of my actions. I was thinking about what Christian had said, going over it in my mind while the cars sped past.

मैंने उसे यह कहते हुए सुना कि बॉर्डरलाइन पर्सनैलिटी डिसऑर्डर वाले लोग आकर्षक होते हैं।
क्या यह सच था? क्या यही वजह थी कि मैं इतना नाराज़ था? क्या एलिसिया ने मुझे भावनात्मक रूप से बहकाया था? क्रिश्चियन को तो ऐसा ही लग रहा था, और मुझे भी पूरा यकीन था कि डायोमेडेस को भी यही शक था। क्या वे सही थे?
अपने अंतरात्मा की आवाज़ सुनकर मुझे पूरा विश्वास हो गया कि इसका उत्तर 'नहीं' है। मैं एलिसिया की मदद करना चाहती थी, हाँ—लेकिन मैं उसके प्रति निष्पक्ष रहने, सतर्क रहने, सावधानी से आगे बढ़ने और अपनी सीमाएं स्पष्ट रखने में भी पूरी तरह सक्षम थी।
मैं गलत था। बहुत देर हो चुकी थी, हालांकि मैं यह बात खुद से भी स्वीकार नहीं करूंगा।

*

I called Jean-Felix at the gallery. I asked what had happened to Alicia's art materials—her paints, brushes, and canvases. "Is it all in storage?"

थोड़ी देर रुकने के बाद उसने जवाब दिया, "नहीं, असल में... उसका सारा सामान मेरे पास है।"
"आप कर?"
"हां। मैंने मुकदमे के बाद उसका स्टूडियो खाली कर दिया और जो कुछ भी रखने लायक था, सब कुछ ले लिया—उसके सभी प्रारंभिक रेखाचित्र, नोटबुक, उसका ईज़ल, उसके ऑयल पेंटिंग।"
मैं ये सब उसके लिए संभाल कर रख रहा हूँ।
"तुम कितने अच्छे हो।"
तो आप मेरी सलाह मान रहे हैं? एलिसिया को पेंटिंग करने दे रहे हैं?
"हां। लेकिन इससे कुछ नतीजा निकलेगा या नहीं, यह तो समय ही बताएगा।"
"ओह, कुछ न कुछ तो जरूर निकलेगा। आप देखेंगे। मेरी बस इतनी सी गुजारिश है कि मुझे तैयार पेंटिंग देखने दीजिए।"

उसकी आवाज़ में एक अजीब सी भूख झलक रही थी। मुझे अचानक उस स्टोर रूम में एलिसिया की तस्वीरों की याद आ गई, जो कंबल में लिपटी हुई थीं, जैसे बच्चे। क्या वह सचमुच उन्हें एलिसिया के लिए सुरक्षित रख रहा था? या इसलिए कि वह उन्हें जाने नहीं देना चाहता था?
मैंने कहा, "क्या आप सामान को ग्रोव तक पहुँचाने में कोई आपत्ति नहीं करेंगे?"
"क्या यह सुविधाजनक होगा?"
“ओह, मैं—” एक पल के लिए वह हिचकिचाया। मैंने उसकी घबराहट महसूस की। मैंने खुद को उसकी मदद के लिए आगे आते हुए पाया। "या अगर यह आसान हो तो मैं उन्हें आपसे ले आऊं?"
"हां, हां, शायद यह बेहतर होगा।"
जीन-फेलिक्स को यहाँ आने से डर लग रहा था, एलिसिया को देखने से डर लग रहा था। क्यों?
उन दोनों के बीच क्या रिश्ता था?
वह किस बात का सामना नहीं करना चाहता था?
अध्याय सत्ताईस
मैंने पूछा, "तुम अपने दोस्त से किस समय मिल रहे हो?"
“सात बजे। रिहर्सल के बाद।” कैथी ने मुझे अपना कॉफी कप पकड़ाते हुए कहा, “अगर तुम्हें उसका नाम याद न रहे, थियो, तो उसका नाम निकोल है।”
“ठीक है।” मैंने जम्हाई ली।
कैथी ने मुझे घूरकर देखा। "तुम्हें पता है, यह थोड़ा अपमानजनक है कि तुम्हें याद नहीं है—वह मेरी सबसे अच्छी दोस्तों में से एक है। तुम तो उसकी विदाई पार्टी में गए थे, हद हो गई!"
“बेशक मुझे निकोल याद है। मैं बस उसका नाम भूल गया था, बस इतना ही।”
कैथी ने आंखें घुमाईं। "जो भी हो। नशेड़ी। मैं नहाने जा रही हूँ।" वह रसोई से बाहर चली गई।
मैंने मन ही मन मुस्कुरा दिया।
07:00 बजे।

*

At a quarter to seven I walked along the river toward Kathy's rehearsal space on the South Bank.

मैं रिहर्सल रूम के सामने वाली बेंच पर इस तरह बैठ गया कि मेरा मुंह प्रवेश द्वार से दूसरी तरफ था, ताकि अगर कैथी जल्दी चली जाए तो वह मुझे तुरंत न देख सके।
मैं बार-बार अपना सिर घुमाकर पीछे मुड़कर देखता था। लेकिन दरवाजा हठपूर्वक बंद ही रहता था।
फिर, सात बजकर पाँच मिनट पर, दरवाजा खुला। कलाकारों के इमारत से बाहर निकलते समय जीवंत बातचीत और हंसी की आवाजें सुनाई दीं। वे दो या तीन के समूहों में बाहर निकले। कैथी का कोई अता-पता नहीं था।
मैंने पाँच मिनट इंतज़ार किया। दस मिनट। लोगों का आना-जाना रुक गया, और कोई और बाहर नहीं आया। ज़रूर मैंने उसे देखा ही नहीं। मेरे आने से पहले ही वह चली गई होगी। या फिर वह यहाँ थी ही नहीं?
क्या वह रिहर्सल के बारे में झूठ बोल रही थी?
मैं उठा और प्रवेश द्वार की ओर चल पड़ा। मुझे पक्का करना था। अगर वह अभी भी अंदर होती और मुझे देख लेती, तो क्या होता? यहाँ आने का मैं क्या बहाना बना पाता? क्या मैं उसे सरप्राइज देने आया होता? हाँ—मैं कहता कि मैं उसे और "निकोल" को डिनर पर ले जाने आया हूँ। कैथी घबरा जाती और कोई झूठा बहाना बनाकर बात टाल देती—"निकोल बीमार है, निकोल ने आने का प्लान कैंसिल कर दिया है"—और इस तरह कैथी और मैं एक असहज शाम अकेले बिताते। एक और शाम लंबी खामोशी में गुज़रती।
मैं प्रवेश द्वार पर पहुंचा। मैं हिचकिचाया, जंग लगे हरे हैंडल को पकड़ा और दरवाजा धक्का देकर खोल दिया। मैं अंदर चला गया।
कंक्रीट की दीवारों वाले अंदरूनी हिस्से में नमी की गंध आ रही थी। कैथी का रिहर्सल रूम चौथी मंजिल पर था—वह हर दिन सीढ़ियाँ चढ़ने की शिकायत करती थी—इसलिए मैं मुख्य केंद्रीय सीढ़ी से ऊपर गया। मैं पहली मंजिल पर पहुँच गया और

दूसरी मंजिल की ओर बढ़ने ही वाला था कि मुझे ऊपर वाली मंजिल से सीढ़ियों पर एक आवाज़ सुनाई दी। यह कैथी थी। वह फोन पर बात कर रही थी।
मुझे पता है, मुझे माफ़ करना। जल्द ही मिलते हैं। ज़्यादा देर नहीं लगेगी... ठीक है, ठीक है, अलविदा।
मैं जम गया—हम बस कुछ ही सेकंड में एक-दूसरे से टकराने वाले थे। मैं सीढ़ियों से नीचे भागा और कोने में छिप गया। कैथी मुझे देखे बिना ही आगे निकल गई। वह दरवाजे से बाहर चली गई। दरवाजा ज़ोर से बंद हो गया।
मैं जल्दी से उसके पीछे भागा और इमारत से बाहर निकल गया। कैथी पुल की ओर तेज़ी से बढ़ती जा रही थी। मैं भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ा, यात्रियों और पर्यटकों के बीच से रास्ता बनाते हुए, उससे दूरी बनाए रखने की कोशिश कर रहा था ताकि वह मेरी नज़रों से ओझल न हो।
वह पुल पार करके सीढ़ियों से उतरकर एम्बैंकमेंट ट्यूब स्टेशन में चली गई। मैं उसके पीछे-पीछे गया, यह सोचकर कि वह कौन सी लाइन लेगी।
लेकिन वह मेट्रो में नहीं चढ़ी। इसके बजाय वह सीधे स्टेशन से होते हुए दूसरी तरफ निकल गई। वह चैरिंग क्रॉस रोड की ओर चलती रही। मैं उसके पीछे-पीछे चला। ट्रैफिक सिग्नल पर मैं उससे कुछ कदम पीछे खड़ा हो गया। हमने चैरिंग क्रॉस रोड पार किया और सोहो की ओर चल पड़े। मैं संकरी गलियों में उसके पीछे-पीछे चलता रहा। उसने दाएँ मुड़ा, बाएँ, फिर दाएँ। फिर वह अचानक रुक गई। वह लेक्सिंगटन स्ट्रीट के कोने पर खड़ी हो गई और इंतज़ार करने लगी।
तो यही मिलने की जगह थी। एक अच्छी जगह—बीच में, चहल-पहल वाली, और गुमनाम।
मैं हिचकिचाया और कोने पर स्थित एक पब में घुस गया। मैंने खुद को वहाँ स्थापित किया।
बार। वहां से सड़क के उस पार कैथी की खिड़की से साफ नजारा दिखाई देता था।
ऊबे हुए से, बेतरतीब दाढ़ी वाले बारटेंडर ने मेरी तरफ देखा। "हाँ?"
एक पाइंट। गिनीज।
उसने जम्हाई ली और बार के दूसरी तरफ जाकर एक गिलास बियर डालने लगा। मैंने कैथी पर नज़र रखी। मुझे पूरा यकीन था कि अगर वो इस तरफ देखेगी भी तो

खिड़की से मुझे नहीं देख पाएगी। एक पल के लिए कैथी ने मेरी तरफ देखा—सीधे मेरी तरफ। मेरा दिल एक पल के लिए रुक गया—मुझे यकीन था कि उसने मुझे देख लिया है—लेकिन नहीं, उसकी नज़र कहीं और चली गई।

मिनट बीतते गए, और कैथी अब भी इंतज़ार कर रही थी। मैं भी। मैं धीरे-धीरे अपना गिलास पीता रहा और देखता रहा। वह चाहे जो भी हो, बहुत समय ले रहा था। कैथी को यह पसंद नहीं आएगा। कैथी को इंतज़ार करना बिल्कुल पसंद नहीं था—भले ही वह हमेशा देर से आती थी। मैं देख सकता था कि वह चिढ़ रही थी, भौंहें चढ़ा रही थी और घड़ी देख रही थी।

एक आदमी सड़क पार करके उसकी ओर बढ़ा। सड़क पार करने में उसे कुछ ही सेकंड लगे, और मैंने उसे परख लिया। वह अच्छी कद-काठी का था। उसके कंधे तक लंबे सुनहरे बाल थे, जिससे मुझे हैरानी हुई, क्योंकि कैथी हमेशा कहती थी कि उसे सिर्फ काले बालों और मेरी जैसी आंखों वाले पुरुष ही पसंद हैं—या शायद यह भी झूठ था।

लेकिन वह आदमी उसके बगल से सीधे निकल गया। उसने उसकी तरफ देखा तक नहीं। थोड़ी देर में वह नज़रों से ओझल हो गया। तो वह वह आदमी नहीं था। मुझे लगा कि शायद कैथी और मैं दोनों एक ही बात सोच रहे थे—क्या उसे धोखा दिया गया था?

फिर उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। वह मुस्कुराई। उसने सड़क के उस पार किसी ओझल व्यक्ति को हाथ हिलाया। आखिरकार, मैंने सोचा। यह वही है। मैंने गर्दन उठाकर देखा—

मुझे आश्चर्य हुआ जब लगभग तीस साल की एक आकर्षक दिखने वाली गोरी महिला, जिसने बेहद छोटी स्कर्ट और बहुत ऊँची हील पहनी हुई थी, लड़खड़ाते हुए कैथी के पास आई। मैंने उसे तुरंत पहचान लिया। निकोल। दोनों ने एक-दूसरे को गले लगाया और चूमा। वे बातें करते और हंसते हुए, हाथ में हाथ डाले, चली गईं। तो कैथी ने निकोल से मिलने के बारे में झूठ नहीं बोला था।

मैंने सदमे के साथ अपनी भावनाओं को व्यक्त किया—मुझे बहुत राहत मिलनी चाहिए थी कि कैथी सच कह रही थी। मुझे आभारी होना चाहिए था।

लेकिन मैं नहीं था।

मुझे निराशा हुई।

अध्याय अट्ठाईस

“तो, एलिसिया, तुम्हारा क्या ख्याल है? खूब रोशनी है, है ना? तुम्हें पसंद है ना?”

यूरी ने गर्व से अपना नया स्टूडियो दिखाया। सुनहरी मछली के कटोरे के बगल वाले खाली कमरे पर कब्ज़ा करने का विचार उसी का था, और मैं सहमत हो गई—रोवेना के कला-चिकित्सा कक्ष को साझा करने से यह बेहतर विचार लगा, क्योंकि उसकी स्पष्ट नापसंदगी को देखते हुए, इससे मुश्किलें पैदा हो सकती थीं। अब एलिसिया के पास अपना एक कमरा होगा, जहाँ वह जब चाहे बिना किसी रुकावट के पेंटिंग कर सकेगी।

एलिसिया ने चारों ओर देखा। उसका ईज़ल खोलकर खिड़की के पास लगा दिया गया था, जहाँ सबसे ज़्यादा रोशनी आती थी। उसकी तेल रंगों की पेटी मेज़ पर खुली पड़ी थी। जैसे ही एलिसिया मेज़ के पास पहुँची, यूरी ने मुझे आँख मारी। वह इस पेंटिंग योजना को लेकर बहुत उत्साहित था, और मैं उसके समर्थन के लिए आभारी थी।

यूरो एक मददगार सहयोगी था, क्योंकि वह कर्मचारियों में सबसे लोकप्रिय था; कम से कम मरीजों के बीच तो था ही। उसने मुझे सिर हिलाकर कहा, "शुभकामनाएं, अब तुम अकेले हो।" फिर वह चला गया। उसके पीछे दरवाजा ज़ोर से बंद हो गया। लेकिन एलिसिया को शायद वह आवाज़ सुनाई नहीं दी।

वह अपनी ही दुनिया में खोई हुई थी, मेज पर झुकी हुई, हल्की मुस्कान के साथ अपने रंगों को निहार रही थी। उसने सेबल ब्रश उठाए और उन्हें ऐसे सहलाया जैसे वे नाज़ुक फूल हों। उसने तेल के तीन ट्यूब निकाले—प्रशियन ब्लू, इंडियन येलो, कैडमियम रेड—और उन्हें कतार में लगा दिया। फिर उसने ईज़ल पर रखे खाली कैनवास की ओर देखा। वह उस पर विचार करती रही। वह काफी देर तक वहीं खड़ी रही। मानो वह किसी समाधि या तन्मयता में चली गई हो—उसका मन कहीं और था, मानो किसी तरह इस कोठरी से निकलकर बहुत दूर चला गया हो—और अंत में वह उस समाधि से बाहर निकली और मेज की ओर मुड़ गई। उसने पैलेट पर थोड़ा सफेद रंग निचोड़ा और उसमें थोड़ा सा लाल रंग मिलाया। उसे रंगों को ब्रश से मिलाना पड़ा: उसके पैलेट नाइफ तुरंत खराब हो गए थे।

स्पष्ट कारणों से स्टेफ़नी द्वारा ग्रोव में पहुंचते ही उन्हें जब्त कर लिया गया था।

एलिसिया ने ब्रश को कैनवास पर उठाया और एक निशान बनाया। सफेद जगह के बीचोंबीच लाल रंग की एक अकेली लकीर।
उसने एक पल के लिए सोचा। फिर एक और निशान बनाया। एक और।
कुछ ही देर में वह बिना रुके या हिचकिचाए, पूरी सहजता से पेंटिंग करने लगी। एलिसिया और कैनवास के बीच मानो एक नृत्य चल रहा था। मैं वहीं खड़ा होकर उसके द्वारा बनाई जा रही आकृतियों को देख रहा था।
मैं चुप रहा, साँस लेने की भी हिम्मत नहीं कर पा रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी जंगली जानवर को जन्म देते हुए देख रहा हूँ। हालाँकि एलिसिया मेरी मौजूदगी से वाकिफ थी, पर उसे कोई आपत्ति नहीं थी। पेंटिंग करते हुए वह कभी-कभी ऊपर देखती और मेरी तरफ़ नज़र डालती।
ऐसा लग रहा था मानो वह मुझे परख रही हो।

*

Over the next few days the painting slowly took shape, roughly at first, sketchily, but with increasing clarity—then it emerged from the canvas with a burst of pristine photo-realistic brilliance.

एलिसिया ने एक लाल ईंटों की इमारत, एक अस्पताल, की पेंटिंग बनाई थी—स्पष्ट रूप से वही ग्रोव। वह इमारत आग की चपेट में थी, जलकर राख हो रही थी। आग से बचने वाली सीढ़ी पर दो आकृतियाँ दिखाई दे रही थीं। एक पुरुष और एक महिला आग से भाग रहे थे। महिला स्पष्ट रूप से एलिसिया थी, उसके लाल बाल आग की लपटों के रंग जैसे ही थे। मैंने पुरुष को पहचान लिया, वह मैं ही था। मैं एलिसिया को अपनी बाहों में उठाए हुए था, उसे ऊपर उठाए हुए था जबकि आग मेरे टखनों को छू रही थी।
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मुझे एलिसिया को बचाते हुए दिखाया गया है या फिर उसे आग में फेंकने की तैयारी करते हुए।
अध्याय उनतीस

“यह तो सरासर बेतुका है। मैं सालों से यहाँ आ रहा हूँ और पहले कभी किसी ने मुझे आने से पहले फोन करने के लिए नहीं कहा। मैं सारा दिन इंतज़ार नहीं कर सकता। मैं बहुत व्यस्त व्यक्ति हूँ।”

रिसेप्शन डेस्क के पास खड़ी एक अमेरिकी महिला स्टेफ़नी क्लार्क से ज़ोर-ज़ोर से शिकायत कर रही थी। मैंने बार्बी हेलमैन को अखबारों और टीवी पर हत्या की खबरों से पहचाना। वह हैम्पस्टेड में एलिसिया की पड़ोसी थी, जिसने गैब्रियल की हत्या वाली रात गोलियों की आवाज़ सुनी थी और पुलिस को फोन किया था।

बार्बी कैलिफ़ोर्निया की रहने वाली एक गोरी महिला थी, जिसकी उम्र साठ के दशक के मध्य में थी, शायद उससे भी अधिक। वह शनेल नंबर 5 परफ्यूम में डूबी रहती थी, और उसने काफी प्लास्टिक सर्जरी करवाई थी।

उसका नाम उस पर खूब जंचता था—वह एक चौंकी हुई बार्बी गुड़िया जैसी दिखती थी। जाहिर है, उसे अपनी मनचाही चीजें पाने की आदत थी—इसीलिए जब उसे पता चला कि किसी मरीज से मिलने के लिए अपॉइंटमेंट लेना पड़ेगा, तो उसने रिसेप्शन डेस्क पर जोर-जोर से विरोध जताया।

“मुझे मैनेजर से बात करने दीजिए,” उसने बड़े ही सलीके से कहा, मानो यह कोई रेस्तरां हो, न कि मनोरोग विभाग। “यह तो कतई बेतुका है। वह कहाँ है?”

“मैं मैनेजर हूं, मिसेज हेलमैन,” स्टेफनी ने कहा। “हम पहले भी मिल चुके हैं।”

यह पहली बार था जब मुझे स्टेफ़नी के प्रति थोड़ी सी भी सहानुभूति महसूस हुई; बार्बी के लगातार हमलों का शिकार होने के कारण उस पर दया न आना मुश्किल था। बार्बी बहुत बोलती थी और बहुत तेज़ी से बोलती थी, बिना रुके, अपने प्रतिद्वंद्वी को जवाब देने का समय नहीं देती थी।

“अच्छा, तुमने तो पहले कभी अपॉइंटमेंट लेने के बारे में कुछ नहीं बताया था।” बार्बी ज़ोर से हँसी। “भगवान के लिए, आइवी में टेबल मिलना ज़्यादा आसान है।”

मैं उनके साथ शामिल हो गया और स्टेफ़नी को मासूमियत से देखकर मुस्कुराया। "क्या मैं मदद कर सकता हूँ?"

स्टेफ़नी ने मुझे चिढ़ भरी नज़रों से देखा। "नहीं, धन्यवाद। मैं खुद संभाल लूँगी।"

बार्बी ने मुझे बड़ी दिलचस्पी से ऊपर से नीचे तक देखा। "तुम कौन हो?"

“मैं थियो फैबर हूं। एलिसिया का थेरेपिस्ट।”

“अरे, सच में?” बार्बी ने कहा। “कितना दिलचस्प है।” वार्ड मैनेजरों के विपरीत, थेरेपिस्टों से उसका जुड़ाव साफ तौर पर दिखता था। उसके बाद से, वह पूरी तरह से मेरी बात मानने लगी और स्टेफ़नी के साथ ऐसे पेश आने लगी जैसे वह महज़ एक रिसेप्शनिस्ट हो, जिसे देखकर मुझे थोड़ी शरारती हंसी भी आई।
“अगर हम मिले नहीं हैं तो आप ज़रूर नई होंगी?” मैंने जवाब देने के लिए मुंह खोला, लेकिन बार्बी ने पहले ही बोल दिया। “मैं आमतौर पर हर दो महीने में आती हूँ। इस बार थोड़ा ज़्यादा समय हो गया, क्योंकि मैं अपने परिवार से मिलने अमेरिका गई हुई थी, लेकिन वापस आते ही मैंने सोचा कि मुझे अपनी एलिसिया से मिलना ही चाहिए—मुझे उसकी बहुत याद आती है।”
एलिसिया मेरी सबसे अच्छी दोस्त थी, आप जानते हैं।
नहीं, मुझे नहीं पता था।
“हाँ, बिल्कुल। जब वे हमारे पड़ोस में रहने आए, तो मैंने एलिसिया और गैब्रियल को पड़ोस में बसने में बहुत मदद की। एलिसिया और मैं बहुत करीब आ गए थे। हम एक-दूसरे से हर बात साझा करते थे।”
"अच्छा ऐसा है।"
यूरो रिसेप्शन में आया और मैंने उसे अपने पास बुलाया।
मैंने कहा, "श्रीमती हेलमैन एलिसिया से मिलने आई हैं।"
“मुझे बार्बी कहो, हनी। यूरी और मैं पुराने दोस्त हैं।” उसने यूरी को आँख मारी।
“हमारा रिश्ता बहुत पुराना है। समस्या वो नहीं है। समस्या तो ये महिला है—”
बार्बी ने स्टेफ़नी को नज़रअंदाज़ करते हुए इशारा किया, जिसे आखिरकार बोलने का मौका मिला। "माफ़ कीजिए, श्रीमती हेलमैन, लेकिन पिछले साल जब आप यहाँ आई थीं, तब से अस्पताल की नीति बदल गई है। हमने अपनी सुरक्षा कड़ी कर दी है। अब से आपको पहले फ़ोन करना होगा—"
हे भगवान, क्या हमें फिर से इस सब से गुज़रना पड़ेगा? अगर मुझे इसे एक बार और सुनना पड़ा तो मैं चीख पड़ूँगी। मानो ज़िंदगी पहले से ही इतनी मुश्किल न हो।
स्टेफ़नी ने हार मान ली, और यूरी ने बार्बी को अपने साथ ले लिया। मैं भी उसके पीछे-पीछे चला गया।

हम आगंतुकों के कमरे में दाखिल हुए और एलिसिया का इंतज़ार करने लगे। उस सादे कमरे में एक मेज़ और दो कुर्सियाँ थीं, कोई खिड़की नहीं थी, और एक फीकी पीली फ्लोरोसेंट लाइट जल रही थी। मैं पीछे खड़ा होकर एलिसिया को दूसरे दरवाजे से दो नर्सों के साथ आते हुए देखता रहा। बार्बी को देखकर एलिसिया ने कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया नहीं दी।
वह मेज के पास गई और बिना ऊपर देखे बैठ गई।
बार्बी कुछ ज्यादा ही भावुक लग रही थी। "एलिसिया, मेरी प्यारी, मुझे तुम्हारी बहुत याद आई।"
तुम इतनी पतली हो गई हो, जैसे तुम्हारे शरीर में कुछ बचा ही नहीं। मुझे बहुत जलन हो रही है। कैसी हो?
उस भयानक औरत ने तो मुझे तुमसे मिलने ही नहीं दिया। यह एक बुरे सपने जैसा रहा है—"
बार्बी लगातार निरर्थक बातें करती रही, अपनी मां और भाई से मिलने सैन डिएगो की यात्रा का ब्योरा देती रही। एलिसिया बस चुपचाप बैठी रही, उसका चेहरा भावहीन था, कुछ भी ज़ाहिर नहीं कर रहा था। लगभग बीस मिनट बाद, आखिरकार उसका यह एकालाप समाप्त हुआ। एलिसिया को यूरी अपने साथ ले गया, उतनी ही बेरुखी से जितनी बेरुखी से वह आई थी।
जब बार्बी ग्रोव से निकल रही थी, तब मैं उसके पास गया। "क्या मैं आपसे कुछ बात कर सकता हूँ?"
बार्बी ने सिर हिलाया, मानो उसे इसकी उम्मीद थी। "तुम मुझसे एलिसिया के बारे में बात करना चाहते हो? आखिरकार किसी ने मुझसे कुछ सवाल पूछे। पुलिस कुछ भी सुनना नहीं चाहती थी—जो कि अजीब बात थी, क्योंकि एलिसिया मुझसे हर बात शेयर करती थी, तुम्हें पता है? हर बात।"
उसने मुझे ऐसी बातें बताईं जिन पर आपको यकीन नहीं होगा।" बार्बी ने यह बात पूरे जोर से कही और मुझे एक शरारती मुस्कान दी। वह जानती थी कि उसने मेरी दिलचस्पी जगा दी है।
"जैसे कि?"

बार्बी ने रहस्यमयी मुस्कान के साथ अपना फर कोट पहना। "खैर, मैं यहाँ इस बारे में बात नहीं कर सकती। वैसे भी मुझे बहुत देर हो चुकी है। आज शाम को आ जाना—लगभग छह बजे?"

मुझे बार्बी के घर जाकर उससे मिलने का ख्याल बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था—मैं दिल से उम्मीद कर रही थी कि डायोमेडेस को पता न चले। लेकिन मेरे पास कोई चारा नहीं था—मैं जानना चाहती थी कि उसे क्या पता है। मैंने जबरदस्ती मुस्कुराते हुए पूछा, "तुम्हारा पता क्या है?"

अध्याय तीस

बार्बी का घर हैम्पस्टेड हीथ के सामने सड़क के उस पार स्थित कई घरों में से एक था, जहाँ से एक तालाब का नजारा दिखता था। यह बड़ा था और अपनी जगह को देखते हुए, शायद इसकी कीमत बहुत ज्यादा थी।

गैब्रियल और एलिसिया के पड़ोस में आने से पहले बार्बी कई सालों तक हैम्पस्टेड में रह चुकी थी। उसके पूर्व पति एक इन्वेस्टमेंट बैंकर थे और तलाक होने तक लंदन और न्यूयॉर्क के बीच आना-जाना करते थे। तलाक के बाद उन्हें अपनी पत्नी से भी छोटी, गोरी औरत मिल गई और घर बार्बी को मिल गया। "तो सब खुश थे," उसने हंसते हुए कहा। "खासकर मैं।"

बार्बी का घर हल्के नीले रंग से रंगा हुआ था, जबकि गली के बाकी घर सफेद रंग के थे। उसके सामने का बगीचा छोटे-छोटे पेड़ों और गमलों में लगे पौधों से सजा हुआ था।

बार्बी ने दरवाजे पर मेरा स्वागत किया। "हाय, हनी। मुझे खुशी है कि तुम समय पर आ गई हो।"

यह एक अच्छा संकेत है। इधर आइए।

वह मुझे गलियारे से होते हुए बैठक कक्ष तक ले गई और पूरे रास्ते बोलती रही। मैं उसकी बातों को थोड़ा-थोड़ा सुन रही थी और अपने आस-पास के माहौल को निहार रही थी। घर में ग्रीनहाउस जैसी गंध आ रही थी; यह पौधों और फूलों से भरा हुआ था—गुलाब, लिली, ऑर्किड, जिधर भी देखो। दीवारों पर पेंटिंग, दर्पण और फ्रेम की हुई तस्वीरें ठसाठस भरी हुई थीं; छोटी-छोटी मूर्तियाँ, फूलदान और अन्य कलाकृतियाँ मेजों और अलमारियों पर जगह के लिए होड़ कर रही थीं। सभी महंगी वस्तुएँ थीं,

लेकिन इस तरह ठसाठस भरी होने के कारण वे कबाड़ जैसी लग रही थीं। बार्बी के मन की छवि के रूप में देखा जाए तो, यह कम से कम एक अव्यवस्थित आंतरिक दुनिया का संकेत देता है। इससे मुझे अराजकता, अव्यवस्था, लालच—अतृप्त भूख का ख्याल आया। मैंने सोचा कि उसका बचपन कैसा रहा होगा।

मैंने जगह बनाने के लिए कुछ झालरदार कुशन हटाए और उस असुविधाजनक बड़े सोफे पर बैठ गई। बार्बी ने एक पेय कैबिनेट खोला और उसमें से कुछ गिलास निकाले।

“अब, आप क्या पीना चाहेंगे? मुझे तो लगता है आप व्हिस्की पीने वाले हैं। मेरे पूर्व पति एक दिन में एक गैलन व्हिस्की पीते थे। उनका कहना था कि मुझे बर्दाश्त करने के लिए उन्हें इसकी ज़रूरत पड़ती थी।” वह हँसी। “मैं तो वाइन की पारखी हूँ। मैंने फ्रांस के बोर्डो क्षेत्र में एक कोर्स किया था। मेरी सूंघने की क्षमता बहुत अच्छी है।”

वह सांस लेने के लिए रुकी और मैंने इस मौके का फायदा उठाकर बोलना शुरू कर दिया। "मुझे व्हिस्की पसंद नहीं है। मैं ज्यादा शराब नहीं पीती... बस कभी-कभार एक-आध बीयर पी लेती हूँ।"

“ओह।” बार्बी थोड़ी नाराज़ लग रही थी। “मेरे पास बीयर नहीं है।”

“ठीक है, कोई बात नहीं, मुझे पेय की जरूरत नहीं है—”

“हाँ, मुझे पता है, प्रिये। आज का दिन कुछ ऐसा ही रहा है।”

बार्बी ने अपने लिए एक बड़ा गिलास रेड वाइन डाली और आरामकुर्सी पर ऐसे बैठ गई जैसे किसी अच्छी बातचीत के लिए तैयार हो रही हो। "मैं पूरी तरह से तुम्हारी हूँ।" उसने शरारती मुस्कान के साथ कहा। "तुम क्या जानना चाहते हो?"

"अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो, मेरे कुछ सवाल हैं।"

"ठीक है, शुरू करो।"

"क्या एलिसिया ने कभी डॉक्टर से मिलने का जिक्र किया था?"

“एक डॉक्टर?” बार्बी इस सवाल से हैरान लग रही थी। “आपका मतलब मनोचिकित्सक से है?”

नहीं, मेरा मतलब एक मेडिकल डॉक्टर से है।

“ओह, वैसे तो मुझे नहीं पता...” बार्बी हिचकिचाई। “दरअसल, अब जब तुमने इसका ज़िक्र किया है, तो हाँ, वो किसी से मिल रही थी...”

क्या आप नाम जानते हैं?
“नहीं, मुझे याद नहीं—लेकिन मुझे याद है मैंने उसे अपने डॉक्टर, डॉ. मोंक्स के बारे में बताया था, जो वाकई कमाल के हैं। वो बस आपको देखकर ही समझ जाते हैं कि आपको क्या परेशानी है, और आपको बताते हैं कि क्या खाना चाहिए। कमाल है।”
इसके बाद बार्बी के डॉक्टर ने खान-पान की ज़रूरतों के बारे में लंबा और जटिल स्पष्टीकरण दिया, और मुझसे जल्द ही उनसे मिलने जाने का आग्रह किया। मेरा सब्र टूटने लगा था। उसे वापस पटरी पर लाने में काफी मशक्कत करनी पड़ी।
"क्या आपने हत्या वाले दिन एलिसिया को देखा था?"
“हाँ, घटना से बस कुछ घंटे पहले।” बार्बी ने थोड़ी देर रुककर वाइन का एक और घूंट लिया। “मैं उससे मिलने गई थी। मैं अक्सर उसके घर कॉफी पीने जाती थी—वैसे, वह कॉफी पीती थी, मैं आमतौर पर कुछ और लेकर जाती थी। हम घंटों बातें करते थे। हम बहुत करीब थे, आप जानते हैं।”
तो तुम यही कहती रहती हो, मैंने सोचा। लेकिन मैंने तो पहले ही बार्बी को लगभग पूरी तरह से आत्ममुग्ध मान लिया था; मुझे शक था कि वह अपनी ज़रूरतों के अलावा दूसरों से जुड़ भी नहीं सकती। मैंने कल्पना की कि एलिसिया इन मुलाकातों के दौरान ज़्यादा बात नहीं करती होगी।
"उस दोपहर उसकी मानसिक स्थिति का आप कैसे वर्णन करेंगे?"
बार्बी ने कंधे उचकाते हुए कहा, "वह ठीक लग रही थी। उसे बस हल्का सा सिरदर्द था, बस इतना ही।"
“क्या वह बिल्कुल भी घबराई हुई नहीं थी?”
"क्या उसे ऐसा होना चाहिए?"
खैर, मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए...
बार्बी ने मुझे हैरानी भरी नजरों से देखा। "तुम्हें नहीं लगता कि वह दोषी थी, है ना?" वह हंस पड़ी। "ओह, प्यारे—मुझे लगा था कि तुम इससे ज्यादा समझदार हो।"
मुझे खेद है कि मैं ऐसा नहीं कर सकता—
“एलिसिया में किसी को जान से मारने की हिम्मत बिल्कुल नहीं थी। वह हत्यारा नहीं थी।”
मेरी बात मानिए, वह निर्दोष है। मुझे सौ प्रतिशत यकीन है।

"मुझे आश्चर्य है कि आप सबूतों के बावजूद इतने सकारात्मक कैसे हो सकते हैं—"
मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है। मेरे पास अपने सबूत हैं।
"आप कर?"
“ज़रूर। लेकिन पहले... मुझे यह जानना होगा कि क्या मैं तुम पर भरोसा कर सकती हूँ।” बार्बी की आँखें उत्सुकता से मेरी आँखों में कुछ ढूँढ़ रही थीं।
मैंने उसकी निगाहों में स्थिर रूप से देखा।
फिर उसने अचानक ही यह बात कह दी: "देखिए, वहाँ एक आदमी था।"
“एक आदमी?”
“हां। देख रहा हूँ।”
मैं थोड़ा चौंक गया और तुरंत सतर्क हो गया। "देखने का क्या मतलब है?"
“बिल्कुल वही जो मैंने कहा। देखते रहे। मैंने पुलिस को बताया, लेकिन उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी। उन्होंने गैब्रियल के शव और बंदूक के साथ एलिसिया को देखते ही अपना मन बना लिया था। वे कोई और कहानी सुनना ही नहीं चाहते थे।”
“कौन सी कहानी—ठीक-ठीक?”
मैं तुम्हें बताता हूँ। और तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं तुम्हें आज रात यहाँ क्यों बुलाना चाहता था।
इसे सुनना फायदेमंद होगा।
मैंने सोचा, बस आगे बढ़ो। लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा और हौसला बढ़ाने वाली मुस्कान दी।
उसने अपना गिलास फिर से भर लिया। “यह हत्या से कुछ हफ्ते पहले शुरू हुआ था। मैं एलिसिया से मिलने गई, हमने साथ में ड्रिंक ली, और मैंने देखा कि वह हमेशा की तरह शांत नहीं थी—मैंने पूछा, ‘क्या तुम ठीक हो?’ और वह रोने लगी। मैंने उसे पहले कभी ऐसे नहीं देखा था। वह फूट-फूट कर रो रही थी। वह आम तौर पर बहुत शांत रहती थी, तुम्हें पता है... लेकिन उस दिन वह बिल्कुल टूट गई थी। वह बहुत परेशान थी, जान, सचमुच बहुत परेशान।”
उसने क्या कहा?
“उसने मुझसे पूछा कि क्या मैंने आस-पड़ोस में किसी को घूमते हुए देखा है। उसने सड़क पर एक आदमी को उसे घूरते हुए देखा था।” बार्बी हिचकिचाई। “मैं तुम्हें

दिखाती हूँ। उसने मुझे यह मैसेज भेजा है।”
बार्बी के सजे-धजे हाथ फोन की ओर बढ़े और उसने उसमें अपनी तस्वीरें खोजना शुरू किया। फिर उसने फोन मेरे चेहरे की ओर बढ़ा दिया।
मैंने उसे घूर कर देखा। मुझे यह समझने में एक पल लगा कि मैं क्या देख रहा हूँ। एक पेड़ की धुंधली तस्वीर।
"यह क्या है?"
"यह किस तरह का दिखता है?"
"एक वृक्ष?"
पेड़ के पीछे।
पेड़ के पीछे एक धूसर धब्बा था—यह एक लैम्पपोस्ट से लेकर एक बड़े कुत्ते तक कुछ भी हो सकता था।
“यह एक आदमी है। आप उसकी आकृति को काफी स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।”
मुझे यकीन नहीं हुआ, लेकिन मैंने बहस नहीं की। मैं नहीं चाहती थी कि बार्बी का ध्यान भटक जाए। "चलते रहो।"
"इतना ही।"
"लेकिन हुआ क्या?"
बार्बी ने कंधे उचकाते हुए कहा, "कुछ नहीं। मैंने एलिसिया से पुलिस को बताने को कहा था—और तभी मुझे पता चला कि उसने अपने पति को भी इसके बारे में नहीं बताया था।"
“उसने गैब्रियल को नहीं बताया? क्यों नहीं बताया?”
मुझे नहीं पता। मुझे ऐसा लगा कि वह उतना सहानुभूतिशील व्यक्ति नहीं था।
खैर, मैंने उससे पुलिस को बताने पर ज़ोर दिया। मतलब, मेरा क्या? मेरी सुरक्षा का क्या? बाहर कोई संदिग्ध घूम रहा है—और मैं अकेली रहती हूँ, आप जानते ही हैं ना? मैं रात को सोते समय सुरक्षित महसूस करना चाहता हूँ।
"क्या एलिसिया ने आपकी सलाह मानी?"
बार्बी ने सिर हिलाया। "नहीं, उसने ऐसा नहीं किया। कुछ दिनों बाद, उसने मुझे बताया कि उसने अपने पति से इस बारे में बात की थी और उसने फैसला किया कि वह यह सब कल्पना कर रही थी।"

उसने मुझसे कहा कि इसे भूल जाओ—और यह भी कहा कि अगर मैं गैब्रियल से मिलूँ तो उसे इसके बारे में न बताऊँ। मुझे नहीं पता, मुझे तो सब कुछ गड़बड़ लग रहा था। और उसने मुझसे फोटो डिलीट करने को कहा। मैंने नहीं किया—जब उसे गिरफ्तार किया गया तो मैंने वह फोटो पुलिस को दिखा दी। लेकिन उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी। उन्होंने पहले ही अपना फैसला कर लिया था। लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि इसमें और भी कुछ है। क्या मैं आपको बता सकती हूँ...?" उसने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए नाटकीय अंदाज़ में कहा, "एलिसिया डरी हुई थी।"

बार्बी ने नाटकीय अंदाज़ में कुछ पल रुककर अपनी वाइन खत्म की। फिर उसने बोतल की ओर हाथ बढ़ाया और पूछा, "क्या आप सच में पीना नहीं चाहेंगे?"

मैंने दोबारा मना कर दिया, उन्हें धन्यवाद कहा, बहाने बनाए और चला गया। वहाँ और रुकने का कोई मतलब नहीं था; उन्हें मुझे और कुछ नहीं बताना था। मेरे पास सोचने के लिए बहुत कुछ था।

जब मैं उसके घर से निकली तो अंधेरा हो चुका था। मैं बगल वाले घर के बाहर एक पल के लिए रुकी—एलिसिया का पुराना घर। मुकदमे के तुरंत बाद वह घर बिक गया था और वहाँ एक जापानी जोड़ा रहता था। बार्बी के अनुसार, वे लोग बिल्कुल भी मिलनसार नहीं थे। बार्बी ने कई बार उनसे दोस्ती करने की कोशिश की थी, लेकिन उन्होंने हर बार मना कर दिया था। मैं सोच रही थी कि अगर बार्बी मेरे बगल वाले घर में रहती और बार-बार मेरे घर आती रहती तो मुझे कैसा लगता। मैं यह भी सोच रही थी कि एलिसिया उसके बारे में क्या सोचती होगी।

मैंने सिगरेट जलाई और जो कुछ सुना था उसके बारे में सोचने लगा। तो एलिसिया ने बार्बी को बताया था कि उस पर नज़र रखी जा रही है। पुलिस ने शायद सोचा होगा कि बार्बी ध्यान खींचने के लिए झूठ बोल रही है, इसीलिए उन्होंने उसकी कहानी को नज़रअंदाज़ कर दिया। मुझे आश्चर्य नहीं हुआ; बार्बी की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं किया जा सकता था।

इसका मतलब यह था कि एलिसिया इतनी डर गई थी कि उसने बार्बी से मदद की गुहार लगाई थी।

और उसके बाद गैब्रियल से। फिर क्या हुआ? क्या एलिसिया ने किसी और से अपने मन की बात कही? मुझे जानना ज़रूरी था।

मुझे अचानक अपने बचपन की छवि याद आ गई। एक छोटा लड़का जो चिंता से फटने वाला था, अपने सारे डर, सारा दर्द अपने अंदर दबाए बैठा था; बेचैन, डरा हुआ, लगातार इधर-उधर घूमता रहता था; अपने पागल पिता के डर के साथ अकेला। किसी को बताने वाला कोई नहीं। कोई सुनने वाला नहीं। एलिसिया ने भी शायद ऐसी ही बेबसी महसूस की होगी, वरना वह कभी बार्बी से अपने मन की बात नहीं कहती।
मैं कांप उठा—और मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई मेरी पीठ पर नजर रख रहा हो। मैंने पीछे मुड़कर देखा—पर वहां कोई नहीं था। मैं अकेला था। सड़क सुनसान, अंधेरी और खामोश थी।

अध्याय इकत्तीस

अगली सुबह मैं द ग्रोव पहुंचा, मेरा इरादा एलिसिया से बार्बी द्वारा बताई गई बातों के बारे में बात करने का था। लेकिन जैसे ही मैं रिसेप्शन में दाखिल हुआ, मुझे एक महिला के चीखने की आवाज सुनाई दी। दर्द भरी चीखें गलियारों में गूंज रही थीं।
“ये क्या है? क्या चल रहा है?”
सुरक्षा गार्ड ने मेरे सवालों को अनसुना कर दिया। वह मेरे पास से दौड़कर वार्ड में चला गया।
मैंने उसका पीछा किया। जैसे-जैसे मैं पास पहुँचता गया, चीखें तेज़ होती गईं। मुझे उम्मीद थी कि एलिसिया ठीक होगी, वह इसमें शामिल नहीं होगी—लेकिन किसी तरह मुझे एक बुरा एहसास हो रहा था।
मैं कोने से मुड़ा। गोल्डफिश बाउल के बाहर नर्सों, मरीजों और सुरक्षाकर्मियों की भीड़ जमा थी। डायोमेडेस फोन पर पैरामेडिक्स को बुला रहा था। उसकी कमीज़ खून से सनी थी—लेकिन वह उसका अपना खून नहीं था। दो नर्सें ज़मीन पर घुटनों के बल बैठी एक चीखती हुई महिला की मदद कर रही थीं। वह महिला एलिसिया नहीं थी।
वह एलिफ थी।
एलिफ़ दर्द से कराह रही थी, चीख रही थी और अपने खून से लथपथ चेहरे को पकड़े हुए थी। उसकी आँख से खून बह रहा था। उसकी आँख के सॉकेट से कुछ बाहर निकला हुआ था, आँख की पुतली में धँसा हुआ था। वह किसी छड़ी जैसा दिख रहा

था। लेकिन वह छड़ी नहीं थी। मैं तुरंत समझ गया कि वह क्या था। वह एक पेंटब्रश था।
एलिसिया दीवार के पास खड़ी थी, जिसे यूरी और एक अन्य नर्स ने पकड़ रखा था। लेकिन शारीरिक रूप से पकड़ने की कोई ज़रूरत नहीं थी। वह पूरी तरह शांत, स्थिर, एक मूर्ति की तरह थी। उसके चेहरे के भाव मुझे पेंटिंग - एल्सेस्टिस - की याद दिला रहे थे। भावहीन, खाली। निर्मल। वह सीधे मेरी ओर देख रही थी।
पहली बार मुझे डर लगा।
अध्याय बत्तीस
“एलिफ कैसी है?” मैं मछली के कटोरे में इंतजार कर रहा था और यूरी के आपातकालीन वार्ड से लौटने पर मैंने उससे बात की।
“स्थिर।” उसने गहरी साँस ली। “यही सबसे अच्छी बात है जिसकी हम उम्मीद कर सकते हैं।”
मैं उससे मिलना चाहूंगा।
“एलिफ? या एलिसिया?”
“पहले एलिफ।”
यूरी ने सिर हिलाया। "वे चाहते हैं कि वह आज रात आराम करे, लेकिन सुबह मैं तुम्हें उसके पास ले जाऊँगा।"
“क्या हुआ? क्या आप वहाँ थे? मेरा अनुमान है कि एलिसिया को उकसाया गया था?”
यूरी ने फिर से आह भरी और कंधे उचका दिए। "मुझे नहीं पता। एलिफ एलिसिया के स्टूडियो के बाहर घूम रही थी। ज़रूर कोई झगड़ा हुआ होगा।"
मुझे बिलकुल भी अंदाजा नहीं है कि वे किस बात पर लड़ रहे थे।
“क्या तुम्हारे पास चाबी है? चलो जाकर देखते हैं। देखते हैं कि कोई सुराग मिलता है या नहीं।”
हम मछली के कटोरे से बाहर निकले और एलिसिया के स्टूडियो की ओर चल पड़े। यूरी ने दरवाजा खोला और लाइट जला दी।
और वहीं, ईज़ल पर, हमें वह जवाब मिल गया जिसकी हम तलाश कर रहे थे।
एलिसिया की पेंटिंग—जिसमें जंगल को आग की लपटों में जलते हुए दिखाया गया था —को विकृत कर दिया गया था। उस पर लाल रंग से भद्दे ढंग से 'SLUT' शब्द लिख

दिया गया था।
मैंने सिर हिलाया। "अच्छा, अब बात समझ में आ गई।"
"तुम्हें लगता है कि एलिफ ने ऐसा किया?"
और कौन?

*

I found Elif in the emergency ward. She was propped up in bed, attached to a drip. Padded bandages were wrapped around her head, covering one eye.

वह परेशान, क्रोधित और दर्द में थी।
मुझे देखते ही उसने कहा, "दफा हो जाओ।"
मैंने बिस्तर के पास एक कुर्सी खींची और बैठ गया। मैंने विनम्रतापूर्वक और सम्मानपूर्वक बात की।
“मुझे माफ कर दो, एलिफ। सचमुच बहुत खेद है। यह बहुत ही भयानक घटना है। एक त्रासदी।”
बिल्कुल सही कहा। अब दफा हो जाओ और मुझे अकेला छोड़ दो।
"क्या हुआ जवाब दो।"
“उस कमीनी ने मेरी आंख निकाल दी। यही हुआ था।”
“उसने ऐसा क्यों किया? क्या तुम्हारी उससे लड़ाई हुई थी?”
“क्या तुम मुझ पर दोष मढ़ने की कोशिश कर रहे हो? मैंने कुछ नहीं किया!”
मैं आपको दोष देने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। मैं बस यह समझना चाहता हूँ कि उसने ऐसा क्यों किया।
"क्योंकि उसका दिमाग बिल्कुल खराब है, इसीलिए।"
“इसका पेंटिंग से कोई लेना-देना नहीं था? मैंने देखा तुमने क्या किया। तुमने इसे बिगाड़ दिया, है ना?”
एलिफ ने अपनी बची हुई आंख को सिकोड़ा, फिर उसे मजबूती से बंद कर लिया।

“एलिफ, तुमने गलत किया। इससे उसकी प्रतिक्रिया जायज़ नहीं ठहरती, लेकिन फिर भी।”

—”

“उसने ऐसा इसलिए नहीं किया।” एलिफ ने अपनी आंख खोली और मुझे तिरस्कार भरी निगाहों से देखा।
मैं हिचकिचाया। "नहीं? तो फिर उसने तुम पर हमला क्यों किया?"
एलिफ के होंठों पर एक हल्की सी मुस्कान आ गई। उसने कुछ नहीं कहा। हम कुछ पल वैसे ही बैठे रहे। मैं हार मानने ही वाला था, तभी उसने बोलना शुरू किया।
मैंने उसे सच बता दिया।
"क्या सच्चाई?"
"कि तुम उसके प्रति नरम हो।"
मैं इससे चौंक गया।
इससे पहले कि मैं कुछ जवाब दे पाती, एलिफ ने ठंडे और तिरस्कारपूर्ण लहजे में बोलना जारी रखा।
“तुम उससे प्यार करते हो, यार। मैंने उसे बता दिया था। ‘वह तुमसे प्यार करता है,’ मैंने कहा। ‘वह तुमसे प्यार करता है’— थियो और एलिसिया एक पेड़ पर बैठे हैं। थियो और एलिसिया चुंबन कर रहे हैं।”
—’” एलिफ़ ज़ोर से हंसने लगी, एक भयानक चीखती हुई हंसी। मैं बाकी का मंजर खुद ही समझ गया।
एलिसिया गुस्से में पागल हो गई, गोल-गोल घूमी, अपना ब्रश उठाया... और उसे एलिफ की आंख में घुसा दिया।
“वो बिल्कुल पागल है।” एलिफ की आवाज़ में आँसू थे, वो बहुत दुखी और थकी हुई लग रही थी। “वो मनोरोगी है।”
एलिफ के पट्टी बंधे घाव को देखकर, मैं यह सोचने से खुद को रोक नहीं पाया कि क्या वह सही थी।
अध्याय तैंतीस

बैठक डायोमेडेस के कार्यालय में हुई, लेकिन स्टेफ़नी क्लार्क ने शुरू से ही कमान संभाल ली। अब जब हम मनोविज्ञान की अमूर्त दुनिया से निकलकर स्वास्थ्य और सुरक्षा के ठोस क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे, तो हम उनके अधिकार क्षेत्र में थे और वह यह बात जानती थीं। डायोमेडेस की खामोशी से यह स्पष्ट था कि वह भी यह बात जानते थे।

स्टेफ़नी हाथ बांधे खड़ी थी; उसकी उत्तेजना साफ़ झलक रही थी। मैंने सोचा, उसे इसमें बहुत मज़ा आ रहा है—नियंत्रण अपने हाथ में लेना और आख़िरी फ़ैसला लेना। उसे हम सब पर कितना गुस्सा आया होगा, जिसने उसकी बात नहीं मानी, उसके खिलाफ़ एकजुट हो गया। अब वह अपने बदले का आनंद ले रही थी। उसने कहा, “कल सुबह जो हुआ वो बिल्कुल बर्दाश्त से बाहर था। मैंने एलिसिया को पेंटिंग करने की इजाज़त देने के खिलाफ़ चेतावनी दी थी, लेकिन मेरी बात नहीं मानी गई। व्यक्तिगत विशेषाधिकार हमेशा ईर्ष्या और नाराज़गी को जन्म देते हैं। मुझे पता था कि ऐसा कुछ होगा। अब से सुरक्षा सबसे पहले होनी चाहिए।”

मैंने कहा, "क्या इसीलिए एलिसिया को एकांतवास में रखा गया है? सुरक्षा के हित में?"

“वह खुद के लिए और दूसरों के लिए खतरा है। उसने एलिफ पर हमला किया—वह उसे मार भी सकती थी।”

उसे उकसाया गया था।

डायोमेडेस ने अपना सिर हिलाया और थके हुए स्वर में बोला, "मुझे नहीं लगता कि किसी भी स्तर की उकसाहट इस तरह के हमले को जायज़ ठहरा सकती है।"

स्टेफ़नी ने सिर हिलाया। "बिल्कुल सही।"

“यह एक अलग-थलग घटना थी,” मैंने कहा। “एलिसिया को एकांतवास में रखना सिर्फ क्रूरता ही नहीं, बर्बरता है।” मैंने ब्रॉडमूर में ऐसे मरीज़ देखे थे जिन्हें एकांतवास में रखा जाता था, एक छोटे से, बिना खिड़की वाले कमरे में बंद कर दिया जाता था, जिसमें बिस्तर रखने की भी मुश्किल से जगह होती थी, बाकी फर्नीचर की तो बात ही छोड़िए। घंटों या दिनों तक एकांतवास में रहना किसी को भी पागल कर सकता है, ऐसे व्यक्ति की तो बात ही छोड़िए जो पहले से ही मानसिक रूप से अस्थिर हो।

स्टेफ़नी ने कंधे उचकाते हुए कहा, "क्लिनिक की प्रबंधक होने के नाते, मुझे कोई भी आवश्यक कार्रवाई करने का अधिकार है। मैंने क्रिश्चियन से मार्गदर्शन मांगा था, और

वह मुझसे सहमत थे।"
मुझे पूरा यकीन है कि उसने ऐसा किया होगा।
कमरे के दूसरी ओर, क्रिश्चियन ने मेरी ओर देखकर घमंडी मुस्कान दी। मुझे यह भी महसूस हो रहा था कि डायोमेडेस मुझे देख रहा है। मैं जानती थी कि वे क्या सोच रहे हैं—मैं इसे व्यक्तिगत रूप से ले रही थी, और अपनी भावनाओं को ज़ाहिर कर रही थी; लेकिन मुझे परवाह नहीं थी।
“उसे जेल में बंद करना समाधान नहीं है। हमें उससे लगातार बात करते रहना होगा। हमें उसे समझने की कोशिश करनी होगी।”
“मैं अच्छी तरह समझता हूँ,” क्रिश्चियन ने भारी और उपदेशात्मक लहजे में कहा, मानो वह किसी मंदबुद्धि बच्चे से बात कर रहा हो। “तुम हो, थियो।”
"मुझे?"
“और कौन? तुम ही तो हो जो सब कुछ बिगाड़ रहे हो।”
“किस अर्थ में, उत्तेजित करना?”
“यह सच है, है ना? आपने उनकी दवा की खुराक कम करने के लिए अभियान चलाया था—”
मैं हँस पड़ा। “यह कोई चुनावी अभियान नहीं था। यह तो एक हस्तक्षेप था। उसे बुरी तरह से नशा कराया गया था। वह एक ज़ोंबी जैसी थी।”
"बकवास।"
मैंने डायोमेडेस की ओर मुड़कर कहा, "क्या तुम सचमुच मुझ पर इसका आरोप लगाने की कोशिश कर रहे हो? क्या यही हो रहा है?"
डायोमेडेस ने अपना सिर हिलाया लेकिन मेरी ओर देखने से बचते हुए कहा, "बिल्कुल नहीं।"
फिर भी, यह स्पष्ट है कि उनकी थेरेपी ने उन्हें अस्थिर कर दिया है। इसने उन्हें बहुत जल्दी और बहुत अधिक चुनौतियों का सामना करवाया है। मुझे लगता है कि इसी वजह से यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी।
मैं इसे स्वीकार नहीं करता।
“शायद आप इसे ठीक से देख पाने के लिए बहुत करीब हैं।” डायोमेडेस ने हार मानकर हाथ ऊपर उठाए और आह भरी। “हम अब और गलतियाँ नहीं कर सकते,

खासकर ऐसे नाजुक मोड़ पर—जैसा कि आप जानते हैं, यूनिट का भविष्य दांव पर लगा है।”
हमारी हर गलती ट्रस्ट को हमें बंद करने का एक और बहाना दे देती है।"
मुझे उसकी निराशावादी सोच और थकी हुई स्वीकृति पर बहुत गुस्सा आया। "इसका समाधान उसे दवा देकर बेहोश करना और चाबी फेंक देना नहीं है। हम जेलर नहीं हैं।"
“मैं सहमत हूँ।” इंदिरा ने मुझे मुस्कुराते हुए कहा, “समस्या यह है कि हम जोखिम लेने से इतना कतराने लगे हैं कि हम कोई भी दवा लेने के बजाय ज़रूरत से ज़्यादा दवा लेना पसंद करते हैं।”
संभावनाएं। हमें इस पागलपन के साथ बैठने, इसे थामने के लिए पर्याप्त साहसी होना होगा।
इसे बंद करने की कोशिश करने के बजाय।"
क्रिश्चियन ने आंखें घुमाईं और आपत्ति जताने ही वाला था कि डायोमेडेस ने पहले ही सिर हिलाते हुए कहा, “अब बहुत देर हो चुकी है। यह मेरी गलती है। एलिसिया मनोचिकित्सा के लिए उपयुक्त उम्मीदवार नहीं है। मुझे ऐसा होने ही नहीं देना चाहिए था।”
डायोमेडेस ने कहा कि वह खुद को दोषी मानता है, लेकिन मैं जानती थी कि असल में वह मुझे दोषी ठहरा रहा था। सबकी निगाहें मुझ पर टिकी थीं: डायोमेडेस की निराश भौंहें; क्रिश्चियन की व्यंग्यात्मक, विजयी निगाहें; स्टेफ़नी की शत्रुतापूर्ण घूरती निगाहें; इंदिरा की चिंता भरी नज़रें।
मैंने ऐसा जताने की कोशिश की जैसे मैं गिड़गिड़ा रही हूँ। “अगर ज़रूरी हो तो एलिसिया को पेंटिंग करने से रोक दीजिए। लेकिन उसकी थेरेपी मत रोकिए—यही उससे जुड़ने का एकमात्र तरीका है।”
डायोमेडेस ने अपना सिर हिलाया। "मुझे शक होने लगा है कि वह पहुंच से बाहर है।"
मुझे थोड़ा और समय दीजिए—”
“नहीं।” डायोमेडेस की आवाज़ में मौजूद निर्णायक भाव ने मुझे बता दिया कि आगे बहस करना व्यर्थ था। बात खत्म हो चुकी थी।
अध्याय चौंतीस

डायोमेडेस का बर्फबारी का अनुमान गलत था। बर्फबारी नहीं हुई; बल्कि उस दोपहर भारी बारिश शुरू हो गई। गरज और बिजली की कड़क के साथ भयंकर तूफान आ गया।

मैं थेरेपी रूम में एलिसिया का इंतजार कर रही थी और खिड़की पर बारिश की तेज बौछारें देख रही थी।

मैं थका हुआ और उदास महसूस कर रहा था। सब कुछ समय की बर्बादी थी। एलिसिया की मदद करने से पहले ही मैंने उसे खो दिया था; अब मैं उसकी मदद कभी नहीं कर पाऊंगा।

दरवाजे पर दस्तक हुई। यूरी एलिसिया को थेरेपी रूम में ले गया। उसकी हालत मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा खराब थी। वह पीली, राख जैसी, भूतिया लग रही थी। वह लड़खड़ाकर चल रही थी और उसका दाहिना पैर लगातार कांप रहा था। धिक्कार है इस क्रिश्चियन पर, मैंने सोचा—

वह नशे में धुत होकर होश में नहीं थी।

यूरो के जाने के बाद काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। एलिसिया ने मेरी तरफ नहीं देखा।

आखिरकार मैंने बोलना शुरू किया। जोर से और स्पष्ट रूप से, ताकि वह समझ सके।

“एलिसिया, मुझे खेद है कि तुम्हें एकांतवास में रखा गया। मुझे खेद है कि तुम्हें उस सब से गुजरना पड़ा।”

कोई प्रतिक्रिया नहीं।

मैं हिचकिचाई। “मुझे खेद है कि एलिफ के साथ आपने जो किया, उसकी वजह से हमारी थेरेपी बंद कर दी गई है। यह मेरा फैसला नहीं था—बिल्कुल भी नहीं—लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकती। मैं आपको यह मौका देना चाहती हूँ कि आप जो हुआ उसके बारे में बात करें, एलिफ पर अपने हमले का स्पष्टीकरण दें। और उस पश्चाताप को व्यक्त करें जो मुझे यकीन है कि आप महसूस कर रहे हैं।”

एलिसिया ने कुछ नहीं कहा। मुझे यकीन नहीं था कि मेरे शब्द उसके दवा के नशे में धुंधलेपन को भेद पा रहे थे।

मैं आपको अपने मन की बात बताता हूँ। सच कहूँ तो मुझे गुस्सा आ रहा है। मुझे गुस्सा आ रहा है कि हमारा काम शुरू होने से पहले ही खत्म हो रहा है—और मुझे गुस्सा आ रहा है कि आपने और ज़्यादा कोशिश नहीं की।
एलिसिया ने अपना सिर हिलाया। उसकी आँखें मेरी आँखों में टकटकी लगाए हुए थीं।
“मुझे पता है, तुम डरे हुए हो। मैंने तुम्हारी मदद करने की कोशिश की है—लेकिन तुम मुझे करने नहीं दे रहे। और अब मुझे नहीं पता कि क्या करूं।”
मैं हार मानकर चुप हो गया।
फिर एलिसिया ने कुछ ऐसा किया जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा।
उसने कांपते हुए हाथ से मेरी ओर हाथ बढ़ाया। उसके हाथ में कुछ था—चमड़े की जिल्द वाली एक छोटी सी नोटबुक।
“यह क्या है?”
कोई जवाब नहीं मिला। वह उसे पकड़े रही।
मैंने उत्सुकता से उसे देखा। "क्या आप चाहते हैं कि मैं इसे ले जाऊं?"
कोई जवाब नहीं मिला। मैं हिचकिचाई और धीरे से उसकी कांपती उंगलियों से नोटबुक ले ली। मैंने उसे खोला और पन्ने पलटे। यह एक हस्तलिखित डायरी थी, एक जर्नल।
एलिसिया की डायरी।
लिखावट को देखकर ऐसा लगता है कि इसे अव्यवस्थित मन की स्थिति में लिखा गया था, खासकर अंतिम पृष्ठों पर, जहाँ लिखावट मुश्किल से पढ़ी जा सकती थी—पृष्ठ पर अलग-अलग कोणों पर लिखे गए विभिन्न अनुच्छेदों को जोड़ने वाले तीर, कुछ पृष्ठों पर फैली हुई रेखाचित्र और चित्रकारी, और फूलों का लता में बदलना, जो लिखे हुए को ढककर उसे लगभग अपठनीय बना देता था।
मैंने उत्सुकता से एलिसिया की ओर देखा। "आप मुझसे इसका क्या करवाना चाहती हैं?"
यह सवाल बिलकुल अनावश्यक था। एलिसिया क्या चाहती थी, यह स्पष्ट था।
वह चाहती थी कि मैं इसे पढ़ूं।
भाग तीन

मुझे बेवजह कोई अजीब बात नहीं ढूंढनी चाहिए। मुझे लगता है डायरी लिखने का यही खतरा है: आप हर बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं, आप हर छोटी-छोटी बात पर नजर रखते हैं, और आप लगातार सच को तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं।
— जीन-पॉल सार्त्र

हालांकि मैं स्वभाव से ईमानदार नहीं हूं, लेकिन कभी-कभी संयोगवश ईमानदार हो जाता हूं।
—विलियम शेक्सपियर, द विंटर्स टेल
एलिसिया बेरेंसन की डायरी
8 अगस्त
आज कुछ अजीब घटना घटी।
मैं रसोई में कॉफी बना रही थी, खिड़की से बाहर देख रही थी—बिना देखे देख रही थी—दिमाग में खोई हुई थी—और तभी मेरी नज़र बाहर किसी पर पड़ी। एक आदमी पर। मेरी नज़र उस पर इसलिए पड़ी क्योंकि वह एकदम स्थिर खड़ा था—
एक मूर्ति की तरह—और घर की ओर मुख किए हुए। वह सड़क के दूसरी ओर, पार्क के प्रवेश द्वार के पास खड़ा था। वह एक पेड़ की छाया में खड़ा था। वह लंबा और सुगठित था। धूप का चश्मा और टोपी पहने होने के कारण मैं उसके चेहरे के हाव-भाव ठीक से नहीं देख पा रहा था।
खिड़की से मुझे पता नहीं चल रहा था कि वो मुझे देख पा रहा है या नहीं, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे वो सीधे मेरी तरफ घूर रहा हो। मुझे ये अजीब लगा—मैं तो सड़क के उस पार बस स्टॉप पर लोगों को इंतज़ार करते देखने की आदी हूँ, लेकिन वो बस का इंतज़ार नहीं कर रहा था। वो घर को घूर रहा था।
मुझे एहसास हुआ कि मैं वहाँ कई मिनट से खड़ी थी, इसलिए मैंने खुद को खिड़की से दूर जाने के लिए मजबूर किया। मैं स्टूडियो में गई। मैंने पेंटिंग करने की कोशिश की, लेकिन ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही थी। मेरा दिमाग बार-बार उस आदमी के बारे में सोच रहा था। मैंने खुद को बीस मिनट का और समय देने का फैसला किया, फिर मैं रसोई में जाकर देखूंगी। अगर वह अभी भी वहाँ था, तो क्या? वह कुछ गलत नहीं कर रहा था। हो सकता है वह कोई चोर हो, घर का जायजा ले रहा हो—शायद यही मेरा पहला विचार था—लेकिन वह वहाँ इस तरह, इतनी स्पष्ट रूप से क्यों खड़ा था?

शायद वह यहाँ बसने की सोच रहा हो? शायद वह गली के आखिर में बिकने वाला घर खरीद रहा हो?
इससे इसका कारण स्पष्ट हो सकता है।
लेकिन जब मैं रसोई में वापस गई और खिड़की से बाहर झाँका, तो वह जा चुका था। सड़क सुनसान थी।
मुझे लगता है कि मुझे कभी पता नहीं चलेगा कि वह क्या कर रहा था। कितना अजीब है।
10 अगस्त
मैं कल रात जीन-फेलिक्स के साथ नाटक देखने गया था। गैब्रियल नहीं चाहता था कि मैं जाऊं, लेकिन मैं फिर भी चला गया। मुझे डर लग रहा था, लेकिन मैंने सोचा कि अगर मैं जीन-फेलिक्स की बात मानकर उसके साथ चला जाऊं, तो शायद यह सब खत्म हो जाएगा। कम से कम मुझे यही उम्मीद थी।
हमने सुबह जल्दी मिलने और साथ में ड्रिंक करने का प्लान बनाया—यह उसका सुझाव था—और जब मैं वहाँ पहुँचा, तो अभी भी उजाला था। सूरज आसमान में नीचे था, जिससे नदी का रंग खून जैसा लाल हो गया था।
जीन-फेलिक्स नेशनल स्टेडियम के बाहर मेरा इंतज़ार कर रहा था। मैंने उसे उससे पहले देख लिया, जब उसने मुझे देखा। वह भीड़ को घूर रहा था और उसका चेहरा गुस्से से लाल था। अगर मुझे ज़रा भी शक था कि मैं सही कर रही हूँ या नहीं, तो उसका गुस्से वाला चेहरा देखकर वह दूर हो गया। मैं एक भयानक डर से भर गई और लगभग मुड़कर भागने ही वाली थी। लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कर पाती, उसने मुड़कर मुझे देख लिया। उसने हाथ हिलाया और मैं उसके पास चली गई। मैंने मुस्कुराने का नाटक किया और उसने भी।
“मुझे बहुत खुशी है कि तुम आ गए,” जीन-फेलिक्स ने कहा। “मुझे चिंता थी कि तुम नहीं आओगे। चलें अंदर आकर कुछ पीते हैं?”
हमने लॉबी में बैठकर ड्रिंक ली। सच कहूँ तो माहौल थोड़ा अजीब था। हम दोनों में से किसी ने भी उस दिन की बात नहीं की। हमने बहुत सारी बेमतलब की बातें कीं, या यूँ कहें कि जीन-फेलिक्स बोलता रहा और मैं सुनता रहा। आखिर में हमने दो-तीन ड्रिंक

पी लीं। मैंने कुछ खाया नहीं था और मुझे थोड़ा नशा सा महसूस हो रहा था; मुझे लगता है कि शायद जीन-फेलिक्स का यही इरादा था।
वह मुझे बातचीत में शामिल करने की पूरी कोशिश कर रहा था, लेकिन बातचीत बनावटी थी—ऐसा लग रहा था जैसे पहले से तय और सुनियोजित हो। उसके मुंह से निकलने वाली हर बात "जब हम साथ थे तब कितना मज़ा आया था" या "तुम्हें याद है वो समय जब हम साथ थे" से शुरू होती थी—जैसे उसने छोटी-छोटी पुरानी यादों का अभ्यास किया हो, इस उम्मीद में कि वे मेरे इरादे को कमज़ोर कर देंगी और मुझे याद दिला देंगी कि हमारा कितना लंबा इतिहास रहा है, हम कितने करीब थे। उसे शायद इस बात का एहसास नहीं है कि मैंने अपना फैसला कर लिया है। और अब वह जो कुछ भी कहेगा, उससे मेरा फैसला नहीं बदलेगा।
अंत में, मुझे खुशी है कि मैं गया। इसलिए नहीं कि मैंने जीन-फेलिक्स को देखा—बल्कि इसलिए कि मैंने नाटक देखा। एल्सेस्टिस एक ऐसी त्रासदी है जिसके बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना था—शायद यह इसलिए कम प्रसिद्ध है क्योंकि यह एक छोटी सी घरेलू कहानी है, और इसीलिए मुझे यह इतनी पसंद आई।
बहुत कुछ। इसका मंचन आज के समय में, एथेंस के एक छोटे से उपनगरीय घर में किया गया था। मुझे इसका दायरा पसंद आया। एक अंतरंग, रसोई-सिंक त्रासदी। एक आदमी को मौत की सजा सुनाई जाती है, और उसकी पत्नी, एल्सेस्टिस, उसे बचाना चाहती है। एल्सेस्टिस का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री किसी यूनानी मूर्ति जैसी लग रही थी, उसका चेहरा बेहद खूबसूरत था—मैं बार-बार उसकी पेंटिंग बनाने के बारे में सोच रही थी। मैंने उसके बारे में जानकारी लेने और उसके एजेंट से संपर्क करने के बारे में सोचा। मैंने लगभग जीन-फेलिक्स को इसके बारे में बता ही दिया था, लेकिन खुद को रोक लिया। मैं अब उसे अपने जीवन में किसी भी स्तर पर शामिल नहीं करना चाहती। अंत में मेरी आँखों में आंसू आ गए—एल्सेस्टिस मरती है और फिर से जन्म लेती है। वह सचमुच मृत्यु से वापस आती है। इसमें कुछ ऐसा है जिसके बारे में मुझे सोचना है। मुझे अभी ठीक से पता नहीं है कि क्या। बेशक, जीन-फेलिक्स की नाटक पर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएँ थीं, लेकिन उनमें से कोई भी मुझे प्रभावित नहीं कर पाई, इसलिए मैंने उसकी बातों पर ध्यान देना बंद कर दिया।

एल्सेस्टिस की मृत्यु और पुनरुत्थान मेरे दिमाग से निकल ही नहीं रहा था—पुल पार करके स्टेशन की ओर वापस चलते समय भी मैं उसी के बारे में सोचता रहा। जीन-फेलिक्स ने पूछा कि क्या मैं एक और ड्रिंक लेना चाहता हूँ, लेकिन मैंने कहा कि मैं थका हुआ हूँ। फिर से एक अजीब सी खामोशी छा गई। हम स्टेशन के प्रवेश द्वार के बाहर खड़े थे। मैंने उन्हें शाम के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि बहुत मज़ा आया।
“बस एक और ड्रिंक ले लो,” जीन-फेलिक्स ने कहा। “एक और। पुराने दिनों की याद में।”
कारण?"
नहीं, मुझे जाना चाहिए।
मैंने वहां से जाने की कोशिश की—और उसने मेरा हाथ पकड़ लिया।
“एलिसिया,” उसने कहा। “मेरी बात सुनो। मुझे तुम्हें कुछ बताना है।”
“नहीं, कृपया ऐसा मत कीजिए, कहने को कुछ है ही नहीं—”
“बस सुनो। यह वैसा नहीं है जैसा तुम सोच रहे हो।”
और वह सही था, ऐसा नहीं था। मुझे उम्मीद थी कि जीन-फेलिक्स हमारी दोस्ती के लिए गिड़गिड़ाएगा, या गैलरी छोड़ने के लिए मुझे दोषी महसूस कराने की कोशिश करेगा। लेकिन उसने जो कहा, उससे मैं पूरी तरह से हैरान रह गया।
उन्होंने कहा, “आपको सावधान रहने की जरूरत है। आप बहुत ज्यादा भरोसा करते हैं। आपके आसपास के लोग... आप उन पर भरोसा करते हैं। ऐसा मत करो। उन पर भरोसा मत करो।”
मैंने उसे खाली निगाहों से देखा। मुझे बोलने में एक पल लगा।
“तुम किस बारे में बात कर रहे हो? तुम्हारा मतलब किससे है?”
जीन-फेलिक्स ने बस अपना सिर हिलाया और कुछ नहीं कहा। उसने मेरा हाथ छोड़ दिया और चला गया। मैंने उसे आवाज़ दी लेकिन वह नहीं रुका।
“जीन-फेलिक्स। रुको।”
उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। मैंने उसे कोने से ओझल होते देखा। मैं वहीं जम कर खड़ा रह गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या सोचूँ। वह रहस्यमयी चेतावनी देकर इस तरह क्यों चला गया? शायद वह मुझ पर हावी होना चाहता था और मुझे असमंजस में डालना चाहता था। और वह इसमें सफल भी रहा।

उसने मुझे गुस्से में भी छोड़ दिया। अब, एक तरह से, उसने मेरे लिए इसे आसान बना दिया है। अब मैंने ठान लिया है कि उसे अपनी ज़िंदगी से निकाल दूंगी। "मेरे आस-पास के लोग" से उसका क्या मतलब था—शायद उसका मतलब गैब्रियल से था? लेकिन क्यों?

नहीं। मैं ऐसा नहीं कर रही हूँ। जीन-फेलिक्स यही तो चाहता था—मेरे दिमाग से खेलना। मुझे उसके बारे में सोचने पर मजबूर करना। मेरे और गैब्रियल के बीच आना।

मैं इसके झांसे में नहीं आऊंगा। मैं इसके बारे में दोबारा नहीं सोचूंगा।

मैं घर वापस आई, और गैब्रियल बिस्तर पर सो रहा था। उसे सुबह पाँच बजे शूटिंग के लिए बुलाया गया था। लेकिन मैंने उसे जगाया, और हमने शारीरिक संबंध बनाए। मैं उसके इतने करीब नहीं आ पा रही थी और न ही उसे अपने भीतर इतनी गहराई से महसूस कर पा रही थी। मैं उसके साथ एक हो जाना चाहती थी। मैं उसके भीतर समा जाना चाहती थी और उसमें विलीन हो जाना चाहती थी।

11 अगस्त

मैंने उस आदमी को फिर देखा। इस बार वह थोड़ी दूर था—पार्क में थोड़ा आगे एक बेंच पर बैठा था। लेकिन मैं पहचान गया कि वह वही था—इस मौसम में ज़्यादातर लोग शॉर्ट्स और टी-शर्ट व हल्के रंग के कपड़े पहने होते हैं, जबकि उसने गहरे रंग की शर्ट और पैंट, काले चश्मे और टोपी पहनी हुई थी। उसका सिर घर की ओर झुका हुआ था, वह उसे देख रहा था।

मुझे एक अजीब सा ख्याल आया—शायद वह चोर नहीं है, शायद वह एक चित्रकार है।

शायद वह भी मेरी तरह एक चित्रकार है और वह सड़क को चित्रित करने के बारे में सोच रहा है।

या घर। लेकिन जैसे ही मैंने यह सोचा, मुझे पता चल गया कि यह सच नहीं है। अगर वह होता

अगर वह सचमुच घर को पेंट करने जा रहा होता, तो वह बस वहां बैठा नहीं रहता—वह स्केच बना रहा होता।

मैं इस बात को लेकर बहुत परेशान हो गया और मैंने गैब्रियल को फोन कर दिया। यह एक गलती थी।
मुझे पता था कि वह व्यस्त है—उसे मेरी इस बात की बिल्कुल भी जरूरत नहीं थी कि मैं फोन करके घबरा जाऊं क्योंकि मुझे लगता है कि कोई घर पर नजर रख रहा है।
बेशक, मैं सिर्फ यह मान रहा हूं कि वह आदमी घर पर नजर रख रहा है।
वह मुझे देख रहा हो सकता है।
13 अगस्त
वह फिर से वहीं था।
आज सुबह गैब्रियल के जाने के कुछ ही देर बाद की बात है। मैंने नहाया और बाथरूम की खिड़की से उसे देखा। इस बार वह करीब था। वह बस स्टॉप के बाहर खड़ा था, मानो आराम से बस का इंतज़ार कर रहा हो।
मुझे नहीं पता कि वह किसे बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा है।
मैंने जल्दी से कपड़े बदले और बेहतर तरीके से देखने के लिए रसोई में गई। लेकिन वह जा चुका था।
मैंने सोचा कि गैब्रियल के घर आने पर मैं उसे इसके बारे में बताऊंगी। मुझे लगा था कि वह इसे नज़रअंदाज़ कर देगा, लेकिन उसने इसे गंभीरता से लिया। वह काफी चिंतित लग रहा था।
"क्या यह जीन-फेलिक्स है?" उसने तुरंत कहा।
“नहीं, बिलकुल नहीं। आप ऐसा सोच भी कैसे सकते हैं?”
मैंने हैरानी और गुस्से का भाव दिखाने की कोशिश की। लेकिन सच में मुझे भी यही शक था। वह आदमी और जीन-फेलिक्स एक ही कद-काठी के हैं। हो सकता है कि वह जीन-फेलिक्स ही हो, लेकिन फिर भी—मैं इस बात पर यकीन नहीं करना चाहती।
वह मुझे इस तरह डराने की कोशिश नहीं करेगा। क्या वह करेगा?
“जीन-फेलिक्स का नंबर क्या है?” गैब्रियल ने कहा। “मैं अभी उसे फोन कर रहा हूँ।”
“डार्लिंग, ऐसा मत करो, प्लीज़। मुझे यकीन है कि वह नहीं है।”
"सकारात्मक?"
“बिल्कुल। कुछ नहीं हुआ। मुझे नहीं पता कि मैं इसे इतना बड़ा मुद्दा क्यों बना रहा हूँ। यह कुछ भी नहीं है।”

वह वहां कितने समय तक रहा?
"ज्यादा देर नहीं हुई—लगभग एक घंटा—और फिर वह गायब हो गया।"
"गायब हो जाने का क्या मतलब है?"
वह अचानक गायब हो गया।
"हम्म। क्या ऐसा हो सकता है कि आप यह सब कल्पना कर रहे हों?"
जिस तरह से उसने ये बात कही, उससे मुझे चिढ़ हो गई। “मैं ये सब कल्पना नहीं कर रहा हूँ। आपको मुझ पर विश्वास करना होगा।”
मुझे आप पर पूरा भरोसा है।
लेकिन मुझे पता चल गया था कि वह मेरी बात पर पूरी तरह यकीन नहीं कर रहा था। वह सिर्फ आंशिक रूप से ही यकीन कर रहा था।
उसका एक हिस्सा तो बस मुझे खुश करने के लिए ऐसा कर रहा था। सच कहूँ तो, इससे मुझे गुस्सा आ रहा है। इतना गुस्सा आ रहा है कि मुझे यहीं रुकना पड़ेगा—वरना मैं कुछ ऐसा लिख दूँगी जिसका मुझे बाद में पछतावा होगा।
14 अगस्त
नींद खुलते ही मैं बिस्तर से कूदकर उठ गई। मैंने खिड़की से बाहर देखा, इस उम्मीद में कि वह आदमी फिर से वहीं होगा—ताकि गैब्रियल भी उसे देख सके—लेकिन उसका कोई अता-पता नहीं था। इसलिए मुझे और भी ज़्यादा मूर्खता महसूस हुई।
आज दोपहर मैंने भीषण गर्मी के बावजूद टहलने का फैसला किया। मैं पार्क में, इमारतों, सड़कों और लोगों से दूर, अकेले अपने विचारों में खो जाना चाहता था। मैं पार्लियामेंट हिल की ओर चला, रास्ते के दोनों ओर धूप सेंक रहे लोगों के बीच से गुज़रता हुआ। मुझे एक खाली बेंच मिली और मैं बैठ गया। मैंने दूर चमकते लंदन शहर को निहारना शुरू कर दिया।
जब मैं वहाँ था, मुझे हर पल किसी चीज़ का एहसास होता रहा। मैं बार-बार पीछे मुड़कर देखता रहा—पर कोई दिखाई नहीं दिया। लेकिन कोई न कोई वहाँ हर समय मौजूद था। मैं इसे महसूस कर सकता था। कोई मुझे देख रहा था।
वापस लौटते समय मैं तालाब के पास से गुज़रा। अचानक मेरी नज़र ऊपर उठी और वहाँ वही आदमी खड़ा था। वह पानी के दूसरी ओर खड़ा था, इतनी दूर कि साफ़

दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन वह वही था। मैं जानता था कि वह वही है। वह एकदम स्थिर, बिना हिले-डुले, सीधे मेरी ओर घूर रहा था।
मुझे डर की एक ठंडी कंपकंपी महसूस हुई। मैंने सहज प्रवृत्ति के अनुसार कार्य किया:
“जीन-फेलिक्स?” मैंने चिल्लाकर कहा। “क्या तुम हो? बस करो। मेरा पीछा करना बंद करो!”
वह हिला तक नहीं। मैंने तुरंत कार्रवाई की। मैंने अपनी जेब में हाथ डाला, अपना फोन निकाला और उसकी एक तस्वीर खींच ली। इससे क्या फायदा होगा, मुझे नहीं पता।
फिर मैं मुड़ी और तालाब के किनारे की ओर तेज़ी से चलने लगी, मुख्य रास्ते पर पहुँचने तक मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। मुझे डर था कि वह मेरे ठीक पीछे होगा।
मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वह जा चुका था।
मुझे उम्मीद है कि यह जीन-फेलिक्स नहीं है। मैं सचमुच यही उम्मीद करता हूँ।
जब मैं घर पहुंची, तो मैं बहुत घबराई हुई थी। मैंने पर्दे गिरा दिए और लाइटें बंद कर दीं। मैंने खिड़की से बाहर देखा—और वह वहीं था: वह आदमी सड़क पर खड़ा था, मेरी तरफ घूर रहा था। मैं जम गई—मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं।
जब किसी ने मेरा नाम पुकारा तो मैं डर के मारे उछल पड़ा:
“एलिसिया? एलिसिया, क्या तुम वहाँ हो?”
यह पड़ोस की वह भयानक औरत थी। बार्बी हेलमैन। मैं खिड़की से हटकर पीछे के दरवाजे पर गया और उसे खोला। बार्बी बगल के गेट से अंदर आ गई थी और बगीचे में शराब की बोतल पकड़े खड़ी थी।
"हाय, हनी। मैंने देखा कि तुम अपने स्टूडियो में नहीं थी। मुझे आश्चर्य हुआ कि तुम कहाँ थी।"
मैं बाहर था, अभी-अभी लौटा हूँ।
"कुछ पीने का समय हो गया है?" उसने यह बात बच्चों जैसी आवाज़ में कही, जो वह कभी-कभी इस्तेमाल करती है और जो मुझे चिढ़ाती है।
"दरअसल, मुझे काम पर वापस जाना चाहिए।"

“बस थोड़ी देर के लिए। और फिर मुझे जाना होगा। आज रात मेरी इटैलियन क्लास है।”
ठीक है?"
मेरे जवाब का इंतजार किए बिना, वह अंदर आ गई। उसने रसोई में अंधेरे के बारे में कुछ कहा और मुझसे बिना पूछे ही पर्दे खोलने लगी।
मैं उसे रोकने ही वाला था, लेकिन जब मैंने बाहर देखा तो सड़क पर कोई नहीं था।
वह आदमी जा चुका था।
मुझे नहीं पता मैंने बार्बी को इसके बारे में क्यों बताया। मैं उसे पसंद नहीं करती और न ही उस पर भरोसा करती हूँ—लेकिन शायद मैं डरी हुई थी, और मुझे किसी से बात करने की ज़रूरत थी, और संयोग से वह वहीं थी। हमने साथ में ड्रिंक ली, जो मेरे स्वभाव के विपरीत था, और मैं फूट-फूटकर रोने लगी।
बार्बी ने हैरानी से मेरी तरफ देखा, पहली बार वह चुप रही। मेरे खत्म करने के बाद, उसने अपनी वाइन की बोतल नीचे रखी और बोली, "इसके साथ कुछ और स्ट्रॉन्ग पीना चाहिए।" उसने हम दोनों के लिए व्हिस्की की दो बोतलें डालीं।
“लो।” उसने मुझे दे दिया। “तुम्हें इसकी ज़रूरत है।”
वह सही थी—मुझे इसकी ज़रूरत थी। मैंने उसे पी लिया और मुझे एक झटका लगा।
अब बार्बी की बात सुनने की बारी मेरी थी। उसने कहा कि वह मुझे डराना नहीं चाहती, लेकिन उसकी बातें अच्छी नहीं लग रही थीं। "मैंने इसे लाखों टीवी शो में देखा है।"
वह आपके घर का जायजा ले रहा है, ठीक है? कोई कदम उठाने से पहले।
“क्या आपको लगता है कि वह चोर है?”
बार्बी ने कंधे उचकाते हुए कहा, "या फिर कोई बलात्कारी। क्या इससे कोई फर्क पड़ता है? चाहे कुछ भी हो, बुरी खबर ही है।"
मैं हँस पड़ी। मुझे राहत और कृतज्ञता का अनुभव हुआ कि कोई मुझे गंभीरता से ले रहा है।
भले ही वो सिर्फ बार्बी ही क्यों न हो। मैंने उसे अपने फोन पर फोटो दिखाई, लेकिन वो प्रभावित नहीं हुई।

“मुझे मैसेज करके भेज दो ताकि मैं चश्मा लगाकर देख सकूँ। मुझे तो यह धुंधला धब्बा जैसा दिख रहा है। बताओ। क्या तुमने इस बारे में अपने पति से बात की है?”
मैंने झूठ बोलने का फैसला किया। "नहीं। अभी नहीं।"
बार्बी ने मुझे अजीब नज़र से देखा। "क्यों नहीं?"
मुझे नहीं पता, मुझे लगता है कि मुझे चिंता है कि गैब्रियल सोच सकता है कि मैं बढ़ा-चढ़ाकर बोल रही हूँ—या कल्पना कर रही हूँ।
"क्या तुम यह सब कल्पना कर रहे हो?"
"नहीं।"
बार्बी खुश लग रही थी। “अगर गैब्रियल तुम्हारी बात को गंभीरता से नहीं लेता, तो हम साथ में पुलिस के पास जाएंगे। तुम और मैं। यकीन मानो, मैं बहुत समझाने-बुझाने में माहिर हूँ।”
"धन्यवाद, लेकिन मुझे यकीन है कि इसकी आवश्यकता नहीं होगी।"
“यह तो पहले से ही ज़रूरी है। इसे गंभीरता से लो, जान। मुझसे वादा करो कि जब गैब्रियल घर आएगा तो तुम उसे बता दोगी?”
मैंने सिर हिलाया। लेकिन मैंने पहले ही तय कर लिया था कि मैं गैब्रियल से आगे कुछ नहीं कहूँगी।
बताने लायक कुछ नहीं था। मेरे पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि वह आदमी मेरा पीछा कर रहा था या मुझे देख रहा था। बार्बी सही थी, तस्वीर से कुछ भी साबित नहीं होता।
यह सब मेरी कल्पना थी—गैब्रियल यही कहेगा। उससे कुछ भी न कहना ही बेहतर है, वरना वह फिर से नाराज़ हो जाएगा। मैं उसे परेशान नहीं करना चाहती।
मैं इस सब के बारे में भूल जाऊंगा।
सुबह चार बजे।
आज रात बहुत खराब गुजरी।
गैब्रियल करीब दस बजे थका-हारा घर लौटा। उसका दिन बहुत लंबा रहा था और वह जल्दी सोना चाहता था। मैंने भी सोने की कोशिश की, लेकिन मुझे नींद नहीं आई।
फिर कुछ घंटे पहले, मुझे एक आवाज़ सुनाई दी। यह बगीचे से आ रही थी।

मैं उठा और पीछे वाली खिड़की के पास गया। मैंने बाहर देखा—मुझे कोई दिखाई नहीं दिया, लेकिन मुझे महसूस हुआ कि कोई मुझे घूर रहा है। कोई अंधेरे में छिपकर मुझे देख रहा था।
मैंने किसी तरह खुद को खिड़की से दूर किया और भागकर बेडरूम में गई। मैंने गैब्रियल को जगाया।
मैंने कहा, "वह आदमी बाहर है, वह घर के बाहर है।"
गैब्रियल को मेरी बात समझ नहीं आई। जब उसे समझ आया तो वह गुस्सा होने लगा।
"अरे, बस करो! मुझे काम पर जाना है।"
तीन घंटे में। मैं यह घटिया खेल नहीं खेलना चाहता।
“यह कोई खेल नहीं है। आकर देखिए। कृपया।”
तो हम खिड़की के पास गए—
और बेशक, वह आदमी वहां नहीं था। वहां कोई भी नहीं था।
मैं चाहता था कि गैब्रियल बाहर जाकर देखे, लेकिन वह नहीं माना। वह नाराज़ होकर वापस ऊपर चला गया। मैंने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन उसने कहा कि वह मुझसे बात नहीं कर रहा है और दूसरे कमरे में जाकर सो गया।
मैं वापस बिस्तर पर नहीं गई। तब से मैं यहीं बैठी हूँ, इंतज़ार कर रही हूँ, सुन रही हूँ, हर आवाज़ पर ध्यान दे रही हूँ, खिड़कियाँ भी देख रही हूँ। अभी तक उसका कोई अता-पता नहीं है।
बस कुछ ही घंटे बचे हैं। जल्द ही उजाला हो जाएगा।
15 अगस्त
गैब्रियल शूटिंग के लिए तैयार होकर नीचे आया। जब उसने मुझे खिड़की के पास देखा और महसूस किया कि मैं पूरी रात जागता रहा हूँ, तो वह चुप हो गया और अजीब तरह से व्यवहार करने लगा।
“एलिसिया, बैठ जाओ। हमें बात करनी है।”
“हां। हमें बात करनी होगी। इस बारे में कि आप मुझ पर विश्वास नहीं करते।”
मुझे विश्वास है कि आप इस पर विश्वास करते हैं।
“ये एक ही बात नहीं है। मैं कोई बेवकूफ नहीं हूँ।”
मैंने कभी नहीं कहा कि तुम बेवकूफ हो।

तो फिर आप क्या कह रहे हैं?
मुझे लगा कि हम दोनों के बीच लड़ाई होने वाली है, इसलिए गैब्रियल की बात सुनकर मैं चौंक गया। वह फुसफुसाते हुए बोला, मुझे उसकी आवाज़ मुश्किल से सुनाई दी। उसने कहा:
“मैं चाहता हूँ कि आप किसी से बात करें। कृपया।”
“तुम्हारा क्या मतलब है? एक पुलिसवाला?”
“नहीं,” गैब्रियल ने गुस्से से फिर कहा। “पुलिसवाला नहीं।”
मैं समझ गया था कि उसका क्या मतलब है, वह क्या कहना चाह रहा है। लेकिन मुझे उसे खुद कहते हुए सुनना था। मैं चाहता था कि वह इसे स्पष्ट रूप से बताए। "तो फिर कौन?"
"एक डॉक्टर।"
“मैं डॉक्टर के पास नहीं जा रहा हूँ, गैब्रियल—”
“मुझे आपसे यह करवाने की ज़रूरत है। आपको मेरा साथ देना होगा।” उसने फिर से कहा: “मुझे आपसे मेरा साथ देने की ज़रूरत है।”
मुझे आपकी बात समझ नहीं आई। बीच रास्ते में कहाँ? मैं तो यहीं हूँ।
“नहीं, तुम नहीं हो। तुम यहाँ नहीं हो!”
वह बहुत थका हुआ और परेशान लग रहा था। मैं उसे बचाना चाहती थी। मैं उसे दिलासा देना चाहती थी। "कोई बात नहीं, प्यारे," मैंने कहा। "सब ठीक हो जाएगा, तुम देखोगे।"
गैब्रियल ने सिर हिलाया, मानो उसे मेरी बात पर यकीन ही न हो। "मैं डॉक्टर वेस्ट से अपॉइंटमेंट लूंगा। जैसे ही वो आपको देख पाएंगे, मैं आपसे मिल लूंगा। हो सके तो आज ही।"
वह हिचकिचाया और मेरी तरफ देखा। "ठीक है?"
गैब्रियल ने मेरी ओर हाथ बढ़ाया—मेरा मन किया कि उसे झटक दूं या खरोंच दूं। मेरा मन किया कि उसे काट लूं या पीट दूं, या मेज पलट दूं और चिल्लाऊं, “तुम्हें लगता है कि मैं पागल हूं, पर मैं पागल नहीं हूं! मैं पागल नहीं हूं, मैं पागल नहीं हूं, मैं पागल नहीं हूं!”

लेकिन मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। इसके बजाय मैंने सिर हिलाया और गैब्रियल का हाथ पकड़कर थामे रखा।
“ठीक है, प्रिय,” मैंने कहा। “जो तुम चाहो।”
16 अगस्त
मैं आज डॉक्टर वेस्ट से मिलने गया था। अनिच्छा से ही सही, लेकिन गया तो था।
मैंने ठान लिया है कि मुझे उससे नफरत है। मुझे उससे और उसके तंग घर से नफरत है, और ऊपर उस अजीब से छोटे कमरे में बैठकर लिविंग रूम में उसके कुत्ते के भौंकने की आवाज़ सुनने से भी। जब तक मैं वहाँ थी, वह लगातार भौंकता रहा। मेरा मन कर रहा था कि उस पर चिल्लाकर उसे चुप करा दूँ, और मैं सोचती रही कि डॉक्टर वेस्ट इस बारे में कुछ कहेंगे, लेकिन उन्होंने ऐसा दिखाया जैसे उन्हें सुनाई ही नहीं दे रहा हो। शायद उन्हें सुनाई ही नहीं दे रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें मेरी कोई बात सुनाई ही नहीं दे रही हो। मैंने उन्हें सब कुछ बताया। मैंने उन्हें उस घटना के बारे में बताया।
घर की रखवाली करने वाले उस आदमी के बारे में, और मैंने उसे पार्क में मेरा पीछा करते हुए कैसे देखा था, मैंने ये सब कहा, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। वह बस अपनी उस पतली सी मुस्कान के साथ वहीं बैठा रहा। उसने मुझे ऐसे देखा जैसे मैं कोई कीड़ा-मकोड़ा हूँ। मुझे पता है कि वह गैब्रियल का दोस्त होने का दावा करता है, लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि वे कभी दोस्त कैसे हो सकते थे। गैब्रियल बहुत ही मिलनसार है, और डॉ. वेस्ट बिल्कुल भी मिलनसार नहीं हैं। एक डॉक्टर के बारे में ऐसा कहना अजीब लग सकता है, लेकिन उनमें ज़रा भी दयालुता नहीं है।
उस आदमी के बारे में सब कुछ बताने के बाद, वह काफी देर तक चुप रहे। सन्नाटा मानो कभी खत्म ही नहीं होगा। नीचे से बस कुत्ते की आवाज़ आ रही थी। मैं मन ही मन उस कुत्ते के भौंकने पर ध्यान केंद्रित करने लगा और एक तरह की समाधि जैसी अवस्था में चला गया। डॉ. वेस्ट के अचानक बोलने पर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ।
“हम पहले भी यहाँ आ चुके हैं, एलिसिया, है ना?”
मैंने उसे खाली निगाहों से देखा। मुझे समझ नहीं आया कि उसका क्या मतलब था।
"क्या हमने ऐसा किया है?"
उन्होंने सिर हिलाया। "हाँ। हमारे पास है।"

मुझे पता है आपको लगता है कि मैं यह सब कल्पना कर रहा हूँ। मैं कल्पना नहीं कर रहा हूँ। यह सच है।
“पिछली बार भी तुमने यही कहा था। पिछली बार याद है? क्या तुम्हें याद है कि क्या हुआ था?”
मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैं उसे संतुष्टि नहीं देना चाहता था। मैं बस वहीं बैठा रहा, उसे घूरता रहा, जैसे कोई अवज्ञाकारी बच्चा हो।
डॉ. वेस्ट ने जवाब का इंतज़ार नहीं किया। वे बोलते रहे, मुझे याद दिलाते रहे कि मेरे पिता की मृत्यु के बाद क्या हुआ था, मुझे किस मानसिक आघात का सामना करना पड़ा था, मैंने किस तरह के निराधार आरोप लगाए थे—यह विश्वास कि मुझ पर नज़र रखी जा रही है, मेरा पीछा किया जा रहा है और मेरी जासूसी की जा रही है। “तो, देखा आपने, हम पहले भी इस स्थिति से गुज़र चुके हैं, है ना?”
“लेकिन वह अलग बात थी। वह सिर्फ एक एहसास था। मैंने वास्तव में कभी किसी को नहीं देखा।”
इस बार मैंने किसी को देखा।
और आपने किसे देखा?
मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है। एक आदमी।
मुझे उसके बारे में बताएं।
मैं हिचकिचाया। "मैं नहीं कर सकता।"
"क्यों नहीं?"
“मैं उसे ठीक से नहीं देख पा रहा था। मैंने तुम्हें बताया था—वह बहुत दूर था।”
"अच्छा ऐसा है।"
और—वह भेस बदले हुए था। उसने टोपी और धूप का चश्मा पहन रखा था।
“इस मौसम में बहुत से लोग धूप का चश्मा और टोपी पहने हुए हैं। क्या वे सब भेस बदले हुए हैं?”
मुझे गुस्सा आने लगा था। "मैं जानता हूँ कि तुम क्या करने की कोशिश कर रहे हो।"
और वह क्या है?
"तुम मुझसे यह मनवाने की कोशिश कर रहे हो कि मैं फिर से पागल हो रहा हूँ—जैसे पिताजी की मृत्यु के बाद हुआ था।"

"क्या आपको लगता है कि यही हो रहा है?"
“नहीं। उस समय मैं बीमार था। इस बार मैं बीमार नहीं हूँ। मुझे कुछ भी नहीं हुआ है—सिवाय इसके कि कोई मेरी जासूसी कर रहा है और आप मेरी बात पर विश्वास नहीं करेंगे!”
डॉ. वेस्ट ने सिर हिलाया, लेकिन कुछ नहीं कहा। उन्होंने अपनी नोटबुक में कुछ बातें लिख लीं।
“मैं आपको दोबारा दवाइयां देना शुरू कर रहा हूं। एहतियात के तौर पर। हम नहीं चाहते कि यह मामला बेकाबू हो जाए, है ना?”
मैंने सिर हिलाकर कहा, "मैं कोई गोली नहीं ले रहा हूँ।"
“मैं समझ गया। ठीक है, अगर आप दवा लेने से इनकार करते हैं, तो इसके परिणामों के बारे में जानना महत्वपूर्ण है।”
“इसके क्या परिणाम होंगे? क्या आप मुझे धमकी दे रहे हैं?”
“इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है। मैं आपके पति के बारे में बात कर रही हूँ। आपको क्या लगता है कि पिछली बार जब आप बीमार थीं, तब गैब्रियल को कैसा लगा होगा?”
मैंने कल्पना की कि गैब्रियल नीचे लिविंग रूम में भौंकते हुए कुत्ते के साथ इंतजार कर रहा है। "मुझे नहीं पता। आप उससे क्यों नहीं पूछते?"
“क्या आप चाहते हैं कि उसे यह सब फिर से झेलना पड़े? क्या आपको लगता है कि उसकी सहनशीलता की भी एक सीमा है?”
“तुम क्या कह रहे हो? मैं गैब्रियल को खो दूंगी? यही तुम्हारा मानना है?”
यह बात कहने से ही मुझे घबराहट होने लगी। उसे खोने का ख्याल ही मेरे बस की नहीं थी। मैं उसे अपने पास रखने के लिए कुछ भी कर सकती थी—यहाँ तक कि पागल होने का नाटक भी कर सकती थी, जबकि मैं जानती थी कि मैं पागल नहीं हूँ। इसलिए मैंने हार मान ली। मैंने डॉक्टर वेस्ट से अपने मन की बातें और भावनाओं के बारे में खुलकर बताने और अगर मुझे कोई आवाज सुनाई दे तो उन्हें बताने का वादा किया। मैंने उनसे दी हुई गोलियाँ लेने और दो हफ्ते बाद चेकअप के लिए वापस आने का भी वादा किया।

डॉक्टर वेस्ट खुश दिखे। उन्होंने कहा कि अब हम नीचे जा सकते हैं और गैब्रियल से मिल सकते हैं। जैसे ही वह मेरे आगे सीढ़ियों से नीचे जाने लगे, मैंने सोचा कि काश मैं आगे बढ़कर उन्हें सीढ़ियों से नीचे धकेल देती। काश मैंने ऐसा कर दिया होता।
घर लौटते समय गैब्रियल काफी खुश लग रहा था। गाड़ी चलाते समय वह बार-बार मेरी तरफ देखकर मुस्कुरा रहा था। "शाबाश! मुझे तुम पर गर्व है। हम इससे पार पा लेंगे, देखना।"
मैंने सिर हिलाया लेकिन कुछ नहीं कहा। क्योंकि ज़ाहिर है यह सब बकवास है —"हम"
वे इससे उबर नहीं पाएंगे।
मुझे इससे अकेले ही निपटना होगा।
किसी को भी बताना गलती थी। कल मैं बार्बी से कहूँगी कि वह सब भूल जाए—मैं कहूँगी कि मैंने सब कुछ भुला दिया है और अब इसके बारे में दोबारा बात नहीं करना चाहती। उसे लगेगा कि मैं अजीब हूँ और वह नाराज़ भी होगी क्योंकि मैं उसे इस ड्रामे से दूर रख रही हूँ, लेकिन अगर मैं सामान्य व्यवहार करूँगी, तो वह जल्द ही सब कुछ भूल जाएगी। जहाँ तक गैब्रियल की बात है, मैं उसे आश्वस्त कर दूँगी। मैं ऐसा दिखावा करूँगी जैसे सब कुछ पहले जैसा हो गया है। मैं शानदार अभिनय करूँगी। मैं एक पल के लिए भी अपनी सतर्कता नहीं छोड़ूँगी।
हम वापस आते समय फार्मेसी गए और गैब्रियल ने मेरा प्रिस्क्रिप्शन ले लिया।
घर वापस आते ही हम रसोई में चले गए।
उन्होंने मुझे पीले रंग की गोलियां और एक गिलास पानी दिया। "इन्हें ले लो।"
मैं बच्चा नहीं हूँ। आपको इन्हें मुझे देने की ज़रूरत नहीं है।
मुझे पता है कि तुम बच्चे नहीं हो। मैं बस यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि तुम इन्हें ले लोगे—और फेंकोगे नहीं।
"मैंने इन्हें ले जाने का निर्णय किया है।"
"चलिये।"
गैब्रियल ने मुझे गोलियां मुंह में डालते और थोड़ा पानी पीते हुए देखा।
"शाबाश," उसने कहा और मेरे गाल पर चुंबन किया। फिर वह कमरे से चला गया।

जैसे ही गैब्रियल ने पीठ मोड़ी, मैंने गोलियां थूक दीं। मैंने उन्हें सिंक में थूका और नाली में बहा दिया। मैं कोई दवा नहीं ले रही हूँ।
पिछली बार डॉ. वेस्ट ने मुझे जो दवाइयां दी थीं, उनसे मैं लगभग पागल हो गया था। और मैं दोबारा ऐसा जोखिम नहीं उठाऊंगा।
मुझे इस समय पूरी तरह से होश में रहने की जरूरत है।
मुझे तैयार रहना होगा।
17 अगस्त
मैंने इस डायरी को छुपाना शुरू कर दिया है। खाली कमरे में एक ढीला फर्श का तख्ता पड़ा है। मैं इसे वहीं छुपा कर रख रही हूँ, नज़रों से दूर, उस तख्ते के नीचे। क्यों? दरअसल, मैं इन पन्नों में बहुत ज़्यादा ईमानदारी से लिख रही हूँ। इसे यूँ ही पड़ा रहने देना सुरक्षित नहीं है। मैं सोचती रहती हूँ कि कहीं गैब्रियल को यह नोटबुक मिल जाए, वो अपनी जिज्ञासा को दबाते हुए इसे खोले और पढ़ना शुरू कर दे।
अगर उसे पता चल जाए कि मैं दवा नहीं ले रही हूँ, तो उसे बहुत बुरा लगेगा, बहुत दुख होगा।
मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता था।
शुक्र है मेरे पास लिखने के लिए यह डायरी है। इससे मेरा मानसिक संतुलन बना हुआ है। मेरे पास बात करने के लिए और कोई नहीं है।
मुझे किसी पर भरोसा नहीं है।
21 अगस्त
मैं तीन दिनों से घर से बाहर नहीं निकली हूँ। मैं गैब्रियल से झूठ बोलती हूँ कि जब वह बाहर होता है तो मैं दोपहर में टहलने जाती हूँ, लेकिन यह सच नहीं है।
बाहर जाने का ख्याल ही मुझे डरा देता है। मैं बहुत असुरक्षित महसूस करूंगी। कम से कम यहाँ, घर में, मुझे पता है कि मैं सुरक्षित हूँ। मैं खिड़की के पास बैठ सकती हूँ और
मैं राहगीरों पर नज़र रख रहा हूँ। मैं हर उस चेहरे को गौर से देख रहा हूँ जो उस आदमी का चेहरा लग रहा है—लेकिन समस्या यह है कि मुझे नहीं पता कि वह कैसा दिखता है। हो सकता है उसने अपना भेस हटा दिया हो और वह मेरे सामने बिना किसी की नज़र में आए घूम रहा हो।

यह एक चिंताजनक विचार है।
22 अगस्त
अभी तक उसका कोई पता नहीं चला है। लेकिन मुझे अपना ध्यान नहीं भटकने देना चाहिए। बस कुछ ही समय की बात है।
देर-सवेर वह वापस आएगा ही। मुझे तैयार रहना होगा। मुझे कदम उठाने होंगे।
आज सुबह उठते ही मुझे गैब्रियल की बंदूक याद आ गई। मैं उसे खाली कमरे से निकालकर नीचे रखूंगा, जहाँ से वह आसानी से मिल सके। मैं उसे रसोई की अलमारी में खिड़की के पास रखूंगा। इस तरह जरूरत पड़ने पर वह वहीं मिलेगी।
मुझे पता है ये सब बातें अजीब लग रही हैं। उम्मीद है इससे कुछ भी बुरा न हो। उम्मीद है मैं उस आदमी को फिर कभी न देखूँ।
लेकिन मुझे बहुत बुरा लग रहा है कि ऐसा होगा।
वह कहाँ है? वह यहाँ क्यों नहीं आया? क्या वह मुझे सतर्क न रहने के लिए उकसा रहा है? मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। मुझे खिड़की के पास अपनी निगरानी जारी रखनी चाहिए।
इंतज़ार करते रहें।
देखते रहें।
23 अगस्त
मुझे अब लगने लगा है कि मैंने यह सब कल्पना की थी। शायद मैंने की ही हो।
गैब्रियल मुझसे बार-बार पूछता रहता है कि मैं कैसी हूँ—क्या मैं ठीक हूँ। मैं समझ सकती हूँ कि वह चिंतित है, भले ही मैं बार-बार कह रही हूँ कि मैं ठीक हूँ। मेरा दिखावा अब उसे यकीन नहीं दिला पा रहा है। मुझे और ज़्यादा कोशिश करनी होगी।
मैं दिन भर काम पर ध्यान केंद्रित करने का नाटक करती हूँ, जबकि असल में काम मेरे दिमाग से कोसों दूर है। मेरा उससे कोई नाता नहीं रहा, पेंटिंग पूरी करने की कोई प्रेरणा नहीं बची। जब मैं लिख रही हूँ...
सच कहूँ तो, मुझे नहीं लगता कि मैं दोबारा पेंटिंग करूँगी। कम से कम तब तक तो नहीं जब तक ये सब कुछ खत्म नहीं हो जाता।
मैं बाहर न जाने के बहाने बना रही थी, लेकिन गैब्रियल ने आज रात मुझसे कहा कि मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। मैक्स ने हमें डिनर पर बुलाया है।

मैक्स को देखने से बुरा और कुछ नहीं हो सकता। मैंने गैब्रियल से मिन्नतें कीं कि वह कार्यक्रम रद्द कर दे, मैंने कहा कि मुझे काम करना है, लेकिन उसने कहा कि जाना मेरे लिए अच्छा रहेगा।
उसने ज़िद की और मुझे पता चल गया कि वह सच में ऐसा चाहता है, इसलिए मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। मैंने हार मान ली और हाँ कह दी।
मैं आज रात के बारे में दिन भर सोचती रही। क्योंकि जैसे ही मेरे दिमाग में इसके बारे में ख्याल आया, सब कुछ समझ में आने लगा। सब कुछ स्पष्ट हो गया। मुझे नहीं पता कि मैंने इसके बारे में पहले क्यों नहीं सोचा, यह तो बहुत ही स्पष्ट बात है।
अब मुझे समझ आ गया। वो आदमी—वो आदमी जो देख रहा है—वो जीन-फेलिक्स नहीं है।
जीन-फेलिक्स इतना शातिर या धूर्त नहीं है कि ऐसा कुछ करे। भला और कौन मुझे सताना, डराना और सज़ा देना चाहेगा?
अधिकतम.
बेशक यह मैक्स ही है। मैक्स ही होना चाहिए। वह मुझे पागल करने की कोशिश कर रहा है।
मुझे डर लग रहा है, लेकिन मुझे किसी तरह हिम्मत जुटानी ही होगी। मैं इसे आज रात ही करूँगा।
मैं उससे आमने-सामने बात करूंगा।
24 अगस्त
घर के अंदर इतने लंबे समय तक रहने के बाद कल रात बाहर निकलना अजीब और थोड़ा डरावना लगा।
बाहरी दुनिया विशाल प्रतीत हो रही थी—मेरे चारों ओर एक खाली जगह, ऊपर विशाल आकाश।
मुझे बहुत छोटा महसूस हुआ और मैंने सहारे के लिए गैब्रियल की बांह पकड़ ली।
हालांकि हम अपने पुराने पसंदीदा ऑगस्टो रेस्टोरेंट में गए, फिर भी मुझे सुरक्षित महसूस नहीं हुआ। पहले की तरह आरामदायक और परिचित माहौल नहीं था। रेस्टोरेंट कुछ अलग सा लग रहा था। और उसकी गंध भी अलग थी—किसी और चीज़ की गंध आ रही थी।

जलने की आवाज़ आ रही थी। मैंने गैब्रियल से पूछा कि क्या रसोई में कुछ जल रहा है, लेकिन उसने कहा कि उसे कुछ भी गंध नहीं आ रही है, मैं बस कल्पना कर रही हूँ। उन्होंने कहा, "सब ठीक है। बस शांत हो जाओ।"
मैं शांत हूँ। क्या मैं शांत नहीं दिख रहा हूँ?
गैब्रियल ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने बस अपने जबड़े भींच लिए, जैसे वह नाराज़ होने पर करता है। हम चुपचाप बैठ गए और मैक्स का इंतज़ार करने लगे।
मैक्स अपनी रिसेप्शनिस्ट को डिनर पर ले आया। उसका नाम तान्या था। लगता है दोनों ने डेटिंग शुरू कर दी है। मैक्स तान्या पर फिदा था, उसके हाथ हर तरफ फैले हुए थे, वो उसे छू रहा था, चूम रहा था—और साथ ही साथ मेरी तरफ घूरता जा रहा था। क्या उसे लगा कि वो मुझे जलन महसूस करवा देगा? वो कितना घटिया इंसान है। वह मुझे बीमार कर देता है।
तान्या को कुछ गड़बड़ महसूस हुई—उसने मैक्स को मुझे घूरते हुए कई बार देखा। मुझे उसे उसके बारे में चेतावनी देनी चाहिए। उसे बताना चाहिए कि वह किस मुसीबत में पड़ने वाली है।
शायद मैं ऐसा करूँ, लेकिन अभी नहीं। फिलहाल मेरी प्राथमिकताएँ कुछ और हैं।
मैक्स ने कहा कि वह बाथरूम जा रहा है। मैंने एक पल इंतजार किया और फिर मौके का फायदा उठाते हुए कहा कि मुझे भी बाथरूम जाना है। मैं टेबल से उठा और उसके पीछे-पीछे चला गया।
मैंने मोड़ पर मैक्स को पकड़ लिया और उसका हाथ पकड़ लिया। मैंने उसे कसकर पकड़ लिया।
मैंने कहा, "बस करो। बस करो!"
मैक्स असमंजस में पड़ गया। "क्या रोकना है?"
“तुम मेरी जासूसी कर रहे हो, मैक्स। तुम मुझे देख रहे हो। मुझे पता है तुम देख रहे हो।”
“क्या? मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा कि तुम क्या कह रही हो, एलिसिया।”
“मुझसे झूठ मत बोलो।” मुझे अपनी आवाज़ पर काबू रखना मुश्किल हो रहा था। मैं चीखना चाहती थी। “मैंने तुम्हें देखा है, ठीक है? मैंने तुम्हारी तस्वीर ली है। मैंने तुम्हारी फोटो खींची है!”

मैक्स हँस पड़ा। "तुम क्या बकवास कर रही हो? मुझे छोड़ दो, पागल कुतिया।"
मैंने उसके चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा।
फिर मैंने मुड़कर देखा तो तान्या वहाँ खड़ी थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसे ही थप्पड़ पड़ा हो।
तान्या ने मैक्स और मेरी तरफ देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा। वह रेस्टोरेंट से बाहर चली गई।
मैक्स ने मुझे घूरकर देखा और उसके पीछे जाने से पहले फुसफुसाते हुए कहा, "मुझे कुछ नहीं पता कि तुम क्या बात कर रही हो। मैं तुम्हें देख नहीं रहा हूँ। अब, मेरे रास्ते से हट जाओ।"
जिस तरह से उसने गुस्से और तिरस्कार से ये बात कही, उससे मुझे समझ आ गया कि मैक्स सच बोल रहा है। मैंने उस पर विश्वास किया। मैं उस पर विश्वास नहीं करना चाहता था—लेकिन मैंने किया।
लेकिन अगर यह मैक्स नहीं है तो कौन है?
25 अगस्त
मुझे अभी कुछ सुनाई दिया। बाहर से कोई आवाज़ आ रही थी। मैंने खिड़की से बाहर देखा। और मुझे परछाइयों में कोई हिलता-डुलता नज़र आया।
ये वही आदमी है। वो बाहर है।
मैंने गैब्रियल को फोन किया लेकिन उसने उठाया नहीं। क्या मुझे पुलिस को बुलाना चाहिए? मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं। मेरा हाथ इतना कांप रहा है कि मैं मुश्किल से कुछ कर पा रही हूं—
मुझे उसकी आवाज नीचे से सुनाई दे रही है— वो खिड़कियाँ और दरवाजे खोलकर अंदर आने की कोशिश कर रहा है।
मुझे यहाँ से निकलना होगा। मुझे भागना होगा।
हे भगवान—मैं उसकी आवाज़ सुन सकता हूँ—
वह अंदर है।
वह घर के अंदर है।
भाग चार

चिकित्सा का उद्देश्य अतीत को सुधारना नहीं है, बल्कि रोगी को अपने इतिहास का सामना करने और उस पर शोक व्यक्त करने में सक्षम बनाना है।
—एलिस मिलर
अध्याय एक
मैंने एलिसिया की डायरी बंद की और उसे अपनी मेज पर रख दिया।
मैं वहीं बैठा रहा, हिलता-डुलता नहीं था, खिड़की के बाहर बारिश की तेज आवाज सुनता रहा।
मैंने अभी-अभी जो पढ़ा था, उसे समझने की कोशिश की। एलिसिया बेरेंसन के बारे में मैंने जितना सोचा था, उससे कहीं अधिक जानकारी थी। वह मेरे लिए एक बंद किताब की तरह थीं; अब वह किताब खुल गई थी और उसके अंदर की बातें मुझे पूरी तरह से चौंका गई थीं।
मेरे मन में कई सवाल थे। एलिसिया को शक था कि कोई उस पर नज़र रख रहा है। क्या उसे उस आदमी की पहचान पता चली? क्या उसने किसी को बताया? मुझे यह जानना ज़रूरी था। जहाँ तक मुझे पता था, उसने सिर्फ़ तीन लोगों को ही अपने मन की बात बताई थी—गैब्रियल, बार्बी और इस रहस्यमय डॉ. वेस्ट को। क्या उसने यहीं तक बात सीमित रखी, या किसी और को भी बताया? एक और सवाल। डायरी अचानक खत्म क्यों हो गई? क्या उसमें और भी कुछ लिखा था, कहीं और? कोई और नोटबुक, जो उसने मुझे नहीं दी? और मैं एलिसिया के मुझे डायरी पढ़ने के लिए देने के मकसद को लेकर भी सोच रहा था। वह कुछ तो ज़रूर कहना चाह रही थी—और वह लगभग चौंकाने वाली नज़दीकी थी। क्या यह सद्भावना का संकेत था—यह दिखाने का कि वह मुझ पर कितना भरोसा करती है? या कुछ और ही खतरनाक?
एक और बात थी; कुछ ऐसा जिसकी मुझे जाँच करनी थी। डॉ. वेस्ट—वही डॉक्टर जिन्होंने एलिसिया का इलाज किया था। एक महत्वपूर्ण गवाह, जिसके पास हत्या के समय उसकी मानसिक स्थिति के बारे में अहम जानकारी थी। फिर भी डॉ. वेस्ट ने एलिसिया के मुकदमे में गवाही नहीं दी थी। क्यों नहीं? उनका ज़िक्र तक नहीं हुआ था। जब तक मैंने उनकी डायरी में उनका नाम नहीं देखा, तब तक ऐसा लग रहा था जैसे उनका कोई अस्तित्व ही नहीं था। उन्हें कितना पता था? वे सामने क्यों नहीं आए? डॉ. वेस्ट।

यह वही आदमी नहीं हो सकता। यह ज़रूर एक संयोग होगा। मुझे इसका पता लगाना ही था।
मैंने डायरी को अपने डेस्क के दराज में रख दिया और उसे बंद कर दिया। फिर, लगभग तुरंत ही, मेरा मन बदल गया। मैंने दराज खोला और डायरी निकाल ली। इसे अपने पास रखना ही बेहतर था—इसे अपनी नज़रों से ओझल न होने देना ही सुरक्षित था। मैंने उसे अपने कोट की जेब में डाला और उसे अपने हाथ में टांग लिया।
मैंने अपना दफ्तर छोड़ दिया। मैं नीचे गया और गलियारे में तब तक चलता रहा जब तक कि मुझे अंत में एक दरवाजा नहीं मिल गया।
मैं कुछ देर वहीं खड़ा रहा और उसे देखता रहा। दरवाजे पर लगे एक छोटे से बोर्ड पर एक नाम खुदा हुआ था: डॉ. सी. वेस्ट।
मैंने दरवाजा खटखटाने की जहमत नहीं उठाई। मैंने दरवाजा खोला और अंदर चला गया।
अध्याय दो
क्रिश्चियन अपनी डेस्क के पीछे बैठा चॉपस्टिक से टेकअवे सुशी खा रहा था। उसने ऊपर देखा और भौंहें चढ़ा लीं।
क्या तुम्हें दरवाजा खटखटाना नहीं आता?
मुझे एक शब्द चाहिए।
"अभी नहीं, मैं दोपहर का भोजन कर रहा हूँ।"
“इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा। बस एक छोटा सा सवाल। क्या आपने कभी एलिसिया बेरेंसन का इलाज किया है?”
क्रिश्चियन ने एक निवाला चावल निगला और मेरी तरफ खाली निगाहों से देखा।
“आपका क्या मतलब है? आप जानते हैं कि मैं करता हूँ। मैं उसकी देखभाल करने वाली टीम का प्रभारी हूँ।”
"मेरा मतलब यहां से नहीं है—मेरा मतलब उस समय से है जब उसे ग्रोव में भर्ती नहीं कराया गया था।"
मैंने क्रिश्चियन को ध्यान से देखा। उसके चेहरे के भावों से मुझे सब कुछ पता चल गया। उसका चेहरा लाल हो गया और उसने चॉपस्टिक नीचे रख दीं।
"तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"

मैंने अपनी जेब से एलिसिया की डायरी निकाली और उसे ऊपर उठाया।
“शायद आपको इसमें दिलचस्पी हो। यह एलिसिया की डायरी है। यह हत्या से कुछ महीने पहले लिखी गई थी। मैंने इसे पढ़ लिया है।”
क्रिश्चियन हैरान और थोड़ा घबराया हुआ लग रहा था। "तुम्हें यह कहाँ से मिला?"
“एलिसिया ने मुझे यह दिया था। मैंने इसे पढ़ लिया है।”
इससे मेरा क्या लेना-देना है?
उसने उसमें तुम्हारा जिक्र किया है।
"मुझे?"
"ऐसा लगता है कि ग्रोव में भर्ती होने से पहले आप उससे निजी तौर पर मिल रहे थे। मुझे इस बात की जानकारी नहीं थी।"
मुझे समझ नहीं आ रहा। ज़रूर कोई गलती हुई होगी।
मुझे ऐसा नहीं लगता। आपने उसे कई वर्षों तक एक निजी मरीज के रूप में देखा था। और फिर भी, आपके सबूतों के महत्व के बावजूद, आप मुकदमे में गवाही देने के लिए आगे नहीं आए। आपने यह भी स्वीकार नहीं किया कि जब आपने यहां काम शुरू किया था तब आप एलिसिया को पहले से जानते थे। संभवतः उसने आपको तुरंत पहचान लिया होगा - आपके लिए सौभाग्य की बात है कि वह चुप है।
मैंने ये बात रूखेपन से कही, लेकिन अंदर ही अंदर मैं बहुत गुस्से में थी। अब मुझे समझ आया कि क्रिश्चियन एलिसिया से बात करवाने की मेरी कोशिश के इतना खिलाफ क्यों था। उसे चुप कराना ही उसके हित में था।
“क्रिश्चियन, तुम एक स्वार्थी कमीने हो, जानते हो ना?”
क्रिश्चियन ने बढ़ती हुई निराशा भरी निगाहों से मेरी ओर देखा। "धत् तेरे की," उसने धीमी आवाज़ में कहा। "धत् तेरे की। थियो। सुनो—बात उतनी गंभीर नहीं है जितनी दिख रही है।"
"यही है ना?"
डायरी में और क्या लिखा है?
"कहने के लिए और क्या बचा है?"
क्रिश्चियन ने सवाल का जवाब नहीं दिया। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। "क्या मैं इसे देख सकता हूँ?"

“माफ़ कीजिए।” मैंने सिर हिलाया। “मुझे नहीं लगता कि यह उचित है।”
क्रिश्चियन बोलते समय अपनी चॉपस्टिक्स से खेल रहा था। “मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। लेकिन यह पूरी तरह से निर्दोष था। आपको मुझ पर विश्वास करना होगा।”
मुझे खेद है कि मैं नहीं जानता। अगर यह निर्दोष था, तो हत्या के बाद आप सामने क्यों नहीं आए?
"क्योंकि मैं वास्तव में एलिसिया का डॉक्टर नहीं था—मतलब, आधिकारिक तौर पर नहीं। मैंने तो सिर्फ गैब्रियल पर एहसान चुकाने के लिए ऐसा किया था। हम दोस्त थे। हम साथ में यूनिवर्सिटी में पढ़ते थे।"
मैं उनकी शादी में मौजूद था। मैंने उन्हें सालों से नहीं देखा था—जब तक कि उन्होंने मुझे फोन नहीं किया, अपनी पत्नी के लिए मनोचिकित्सक की तलाश में। उनके पिता की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी की तबीयत खराब हो गई थी।
और आपने अपनी सेवाएं स्वेच्छा से दीं?
“नहीं, बिलकुल नहीं। बल्कि इसके ठीक उलट। मैं उन्हें एक सहकर्मी के पास भेजना चाहता था, लेकिन उन्होंने ज़ोर दिया कि मैं एलिसिया से मिलूँ। गैब्रियल ने कहा कि एलिसिया इस पूरे विचार के प्रति बेहद अनिच्छुक थीं, और चूंकि मैं उनका दोस्त था, इसलिए उनके सहयोग करने की संभावना कहीं अधिक थी। ज़ाहिर है, मैं अनिच्छुक था।”
मुझे पूरा यकीन है कि आप थे।
क्रिश्चियन ने मुझे आहत भरी नजरों से देखा। "व्यंग्य करने की कोई जरूरत नहीं है।"
“आपने उसका इलाज कहाँ किया?”
वह हिचकिचाया। “मेरी प्रेमिका का घर। लेकिन जैसा कि मैंने आपको बताया,” उसने जल्दी से कहा,
"यह अनौपचारिक था—मैं वास्तव में उसकी डॉक्टर नहीं थी। मैं उसे बहुत कम देखती थी। कभी-कभार ही, बस इतना ही।"
और उन दुर्लभ अवसरों पर, क्या आप कोई शुल्क लेते थे?
क्रिश्चियन ने पलकें झपकाईं और मेरी नजरों से बचते हुए कहा, "खैर, गैब्रियल ने भुगतान करने पर जोर दिया, इसलिए मेरे पास कोई विकल्प नहीं था—"
"नकद, मेरा अनुमान है?"

“थियो—”
"क्या यह नकद था?"
“हाँ, लेकिन—”
और क्या आपने इसकी घोषणा की थी?
क्रिश्चियन ने अपने होंठ दबाए और कोई जवाब नहीं दिया। तो जवाब था ना। इसीलिए वह एलिसिया के मुकदमे में सामने नहीं आया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह कितने अन्य मरीजों को "अनौपचारिक रूप से" देख रहा था और उनसे होने वाली आय की घोषणा नहीं कर रहा था।
“देखो। अगर डायोमेडेस को पता चल गया, तो मैं—मेरी नौकरी जा सकती है। तुम जानते हो ना?” उसकी आवाज़ में विनती का भाव था, मानो वह मुझसे सहानुभूति जताने की कोशिश कर रहा हो।
लेकिन मुझे क्रिश्चियन के लिए ज़रा भी सहानुभूति नहीं थी। बस घृणा थी। “प्रोफेसर की बात छोड़ो। मेडिकल काउंसिल का क्या होगा? तुम्हारा लाइसेंस रद्द हो जाएगा।”
“अगर तुम कुछ कहोगे तो ही। तुम्हें किसी को बताने की ज़रूरत नहीं है। अब तो सब कुछ बीती बात हो चुकी है, है ना? मतलब, ये मेरे करियर का सवाल है।”
"आपको इसके बारे में पहले ही सोच लेना चाहिए था, है ना?"
“थियो, कृपया...”
क्रिश्चियन को मेरे पास इस तरह रेंगते हुए आना ज़रूर बुरा लग रहा होगा, लेकिन उसे तड़पते देखकर मुझे कोई संतुष्टि नहीं मिली, बल्कि झुंझलाहट ही हुई। मेरा उसे डायोमेडेस के हवाले करने का कोई इरादा नहीं था—कम से कम अभी तो नहीं। अगर मैं उसे लटकाए रखता तो वह मेरे लिए ज़्यादा उपयोगी होता।
मैंने कहा, "कोई बात नहीं। अभी किसी और को जानने की ज़रूरत नहीं है।"
“धन्यवाद। सचमुच, मैं दिल से धन्यवाद कह रहा हूँ। मैं आपका आभारी हूँ।”
“हां, आपको करना चाहिए। आगे बढ़िए।”
"आप क्या चाहते हैं?"
“मैं चाहता हूँ कि तुम बात करो। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे एलिसिया के बारे में बताओ।”
"आप क्या जानना चाहते हैं?"

"सब कुछ।"

अध्याय तीन

क्रिश्चियन अपनी चॉपस्टिक से खेलते हुए मेरी तरफ घूर रहा था। बोलने से पहले उसने कुछ सेकंड तक सोचा।

"बताने के लिए ज्यादा कुछ नहीं है। मुझे नहीं पता कि आप क्या सुनना चाहते हैं या आप मुझसे कहां से शुरू करने की उम्मीद करते हैं।"

“शुरुआत से शुरू करो। तुमने उसे कई सालों तक देखा है?”

“नहीं—मेरा मतलब है, हाँ—लेकिन मैंने आपको बताया था, उतनी बार नहीं जितनी बार आप बता रहे हैं। उसके पिता की मृत्यु के बाद मैंने उसे दो या तीन बार देखा था।”

"जब आखिरी समय था?"

"हत्या से लगभग एक सप्ताह पहले।"

"और आप उसकी मानसिक स्थिति का वर्णन कैसे करेंगे?"

“ओह...” क्रिश्चियन अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गया, अब उसे थोड़ा सुकून मिला क्योंकि वह सुरक्षित महसूस कर रहा था। “वह बहुत ज्यादा वहमी, भ्रमग्रस्त—यौन रोग से ग्रस्त, यहाँ तक कि मनोरोगी भी थी। लेकिन वह पहले भी ऐसी ही थी। उसके मूड में लंबे समय से उतार-चढ़ाव आते रहते थे। उसका मिजाज हमेशा बदलता रहता था—बिल्कुल बॉर्डरलाइन पर्सनैलिटी डिसऑर्डर जैसा।”

मुझे ये फालतू की बीमारी का निदान मत बताओ। बस मुझे तथ्य बताओ।

क्रिश्चियन ने मुझे दुखी निगाहों से देखा लेकिन बहस न करने का फैसला किया। "तुम क्या जानना चाहते हो?"

"एलिसिया ने आपको बताया था कि उस पर नजर रखी जा रही थी, सही कहा ना?"

क्रिश्चियन ने मुझे खाली निगाहों से देखा। "देखा?"

“कोई उस पर नज़र रख रहा था। मुझे लगा उसने तुम्हें इसके बारे में बताया होगा?”

क्रिश्चियन ने मुझे अजीब नज़रों से देखा। फिर, मुझे आश्चर्यचकित करते हुए, वह हँस पड़ा।

"बहुत ही हास्यास्पद है?"

"क्या आपको सच में ऐसा लगता है? खिड़कियों से ताक-झांक करने वाले किसी ताक-झांक करने वाले पर?"

“क्या आपको नहीं लगता कि यह सच है?”
“पूरी तरह से कल्पना। मुझे लगा था कि यह बात स्पष्ट होगी।”
मैंने डायरी की ओर इशारा करते हुए सिर हिलाया। “उसने इसके बारे में काफी विश्वसनीय तरीके से लिखा है। मैंने उसकी बात पर विश्वास किया।”
“खैर, उसकी बातें तो यकीन दिलाने वाली लग रही थीं। अगर मुझे सच्चाई पता न होती तो मैं भी उसकी बात मान लेता। उसे मनोविकृति का दौरा पड़ रहा था।”
“तो तुम यही कहते रहते हो। डायरी में तो वो मनोरोगी नहीं लगती। बस डरी हुई लगती है।”
“उसका अतीत ऐसा ही था—हैम्पस्टेड से पहले जिस जगह वे रहते थे, वहाँ भी यही हुआ था। इसीलिए उन्हें वहाँ से जाना पड़ा। उसने सड़क के उस पार रहने वाले एक बुज़ुर्ग पर जासूसी का आरोप लगाया। उसने खूब हंगामा किया। बाद में पता चला कि वह बुज़ुर्ग अंधा था—उसे देख भी नहीं सकता था, जासूसी करना तो दूर की बात है। वह हमेशा से ही बहुत अस्थिर स्वभाव की थी, लेकिन उसके पिता की आत्महत्या ने उसे पूरी तरह से बदल दिया। वह कभी उबर नहीं पाई।”
“क्या उसने तुम्हारे साथ उसके बारे में कोई बात की? अपने पिता के बारे में?”
क्रिश्चियन ने कंधे उचकाते हुए कहा, "सच में नहीं। वह हमेशा यही कहती थी कि वह उससे प्यार करती है और उनका रिश्ता बहुत सामान्य था—जितना सामान्य हो सकता था, यह देखते हुए कि उसकी माँ ने आत्महत्या कर ली थी। सच कहूँ तो, एलिसिया से कुछ भी जानकारी मिल पाना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। वह बिल्कुल भी सहयोग नहीं करती थी। वह—खैर, आप जानते ही हैं कि वह कैसी है।"
“जाहिर है, आपकी तरह अच्छा नहीं।” मैंने उसके टोकने से पहले ही अपनी बात जारी रखी।
“क्या उसने अपने पिता की मृत्यु के बाद आत्महत्या करने का प्रयास किया था?”
क्रिश्चियन ने कंधे उचकाते हुए कहा, "अगर आपको पसंद है तो ठीक है। मैं इसे यह नाम नहीं दूंगा।"
"आप इसे क्या कहेंगे?"
“यह आत्महत्या जैसा व्यवहार था, लेकिन मुझे नहीं लगता कि उसका इरादा मरने का था। वह इतनी आत्ममुग्ध थी कि वह कभी सचमुच खुद को नुकसान नहीं पहुंचाना

चाहती थी। उसने ज़रूरत से ज़्यादा दवाइयाँ लीं, दिखावे के लिए। वह गैब्रियल को अपनी परेशानी बता रही थी—बेचारा, वह हमेशा उसका ध्यान खींचने की कोशिश करती रहती थी।"

अगर मुझे उसकी गोपनीयता का सम्मान न करना होता, तो मैं उसे तुरंत वहां से चले जाने की चेतावनी दे देता।

"उनके लिए यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि आप इतने नैतिक व्यक्ति हैं।"

क्रिश्चियन थोड़ा सहम गया। "थियो, मुझे पता है कि तुम बहुत सहानुभूतिशील इंसान हो—इसीलिए तो तुम इतने अच्छे थेरेपिस्ट हो—लेकिन तुम एलिसिया बेरेंसन के साथ अपना समय बर्बाद कर रहे हो। हत्या से पहले भी, उसमें आत्मनिरीक्षण या मानसिक चिंतन करने की क्षमता न के बराबर थी। वह पूरी तरह से खुद में और अपनी कला में डूबी हुई थी। तुम्हारे मन में उसके लिए जो भी सहानुभूति है, वह सब बेकार है।

उस पर इतनी दया दिखाई गई है—वह बदले में उसे लौटाने में असमर्थ है। उसका कोई भविष्य नहीं है।

एकदम बदतमीज़ औरत।

क्रिश्चियन ने यह बात बड़े ही तिरस्कारपूर्ण ढंग से कही—और उस टूटी हुई महिला के प्रति ज़रा भी सहानुभूति नहीं दिखाई। एक पल के लिए मुझे लगा कि शायद एलिसिया नहीं, बल्कि क्रिश्चियन ही मानसिक रूप से विक्षिप्त है। ऐसा सोचना ज़्यादा तर्कसंगत होता।

मैं खड़ा हो गया। "मैं एलिसिया से मिलने जा रहा हूँ। मुझे कुछ जवाब चाहिए।"

"एलिसिया से?" क्रिश्चियन चौंक गया। "और तुम उन्हें कैसे हासिल करने का इरादा रखते हो?"

"उससे पूछकर।"

मैं बाहर चला गया।

चौथा अध्याय

मैंने तब तक इंतजार किया जब तक डायोमेडेस अपने कार्यालय में गायब नहीं हो गया और स्टेफ़नी ट्रस्ट के साथ एक बैठक में थी। फिर मैं चुपके से मछली के कटोरे में घुस गया और यूरी को ढूंढ लिया।

मुझे एलिसिया से मिलना है।

“ओह, हाँ?” यूरी ने मुझे अजीब नज़र से देखा। “लेकिन—मुझे लगा था कि थेरेपी बंद हो गई है?”
“हाँ, ऐसा ही था। मुझे उससे अकेले में बात करनी है, बस इतना ही।”
“ठीक है, मैं समझ गया।” यूरी थोड़ा संशय में था। “थेरेपी रूम में कोई है—इंदिरा आज दोपहर बाकी समय वहाँ मरीजों को देख रही हैं।” उसने एक पल सोचा। “आर्ट रूम खाली है, अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो क्या हम वहाँ मिल सकते हैं? लेकिन जल्दी में ही मिलना होगा।”
उसने ज़्यादा कुछ नहीं बताया, लेकिन मैं समझ गई कि उसका क्या मतलब था—हमें जल्दी करनी थी ताकि कोई हमें देख न ले और स्टेफ़नी को बता न दे। मैं शुक्रगुज़ार थी कि यूरी मेरे साथ था; वह ज़ाहिर तौर पर एक अच्छा इंसान था। मुझे इस बात का पछतावा हो रहा था कि पहली मुलाकात में मैंने उसे गलत समझा था।
“धन्यवाद। मैं इसकी सराहना करता हूँ।”
यूरी ने मेरी तरफ देखकर मुस्कुराते हुए कहा, "मैं उसे दस मिनट में वहाँ ले आऊँगा।"

*

Yuri was as good as his word. Ten minutes later, Alicia and I were in the art room, sitting opposite each other, across the paint-splattered work surface.

मैं एक जर्जर स्टूल पर बैठा था, खुद को असुरक्षित महसूस कर रहा था। एलिसिया जब बैठी तो बिल्कुल सधी हुई लग रही थी—जैसे कि वह किसी चित्र के लिए पोज़ दे रही हो, या फिर कोई चित्र बनाने वाली हो।
“इसके लिए धन्यवाद।” मैंने उसकी डायरी निकाली और उसे अपने सामने रख दिया। इसे पढ़ने की अनुमति देने के लिए धन्यवाद। आपने मुझ पर भरोसा किया, यह मेरे लिए बहुत मायने रखता है।
मुझे इतनी निजी बात से अवगत कराओ।"
मैंने मुस्कुराया, लेकिन बदले में मुझे एक खाली भाव मिला। एलिसिया के चेहरे पर कोई भाव नहीं था। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उसे मुझे डायरी देने का पछतावा था।

शायद उसे अपने आप को पूरी तरह से उजागर करने पर शर्मिंदगी महसूस हुई हो?
मैंने थोड़ी देर रुककर फिर कहा, "डायरी अचानक, एक सस्पेंस भरे मोड़ पर खत्म होती है।"
मैंने डायरी के बचे हुए खाली पन्नों को पलटा। "यह कुछ हद तक हमारी साथ में की गई थेरेपी की तरह है—अधूरा, अपूर्ण।"
एलिसिया कुछ नहीं बोली। वह बस घूरती रही। मुझे नहीं पता मैंने क्या उम्मीद की थी, पर यह तो बिलकुल नहीं। मैंने सोचा था कि डायरी देना किसी बदलाव का संकेत है, एक निमंत्रण, एक अवसर, एक प्रवेश द्वार, लेकिन यहाँ मैं फिर से वहीं पहुँच गई थी, एक अभेद्य दीवार के सामने।
"आप जानते हैं, मुझे उम्मीद थी कि इन पन्नों के माध्यम से मुझसे अप्रत्यक्ष रूप से बात करने के बाद, आप एक कदम आगे बढ़कर मुझसे व्यक्तिगत रूप से बात करेंगे।"
कोई जबाव नहीं।
मुझे लगता है कि आपने यह मुझे इसलिए दिया क्योंकि आप मुझसे संवाद करना चाहते थे। और आपने संवाद किया भी। इसे पढ़कर मुझे आपके बारे में बहुत कुछ पता चला।
आप कितने अकेले, कितने अलग-थलग और कितने डरे हुए थे—आपकी स्थिति मेरी पहले की समझ से कहीं अधिक जटिल थी। उदाहरण के लिए, डॉ. वेस्ट के साथ आपका रिश्ता।
क्रिश्चियन का नाम लेते हुए मैंने उसकी तरफ एक नज़र डाली। मुझे किसी तरह की प्रतिक्रिया की उम्मीद थी, आँखों का सिकुड़ना, जबड़े का कसना—कुछ भी, कुछ भी —
लेकिन कुछ भी नहीं हुआ, पलक झपकने तक की कोई आवाज नहीं आई।
“मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि आप ग्रोव में भर्ती होने से पहले क्रिश्चियन वेस्ट को जानते थे। आप उनसे कई सालों से निजी तौर पर मिलते रहे थे। जाहिर है, जब वह पहली बार यहां काम करने आए थे - आपके आने के कुछ महीनों बाद - तो आपने उन्हें पहचान लिया होगा। जब उन्होंने आपको देखकर अभिवादन नहीं किया तो यह आपके लिए भ्रमित करने वाला रहा होगा। और शायद काफी परेशान करने वाला भी, मुझे लगता है?”

मैंने यह सवाल पूछा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। क्रिश्चियन में उसकी कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। एलिसिया ने नज़रें फेर लीं, जैसे ऊब गई हो या निराश हो गई हो —मानो मैंने कोई मौका गँवा दिया हो, या गलत रास्ते पर चला गया हो। वह मुझसे कुछ उम्मीद कर रही थी, जिसे मैं पूरा नहीं कर पाया।
खैर, अभी मेरा काम खत्म नहीं हुआ था।
“कुछ और भी है। डायरी कुछ सवाल खड़े करती है—ऐसे सवाल जिनके जवाब मिलने ज़रूरी हैं। कुछ बातें समझ में नहीं आतीं, मेल नहीं खातीं।
मुझे अन्य स्रोतों से जानकारी मिली है। अब जब आपने मुझे इसे पढ़ने की अनुमति दे दी है, तो मैं आगे की जांच करने के लिए बाध्य महसूस करता हूं। मुझे उम्मीद है कि आप इसे समझेंगे।
मैंने एलिसिया को डायरी वापस दे दी। उसने उसे लिया और उस पर अपनी उंगलियां रख दीं। हम एक पल के लिए एक-दूसरे को देखते रहे।
“मैं तुम्हारे साथ हूँ, एलिसिया,” मैंने अंततः कहा। “तुम यह जानती हो, है ना?”
वह कुछ नहीं बोली।
मैंने इसे हां मान लिया।
अध्याय पाँच
कैथी लापरवाह होती जा रही थी। शायद यह होना ही था। इतने लंबे समय तक बेवफाई से बचते रहने के बाद, वह आलसी होने लगी थी।
मैं घर लौटा तो देखा कि वह बाहर जाने वाली थी।
“मैं टहलने जा रही हूँ,” उसने अपने जूते पहनते हुए कहा। “मुझे ज्यादा देर नहीं लगेगी।”
मुझे थोड़ी कसरत की जरूरत है। क्या आप मेरे साथ चलना चाहेंगे?
नहीं, मुझे अपनी पंक्तियों का अभ्यास करना है।
"अगर आप चाहें तो मैं इन पर आपकी परीक्षा ले सकता हूँ।"
“नहीं।” कैथी ने सिर हिलाया। “अकेले करना आसान है। मैं बस भाषण दोहराती रहती हूँ—खासकर वो जो मुझे समझ नहीं आते, जैसे कि दूसरे अंक के। मैं पार्क में घूमती हूँ और उन्हें ज़ोर-ज़ोर से दोहराती हूँ। लोग मुझे कैसे देखते हैं, ये तो आपको देखना चाहिए।”

मुझे उसकी तारीफ करनी ही पड़ी। कैथी ने ये सब बातें पूरी ईमानदारी से कही थीं, और लगातार आंखों में आंखें मिलाकर बात कर रही थी। वह एक असाधारण अभिनेत्री थी।
मेरी एक्टिंग भी बेहतर हो रही थी। मैंने उसे एक प्यारी सी मुस्कान दी। "आपकी सैर अच्छी रहे।"
फ्लैट से निकलने के बाद मैं उसके पीछे-पीछे गया। मैंने उससे थोड़ी दूरी बनाए रखी, लेकिन उसने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। जैसा कि मैंने कहा, वह लापरवाह होती जा रही थी।
वह करीब पांच मिनट तक चलकर पार्क के प्रवेश द्वार तक पहुंची। जैसे ही वह उसके पास पहुंची, एक आदमी अंधेरे से बाहर निकला। उसकी पीठ मेरी तरफ थी और मैं उसका चेहरा नहीं देख पाई। उसके बाल काले थे और वह अच्छी कद-काठी का था, मुझसे लंबा था।
वह उसके पास गई और उसने उसे अपनी ओर खींच लिया। वे चुंबन करने लगे। कैथी ने उसके चुंबनों को बड़ी बेसब्री से ग्रहण किया, मानो खुद को उसके हवाले कर दिया हो। यह अजीब था—
कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है कि किसी दूसरे आदमी की बाहें उसके चारों ओर थीं। उसके हाथ कपड़ों के ऊपर से ही उसके स्तनों को टटोल रहे थे और सहला रहे थे।
मुझे पता था कि मुझे छिप जाना चाहिए। मैं सबके सामने थी और हर तरफ दिख रही थी—अगर कैथी पीछे मुड़ती, तो वो मुझे ज़रूर देख लेती। लेकिन मैं हिल नहीं पा रही थी। मैं स्तब्ध रह गई थी, पत्थर की बनी मेडुसा को घूर रही थी।
आखिरकार उन्होंने चुंबन बंद कर दिया और हाथ में हाथ डालकर पार्क में चले गए। मैं उनके पीछे-पीछे गया। यह मेरे लिए एक अजीब अनुभव था। पीछे से, दूर से, वह आदमी मुझे बहुत हद तक मेरे जैसा ही लग रहा था—कुछ पलों के लिए मुझे एक अजीब सा भ्रम हुआ, जैसे मैं अपने शरीर से अलग हो गया हूँ, मुझे यकीन हो गया कि मैं खुद को कैथी के साथ पार्क में चलते हुए देख रहा हूँ।
कैथी उस आदमी को जंगल की ओर ले गई। वह उसके पीछे-पीछे जंगल में चला गया और वे दोनों गायब हो गए।

मेरे पेट में डर की एक अजीब सी बेचैनी होने लगी। मेरी साँसें भारी, धीमी और तेज़ हो गईं। मेरे शरीर का हर अंग मुझे वहाँ से चले जाने, भागने, दूर भागने के लिए कह रहा था। लेकिन मैं नहीं भागा। मैं उनके पीछे-पीछे जंगल में चला गया।

मैंने यथासंभव कम शोर करने की कोशिश की, लेकिन मेरे पैरों के नीचे टहनियाँ चरमरा उठीं और डालियाँ मुझे चुभने लगीं। मैं उन्हें कहीं भी नहीं देख पा रहा था—पेड़ इतने पास-पास उगे थे कि मैं अपने सामने कुछ ही फीट तक देख पा रहा था।

मैं रुक गया और ध्यान से सुनने लगा। मुझे पेड़ों में सरसराहट सुनाई दी, लेकिन यह हवा भी हो सकती थी। फिर मुझे एक ऐसी आवाज़ सुनाई दी जिसे मैं तुरंत पहचान गया - एक धीमी, कर्कश ध्वनि।

कैथी के कराहने की आवाज थी।

मैंने करीब जाने की कोशिश की, लेकिन डालियों ने मुझे जकड़ लिया और मुझे हवा में लटकाए रखा, जैसे कोई मक्खी जाले में फंसी हो। मैं धुंधली रोशनी में वहीं खड़ा रहा, छाल और मिट्टी की बासी गंध को महसूस करता रहा। मैंने कैथी की कराह सुनी जब वह उसके साथ संबंध बना रहा था। वह जानवर की तरह गुर्रा रहा था।

मैं नफ़रत से जल रही थी। यह आदमी कहीं से आया और मेरी ज़िंदगी में घुसपैठ कर गया। उसने मुझसे वह चीज़ छीन ली, बहकाई और भ्रष्ट कर दी जो दुनिया में मेरे लिए सबसे कीमती थी। यह भयानक था—अलौकिक। शायद वह इंसान था ही नहीं, बल्कि किसी दुष्ट देवता का हथियार था जो मुझे सज़ा देना चाहता था। क्या ईश्वर मुझे सज़ा दे रहा था? क्यों? मैं किस बात की दोषी थी—प्यार में पड़ने के अलावा? क्या मैंने ज़रूरत से ज़्यादा, ज़रूरत से ज़्यादा प्यार किया था? बहुत ज़्यादा?

क्या यह आदमी उससे प्यार करता था? मुझे शक था। उस तरह से नहीं जैसे मैं करता था। वह बस उसका इस्तेमाल कर रहा था; उसके शरीर का। ऐसा कोई तरीका नहीं था जिससे वह उसकी परवाह करता हो, जैसे मैं करता था। मैं कैथी के लिए अपनी जान दे देता।

मैं उसके लिए अपनी जान भी दे देता।

मुझे अपने पिता की याद आई—मैं जानता था कि इस स्थिति में वे क्या करते। वे उस आदमी को जान से मार देते। "मर्द बनो," मुझे अपने पिता की आवाज़ सुनाई दे रही थी। "हिम्मत रखो।"

क्या मुझे यही करना चाहिए था? उसे मार डालना? उसका अंत कर देना? यही इस मुसीबत से निकलने का रास्ता था—इस जादू को तोड़ने का, कैथी को मुक्त करने का और हमें आज़ाद करने का। एक बार जब वह उसके जाने के गम से उबर जाएगी, तो सब कुछ खत्म हो जाएगा, वह बस एक याद बनकर रह जाएगा, जिसे आसानी से भुला दिया जाएगा, और हम पहले की तरह आगे बढ़ सकेंगे। मैं यह अभी, यहीं, पार्क में कर सकता हूँ।

मैं उसे तालाब में घसीटकर ले जाता, उसका सिर पानी में डुबो देता। मैं तब तक उसका सिर वहीं पकड़े रहता जब तक उसका शरीर कांपने लगता और मेरी बाहों में बेजान होकर गिर न जाता। या मैं मेट्रो से उसका पीछा करते हुए उसके घर तक जाता, प्लेटफार्म पर उसके ठीक पीछे खड़ा हो जाता और ज़ोर से धक्का देकर उसे आती हुई ट्रेन के रास्ते में धकेल देता। या फिर किसी सुनसान सड़क पर ईंट हाथ में लिए उसके पीछे से चुपके से जाकर उसके सिर फोड़ देता।

क्यों नहीं?

कैथी की आहें अचानक तेज़ हो गईं, और चरम सुख के दौरान उसकी कराहें मैंने पहचान लीं। फिर सन्नाटा छा गया... जिसे एक दबी हुई हंसी ने तोड़ा, जिसे मैं बहुत अच्छी तरह जानती थी। मुझे जंगल से बाहर निकलते हुए टहनियों के टूटने की आवाज़ सुनाई दी।

मैंने कुछ पल इंतजार किया। फिर मैंने अपने चारों ओर की शाखाओं को तोड़ दिया और पेड़ों से बाहर निकलने के लिए संघर्ष किया, जिससे मेरे हाथ बुरी तरह छिल गए और खरोंचें पड़ गईं।

जब मैं जंगल से बाहर निकला, तो मेरी आँखें आँसुओं से आधी अंधी हो चुकी थीं। मैंने खून से लथपथ मुट्ठी से उन्हें पोंछा।

मैं लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा, बिना किसी मंजिल के। मैं पागलों की तरह गोल-गोल घूमता रहा।

अध्याय छह

“जीन-फेलिक्स?”

रिसेप्शन डेस्क पर कोई नहीं था, और मेरे बुलाने पर भी कोई नहीं आया। मैं एक पल के लिए हिचकिचाया, फिर गैलरी में चला गया।

मैं गलियारे से चलकर उस जगह पहुँचा जहाँ एल्सेस्टिस की पेंटिंग टंगी थी। मैंने एक बार फिर पेंटिंग को देखा। एक बार फिर मैंने उसे समझने की कोशिश की, और एक बार फिर मैं असफल रहा। तस्वीर में कुछ ऐसा था जिसकी व्याख्या करना असंभव था —या फिर उसमें कोई ऐसा अर्थ छिपा था जिसे मैं अभी तक समझ नहीं पाया था। लेकिन क्या?

तभी—मेरी सांस अटक गई जब मैंने कुछ देखा। एलिसिया के पीछे, अंधेरे में, अगर आप ध्यान से पेंटिंग को देखते, तो परछाइयों के सबसे गहरे हिस्से आपस में मिल जाते —जैसे कोई होलोग्राम जो किसी खास कोण से देखने पर दो आयामों से तीन आयामों में बदल जाता है—और परछाइयों से एक आकृति उभर आती... एक आदमी की आकृति। एक आदमी—अंधेरे में छिपा हुआ। देख रहा था। एलिसिया की जासूसी कर रहा था।

"आप क्या चाहते हैं?"

उस आवाज से मैं चौंक गया। मैं पीछे मुड़ा।

जीन-फेलिक्स मुझे देखकर कुछ खास खुश नहीं दिखे। "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

मैं पेंटिंग में मौजूद उस आदमी की आकृति की ओर इशारा करके जीन-फेलिक्स से इसके बारे में पूछने ही वाला था, लेकिन मुझे अंदर से महसूस हुआ कि यह एक बुरा विचार हो सकता है।

इसके बजाय मैंने मुस्कुरा दिया। “मेरे कुछ और सवाल हैं। क्या अभी जवाब देने का सही समय है?”

“नहीं, ऐसा नहीं है। मैंने आपको सब कुछ बता दिया है जो मुझे पता है। यकीनन और कुछ हो ही नहीं सकता?”

"दरअसल, कुछ नई जानकारी सामने आई है।"

और वह क्या है?

"खैर, पहली बात तो यह है कि मुझे पता नहीं था कि एलिसिया आपकी गैलरी छोड़ने की योजना बना रही है।"

जीन-फेलिक्स ने जवाब देने से पहले एक पल का विराम लिया। उसकी आवाज़ कसी हुई लग रही थी, मानो कोई रबर बैंड टूटने ही वाला हो।

"तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"

"क्या यह सच है?"
इसमें तुम्हारा क्या लेना-देना है?
“एलिसिया मेरी मरीज है। मेरा इरादा उसे फिर से बोलने के लिए प्रेरित करना है—लेकिन अब मुझे लगता है कि अगर वह चुप रहे तो शायद यह आपके हित में होगा।”
"इसका क्या मतलब समझा जाए?"
"खैर, जब तक किसी को उसके जाने की इच्छा के बारे में पता नहीं चलता, तब तक आप उसकी कलाकृतियों को अनिश्चित काल तक अपने पास रख सकते हैं।"
"आप मुझ पर किस बात का आरोप लगा रहे हैं?"
मैं आप पर कोई आरोप नहीं लगा रहा हूँ। मैं तो बस एक तथ्य बता रहा हूँ।
जीन-फेलिक्स हँसे। “देखते हैं। मैं अपने वकील से संपर्क करूँगा।”
और अस्पताल में औपचारिक शिकायत दर्ज कराना।"
मुझे नहीं लगता कि आप ऐसा करेंगे।
"और ऐसा क्यों है?"
"देखिए, मैंने आपको यह नहीं बताया कि मुझे कैसे पता चला कि एलिसिया जाने की योजना बना रही है।"
“जिस किसी ने भी तुम्हें यह बताया वह झूठ बोल रहा था।”
“यह एलिसिया थी।”
“क्या?” जीन-फेलिक्स अचंभित होकर बोला। “तुम्हारा मतलब है... उसने बात की?”
“एक तरह से। उसने मुझे अपनी डायरी पढ़ने के लिए दी थी।”
“उसकी डायरी?” उसने कुछ देर पलकें झपकाईं, मानो उसे यह जानकारी पचाने में दिक्कत हो रही हो। “मुझे नहीं पता था कि एलिसिया डायरी लिखती है।”
"हाँ, उसने बताया। उसने आपकी पिछली कुछ मुलाकातों का विस्तार से वर्णन किया है।"
मैंने और कुछ नहीं कहा। मुझे कहने की ज़रूरत नहीं थी। वहाँ एक गहरी चुप्पी छा गई।
जीन-फेलिक्स चुप रहा।
मैंने कहा, "मैं आपसे संपर्क में रहूंगी।" मैं मुस्कुराई और बाहर चली गई।

जैसे ही मैं सोहो की सड़क पर निकला, मुझे जीन-फेलिक्स को इस तरह से नाराज़ करने का थोड़ा सा पछतावा हुआ। लेकिन यह जानबूझकर किया गया था—मैं देखना चाहता था कि इस उकसावे का क्या असर होगा, वह कैसे प्रतिक्रिया देगा, वह क्या करेगा।

अब मुझे इंतजार करके देखना था।

*

सोहो से गुज़रते हुए मैंने एलिसिया के चचेरे भाई पॉल रोज़ को फ़ोन करके बताया कि मैं आ रहा हूँ। मैं बिना बताए घर नहीं जाना चाहता था और पिछली बार की तरह ही स्वागत का जोखिम नहीं उठाना चाहता था। मेरे सिर पर लगी चोट अभी पूरी तरह से ठीक नहीं हुई थी।

मैंने सिगरेट जलाते समय फोन को अपने कान और कंधे के बीच दबा लिया।

मुझे सांस लेने का भी समय नहीं मिला था कि पहली ही घंटी बजते ही फोन उठ गया।

मुझे उम्मीद थी कि यह पॉल होगा, लिडिया नहीं। मैं भाग्यशाली था।

"नमस्ते?"

“पॉल। ये थियो फैबर हैं।”

“ओह। हेलो दोस्त। माफ करना मैं धीरे बोल रहा हूँ। माँ सो रही हैं, और मैं उन्हें परेशान नहीं करना चाहता। तुम्हारा सिर कैसा है?”

"अब बहुत बेहतर है, धन्यवाद।"

“बहुत बढ़िया। मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूँ?”

“मुझे एलिसिया के बारे में कुछ नई जानकारी मिली है। मैं इस बारे में आपसे बात करना चाहता था।”

“किस प्रकार की जानकारी?”

मैंने उसे बताया कि एलिसिया ने मुझे अपनी डायरी पढ़ने के लिए दी थी।

“उसकी डायरी? मुझे तो पता ही नहीं था कि वो डायरी रखती है। उसमें क्या लिखा है?”

आमने-सामने बात करना शायद आसान होगा। क्या आप आज बिल्कुल खाली हैं?

पॉल हिचकिचाया। "हो सकता है कि बेहतर यही हो कि तुम घर न आओ।"

मां... खैर, वो आपकी पिछली मुलाकात से ज्यादा खुश नहीं थीं।

"हां, मुझे यही समझ आया।"
“सड़क के अंत में, गोलचक्कर के पास एक पब है। द व्हाइट बेयर—”
“हां, मुझे याद है। ठीक है। कितने बजे?”
"लगभग पांच बजे? तब मुझे थोड़ी देर के लिए छुट्टी मिल जाएगी।"
मुझे पीछे से लिडिया के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। जाहिर है वह जाग गई थी।
“मुझे जाना होगा। बाद में मिलते हैं।” पॉल ने फोन काट दिया।

*

A few hours later, I was on my way back to Cambridge. On the train, I made another phone call—to Max Berenson. I hesitated before calling.

वह पहले ही डायोमेडेस से शिकायत कर चुका था, इसलिए मुझसे दोबारा शिकायत सुनकर वह खुश नहीं होगा। लेकिन मुझे पता था कि मेरे पास कोई विकल्प नहीं है।
तान्या ने जवाब दिया। उसकी सर्दी-जुकाम में कुछ सुधार लग रहा था, लेकिन जब उसे पता चला कि मैं कौन हूँ, तो उसकी आवाज़ में तनाव साफ झलक रहा था। "मुझे नहीं लगता—मेरा मतलब है, मैक्स व्यस्त है। वह दिन भर मीटिंग्स में रहता है।"
मैं बाद में कॉल करूंगा।
मुझे नहीं लगता कि यह अच्छा विचार है। मैं—”
मुझे पीछे से मैक्स की कुछ आवाज़ सुनाई दी, और तान्या का जवाब: "मैं ऐसा नहीं कह रही हूँ, मैक्स।"
मैक्स ने फोन छीन लिया और मुझसे सीधे बात की: "मैंने अभी तान्या से कहा है कि वह तुमसे कहे कि दफा हो जाओ।"
“आह।”
“तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहाँ दोबारा फोन करने की। मैंने पहले ही प्रोफेसर डायोमेडेस से शिकायत कर दी है।”
“हां, मुझे इसकी जानकारी है। फिर भी, कुछ नई जानकारी सामने आई है, और यह सीधे तौर पर आपसे संबंधित है—इसलिए मुझे लगा कि आपसे संपर्क करने के अलावा मेरे पास कोई विकल्प नहीं था।”

"क्या जानकारी?"
"यह वह डायरी है जिसे एलिसिया ने हत्या से कुछ सप्ताह पहले लिखा था।"
फोन के दूसरी तरफ सन्नाटा था। मैं हिचकिचाया।
“मैक्स, एलिसिया ने तुम्हारे बारे में विस्तार से लिखा है। उसने कहा कि तुम्हारे मन में उसके लिए रोमांटिक भावनाएँ थीं। मैं सोच रही थी कि—”
फोन रखते ही क्लिक की आवाज़ आई। अब तक सब ठीक था। मैक्स जाल में फंस गया था।
और अब मुझे यह देखना था कि वह कैसी प्रतिक्रिया देगा।
मुझे एहसास हुआ कि मैं मैक्स बेरेन्सन से थोड़ा डरती थी, ठीक वैसे ही जैसे तान्या उससे डरती थी। मुझे उसकी फुसफुसाहट में कही सलाह याद आई, कि पॉल से बात करो, उससे कुछ पूछो—क्या? उस रात के बारे में, जिस रात एलिसिया की माँ की मौत हुई थी। मुझे मैक्स के आने पर तान्या के चेहरे का हावभाव याद आया, कैसे वह चुप हो गई और मुस्कुराते हुए उसका अभिवादन किया। नहीं, मैंने सोचा, मैक्स बेरेन्सन को कम नहीं आंकना चाहिए।
यह एक खतरनाक गलती होगी।
अध्याय सात
जैसे ही ट्रेन कैम्ब्रिज के पास पहुँची, ज़मीन समतल हो गई और तापमान गिर गया। स्टेशन से निकलते ही मैंने अपना कोट कसकर बंद कर लिया। ठंडी हवा मेरे चेहरे पर ऐसे चुभ रही थी जैसे बर्फीली धारदार ब्लेडों की बौछार हो रही हो। मैं पॉल से मिलने के लिए पब की ओर चल पड़ा।
व्हाइट बियर एक जर्जर पुरानी जगह थी—ऐसा लग रहा था मानो सालों से मूल ढांचे में कई विस्तार जोड़े गए हों। कुछ छात्र ठंडी हवा का सामना करते हुए, बीयर गार्डन में बाहर बैठे, अपने बीयर के गिलास लिए, स्कार्फ से ढके हुए, सिगरेट पी रहे थे। अंदर का तापमान काफी गर्म था, कई जलती हुई आग की बदौलत, जो ठंड से राहत दे रही थी।
मैंने एक ड्रिंक ली और पॉल को ढूंढने लगा। मुख्य बार से कई छोटे कमरे निकलते थे और रोशनी कम थी। मैंने अंधेरे में मौजूद लोगों को ध्यान से देखा, लेकिन उसे ढूंढने में

नाकाम रहा। मैंने सोचा, यह किसी नाजायज मुलाकात के लिए अच्छी जगह है। और शायद यही था।
मैंने पॉल को एक छोटे से कमरे में अकेला पाया। वह दरवाजे से मुंह फेरकर आग के पास बैठा था। उसके विशाल कद-काठी के कारण मैंने उसे तुरंत पहचान लिया। उसकी विशाल पीठ ने लगभग आग को दृष्टि से ओझल कर दिया था।
“पॉल?”
वह उछलकर खड़ा हुआ और पीछे मुड़ा। उस छोटे से कमरे में वह किसी दैत्य जैसा दिख रहा था। छत से टकराने से बचने के लिए उसे थोड़ा झुकना पड़ा।
“सब ठीक है?” उन्होंने कहा। ऐसा लग रहा था जैसे वे डॉक्टर से बुरी खबर सुनने के लिए खुद को तैयार कर रहे हों। उन्होंने मेरे लिए थोड़ी जगह बनाई और मैं आग के सामने बैठ गया, चेहरे और हाथों पर उसकी गर्माहट महसूस करके मुझे राहत मिली।
"यहां लंदन से भी ज्यादा ठंड है। हवा से हालत और खराब हो रही है।"
“ये सीधे साइबेरिया से आता है, ऐसा कहते हैं।” पॉल बिना रुके बोलता रहा, साफ तौर पर फालतू की बातों में पड़ने के मूड में नहीं था, “ये किस बारे में है?”
डायरी? मुझे तो पता ही नहीं था कि एलिसिया डायरी रखती थी।
"हाँ, उसने किया।"
और उसने तुम्हें दे दिया?
मेंने सिर हिलाया।
“और? इसमें क्या लिखा है?”
“इसमें हत्या से पहले के आखिरी कुछ महीनों का विस्तृत विवरण है। और इसमें कुछ विसंगतियां हैं जिनके बारे में मैं आपसे पूछना चाहता था।”
“क्या विसंगतियां हैं?”
"घटनाओं के आपके विवरण और उसके विवरण के बीच।"
“तुम किस बारे में बात कर रहे हो?” उसने अपना गिलास नीचे रखा और मुझे देर तक घूरता रहा। “तुम्हारा मतलब क्या है?”
"खैर, पहली बात तो यह है कि आपने मुझे बताया था कि हत्या से पहले आपने एलिसिया को कई सालों तक नहीं देखा था।"
पॉल हिचकिचाया। "क्या मैंने ऐसा किया?"

और डायरी में एलिसिया लिखती है कि उसने गैब्रियल की हत्या से कुछ हफ्ते पहले आपको देखा था। वह कहती है कि आप हैम्पस्टेड स्थित घर में आए थे।
मैंने उसे घूरकर देखा, मुझे महसूस हुआ कि वह अंदर से टूट रहा है। अचानक वह एक लड़के जैसा लग रहा था, जिसका शरीर उसके लिए बहुत बड़ा था। पॉल डरा हुआ था, यह स्पष्ट था। उसने एक पल के लिए कोई जवाब नहीं दिया। उसने मुझे एक तिरछी नज़र से देखा।
“क्या मैं डायरी देख सकता हूँ?”
मैंने सिर हिलाया। “मुझे नहीं लगता कि यह उचित होगा। वैसे भी, मैं इसे अपने साथ नहीं लाया।”
"तो फिर मुझे कैसे पता चलेगा कि यह मौजूद है? तुम झूठ भी बोल सकते हो।"
“मैं झूठ नहीं बोल रही। लेकिन तुम झूठ बोल रहे थे—तुमने मुझसे झूठ बोला, पॉल। क्यों?”
"यह तुम्हारा काम नहीं है, इसीलिए।"
मुझे खेद है कि यह मेरा निजी मामला है। एलिसिया की भलाई ही मेरी चिंता है।
“उसकी सेहत का इससे कोई लेना-देना नहीं है। मैंने उसे चोट नहीं पहुंचाई।”
मैंने कभी नहीं कहा कि तुमने ऐसा किया।
"तो ठीक है।"
"तुम मुझे बताओ कि क्या हुआ?"
पॉल ने कंधे उचकाए। "यह एक लंबी कहानी है।" वह हिचकिचाया, फिर मान गया। वह जल्दी-जल्दी, हांफते हुए बोला। मुझे महसूस हुआ कि आखिरकार किसी को अपनी बात बताने पर उसे राहत मिली है। "मेरी हालत बहुत खराब थी। मुझे एक समस्या थी, आप जानते हैं—मैं जुआ खेलता था और कर्ज लेता था।"
मुझे पैसे की जरूरत थी, और मैं उसे चुकाने में असमर्थ था। मुझे कुछ नकदी की जरूरत थी... ताकि मैं सबका हिसाब बराबर कर सकूं।"
"तो क्या आपने एलिसिया से पूछा? क्या उसने आपको पैसे दिए?"
डायरी में क्या लिखा है?
“ऐसा नहीं है।”

पॉल हिचकिचाया, फिर उसने अपना सिर हिलाया। "नहीं, उसने मुझे कुछ नहीं दिया।"
उसने कहा कि वह इसका खर्च नहीं उठा सकती।
वह फिर से झूठ बोल रहा था। क्यों?
"तो फिर आपको पैसे कहाँ से मिले?"
“मैंने इसे अपनी बचत से निकाला है। मुझे अच्छा लगेगा अगर आप इसे हम दोनों के बीच ही रखें—मैं नहीं चाहती कि मेरी माँ को पता चले।”
मुझे नहीं लगता कि इसमें लिडिया को शामिल करने का कोई कारण है।
“सच में?” पॉल के चेहरे पर थोड़ी चमक लौट आई। वह अधिक आशावान लग रहा था। “धन्यवाद। मैं इसकी सराहना करता हूँ।”
"क्या एलिसिया ने कभी आपको बताया था कि उसे शक था कि उस पर नजर रखी जा रही है?"
पॉल ने अपना गिलास नीचे रखा और मुझे हैरानी भरी नज़रों से देखा। मैं समझ गया कि उसने नहीं देखा था। "देखा? तुम्हारा क्या मतलब है?"
मैंने उसे डायरी में पढ़ी हुई कहानी सुनाई - एलिसिया के इस संदेह के बारे में कि कोई अजनबी उस पर नजर रख रहा है, और अंततः उसके इस डर के बारे में कि उस पर उसके अपने घर में हमला हो रहा है।
पॉल ने सिर हिलाया। "वह मानसिक रूप से ठीक नहीं थी।"
"क्या आपको लगता है कि उसने यह सब कल्पना की थी?"
“खैर, यह तो स्वाभाविक है, है ना?” पॉल ने कंधे उचकाते हुए कहा। “आपको नहीं लगता कि कोई उसका पीछा कर रहा था? मेरा मतलब है, मुझे लगता है कि यह संभव है—”
“हां, यह संभव है। तो मेरा मानना है कि उसने इस बारे में आपसे कुछ नहीं कहा?”
“एक शब्द भी नहीं। वैसे, एलिसिया और मैं कभी ज्यादा बात नहीं करते थे। वो हमेशा बहुत शांत रहती थी। हम सब, एक परिवार के तौर पर, ऐसे ही थे। मुझे याद है एलिसिया कहती थी कि ये कितना अजीब था—वो दोस्तों के घर जाती थी और देखती थी कि दूसरे परिवार हंसते-खेलते, बातें करते हैं, और हमारा घर एकदम शांत रहता

था। हम कभी बात नहीं करते थे। सिवाय मेरी माँ के, जो कभी-कभी आदेश देती रहती थीं।"
"और एलिसिया के पिता, वर्नोन के बारे में क्या? वो कैसे थे?"
"वर्नन ज़्यादा बात नहीं करता था। ईवा की मौत के बाद से उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया था। उसके बाद से वो कभी पहले जैसा नहीं रहा। और सच कहें तो एलिसिया भी पहले जैसी नहीं रही।"
"यह सुनकर मुझे याद आया। मुझे आपसे कुछ पूछना था—"
यह बात तान्या ने मुझसे कही थी।"
"तान्या बेरेंसन? आपने उनसे बात की?"
"बस थोड़ी देर के लिए। उसने सुझाव दिया कि मैं आपसे बात करूं।"
"तान्या ने?" पॉल के गाल लाल हो गए। "मैं—मैं उसे अच्छी तरह नहीं जानता, लेकिन वह हमेशा मेरे प्रति बहुत दयालु रही है। वह एक अच्छी, बहुत अच्छी इंसान है। वह मुझसे और माँ से कुछ बार मिलने आई थी।" पॉल के होठों पर मुस्कान आ गई और उसने एक पल के लिए दूर कहीं देखा।
मुझे लगा कि वह उस लड़की को पसंद करता है। मैंने सोचा कि मैक्स को इस बारे में कैसा लगता होगा।
"तान्या ने क्या कहा?" उसने पूछा।
"उसने सुझाव दिया कि मैं आपसे किसी बात के बारे में पूछूं—जो कार दुर्घटना के बाद वाली रात को हुई थी। उसने विस्तार से नहीं बताया।"
"हां, मैं समझती हूं कि उसका क्या मतलब है—मैंने उसे मुकदमे के दौरान बताया था। मैंने उससे कहा था कि वह किसी को न बताए।"
"उसने मुझे नहीं बताया। यह बताना आपकी जिम्मेदारी है। अगर आप चाहें तो। बेशक, अगर आप नहीं बताना चाहते तो..."
पॉल ने अपना गिलास खाली किया और कंधे उचका दिए। "शायद कुछ नहीं है, लेकिन—इससे तुम्हें एलिसिया को समझने में मदद मिल सकती है। वो..." वह हिचकिचाया और चुप हो गया।
"जारी रखें।"

“एलिसिया... अस्पताल से घर आते ही सबसे पहले उसने जो किया—दुर्घटना के बाद उसे एक रात अस्पताल में रखा गया था—वह घर की छत पर चढ़ गई। मैंने भी ऐसा ही किया। हम लगभग पूरी रात वहीं बैठे रहे।”
हम, एलिसिया और मैं, अक्सर वहां जाया करते थे। वह हमारी गुप्त जगह थी।
"छत पर?"
पॉल हिचकिचाया। उसने एक पल के लिए मेरी तरफ देखा, सोच-विचार किया। फिर उसने फैसला किया।
“चलो।” वह खड़ा हो गया। “मैं तुम्हें दिखाता हूँ।”
अध्याय आठ
जब हम घर के पास पहुंचे तो वहां अंधेरा छाया हुआ था।
“यह रहा,” पॉल ने कहा। “मेरे पीछे आओ।”
घर की दीवार से एक लोहे की सीढ़ी लगी हुई थी। हम उसकी ओर बढ़े। हमारे पैरों के नीचे कीचड़ जम गया था, जो कठोर लहरों और लकीरों में ढल गया था। पॉल ने मेरा इंतज़ार किए बिना ही ऊपर चढ़ना शुरू कर दिया।
हर मिनट ठंड बढ़ती जा रही थी। मैं सोच रहा था कि क्या यह सही फैसला था। मैंने उसका पीछा किया और सीढ़ी की पहली सीढ़ी को पकड़ लिया—जो बर्फीली और फिसलन भरी थी। उस पर किसी प्रकार की लता उगी हुई थी; शायद आइवी।
मैं एक-एक सीढ़ी चढ़ता गया। जब तक मैं ऊपर पहुँचा, मेरी उंगलियाँ सुन्न हो चुकी थीं और हवा मेरे चेहरे पर चुभ रही थी। मैं छत पर चढ़ गया। पॉल मेरा इंतज़ार कर रहा था, किशोरों जैसी उत्साहित मुस्कान लिए हुए।
हमारे ऊपर बेहद पतला सा चांद लटका हुआ था; बाकी सब अंधेरा था।
अचानक पॉल मेरी ओर दौड़ा, उसके चेहरे पर एक अजीब सा भाव था। जैसे ही उसका हाथ मेरी ओर बढ़ा, मुझे घबराहट का एक झोंका सा महसूस हुआ—मैंने उससे बचने के लिए अपना हाथ घुमाया, लेकिन उसने मुझे पकड़ लिया। एक पल के लिए मुझे लगा कि वह मुझे छत से नीचे फेंक देगा।
इसके बजाय उसने मुझे अपनी ओर खींच लिया। “तुम किनारे के बहुत करीब हो। यहीं बीच में रहो। यह ज्यादा सुरक्षित है।”

मैंने गहरी सांस लेते हुए सिर हिलाया। यह एक बुरा विचार था। पॉल के आसपास मुझे ज़रा भी सुरक्षित महसूस नहीं हो रहा था। मैं फिर से नीचे उतरने का सुझाव देने ही वाली थी कि उसने अपनी सिगरेट निकाली और मुझे एक सिगरेट दी। मैं हिचकिचाई, फिर मैंने ले ली।
सिगरेट जलाने के लिए लाइटर निकालते समय मेरी उंगलियां कांप रही थीं।
हम वहां थोड़ी देर चुपचाप खड़े होकर सिगरेट पीते रहे।
“हम यहीं बैठते थे। एलिसिया और मैं। लगभग हर दिन।”
"आप कितने साल के थे?"
“मैं लगभग सात या आठ साल का था। एलिसिया दस साल से ज़्यादा की नहीं रही होगी।”
"सीढ़ी चढ़ने के लिए तुम्हारी उम्र थोड़ी कम थी।"
“मुझे लगता है ऐसा ही था। हमें तो यह सामान्य लगता था। जब हम किशोर थे, तब हम यहाँ आकर सिगरेट पीते थे और बीयर पीते थे।”
मैंने एक किशोरी एलिसिया की कल्पना करने की कोशिश की, जो अपने पिता और अपनी धमकाने वाली चाची से छिप रही थी; पॉल, उसका प्यारा छोटा चचेरा भाई, सीढ़ी पर उसका पीछा कर रहा था, उसे परेशान कर रहा था जबकि वह चुप रहना, अपने विचारों के साथ अकेले रहना ज्यादा पसंद करती थी।
मैंने कहा, "यह छिपने की अच्छी जगह है।"
पॉल ने सिर हिलाया। “अंकल वर्नन सीढ़ी पर चढ़ नहीं पाए। उनका शरीर माँ की तरह बड़ा था।”
“मैं खुद भी बड़ी मुश्किल से ऊपर चढ़ पाया। वह लता तो मौत का जाल है।”
“ये आइवी नहीं, चमेली है।” पॉल ने सीढ़ी के ऊपर लिपटी हरी लताओं को देखा। “अभी फूल नहीं खिले हैं—बसंत तक नहीं। जब ये खूब खिलती हैं, तब तो इत्र जैसी खुशबू आती है।” वह एक पल के लिए किसी याद में खो गया। “अजीब बात है।”
"क्या?"
“कुछ नहीं।” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “जो बातें याद रहती हैं... मैं अभी चमेली के बारे में सोच रहा था—वह उस दिन पूरी तरह खिली हुई थी, जिस दिन हादसा हुआ था, जिस दिन ईवा की मौत हुई थी।”

मैंने चारों ओर देखा। "आपने कहा था कि आप और एलिसिया यहाँ साथ आए थे?"
उसने सिर हिलाया। “माँ और चाचा वर्नन नीचे हमारी तलाश कर रहे थे।”
हमें उनकी आवाज सुनाई दे रही थी। लेकिन हमने एक शब्द भी नहीं कहा। हम छुपते रहे।
और तभी यह घटना घटी।
उसने अपनी सिगरेट बुझाई और मुझे एक अजीब सी मुस्कान दी। "इसीलिए तो मैं तुम्हें यहाँ लाया हूँ। ताकि तुम इसे देख सको—अपराध स्थल को।"
“अपराध?”
पॉल ने कोई जवाब नहीं दिया, बस मेरी तरफ देखकर मुस्कुराता रहा।
"क्या अपराध है, पॉल?"
“वर्नन का अपराध। अंकल वर्नन अच्छे आदमी नहीं थे, आप जानते हैं। नहीं, बिलकुल भी नहीं।”
"आप क्या कहने की कोशिश कर रहे हैं?"
"तो, उसने तभी ऐसा किया।"
“क्या किया?”
"तभी उसने एलिसिया की हत्या कर दी।"
मैं पॉल को घूरता रहा, मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। "एलिसिया को मार डाला? तुम क्या कह रहे हो?"
पॉल ने नीचे ज़मीन की ओर इशारा करते हुए कहा, “अंकल वर्नन मम्मी के साथ नीचे थे। वो नशे में थे। मम्मी उन्हें अंदर वापस जाने के लिए बार-बार कह रही थीं। लेकिन वो वहीं खड़े होकर एलिसिया को पुकार रहे थे। वो उससे बहुत नाराज़ थे। बहुत गुस्से में थे।”
“क्योंकि एलिसिया छिप रही थी? लेकिन—वह तो बच्ची थी—उसकी माँ का अभी-अभी निधन हुआ था।”
“वह एक नीच और मतलबी इंसान था। उसे सिर्फ आंटी ईवा की ही परवाह थी। शायद इसीलिए उसने ऐसा कहा होगा।”
“क्या किया?” मेरा सब्र टूट रहा था। “मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम मुझसे क्या कह रहे हो। आखिर हुआ क्या?”

“वर्नन लगातार ईवा के प्रति अपने प्यार का बखान कर रहा था—कि वह उसके बिना जी नहीं सकता। ‘मेरी प्यारी,’ वह बार-बार कह रहा था, ‘मेरी बेचारी, मेरी ईवा... उसे क्यों मरना पड़ा? उसी के साथ ऐसा क्यों हुआ? एलिसिया उसकी जगह क्यों नहीं मर गई?’”
मैं एक पल के लिए पॉल को स्तब्ध होकर देखता रहा। मुझे समझ नहीं आ रहा था।
"'एलिसिया की जगह उसकी मौत क्यों नहीं हुई?'"
“उसने यही कहा था।”
“क्या एलिसिया ने यह सुना?”
“हाँ। और एलिसिया ने मेरे कान में कुछ फुसफुसाया—मैं उसे कभी नहीं भूलूँगी। उसने कहा, ‘उसने मुझे मार डाला। पिताजी ने अभी-अभी—मुझे मार डाला।’”
मैं पॉल को देखता रह गया, अवाक। मेरे दिमाग में घंटियों की गूंज सुनाई देने लगी, झनझनाहट, झंकार, गूंज। यही तो मैं खोज रहा था। आखिरकार मुझे मिल गया, पहेली का गुम हुआ टुकड़ा—कैम्ब्रिज की एक छत पर।

*

All the way back to London, I kept thinking about the implications of what I had heard. I understood now why had struck a chord with Alicia. *एल्सेस्टिस*

जिस प्रकार एडमेटस ने शारीरिक रूप से एल्सेस्टिस को मृत्युदंड दिया था, उसी प्रकार वर्नोन रोज़ ने मानसिक रूप से अपनी बेटी को मृत्युदंड दिया था। एडमेटस ने अवश्य ही
एलिसिया किसी हद तक एल्सेस्टिस से प्यार करती थी, लेकिन वर्नोन रोज़ के दिल में प्यार नहीं, सिर्फ नफरत थी। उसने मानसिक शिशुहत्या की थी—और एलिसिया यह जानती थी।
“उसने मुझे मार डाला,” उसने कहा। “पिताजी ने अभी-अभी मुझे मार डाला।”
अब आखिरकार मेरे पास कुछ ऐसा था जिस पर मैं काम कर सकता था। कुछ ऐसा जिसके बारे में मुझे जानकारी थी—

बच्चों पर मनोवैज्ञानिक घावों के भावनात्मक प्रभाव और वयस्क होने पर वे किस प्रकार प्रकट होते हैं, इस पर विचार करें। कल्पना कीजिए—अपने पिता को, जिस पर आप अपने जीवन के लिए निर्भर हैं, आपको मृत घोषित करते हुए सुनना। एक बच्चे के लिए यह कितना भयावह और आघातदायी होगा—आत्मसम्मान कैसे चकनाचूर हो जाएगा, और दर्द इतना असहनीय होगा कि आप उसे सह लेंगे, दबा लेंगे, दफना देंगे। समय के साथ आप अपने आघात के मूल कारणों से संपर्क खो देंगे, इसके मूल से नाता तोड़ लेंगे और भूल जाएंगे।

लेकिन एक दिन, सारा दर्द और गुस्सा एक अजगर के पेट से निकलने वाली आग की तरह फूट पड़ेगा—और तुम बंदूक उठा लोगी। तुम अपना क्रोध अपने पिता पर नहीं, जो मर चुके थे, भुला दिए गए थे और पहुँच से बाहर थे—बल्कि अपने पति पर, उस आदमी पर, जिसने तुम्हारे जीवन में उनकी जगह ले ली थी, जो तुमसे प्यार करता था और तुम्हारे साथ सोता था। तुम उसे सिर में पाँच गोलियाँ मारोगी, शायद बिना यह जाने कि क्यों।

ट्रेन रात भर लंदन की ओर तेज़ी से दौड़ती रही। आखिरकार, मैंने सोचा—आखिरकार मुझे पता चल गया कि उससे कैसे संपर्क करना है।

अब हम शुरू कर सकते हैं।

अध्याय नौ

मैं एलिसिया के साथ चुपचाप बैठा रहा।

मैं इन खामोशियों में बेहतर होता जा रहा था, इन्हें सहने में, इनमें रमने में और मुश्किलों का सामना करने में; उसके साथ उस छोटे से कमरे में चुपचाप बैठे रहना लगभग आरामदायक हो गया था।

एलिसिया ने अपने हाथ गोद में रखे हुए थे, और धड़कन की तरह लयबद्ध ढंग से उन्हें मुट्ठी में बंद और खोल रही थी। वह मेरी ओर मुंह करके बैठी थी, मेरी ओर नहीं देख रही थी, बल्कि खिड़की की सलाखों के पार से बाहर निहार रही थी। बारिश रुक गई थी, और बादल कुछ पल के लिए छंट गए जिससे हल्का नीला आसमान दिखाई दिया; फिर एक और बादल आ गया, जिसने उसे भूरे रंग से ढक लिया। तभी मैंने बोलना शुरू किया।

“मुझे एक बात का पता चला है। कुछ ऐसा जो तुम्हारे चचेरे भाई ने मुझे बताया था।”

मैंने यह बात यथासंभव नरमी से कही। उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, इसलिए मैं आगे बढ़ गया।
पॉल ने कहा कि जब तुम बच्चे थे, तो तुमने अपने पिता को कुछ बेहद दुखद कहते हुए सुना था। तुम्हारी माँ की मृत्यु वाले कार हादसे के बाद...
आपने उसे यह कहते हुए सुना कि वह चाहता था कि उसकी जगह आपकी मृत्यु हो गई होती।"
मुझे पूरा यकीन था कि कोई न कोई शारीरिक प्रतिक्रिया जरूर होगी, किसी न किसी तरह की स्वीकृति जरूर मिलेगी। मैंने इंतजार किया, लेकिन कुछ नहीं हुआ।
मुझे आश्चर्य है कि पॉल द्वारा मुझे यह बताने पर आपको कैसा महसूस हुआ होगा—यह विश्वासघात जैसा लग सकता है। लेकिन मुझे विश्वास है कि उसने आपके भले के लिए ही ऐसा किया। आखिरकार, आप मेरी देखरेख में हैं।
कोई जवाब नहीं मिला। मैं हिचकिचाया।
“अगर मैं तुम्हें कुछ बताऊँ तो शायद तुम्हें मदद मिले। नहीं—शायद यह बेईमानी होगी—शायद मुझे ही मदद मिले। सच तो यह है कि मैं तुम्हें जितना तुम सोचते हो उससे कहीं बेहतर समझता हूँ। ज़्यादा कुछ बताए बिना, हम दोनों का बचपन एक जैसा था, हमारे पिता भी एक जैसे थे। और हम दोनों ही जैसे-जैसे बड़े हुए, घर से निकल गए। लेकिन जल्द ही हमें पता चल गया कि
मन की दुनिया में भौगोलिक दूरी का कोई महत्व नहीं होता। कुछ चीजें इतनी आसानी से पीछे नहीं छूटतीं। मैं जानता हूँ कि आपका बचपन कितना कष्टदायक था। यह समझना आपके लिए बहुत ज़रूरी है कि यह कितना गंभीर मामला है। आपके पिता ने जो कहा वह मानसिक हत्या के समान है। उन्होंने आपको मार डाला।
इस बार उसने प्रतिक्रिया दी।
उसने अचानक ऊपर देखा—सीधे मेरी ओर। उसकी आँखें मानो मुझे भेद रही थीं। अगर नज़रें जान ले सकतीं, तो मैं मर ही जाता। मैंने बिना पलक झपकाए उसकी जानलेवा निगाहों का सामना किया।
“एलिसिया। यह हमारा आखिरी मौका है। मैं प्रोफेसर डायोमेडेस की जानकारी या अनुमति के बिना यहाँ बैठा हूँ। अगर मैं तुम्हारे लिए इस तरह नियम तोड़ता रहा, तो

मुझे नौकरी से निकाल दिया जाएगा। इसीलिए यह आखिरी बार होगा जब तुम मुझे देखोगी। समझी?"
मैंने ये बात बिना किसी उम्मीद या भावना के कही, मैं पूरी तरह से निराश और हताश था। मैं अपना सिर दीवार से टकराते-टकराते थक गया था। मुझे किसी भी तरह की प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं थी। और फिर...
पहले तो मुझे लगा कि ये सब मेरा वहम है। मुझे लगा कि मैं कुछ गलत सुन रहा हूँ। मैं साँस रोककर उसे देखता रहा। मुझे लगा जैसे मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा हो। बोलते समय मेरा मुँह सूख रहा था।
"क्या तुमने अभी-अभी कुछ कहा?"
फिर सन्नाटा छा गया। मुझसे जरूर कोई गलती हुई होगी। मैंने शायद कल्पना ही की होगी।
लेकिन फिर... ऐसा दोबारा हुआ।
एलिसिया के होंठ धीरे-धीरे, दर्द से हिले; उसकी आवाज निकलते समय थोड़ी लड़खड़ा गई, जैसे कोई चरमराता हुआ गेट जिसे तेल लगाने की जरूरत हो।
"क्या..." उसने फुसफुसाते हुए कहा। फिर वह रुक गई। और फिर बोली: "क्या... क्या"

—"

एक पल के लिए हम एक-दूसरे को देखते रह गए। मेरी आँखों में धीरे-धीरे आँसू भर आए—अविश्वास, उत्साह और कृतज्ञता के आँसू।
"मैं क्या चाहती हूँ? मैं चाहती हूँ कि तुम बोलती रहो... बोलो—मुझसे बात करो, एलिसिया।"

—"

एलिसिया मुझे घूर रही थी। वह कुछ सोच रही थी। उसने एक फैसला लिया।
उसने धीरे से सिर हिलाया। "ठीक है।"
अध्याय दस
"उसने क्या कहा?"

प्रोफेसर डायोमेडेस ने हैरानी भरी निगाहों से मेरी ओर देखा। हम बाहर सिगरेट पी रहे थे। मैं समझ गया था कि वह उत्साहित थे क्योंकि उन्होंने बिना ध्यान दिए ही अपनी सिगार ज़मीन पर गिरा दी थी। "क्या उसने बात की? एलिसिया ने सचमुच बात की?"
"उसने किया।"
“अविश्वसनीय। तो आप सही थे। आप सही थे। और मैं गलत था।”
“बिल्कुल नहीं। प्रोफेसर, आपकी अनुमति के बिना उनसे मिलना मेरी गलती थी। मुझे खेद है, मुझे बस एक सहज ज्ञान हुआ था...”
डायोमेडेस ने मेरी माफी को अनसुना कर दिया और मेरे वाक्य को मेरे लिए पूरा कर दिया।
“तुमने अपने मन की सुनी। मैं भी यही करता, थियो। शाबाश।”
मैं बहुत ज्यादा जश्न मनाने को तैयार नहीं था। “हमें अभी से ही सब कुछ तय मान लेना नहीं चाहिए। यह एक बड़ी सफलता है, हाँ। लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं है—वह किसी भी समय पहले जैसी स्थिति में लौट सकती है या फिर बिगड़ सकती है।”
डायोमेडेस ने सिर हिलाया। "बिल्कुल सही। हमें जल्द से जल्द एक औपचारिक समीक्षा आयोजित करनी चाहिए और एलिसिया का साक्षात्कार लेना चाहिए—उसे एक पैनल के सामने लाना चाहिए—तुम, मैं और ट्रस्ट का कोई सदस्य—जूलियन ठीक रहेगा, वह काफी हद तक हानिरहित है—"
“तुम बहुत जल्दी कर रहे हो। तुम मेरी बात नहीं सुन रहे हो। अभी बहुत जल्दी है।”
ऐसी कोई भी बात उसे डरा देगी। हमें धीरे-धीरे आगे बढ़ना होगा।
“खैर, यह महत्वपूर्ण है कि ट्रस्ट को पता चले—”
“नहीं, अभी नहीं। शायद यह एक बार की घटना थी। चलिए इंतजार करते हैं। अभी कोई घोषणा नहीं करते। अभी नहीं।”
डायोमेडेस ने मेरी बात सुनकर सिर हिलाया। फिर उसने मेरा कंधा थाम लिया और उसे थाम लिया। "शाबाश! मुझे तुम पर गर्व है।"
मुझे थोड़ा गर्व महसूस हुआ—एक बेटे को उसके पिता से बधाई मिली हो। मैं डायोमेडेस को प्रसन्न करने, मुझ पर उनके विश्वास को सही ठहराने और उन्हें संतुष्ट करने की अपनी इच्छा से अवगत था।

उसे गर्व महसूस हुआ। मैं थोड़ा भावुक हो गया। मैंने इसे छिपाने के लिए सिगरेट जला ली। "अब क्या?"
“अब आप आगे बढ़ते रहिए। एलिसिया के साथ काम करते रहिए।”
और अगर स्टेफ़नी को पता चल जाए तो?
"स्टेफ़नी को भूल जाओ—उसे मेरे भरोसे छोड़ दो। तुम एलिसिया पर ध्यान दो।"
और मैंने वैसा ही किया।

*

During our next session, Alicia and I talked nonstop. Or rather, Alicia talked and I listened. Listening to Alicia was an unfamiliar and somewhat disconcerting experience, after so much silence. She spoke hesitantly at first, tentatively—trying to walk on legs that hadn’t been used in a while.

वह जल्द ही संभल गई, उसकी बोलने की गति और फुर्ती बढ़ती गई, वह वाक्यों को इस तरह बोलती थी मानो वह कभी चुप ही न रही हो, और एक तरह से देखा जाए तो वह चुप भी नहीं रही थी।
सत्र समाप्त होने पर मैं अपने कार्यालय गया। मैं डेस्क पर बैठा और जो कुछ कहा गया था उसे तुरंत लिख लिया, क्योंकि वह सब मेरे दिमाग में ताजा था। मैंने हर बात को शब्द-दर-शब्द लिख डाला, जितना संभव हो सके सटीक और सही ढंग से लिखने की कोशिश की।
जैसा कि आप देखेंगे, यह एक अविश्वसनीय कहानी है - इसमें कोई संदेह नहीं है।
आप इस पर विश्वास करते हैं या नहीं, यह पूरी तरह आप पर निर्भर है।
अध्याय ग्यारह
एलिसिया थेरेपी रूम में मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई।
“शुरू करने से पहले, मेरे पास आपके लिए कुछ प्रश्न हैं। कुछ बातें हैं जिन्हें मैं स्पष्ट करना चाहूंगा...”
कोई जवाब नहीं। एलिसिया ने अपनी उस रहस्यमयी नज़र से मेरी तरफ देखा।

"खास तौर पर, मैं आपकी चुप्पी को समझना चाहता हूं। मैं जानना चाहता हूं कि आपने बोलने से इनकार क्यों किया।"
एलिसिया सवाल से निराश लग रही थी। वह मुड़ी और खिड़की से बाहर देखने लगी।
हम लगभग एक मिनट तक चुपचाप बैठे रहे। मैंने अपने अंदर उमड़ रही बेचैनी को काबू में रखने की कोशिश की। क्या यह सफलता अस्थायी थी? क्या अब हम पहले की तरह ही आगे बढ़ेंगे? मैं ऐसा होने नहीं दे सकता था।
“एलिसिया, मुझे पता है यह मुश्किल है। लेकिन एक बार जब तुम मुझसे बात करना शुरू कर दोगी, तो तुम्हें यह आसान लगेगा, मैं वादा करती हूँ।”
कोई जबाव नहीं।
“कोशिश करो। कृपया। इतनी प्रगति करने के बाद हार मत मानो। आगे बढ़ते रहो। मुझे बताओ... मुझे बताओ कि तुम क्यों नहीं बोल रहे थे।”
एलिसिया पीछे मुड़ी और ठंडी निगाहों से मुझे घूरने लगी। उसने धीमी आवाज़ में कहा:
"कुछ नहीं... कहने को कुछ नहीं है।"
मुझे इस बात पर यकीन नहीं है। मुझे लगता है कि बहुत कुछ कहा जा चुका है।
एक पल का विराम। कंधे उचकाना। "शायद। शायद... आप सही हैं।"
"जारी रखें।"
वह हिचकिचाई। “शुरुआत में, जब गैब्रियल... जब वह मर गया—मैं बोल नहीं पाई, मैंने कोशिश की... लेकिन मैं बोल नहीं पाई। मैंने अपना मुंह खोला—पर कोई आवाज़ नहीं निकली। जैसे सपने में... जहाँ आप चीखने की कोशिश करते हैं... लेकिन चीख नहीं पाते।”
“आप सदमे की स्थिति में थे। लेकिन अगले कुछ दिनों में, आपकी आवाज़ वापस लौट आई होगी...?”
“तब तक... यह सब व्यर्थ लग रहा था। बहुत देर हो चुकी थी।”
“क्या अब बहुत देर हो चुकी है? अपने बचाव में बोलने के लिए?”
एलिसिया ने मुझे अपनी निगाहों में थामे रखा, उसके होठों पर एक रहस्यमयी मुस्कान थी। उसने कुछ नहीं कहा।
मुझे बताओ तुमने दोबारा बोलना क्यों शुरू किया।

आपको जवाब पता है।
क्या मैं ऐसा करता हूँ?
"तुम्हारे कारण।"
“मैं?” मैंने हैरानी से उसकी तरफ देखा।
"क्योंकि तुम यहाँ आए हो।"
“और इससे कोई फर्क पड़ा?”
“सारा फर्क—इससे... सारा फर्क पड़ गया।” एलिसिया ने अपनी आवाज़ धीमी की और बिना पलक झपकाए मुझे घूरने लगी। “मैं चाहती हूँ कि तुम समझो—मेरे साथ क्या हुआ। मुझे कैसा लगा। यह ज़रूरी है... कि तुम समझो।”
“मैं समझना चाहता हूँ। इसीलिए तो तुमने मुझे डायरी दी थी, है ना?”
क्योंकि आप चाहते हैं कि मैं समझूँ। मुझे लगता है कि आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण लोगों ने उस आदमी के बारे में आपकी कहानी पर विश्वास नहीं किया। शायद आप सोच रहे हैं... कि क्या मैं आप पर विश्वास करूँ।
“तुम मुझ पर विश्वास करो।” यह कोई प्रश्न नहीं था, बल्कि एक सीधा-सादा तथ्यात्मक कथन था।
मैंने सिर हिलाया। “हाँ, मुझे आपकी बात पर यकीन है। तो चलिए वहीं से शुरू करते हैं? आपकी डायरी में आखिरी बार आपने घर में घुसने वाले आदमी का ज़िक्र किया था। उसके बाद क्या हुआ?”
"कुछ नहीं।"
"कुछ नहीं?"
उसने सिर हिलाया। "वह नहीं था।"
“क्या वो नहीं था? तो फिर कौन था?”
“वह जीन-फेलिक्स थे। वह प्रदर्शनी के बारे में बात करने आए थे।”
"आपकी डायरी को देखकर ऐसा लगता है कि आप आगंतुकों के लिए सही मानसिक स्थिति में नहीं थे।"
एलिसिया ने कंधे उचकाकर इस बात को स्वीकार किया।
"क्या वह लंबे समय तक रुका?"

“नहीं। मैंने उसे जाने के लिए कहा था। वह जाना नहीं चाहता था—वह नाराज़ था। उसने मुझ पर थोड़ा चिल्लाया—लेकिन थोड़ी देर बाद वह चला गया।”
“और फिर? जीन-फेलिक्स के जाने के बाद क्या हुआ?”
एलिसिया ने सिर हिलाया। "मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहती।"
"नहीं?"
"अभी तक नहीं।"
एलिसिया की निगाहें एक पल के लिए मेरी निगाहों से मिलीं। फिर उनकी नज़रें खिड़की की ओर घूम गईं, सलाखों के पार अंधेरा होते आसमान को निहारते हुए। जिस तरह से वह अपना सिर झुका रही थी, उसमें एक तरह की चंचलता थी, और उसके होंठों के कोने पर हल्की सी मुस्कान पनप रही थी। मैंने सोचा, वह इसका आनंद ले रही है। मुझे अपने वश में रखना।
मैंने पूछा, "आप किस बारे में बात करना चाहते हैं?"
मुझे नहीं पता। कुछ भी नहीं। मैं बस बात करना चाहता हूँ।
तो हमने बातें कीं। हमने लिडिया और पॉल के बारे में, उसकी माँ के बारे में, और उस गर्मी के बारे में बात की जब उसकी माँ का निधन हुआ था। हमने एलिसिया के बचपन के बारे में बात की—और मेरे बचपन के बारे में भी। मैंने उसे अपने पिता के बारे में और उस घर में बड़े होने के बारे में बताया; वह मेरे अतीत के बारे में और मुझे आकार देने और मुझे आज जैसा बनाने वाले कारकों के बारे में जितना हो सके जानने के लिए उत्सुक लग रही थी।
मुझे याद है मैंने सोचा था, अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं है। हम चिकित्सक और रोगी के बीच की हर सीमा को तोड़ते जा रहे थे। जल्द ही यह बताना असंभव हो जाएगा कि कौन कौन है।
अध्याय बारह
अगली सुबह, हम फिर मिले। उस दिन एलिसिया कुछ अलग लग रही थी—अधिक शांत, अधिक सतर्क। मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए था क्योंकि वह गैब्रियल की मृत्यु वाले दिन के बारे में बात करने के लिए खुद को तैयार कर रही थी।
वह मेरे सामने बैठी और, अपने स्वभाव के विपरीत, सीधे मेरी ओर देखने लगी और लगातार मुझसे नज़रें मिलाए रखीं। बिना किसी के कहे ही उसने बोलना शुरू कर

दिया; धीरे-धीरे, सोच-समझकर, हर वाक्य को सावधानी से चुनते हुए, मानो किसी कैनवास पर ब्रश चला रही हो।
“उस दोपहर मैं अकेली थी। मुझे पता था कि मुझे पेंटिंग करनी है, लेकिन इतनी गर्मी थी कि मुझे नहीं लगता था कि मैं यह कर पाऊंगी। लेकिन मैंने कोशिश करने का फैसला किया। इसलिए मैंने जो छोटा पंखा खरीदा था, उसे लेकर बगीचे में बने स्टूडियो में गई, और फिर...”
"और तब?"
“मेरा फोन बजा। गैब्रियल का फोन था। वह यह बताने के लिए फोन कर रहा था कि वह शूटिंग से देर से वापस आएगा।”
“क्या वह आमतौर पर ऐसा करता था? देर होने की सूचना देने के लिए फोन करता था?”
एलिसिया ने मुझे अजीब नज़र से देखा, मानो उसे यह सवाल अजीब लगा हो। उसने सिर हिलाया। "नहीं। क्यों?"
मुझे लगा कि शायद वह किसी और वजह से फोन कर रहा हो। यह जानने के लिए कि तुम कैसी हो? तुम्हारी डायरी से तो ऐसा लगता है कि वह तुम्हारी मानसिक स्थिति को लेकर चिंतित था।
“ओह।” एलिसिया ने हैरानी से इस पर विचार किया। उसने धीरे से सिर हिलाया। “मैं समझ गई। हाँ, हाँ, शायद...”
मुझे माफ़ करना—मैंने आपको बीच में रोक दिया। आगे बोलिए। फ़ोन कॉल के बाद क्या हुआ?
एलिसिया हिचकिचाई। "मैंने उसे देखा था।"
"उसे?"
“वो आदमी। मेरा मतलब है, मैंने उसकी परछाई देखी। खिड़की में परछाई दिख रही थी। वो अंदर था—स्टूडियो के अंदर। मेरे ठीक पीछे खड़ा था।”
एलिसिया ने अपनी आँखें बंद कर लीं और एकदम शांत बैठी रही। काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा।
मैंने नरमी से कहा, “क्या आप उसका वर्णन कर सकते हैं? वह कैसा दिखता था?”
उसने अपनी आँखें खोलीं और एक पल के लिए मेरी तरफ देखा। “वह लंबा था...”

मजबूत। मैं उसका चेहरा नहीं देख पा रहा था—उसने एक मुखौटा पहन रखा था, एक काला मुखौटा। लेकिन मैं उसकी आँखें देख सकता था—वे गहरे गड्ढों जैसी थीं। उनमें ज़रा भी रोशनी नहीं थी।

"जब आपने उसे देखा तो आपने क्या किया?"

“कुछ नहीं। मैं बहुत डरी हुई थी। मैं उसे देखती रही। उसके हाथ में चाकू था। मैंने पूछा कि उसे क्या चाहिए। उसने कुछ नहीं कहा। मैंने कहा कि मेरे पास रसोई में, मेरे बैग में पैसे हैं। उसने सिर हिलाकर कहा, ‘मुझे पैसे नहीं चाहिए।’ और वह हँसने लगा। एक भयानक हँसी, जैसे कांच टूट रहा हो। उसने चाकू मेरी गर्दन पर रख दिया। चाकू का नुकीला सिरा मेरे गले पर, मेरी त्वचा पर था... उसने मुझे घर के अंदर चलने को कहा।”

एलिसिया को वह घटना याद आते ही उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। “वह मुझे स्टूडियो से बाहर लॉन में ले गया। हम घर की ओर चलने लगे। मुझे गली का गेट दिखाई दे रहा था, बस कुछ ही मीटर दूर—मैं उसके बहुत करीब थी... और तभी मेरे अंदर कुछ हुआ। यही—यही मेरे बचने का एकमात्र मौका था। इसलिए मैंने उसे ज़ोर से लात मारी और उससे छूटकर भाग गई। और मैं भागी। मैं गेट की ओर भागी।”

उसकी आँखें खुलीं और वह उस याद को याद करके मुस्कुराई। “कुछ पलों के लिए, मैं आज़ाद थी।”

उसकी मुस्कान फीकी पड़ गई।

फिर वो मुझ पर कूद पड़ा। मेरी पीठ पर। हम ज़मीन पर गिर पड़े... उसका हाथ मेरे मुंह पर था, और मुझे अपनी गर्दन पर ठंडी धारदार चीज़ का एहसास हुआ। उसने कहा कि अगर मैं हिली तो वो मुझे मार डालेगा। हम कुछ पल वहीं पड़े रहे, और मुझे उसके सांसों की बदबू अपने चेहरे पर महसूस हुई। फिर उसने मुझे उठाया और घसीटते हुए घर के अंदर ले गया।

“और फिर? क्या हुआ?”

“उसने दरवाजा बंद कर दिया। और मैं अंदर फंस गया।”

एलिसिया की सांसें तेज़ चल रही थीं और उसके गाल लाल हो गए थे। मुझे चिंता हो रही थी कि वह परेशान हो रही है, और मैं उसे ज़्यादा परेशान करने से हिचकिचा रही थी।

क्या आपको आराम की जरूरत है?
उसने सिर हिलाया। “चलिए आगे बढ़ते हैं। मैंने यह बात कहने के लिए बहुत लंबा इंतजार किया है। मैं इसे जल्द से जल्द खत्म करना चाहती हूं।”
“क्या आप निश्चित हैं? एक पल रुकना शायद अच्छा रहेगा।”
वह हिचकिचाई। "क्या मुझे एक सिगरेट मिल सकती है?"
“सिगरेट? मुझे तो पता ही नहीं था कि तुम सिगरेट पीते हो।”
“मैं नहीं जानता। मैं—मैं पहले जानता था। क्या आप मुझे एक दे सकते हैं?”
"आपको कैसे पता चला कि मैं सिगरेट पीता हूँ?"
मुझे तुममें इसकी गंध आ रही है।
“ओह।” मैं थोड़ा शर्मिंदा होते हुए मुस्कुराई। “ठीक है।” मैं खड़ी हो गई। “चलो बाहर चलते हैं।”
अध्याय तेरह
आंगन मरीजों से भरा हुआ था। वे अपने-अपने समूहों में huddled होकर गपशप कर रहे थे, बहस कर रहे थे, धूम्रपान कर रहे थे; कुछ लोग ठंड से बचने के लिए खुद को गले लगा रहे थे और पैर पटक रहे थे।
एलिसिया ने अपनी लंबी पतली उंगलियों के बीच एक सिगरेट पकड़ी और उसे होठों से लगाया। मैंने उसके लिए सिगरेट जलाई। जैसे ही लौ सिगरेट के सिरे तक पहुंची, वह चटकने लगी और लाल रंग से चमक उठी। उसने गहरी सांस ली, उसकी निगाहें मेरी निगाहों पर टिकी थीं। वह लगभग मुस्कुरा रही थी।
“क्या आप सिगरेट नहीं पिएंगे? या यह अनुचित होगा? किसी मरीज के साथ सिगरेट साझा करना?”
मैंने सोचा, वह मेरा मजाक उड़ा रही है। लेकिन वह सही थी—ऐसा कोई नियम नहीं था जो किसी कर्मचारी और मरीज को एक साथ सिगरेट पीने से रोकता हो।
लेकिन अगर स्टाफ के लोग सिगरेट पीते भी थे, तो वे छुपकर पीते थे, इमारत के पीछे बने आग से बचने वाले रास्ते पर छिपकर। वे निश्चित रूप से मरीजों के सामने ऐसा नहीं करते थे। यहाँ आँगन में खड़े होकर उसके साथ सिगरेट पीना मुझे एक तरह का गुनाह लग रहा था। शायद मैं यह सब सोच रही थी, लेकिन मुझे लगा कि कोई हमें देख रहा है। मुझे लगा कि क्रिश्चियन खिड़की से हम पर नज़र रख रहा है। उसके शब्द मुझे

याद आ गए: "बॉर्डरलाइन पर्सनैलिटी डिसऑर्डर वाले लोग बहुत लुभावने होते हैं।"
मैंने एलिसिया की आँखों में देखा।
उनकी निगाहें मोहक नहीं थीं; उनमें दोस्ताना भाव भी नहीं था। उन आँखों के पीछे एक तेज दिमाग छिपा था, एक ऐसी तीक्ष्ण बुद्धि जो अभी-अभी जागृत हो रही थी। एलिसिया बेरेंसन एक ऐसी शख्सियत थीं जिनसे मुकाबला करना आसान नहीं था। अब मुझे यह बात समझ में आ गई थी।
शायद इसीलिए क्रिश्चियन को उसे बेहोश करने की ज़रूरत महसूस हुई थी। क्या वह इस बात से डरा हुआ था कि वह क्या कर सकती है—क्या कह सकती है? मुझे भी उससे थोड़ा डर लग रहा था; बिल्कुल डरा हुआ तो नहीं—लेकिन सतर्क, आशंकित। मुझे पता था कि मुझे संभलकर चलना होगा।
मैंने कहा, "क्यों नहीं? मैं भी एक ले लूंगा।"
मैंने मुंह में सिगरेट डाली और उसे जलाया। हम कुछ पल चुपचाप एक-दूसरे से नज़रें मिलाए बैठे रहे, बस कुछ ही इंच की दूरी पर। फिर अचानक मुझे किशोरावस्था की एक अजीब सी शर्मिंदगी महसूस हुई और मैंने नज़रें हटा लीं। मैंने आंगन की ओर इशारा करके इसे छिपाने की कोशिश की।
"क्या हम चलते-चलते बातें करें?"
एलिसिया ने सिर हिलाया। "ठीक है।"
हम दीवार के चारों ओर, आंगन की परिधि के साथ-साथ चलने लगे। बाकी मरीज़ हमें देख रहे थे। मैं सोच रहा था कि वे क्या सोच रहे होंगे। एलिसिया को कोई परवाह नहीं थी। ऐसा लग रहा था मानो उसने उन्हें देखा ही न हो।
हम कुछ देर तक चुपचाप चलते रहे।
अंततः उसने कहा, "क्या आप चाहते हैं कि मैं बोलना जारी रखूँ?"
“अगर आप चाहें तो, हाँ... क्या आप तैयार हैं?”
एलिसिया ने सिर हिलाया। "हाँ, मैं हूँ।"
"घर के अंदर जाने के बाद क्या हुआ?"
“उस आदमी ने कहा... उसने कहा कि उसे कुछ पीना है। तो मैंने उसे गैब्रियल की एक बियर दे दी। मैं बियर नहीं पीता। मेरे घर में और कुछ नहीं था।”
"और तब?"

"वो बोला।"
"किस बारे में?"
मुझे याद नहीं है।
“क्या आप नहीं जानते?”
"नहीं।"
वह एकदम चुप हो गई।
मैंने जितना हो सके इंतजार किया और फिर उससे कहा, "चलो चलते रहें।"
आप रसोई में थे। आपको कैसा लग रहा था?
"मुझे... मुझे कुछ भी महसूस होने की याद नहीं है।"
मैंने सिर हिलाया। “ऐसी स्थितियों में यह असामान्य नहीं है। यह केवल भागने या लड़ने की प्रतिक्रिया का मामला नहीं है। हमले के समय एक तीसरी, उतनी ही आम प्रतिक्रिया होती है—हम जम जाते हैं।”
मुझे ठंड नहीं लगी।
"नहीं?"
“नहीं।” उसने मुझे गुस्से भरी निगाहों से देखा। “मैं खुद को तैयार कर रही थी। मैं तैयार हो रही थी... लड़ने के लिए तैयार। उसे जान से मारने के लिए तैयार।”
“मैं समझ गया। और आप ऐसा कैसे करने का इरादा रखते थे?”
“गैब्रियल की बंदूक। मुझे पता था कि मुझे बंदूक तक पहुंचना ही होगा।”
“क्या वो रसोई में था? तुमने उसे वहाँ रखा था? तुमने डायरी में यही लिखा था।”
एलिसिया ने सिर हिलाया। "हाँ, खिड़की के पास वाली अलमारी में।" उसने गहरी साँस ली और धुएँ की एक लंबी लकीर छोड़ी। "मैंने उससे कहा कि मुझे थोड़ा पानी चाहिए।"
मैं एक गिलास लेने गई। मैं रसोई के उस पार गई—कुछ कदम चलने में ही मुझे बहुत समय लग गया। धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए मैं अलमारी तक पहुँची। मेरा हाथ काँप रहा था... मैंने उसे खोला...
"और?"
“अलमारी खाली थी। बंदूक गायब थी। और फिर मैंने उसे कहते सुना,

“ग्लास आपके दाहिनी ओर वाली अलमारी में हैं।” मैं मुड़ा और देखा कि बंदूक उसके हाथ में थी। वह बंदूक मेरी ओर ताने हुए हंस रहा था।
"और तब?"
"तब?"
तुम क्या सोच रहे थे?
"मेरे पास भागने का यही आखिरी मौका था, और अब—अब वह मुझे मारने वाला था।"
"क्या आपको विश्वास था कि वह आपको मार डालेगा?"
मुझे पता था कि वह ऐसा ही है।
लेकिन फिर उसने देरी क्यों की? घर में घुसते ही उसने ऐसा क्यों नहीं किया?
एलिसिया ने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने उसकी तरफ देखा। मुझे आश्चर्य हुआ कि उसके होंठों पर मुस्कान थी।
“जब मैं छोटी थी, तब आंटी लिडिया के पास एक बिल्ली का बच्चा था। एक धारीदार बिल्ली। मुझे वह ज्यादा पसंद नहीं थी। वह जंगली थी, और कभी-कभी वह अपने पंजों से मुझ पर हमला कर देती थी।”
वह निर्दयी और क्रूर थी।
“क्या जानवर सहज प्रवृत्ति से काम नहीं करते? क्या वे क्रूर हो सकते हैं?”
एलिसिया ने मुझे गौर से देखा। “वे क्रूर हो सकते हैं। वह थी। वह खेत से चीजें लाती थी —चूहे या छोटे पक्षी जिन्हें उसने पकड़ा होता था। और वे हमेशा अधमरे होते थे। घायल, लेकिन जीवित। वह उन्हें उसी हालत में रखती और उनके साथ खेलती थी।”
“मैं समझ गया। ऐसा लगता है कि आप कह रही हैं कि आप इस आदमी का शिकार थीं? कि वह आपके साथ किसी तरह का क्रूर खेल खेल रहा था। क्या यह सही है?”
एलिसिया ने अपनी सिगरेट का आखिरी सिरा जमीन पर गिरा दिया और उस पर पैर रख दिया।
मुझे एक और दो।
मैंने उसे सिगरेट का पैकेट पकड़ा दिया। उसने एक सिगरेट ली और खुद ही जला ली। उसने कुछ देर तक सिगरेट पी। “गैब्रियल आठ बजे घर आने वाला था। दो घंटे और। मैं घड़ी को देखती रही। ‘क्या बात है?’ उसने कहा। ‘क्या तुम्हें मेरे साथ समय

बिताना अच्छा नहीं लगता?' और उसने बंदूक से मेरी त्वचा को सहलाया, उसे मेरी बांह पर ऊपर-नीचे फेरा।" वह उस याद से कांप उठी। "मैंने कहा कि गैब्रियल किसी भी मिनट घर आने वाला है। 'और फिर क्या?' उसने पूछा। 'क्या वह तुम्हें बचाएगा?'"
"और आपने क्या कहा?"
"मैंने कुछ नहीं कहा। मैं बस घड़ी को घूरता रहा... और फिर मेरा फोन बज उठा। गैब्रियल का फोन था। उसने मुझे फोन उठाने को कहा। उसने बंदूक मेरे सिर पर तान दी।"
"और? गेब्रियल ने क्या कहा?"
"उन्होंने कहा... उन्होंने कहा कि शूटिंग एक बुरे सपने में बदल रही है, इसलिए मुझे उनके बिना ही खाना खा लेना चाहिए। वे कम से कम दस बजे तक वापस नहीं आएंगे।"
मैंने फोन काट दिया। मैंने कहा, 'मेरे पति घर आ रहे हैं। कुछ ही मिनटों में आ जाएँगे। आपको अभी जाना चाहिए, इससे पहले कि वे वापस आ जाएँ।' वह आदमी बस हँस पड़ा।
'लेकिन मैंने उसे कहते सुना कि वह दस बजे तक वापस नहीं आएगा,' उसने कहा। 'हमारे पास काफी समय है। मुझे कुछ रस्सी लाओ,' उसने कहा, 'या टेप या कुछ और। मैं तुम्हें बांधना चाहता हूँ।'
मैंने वही किया जो उसने कहा था। मुझे पता था कि अब कोई उम्मीद नहीं है। मुझे पता था कि इसका अंत कैसे होगा।
एलिसिया ने बोलना बंद कर दिया और मेरी तरफ देखा। उसकी आँखों में मुझे गहरी भावनाएँ दिखाई दे रही थीं। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या मैं उस पर कुछ ज़्यादा ही दबाव डाल रही थी।
"शायद हमें थोड़ा आराम करना चाहिए।"
नहीं, मुझे इसे खत्म करना है। मुझे यह करना ही होगा।
वह अब और तेज़ी से बोलने लगी। "मेरे पास रस्सी नहीं थी, इसलिए उसने कैनवास टांगने के लिए मेरे पास जो तार था, वही ले लिया। उसने मुझे बैठक में भेजा। उसने खाने की मेज से एक सीधी कुर्सी खींची। उसने मुझे बैठने को कहा। उसने मेरे टखनों के चारों ओर तार लपेटना शुरू कर दिया, मुझे कुर्सी से बांध दिया। मुझे महसूस हो

रहा था कि तार मुझे काट रहा है। 'कृपया,' मैंने कहा, 'कृपया—' लेकिन उसने मेरी बात नहीं सुनी। उसने मेरी कलाइयों को पीछे की ओर बांध दिया। तब मुझे यकीन हो गया था कि वह मुझे मार डालेगा। काश... काश उसने मार ही डाला होता।"
उसने ये बात गुस्से में कही। मैं उसकी उग्रता देखकर चौंक गया।
आप ऐसा क्यों चाहते हैं?
क्योंकि उसने जो किया वह और भी बुरा था।
एक पल के लिए मुझे लगा कि एलिसिया रोने वाली है। मुझे उसे गले लगाने, अपनी बाहों में लेने, चूमने, उसे दिलासा देने, उसे सुरक्षित होने का आश्वासन देने की तीव्र इच्छा हुई, लेकिन मैंने खुद को रोका। मैंने लाल ईंट की दीवार पर अपनी सिगरेट बुझा दी।
मुझे लगता है कि तुम्हें देखभाल की ज़रूरत है। मुझे तुम्हारी देखभाल करने की इच्छा होती है, एलिसिया।
"नहीं।" उसने दृढ़ता से सिर हिलाया। "मैं तुमसे यह नहीं चाहती।"
"आप क्या चाहते हैं?"
एलिसिया ने कोई जवाब नहीं दिया। वह मुड़ी और वापस अंदर चली गई।
अध्याय चौदह
मैंने थेरेपी रूम की लाइट जलाई और दरवाजा बंद कर दिया। जब मैं मुड़ी, तो एलिसिया पहले ही बैठ चुकी थी—लेकिन अपनी कुर्सी पर नहीं। वह मेरी कुर्सी पर बैठी थी।
आम तौर पर मैं उसके इस इशारे का मतलब उससे जानने की कोशिश करता। लेकिन अब मैंने कुछ नहीं कहा। अगर मेरी कुर्सी पर बैठना इस बात का संकेत था कि वह हावी है—तो हाँ, वह थी। अब जब हम उसकी कहानी के इतने करीब थे, तो मैं उसे सुनने के लिए बेचैन था। इसलिए मैं बस बैठ गया और उसके बोलने का इंतज़ार करने लगा। उसने अपनी आँखें आधी बंद कर लीं और एकदम शांत बैठी रही।
अंततः उसने कहा, "मैं कुर्सी से बंधी हुई थी, और हर बार जब मैं छटपटाती, तो तार मेरे पैरों में और गहरा कटता जाता, और उनमें से खून बहने लगता। अपने विचारों के बजाय कटने पर ध्यान केंद्रित करना एक राहत की बात थी। मेरे विचार बहुत डरावने थे..."

मुझे लगा कि मैं गैब्रियल को फिर कभी नहीं देख पाऊँगी। मुझे लगा कि मैं मरने वाली हूँ।

“आगे क्या हुआ?”

“हम वहाँ बैठे रहे, मानो अनंत काल तक। अजीब बात है। मैंने हमेशा डर को एक ठंडी अनुभूति समझा है, लेकिन ऐसा नहीं है—यह आग की तरह जलता है। खिड़कियाँ बंद और पर्दे लगे होने के बावजूद उस कमरे में बहुत गर्मी थी। फिर भी, घुटन भरी, भारी हवा थी। पसीने की बूँदें मेरे माथे से टपक कर मेरी आँखों में जा रही थीं, जिससे उनमें जलन हो रही थी। मुझे उससे शराब की गंध आ रही थी और उसके पसीने की बदबू भी, जब वह पी रहा था और बातें कर रहा था—वह लगातार बातें करता रहा। मैंने उसकी बहुत सी बातें नहीं सुनीं। मुझे एक मोटी मक्खी की भिनभिनाहट सुनाई दे रही थी, जो पर्दे और खिड़की के बीच में फँसी हुई थी और शीशे से टकरा रही थी, धड़, धड़, धड़।

उसने मुझसे और गैब्रियल से जुड़े सवाल पूछे—हम कैसे मिले, कितने समय से साथ थे, क्या हम खुश थे। मैंने सोचा कि अगर मैं उसे बातें करने में व्यस्त रखूँ, तो मेरे जीवित रहने की संभावना बढ़ जाएगी। इसलिए मैंने उसके सवालों के जवाब दिए—मेरे बारे में, गैब्रियल के बारे में, मेरे काम के बारे में। मैंने हर वो बात की जो वो चाहता था। बस समय बिताने के लिए।

मैं लगातार घड़ी पर नज़र गड़ाए बैठी रही। उसकी टिक-टिक सुनती रही। और फिर अचानक दस बज गए... और फिर... साढ़े दस बज गए। और गैब्रियल अभी तक घर नहीं आया था।

“‘उसे देर हो रही है,’ उसने कहा। ‘शायद वह नहीं आ रहा है।’”

मैंने कहा, “वह आ रहा है।”

“‘खैर, यह अच्छी बात है कि मैं यहाँ आपका साथ देने के लिए हूँ।’”

“और फिर घड़ी में ग्यारह बज गए, और मैंने बाहर एक कार की आवाज सुनी। वह आदमी खिड़की के पास गया और बाहर देखा। ‘बिल्कुल सही समय,’ उसने कहा।”

*

What happened next—Alicia said—happened fast.

उस आदमी ने एलिसिया को पकड़ा और उसकी कुर्सी घुमा दी, जिससे उसका चेहरा दरवाजे से दूर हो गया। उसने कहा कि अगर एलिसिया ने एक भी शब्द बोला या कोई आवाज़ निकाली तो वह गैब्रियल के सिर में गोली मार देगा। फिर वह गायब हो गया। कुछ ही देर बाद बत्तियाँ आपस में टकरा गईं और चारों ओर अंधेरा छा गया। गलियारे में, सामने का दरवाजा खुला और बंद हो गया।

“एलिसिया?” गैब्रियल ने पुकारा।

कोई जवाब नहीं आया, और उसने फिर उसका नाम पुकारा। वह बैठक में गया और उसे अंगीठी के पास, उसकी तरफ पीठ करके बैठे हुए देखा।

“तुम अंधेरे में क्यों बैठी हो?” गैब्रियल ने पूछा। कोई जवाब नहीं। “एलिसिया?”

एलिसिया ने चुप रहने की पूरी कोशिश की—वह चीखना चाहती थी, लेकिन उसकी आँखें अंधेरे की आदी हो चुकी थीं और वह कमरे के कोने में, सामने, परछाई में चमकती हुई उस आदमी की बंदूक देख सकती थी। वह उसे गैब्रियल की ओर ताने खड़ा था। एलिसिया ने गैब्रियल की खातिर चुप रहना ही बेहतर समझा।

“एलिसिया?” गैब्रियल उसकी ओर बढ़ा। “क्या हुआ?”

जैसे ही गैब्रियल ने उसे छूने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, अंधेरे से एक आदमी अचानक सामने आ गया। एलिसिया चीखी, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी—गैब्रियल ज़मीन पर गिर पड़ा; वह आदमी उसके ऊपर था। बंदूक को हथौड़े की तरह उठाया गया और एक भयानक धमाके के साथ गैब्रियल के सिर पर वार किया गया—

एक बार, दो बार, तीन बार—और वह वहीं बेहोश, खून बहता हुआ पड़ा रहा। उस आदमी ने उसे उठाया और गैब्रियल को एक कुर्सी पर बिठाया। उसने तार से उसे कुर्सी से बांध दिया।

गैब्रियल को जब होश आया तो वह थोड़ा हिलने-डुलने लगा।

“ये क्या बकवास है? ये क्या—”

उस आदमी ने बंदूक उठाई और गैब्रियल पर निशाना साधा। गोली चलने की आवाज आई।

और एक और। और एक और। एलिसिया चीखने लगी। वह आदमी लगातार गोलियां चलाता रहा।
उसने गैब्रियल के सिर में छह बार गोली मारी। फिर उसने बंदूक को फर्श पर फेंक दिया।
वह बिना कुछ कहे चला गया।
अध्याय पंद्रह
तो लीजिए, बात यहीं खत्म होती है। एलिसिया बेरेंसन ने अपने पति की हत्या नहीं की। एक अज्ञात घुसपैठिया उनके घर में घुस आया और बिना किसी स्पष्ट मकसद के, द्वेषपूर्ण कृत्य में गैब्रियल को गोली मारकर हत्या कर दी और रात के अंधेरे में गायब हो गया। एलिसिया पूरी तरह निर्दोष थी।
यह तब है जब आप उसकी व्याख्या पर विश्वास करते हैं।
मैंने ऐसा नहीं किया। एक शब्द भी नहीं।
उसकी बातों में स्पष्ट विरोधाभास और गलतियाँ थीं—जैसे कि गैब्रियल को छह नहीं, बल्कि केवल पाँच गोलियाँ लगी थीं, जिनमें से एक गोली छत पर लगी थी; एलिसिया कुर्सी से बंधी हुई नहीं मिली थी, बल्कि कमरे के बीच में खड़ी थी और उसने अपनी कलाई काट रखी थी। एलिसिया ने मुझे उस आदमी द्वारा उसे खोलने के बारे में कुछ नहीं बताया, न ही उसने यह बताया कि उसने शुरू से ही पुलिस को यह कहानी क्यों नहीं बताई। नहीं, मुझे पता था कि वह झूठ बोल रही है। मुझे इस बात पर गुस्सा आ रहा था कि उसने मेरे सामने इतना बुरा और बेमतलब का झूठ बोला था। एक पल के लिए मुझे लगा कि क्या वह मेरी परीक्षा ले रही है, यह देखने के लिए कि क्या मैं उसकी कहानी पर विश्वास करता हूँ? अगर ऐसा था, तो मैंने ठान लिया था कि मैं कुछ भी नहीं बताऊंगा।
मैं वहां चुपचाप बैठा रहा।
असामान्य रूप से, एलिसिया ने पहले बात की। "मैं थक गई हूँ। मैं रुकना चाहती हूँ।"
मैंने सिर हिलाया। मैं आपत्ति नहीं कर सकता था।
“चलिए, कल से शुरू करते हैं,” उसने कहा।
क्या अभी और कुछ कहना बाकी है?
“हाँ। एक आखिरी बात।”

बहुत खूब। कल।
यूरी गलियारे में इंतजार कर रहा था। उसने एलिसिया को उसके कमरे तक पहुंचाया और मैं अपने ऑफिस में चला गया।
जैसा कि मैंने कहा है, सत्र समाप्त होते ही उसे लिख लेना वर्षों से मेरी आदत रही है। इससे कही गई बातों को सटीक रूप से रिकॉर्ड करने की क्षमता मिलती है।
पिछले पचास मिनटों के दौरान जो कुछ भी हुआ है, वह एक चिकित्सक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
अन्यथा कई बारीकियाँ भुला दी जाती हैं और भावनाओं की तात्कालिकता खो जाती है।
मैं अपनी डेस्क पर बैठा और हमारे बीच जो कुछ भी हुआ था, उसे जितनी जल्दी हो सके लिख डाला। लिखते ही मैं अपने नोट्स के पन्ने पकड़े हुए गलियारों से होकर निकल पड़ा।
मैंने डायोमेडेस के दरवाजे पर दस्तक दी। कोई जवाब नहीं मिला, इसलिए मैंने फिर से दस्तक दी। फिर भी कोई जवाब नहीं। मैंने दरवाजा थोड़ा सा खोला—और वहाँ डायोमेडेस अपने संकरे पलंग पर गहरी नींद में सो रहा था।
“प्रोफेसर?” और फिर, ज़ोर से: “प्रोफेसर डायोमेडेस?”
वह अचानक चौंककर उठा और झट से बैठ गया। उसने मेरी तरफ पलकें झपकाईं।
“क्या हुआ? क्या समस्या है?”
मुझे आपसे बात करनी है। क्या मैं बाद में आऊं?
डायोमेडेस ने भौंहें चढ़ाकर सिर हिलाया। “मैं थोड़ी देर के लिए झपकी ले रहा था। मैं दोपहर के भोजन के बाद हमेशा झपकी लेता हूँ। इससे मुझे दोपहर का समय बिताने में मदद मिलती है। उम्र बढ़ने के साथ यह ज़रूरी हो जाता है।” उसने जम्हाई ली और खड़ा हो गया। “अंदर आओ, थियो। बैठो। तुम्हें देखकर लगता है कि यह ज़रूरी है।”
"मुझे लगता है, हाँ।"
“एलिसिया?”
मैंने सिर हिलाया। मैं डेस्क के सामने बैठ गया। वह उसके पीछे बैठ गया। उसके बाल एक तरफ उठे हुए थे, और वह अभी भी आधी नींद में लग रहा था।
"क्या आप वाकई में आश्वस्त हैं कि मुझे बाद में वापस नहीं आना चाहिए?"

डायोमेडेस ने अपना सिर हिलाया। उसने एक जग से अपने लिए एक गिलास पानी डाला। “मैं अब जाग गया हूँ। बताओ। क्या बात है?”
मैं एलिसिया के साथ बात कर रहा था... मुझे कुछ निगरानी की जरूरत है।
डायोमेडेस ने सिर हिलाया। वह पल-पल अधिक जागृत और अधिक रुचिशील प्रतीत हो रहा था। "आगे बोलो।"
मैंने अपने नोट्स से पढ़ना शुरू किया। मैंने उसे पूरे सेशन के बारे में बताया। मैंने उसके शब्दों को यथासंभव सटीक रूप से दोहराया और उसने मुझे जो कहानी सुनाई थी, उसे बताया: कैसे उस पर जासूसी करने वाला आदमी घर में घुस आया, उसे बंदी बना लिया और गैब्रियल को गोली मारकर हत्या कर दी।
जब मैंने अपनी बात समाप्त की, तो काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। डायोमेडेस के चेहरे पर कोई भाव नहीं झलक रहा था। उसने अपनी डेस्क की दराज से सिगार का एक डिब्बा निकाला। उसने एक छोटी सी चांदी की गिलोटिन निकाली। उसने एक सिगार का सिरा उसमें डाला और उसे काट दिया।
चलिए प्रतिहस्तांतरण से शुरू करते हैं। मुझे अपने भावनात्मक अनुभव के बारे में बताइए। शुरुआत से बताइए। जब वह आपको अपनी कहानी सुना रही थी, तो आपके मन में किस तरह की भावनाएँ उभर रही थीं?
मैंने एक पल के लिए इसके बारे में सोचा। "मुझे शायद उत्साह महसूस हुआ... और साथ ही चिंता भी। डर भी।"
“डर? क्या यह तुम्हारा डर था, या उसका?”
"मुझे लगता है, दोनों ही।"
और आपको किस बात का डर था?
मुझे पक्का नहीं पता। शायद असफलता का डर है। जैसा कि आप जानते हैं, इस पर बहुत कुछ निर्भर करता है।
डायोमेडेस ने सिर हिलाया। "और क्या?"
"निराशा भी होती है। मुझे हमारे सत्रों के दौरान अक्सर निराशा महसूस होती है।"
और गुस्से में?
"हां, मुझे लगता है ऐसा ही है।"

"क्या आपको ऐसा लगता है कि आप एक परेशान पिता हैं, जो एक मुश्किल बच्चे से निपट रहे हैं?"
“हां। मैं उसकी मदद करना चाहता हूं—लेकिन मुझे नहीं पता कि वह मदद चाहती है या नहीं।”
उन्होंने सिर हिलाया। “गुस्से की भावना पर ध्यान केंद्रित करो। इसके बारे में और बात करो। यह खुद को कैसे प्रकट करती है?”
मैं हिचकिचाया। "खैर, मुझे अक्सर सेशन के बाद सिरदर्द होता है।"
डायोमेडेस ने सिर हिलाया। "हाँ, बिल्कुल। यह किसी न किसी तरह सामने आना ही है।"
“जो प्रशिक्षु चिंतित नहीं होता, वह बीमार पड़ जाता है।” यह बात किसने कही थी?
“मुझे नहीं पता।” मैंने कंधे उचकाते हुए कहा। “मैं बीमार और चिंतित हूँ।”
डायोमेडेस मुस्कुराया। “अब तुम प्रशिक्षु भी नहीं हो—हालाँकि वो भावनाएँ पूरी तरह से कभी दूर नहीं होतीं।” उसने अपनी सिगार उठाई। “चलो बाहर चलते हैं सिगार पीने।”

*

We went onto the fire escape. Diomedes puffed on his cigar for a moment, mulling things over. Eventually he reached a conclusion.

"वो झूठ बोल रही है, तुम्हें पता है।"
“तुम्हारा मतलब गैब्रियल की हत्या करने वाले आदमी से है? मुझे भी यही लगा था।”
“सिर्फ इतना ही नहीं।”
"तब क्या?"
“सब कुछ। पूरी मनगढ़ंत कहानी। मुझे इस पर एक शब्द भी विश्वास नहीं है।”
मैं शायद थोड़ा अचंभित दिख रहा था। मुझे पहले से ही शक था कि वह एलिसिया की कहानी के कुछ हिस्सों पर विश्वास नहीं करेगा। लेकिन मैंने यह उम्मीद नहीं की थी कि वह पूरी कहानी को ही खारिज कर देगा।
“क्या आप उस आदमी पर विश्वास नहीं करते?”

“नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे विश्वास ही नहीं है कि वह कभी अस्तित्व में था। यह एक कल्पना है। शुरू से अंत तक।”
"आप इतने निश्चित कैसे हैं?"
डायोमेडेस ने मुझे एक अजीब सी मुस्कान दी। “इसे मेरी अंतर्ज्ञान समझ लो। कल्पनाशील लोगों के साथ वर्षों का पेशेवर अनुभव।” मैंने बीच में टोकने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने हाथ के इशारे से मुझे रोक दिया। “बेशक, मुझे उम्मीद नहीं है कि तुम मुझसे सहमत होगे, थियो। तुम एलिसिया के साथ गहरे रिश्ते में हो, और तुम्हारी भावनाएँ उसकी भावनाओं से ऊन के उलझे हुए गोले की तरह जुड़ी हुई हैं। इस तरह के पर्यवेक्षण का यही उद्देश्य है—तुम्हें ऊन के धागों को सुलझाने में मदद करना—यह देखना कि तुम्हारा क्या है और उसका क्या है। और एक बार जब तुम कुछ दूरी बना लोगे और स्पष्टता हासिल कर लोगे, तो मुझे लगता है कि एलिसिया बेरेंसन के साथ अपने अनुभव के बारे में तुम्हारी सोच काफी बदल जाएगी।”
मुझे समझ नहीं आ रहा कि आपका क्या मतलब है।
साफ़-साफ़ कहूँ तो, मुझे डर है कि वह आपके लिए नाटक कर रही थी। आपको बहका रही थी। और मुझे लगता है कि यह नाटक खास तौर पर आपकी शूरवीरता और, चलिए कहें, रोमांटिक भावनाओं को भड़काने के लिए रचा गया था। मुझे शुरू से ही यह स्पष्ट था कि आप उसे बचाना चाहते थे। मुझे पूरा यकीन है कि एलिसिया को भी यह बात स्पष्ट थी। इसीलिए उसने आपको बहकाया।
“आप क्रिश्चियन की तरह बात कर रहे हैं। उसने मुझे बहकाया नहीं है। मैं किसी मरीज की यौन इच्छाओं को आसानी से सहन कर सकता हूँ। मुझे कम मत समझिए, प्रोफेसर।”
उसे कम मत आंकिए। वह शानदार प्रदर्शन कर रही है।
डायोमेडेस ने अपना सिर हिलाया और धूसर बादलों की ओर देखा। “एक असहाय महिला, अकेली, जिसे सुरक्षा की ज़रूरत है। एलिसिया ने खुद को पीड़ित और इस रहस्यमय पुरुष को खलनायक के रूप में पेश किया है। जबकि वास्तव में एलिसिया और वह पुरुष एक ही हैं। उसने गैब्रियल को मारा। वह दोषी थी—और वह अब भी उस अपराधबोध को स्वीकार करने से इनकार कर रही है। इसलिए वह खुद को विभाजित करती है, अलग-थलग कर लेती है, कल्पनाओं में खो जाती है—

एलिसिया निर्दोष शिकार बन जाती है और आप उसके रक्षक बन जाते हैं। और इस काल्पनिक कल्पना में साथ देकर आप उसे सारी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ने की अनुमति दे रहे हैं।"
“मैं इससे सहमत नहीं हूँ। मुझे नहीं लगता कि वह जानबूझकर झूठ बोल रही है। कम से कम, एलिसिया को अपनी कहानी पर पूरा भरोसा है।”
"हां, वह इस बात पर यकीन करती है। एलिसिया पर हमला हो रहा है—लेकिन यह हमला उसकी अपनी मानसिकता की तरफ से है, बाहरी दुनिया की तरफ से नहीं।"
मुझे पता था कि यह सच नहीं है, लेकिन आगे बहस करने का कोई फायदा नहीं था। मैंने अपनी सिगरेट बुझा दी।
"आपके विचार से मुझे आगे कैसे बढ़ना चाहिए?"
“आपको उसे सच्चाई का सामना करने के लिए मजबूर करना होगा। तभी उसके ठीक होने की उम्मीद होगी। आपको उसकी कहानी को सिरे से खारिज करना होगा।”
उसे चुनौती दो। उससे सच बताने की मांग करो।
और क्या आपको लगता है कि वह ऐसा करेगी?
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "यह तो कोई भी अनुमान लगा सकता है।" (उसने अपनी सिगार का एक लंबा कश लिया)
“बहुत अच्छा। मैं उससे कल बात करूंगा। मैं उसका सामना करूंगा।”
डायोमेडेस थोड़ा असहज लग रहा था और उसने अपना मुंह खोला, मानो कुछ और कहने ही वाला हो। लेकिन उसने अपना इरादा बदल दिया। उसने सिर हिलाया और निर्णायक भाव से अपनी सिगार पर पैर पटका। "कल।"
अध्याय सोलह
काम खत्म होने के बाद, मैं कैथी के पीछे-पीछे फिर से पार्क गया। वाकई, उसका प्रेमी उसी जगह पर उसका इंतज़ार कर रहा था जहाँ वे पिछली बार मिले थे। उन्होंने किशोरों की तरह एक-दूसरे को चूमा और छुआ।
कैथी ने मेरी तरफ देखा, और एक पल के लिए मुझे लगा कि उसने मुझे देख लिया है, लेकिन नहीं। उसकी निगाहें सिर्फ उस पर टिकी थीं। इस बार मैंने उसे ध्यान से देखने की कोशिश की। लेकिन फिर भी मुझे उसका चेहरा ठीक से नहीं दिखा, हालांकि

उसकी कद-काठी कुछ जानी-पहचानी सी लगी। मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने उसे पहले कहीं देखा हो।
वे कैमडेन की ओर चले और एक पब, रोज़ एंड क्राउन में गायब हो गए, जो देखने में घटिया सा लग रहा था। मैं सामने वाले कैफ़े में इंतज़ार करता रहा। लगभग एक घंटे बाद, वे बाहर आए। कैथी उस पर टूट पड़ी थी, उसे चूम रही थी। वे सड़क किनारे कुछ देर तक एक-दूसरे को चूमते रहे। मैं उन्हें देखता रहा, मेरा पेट खराब हो रहा था, नफ़रत से आग जल रही थी।
आखिरकार उसने उसे अलविदा कहा और वे एक-दूसरे से अलग हो गए। वह चलने लगी। वह आदमी मुड़ा और दूसरी दिशा में चल पड़ा। मैंने कैथी का पीछा नहीं किया। मैंने उसका पीछा किया।
वह बस स्टॉप पर इंतज़ार कर रहा था। मैं उसके पीछे खड़ा था। मैंने उसकी पीठ, उसके कंधे देखे; मैंने सोचा कि उस पर झपट्टा मारूँ—उसे आती हुई बस के नीचे धकेल दूँ। लेकिन मैंने उसे धक्का नहीं दिया। वह बस में चढ़ गया। मैं भी चढ़ गया।
मुझे लगा था कि वह सीधे घर जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उसने दो-तीन बार बसें बदलीं। मैं दूर से उसका पीछा करती रही। वह ईस्ट एंड गया, जहाँ वह आधे घंटे के लिए एक गोदाम में गायब हो गया। फिर दूसरी बस में सवार होकर उसने अपना सफर शुरू किया। उसने दो-तीन फोन किए, धीमी आवाज़ में बात की और बीच-बीच में हँसता रहा। मुझे लगा कि शायद वह कैथी से बात कर रहा हो। मैं लगातार निराश और हताश होती जा रही थी। लेकिन मैं जिद्दी भी थी और हार मानने को तैयार नहीं थी।
आखिरकार वह घर की ओर चल पड़ा—बस से उतरकर एक शांत, पेड़ों से घिरी सड़क पर मुड़ गया। वह अभी भी अपने फोन पर बात कर रहा था। मैंने उससे दूरी बनाए रखते हुए उसका पीछा किया। सड़क सुनसान थी। अगर मैं पीछे मुड़ता, तो वह मुझे देख लेता। लेकिन उसने नहीं देखा।
मैं एक ऐसे घर के पास से गुज़रा जिसमें एक पत्थर का बगीचा और रसीले पौधे थे। मैंने बिना सोचे-समझे काम किया—मेरा शरीर मानो अपने आप ही चलने लगा। मेरा हाथ बगीचे की नीची दीवार के ऊपर से गया और मैंने एक पत्थर उठा लिया। मैं उसका भार अपने हाथों में महसूस कर सकता था। मेरे हाथों को पता था कि क्या

करना है: उन्होंने उसे मार डालने का, उस निकम्मे बदमाश की खोपड़ी फोड़ देने का फैसला कर लिया था। मैं बेसुध होकर, एक तरह के सम्मोहन में, उसके पीछे रेंगता हुआ, चुपचाप आगे बढ़ता गया, उसके करीब पहुँचता गया।
जल्द ही मैं उसके काफी करीब पहुँच गया। मैंने पत्थर उठाया और पूरी ताकत से उसे उस पर पटकने की तैयारी कर ली। मैं उसे ज़मीन पर गिराकर उसके सिर के टुकड़े-टुकड़े कर देता। मैं इतना करीब था कि अगर वह अभी भी अपने फोन पर बात नहीं कर रहा होता, तो वह मेरी आवाज़ सुन लेता।
अब: मैंने चट्टान को उठाया, और—
मेरे ठीक पीछे, बाईं ओर, एक मुख्य दरवाज़ा खुला। अचानक बातचीत की आवाज़ गूंजी, लोग घर से निकलते हुए ज़ोर-ज़ोर से धन्यवाद और अलविदा कह रहे थे। मैं जम गया। मेरे ठीक सामने, कैथी का प्रेमी रुका और शोर की दिशा में, घर की ओर देखने लगा। मैं एक तरफ हट गया और एक पेड़ के पीछे छिप गया। उसने मुझे नहीं देखा।
वह फिर चलने लगा, लेकिन मैं उसके पीछे नहीं गया। अचानक हुई इस घटना ने मुझे मेरी तल्लीनता से जगा दिया था। पत्थर मेरे हाथ से गिर गया और ज़मीन पर ज़ोर से टकराया। मैं पेड़ के पीछे से उसे देखता रहा। वह एक घर के सामने वाले दरवाजे तक गया, ताला खोला और अंदर चला गया।
कुछ ही क्षणों बाद, रसोई में बत्ती जल उठी। वह खिड़की से थोड़ी दूर, एक तरफ से खड़ा था। सड़क से कमरे का केवल आधा हिस्सा ही दिखाई दे रहा था। वह किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर रहा था जिसे मैं देख नहीं पा रहा था। बात करते-करते उसने शराब की एक बोतल खोली। वे बैठ गए और साथ में खाना खाया।
फिर मेरी नज़र उसकी साथी पर पड़ी। वह एक महिला थी। क्या वह उसकी पत्नी थी? मैं उसे ठीक से देख नहीं पाई। उसने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा और उसे चूमा।
तो धोखा खाने वाला मैं अकेला नहीं था। मेरी पत्नी को चूमने के बाद वह घर लौटा और उस औरत द्वारा बनाया गया खाना ऐसे खाया जैसे कुछ हुआ ही न हो। मुझे पता था कि मैं इसे ऐसे ही नहीं छोड़ सकता—मुझे कुछ करना ही होगा।
कुछ तो। लेकिन क्या? मेरी तमाम हत्या की कल्पनाओं के बावजूद, मैं हत्यारा नहीं था। मैं उसे मार नहीं सकता था।
मुझे इससे भी ज्यादा चालाकी भरा तरीका सोचना पड़ेगा।

अध्याय सत्रह

मैंने सुबह उठते ही एलिसिया से इस बारे में बात करने की योजना बनाई थी। मेरा इरादा था कि मैं उससे यह कबूल करवाऊं कि उसने गैब्रियल की हत्या करने वाले व्यक्ति के बारे में मुझसे झूठ बोला था और उसे सच्चाई का सामना करने के लिए मजबूर करूं।

दुर्भाग्यवश, मुझे कभी मौका नहीं मिला।

रिसेप्शन में यूरी मेरा इंतजार कर रहा था। "थियो, मुझे तुमसे बात करनी है—"

"यह क्या है?"

मैंने उसे गौर से देखा। उसका चेहरा मानो रातोंरात बूढ़ा हो गया था; वह सिकुड़ा हुआ, पीला और बेजान लग रहा था। कुछ बुरा हुआ था।

“एक दुर्घटना हो गई है। एलिसिया ने जरूरत से ज्यादा दवा ले ली।”

“क्या? क्या वो—?”

यूरी ने सिर हिलाया। "वह अभी भी जीवित है, लेकिन—"

"भगवान का शुक्र है-"

लेकिन वह कोमा में है। हालत अच्छी नहीं लग रही है।

"वह कहाँ है?"

यूरो मुझे कई बंद गलियारों से होते हुए गहन चिकित्सा कक्ष में ले गया। एलिसिया एक निजी कमरे में थी। वह ईसीजी मशीन और वेंटिलेटर से जुड़ी हुई थी। उसकी आँखें बंद थीं।

क्रिश्चियन वहां एक अन्य डॉक्टर के साथ था। आपातकालीन कक्ष की डॉक्टर के विपरीत, जिसका रंग गहरा टैन था—वह स्पष्ट रूप से छुट्टी से लौटी थी—क्रिश्चियन का चेहरा पीला पड़ गया था। लेकिन वह तरोताज़ा नहीं लग रही थी। वह थकी हुई लग रही थी।

मैंने कहा, "एलिसिया कैसी है?"

डॉक्टर ने सिर हिलाया। “अच्छी खबर नहीं है। हमें उसे कोमा में डालना पड़ा। उसकी श्वसन प्रणाली काम करना बंद कर चुकी है।”

“उसने क्या लिया?”

"किसी प्रकार का ओपिओइड। शायद हाइड्रोकोडोन।"

यूरी ने सिर हिलाया। "उसके कमरे में डेस्क पर गोलियों की एक खाली बोतल पड़ी थी।"
“उसे किसने पाया?”
“मैंने देखा,” यूरी ने कहा। “वह बिस्तर के पास फर्श पर पड़ी थी। ऐसा लग रहा था कि वह सांस नहीं ले रही है। पहले तो मुझे लगा कि वह मर चुकी है।”
"क्या आपको पता है कि उसे ये गोलियां कैसे मिलीं?"
यूरी ने क्रिश्चियन की ओर देखा, जिसने कंधे उचका दिए। "हम सब जानते हैं कि वार्डों में बहुत सारी सौदेबाजी चल रही है।"
मैंने कहा, "एलिफ सौदा कर रही है।"
क्रिश्चियन ने सिर हिलाया। "हाँ, मुझे भी ऐसा ही लगता है।"
इंदिरा अंदर आईं। उनकी आंखों में आंसू भरे थे। वह एलिसिया के पास खड़ी हो गईं और कुछ पल उसे देखती रहीं। “इसका बाकी लोगों पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। इस तरह की घटना होने पर मरीज़ों की हालत महीनों खराब हो जाती है।” वह बैठ गईं और एलिसिया का हाथ पकड़कर सहलाने लगीं। मैंने वेंटिलेटर को ऊपर-नीचे होते देखा। कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया।
मैंने कहा, "मैं खुद को दोषी मानता हूँ।"
इंदिरा ने सिर हिलाया। "इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है, थियो।"
मुझे उसका और बेहतर ख्याल रखना चाहिए था।
“आपने अपनी पूरी कोशिश की। आपने उसकी मदद की। जो किसी और ने नहीं की।”
"क्या किसी ने डायोमेडेस को बताया है?"
क्रिश्चियन ने सिर हिलाया। "हम अभी तक उससे संपर्क नहीं कर पाए हैं।"
क्या आपने उसका मोबाइल चेक किया?
“और उनके घर का फोन नंबर भी। मैंने कई बार कोशिश की है।”
यूरी ने भौंहें चढ़ा लीं। "लेकिन—मैंने प्रोफेसर डायोमेडेस को पहले देखा था। वह यहीं थे।"
“क्या वह था?”

"हां, मैंने उसे आज सुबह देखा था। वह गलियारे के दूसरे छोर पर था, और वह जल्दी में लग रहा था - कम से कम, मुझे लगता है कि वह वही था।"
“यह तो अजीब बात है। खैर, वह घर चला गया होगा। एक बार फिर कोशिश कीजिएगा?”
यूरी ने सिर हिलाया। वह कहीं खोया हुआ सा लग रहा था; जैसे स्तब्ध और बेसुध। ऐसा लग रहा था जैसे उसे बहुत बुरा लगा हो। मुझे उस पर तरस आया।
क्रिश्चियन के फोन की घंटी बजी, जिससे वह चौंक गया - वह जल्दी से कमरे से बाहर निकल गया, उसके पीछे यूरी और डॉक्टर भी गए।
इंदिरा हिचकिचाई और धीमी आवाज़ में बोली, "क्या आप एलिसिया के साथ कुछ पल अकेले बिताना चाहेंगी?"
मैंने सिर हिलाया, मुझे बोलने की हिम्मत नहीं हो रही थी। इंदिरा खड़ी हुई और एक पल के लिए मेरा कंधा दबाया। फिर वह बाहर चली गई।
एलिसिया और मैं अकेले थे।
मैं बिस्तर के पास बैठ गया। मैंने हाथ बढ़ाकर एलिसिया का हाथ पकड़ा। उसके हाथ के पिछले हिस्से में एक कैथेटर लगा हुआ था। मैंने धीरे से उसका हाथ पकड़ा और उसकी हथेली और कलाई के अंदरूनी हिस्से को सहलाया। मैंने अपनी उंगली से उसकी कलाई को सहलाया, उसकी त्वचा के नीचे की नसों और आत्महत्या के प्रयासों से बने उभरे हुए, मोटे निशानों को महसूस किया।
तो बस यही था। यही अंत होने वाला था। एलिसिया फिर चुप हो गई, और इस बार उसकी चुप्पी हमेशा के लिए कायम रहेगी।
मैं सोच रहा था कि डायोमेडेस क्या कहेंगे। मैं कल्पना कर सकता था कि क्रिश्चियन उन्हें क्या कहेंगे—क्रिश्चियन किसी न किसी तरह से मुझे ही दोषी ठहराएंगे: थेरेपी के दौरान मैंने जो भावनाएं जगाईं, वे एलिसिया के लिए असहनीय थीं—उन्होंने खुद को शांत करने और दवा लेने के प्रयास में हाइड्रोकोडोन का सहारा लिया।
मुझे ऐसा लग रहा था जैसे डायोमेडेस कह रहा हो, "ओवरडोज शायद आकस्मिक रहा हो, लेकिन व्यवहार आत्महत्या जैसा था। और बात यहीं खत्म होती है।"
लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हुई।

किसी बात पर ध्यान नहीं दिया गया था। कोई महत्वपूर्ण बात, जिस पर किसी ने गौर नहीं किया था—यहाँ तक कि यूरी ने भी नहीं, जब उसने एलिसिया को बिस्तर के पास बेहोश पाया। उसकी मेज पर एक खाली दवा की बोतल पड़ी थी, और कुछ गोलियाँ ज़मीन पर बिखरी थीं, इसलिए स्वाभाविक रूप से यही माना गया कि उसने ज़रूरत से ज़्यादा दवा ले ली थी।

लेकिन यहाँ, मेरी उंगली के सिरे के नीचे, एलिसिया की कलाई के अंदरूनी हिस्से पर, कुछ चोट के निशान और एक छोटा सा धब्बा था जो एक बिल्कुल अलग कहानी बयां कर रहा था।

नस में एक छोटा सा छेद—एक हाइपोडर्मिक सुई द्वारा छोड़ा गया एक नन्हा सा छेद —

सच्चाई का खुलासा: एलिसिया ने आत्महत्या के प्रयास में गोलियों की बोतल नहीं निगली थी। उसे मॉर्फिन का भारी इंजेक्शन लगाया गया था। यह ओवरडोज नहीं था। यह हत्या का प्रयास था।

अध्याय अठारह

डायोमेडेस आधे घंटे बाद आया। उसने बताया कि वह ट्रस्ट के साथ एक बैठक में था, फिर सिग्नल की खराबी के कारण मेट्रो में फंस गया। उसने यूरी से मुझे बुलाने के लिए कहा।

यूरी ने मुझे मेरे कार्यालय में पाया। “प्रोफेसर डायोमेडेस यहाँ हैं। वे स्टेफ़नी के साथ हैं। वे आपका इंतज़ार कर रहे हैं।”

“धन्यवाद। मैं अभी आता हूँ।”

मैं सबसे बुरे की आशंका करते हुए डायोमेडेस के कार्यालय की ओर चल पड़ा। दोष लेने के लिए किसी बलि का बकरा चाहिए होगा। मैंने ब्रॉडमूर में आत्महत्या के मामलों में पहले भी ऐसा देखा था: पीड़ित के सबसे करीब रहने वाले कर्मचारी को ही ज़िम्मेदार ठहराया जाता था, चाहे वह चिकित्सक हो, डॉक्टर हो या नर्स। मुझे पूरा यकीन था कि स्टेफ़नी मुझसे बदला लेने की फिराक में थी।

मैंने दरवाजा खटखटाया और अंदर चला गया। स्टेफ़नी और डायोमेडेस मेज के दोनों ओर खड़े थे। तनावपूर्ण चुप्पी से लग रहा था कि मैंने उनके बीच चल रहे किसी विवाद में दखल दिया है।

डायोमेडेस ने सबसे पहले बोलना शुरू किया। वह स्पष्ट रूप से उत्तेजित था और उसके हाथ इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। “बहुत बुरा हुआ। बहुत बुरा। जाहिर है, इससे बुरा समय हो ही नहीं सकता था। इससे ट्रस्ट को हमें बंद करने का पूरा बहाना मिल गया है।”
"मुझे नहीं लगता कि ट्रस्ट तत्काल चिंता का विषय है," स्टेफ़नी ने कहा।
“मरीजों की सुरक्षा सर्वोपरि है। हमें यह पता लगाना होगा कि वास्तव में क्या हुआ था।” वह मेरी ओर मुड़ी। “इंदिरा ने बताया था कि आपको शक है कि एलिफ ड्रग्स का धंधा करती है? क्या इसी वजह से एलिसिया को हाइड्रोकोडोन मिला?”
मैं हिचकिचाया। “ठीक है, मेरे पास कोई सबूत नहीं है। मैंने कुछ नर्सों को इसके बारे में बात करते सुना है। लेकिन वास्तव में एक और बात है जो मुझे लगता है कि आपको पता होनी चाहिए—”
स्टेफ़नी ने सिर हिलाकर मेरी बात काट दी। “हम जानते हैं कि क्या हुआ था। यह एलिफ नहीं थी।”
"नहीं?"
“क्रिश्चियन संयोगवश नर्स स्टेशन के पास से गुजर रहा था, और उसने देखा कि दवाइयों की अलमारी खुली पड़ी थी। स्टेशन में कोई नहीं था। यूरी ने उसे खुला छोड़ दिया था। कोई भी अंदर जाकर दवाइयाँ ले सकता था। और क्रिश्चियन ने एलिसिया को कोने में मंडराते हुए देखा। उसने सोचा कि वह उस समय वहाँ क्या कर रही थी। अब बेशक यह बात समझ में आती है।”
"क्रिश्चियन का वहां मौजूद होना कितना सौभाग्य की बात थी कि उसने यह सब देखा।"
मेरी आवाज़ में व्यंग्य का भाव था। लेकिन स्टेफ़नी ने इसे समझने की कोशिश नहीं की।
“क्रिश्चियन अकेला ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसने यूरी की लापरवाही को देखा है। मुझे अक्सर लगता है कि यूरी सुरक्षा को लेकर बहुत लापरवाह है। मरीजों के साथ बहुत ज्यादा दोस्ताना व्यवहार करता है। लोकप्रियता हासिल करने को लेकर बहुत ज्यादा चिंतित रहता है। मुझे आश्चर्य है कि ऐसा पहले क्यों नहीं हुआ।”

“मैं समझ गई।” मैं सचमुच समझ गई थी। अब मुझे समझ आ गया था कि स्टेफ़नी मेरे साथ इतना सौहार्दपूर्ण व्यवहार क्यों कर रही थी। ऐसा लग रहा था कि मैं बच गई थी; उसने यूरी को बलि का बकरा बना लिया था।
“यूरी हमेशा बहुत ही सावधानी से काम करता हुआ लगता है,” मैंने डायोमेडेस की ओर देखते हुए कहा, यह सोचते हुए कि क्या वह हस्तक्षेप करेगा। “मुझे सच में नहीं लगता कि—”
डायोमेडेस ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मेरी निजी राय यह है कि एलिसिया हमेशा से ही आत्महत्या करने की प्रबल इच्छुक रही है। जैसा कि हम जानते हैं, जब कोई व्यक्ति मरना चाहता है, तो उसे बचाने के आपके सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, अक्सर इसे रोकना असंभव होता है।"
“क्या यह हमारा काम नहीं है?” स्टेफ़नी ने झल्लाकर कहा। “इसे रोकना?”
“नहीं।” डायोमेडेस ने सिर हिलाया। “हमारा काम उन्हें ठीक होने में मदद करना है। लेकिन हम भगवान नहीं हैं। जीवन और मृत्यु पर हमारा कोई अधिकार नहीं है। एलिसिया बेरेंसन मरना चाहती थी। किसी न किसी मोड़ पर उसे सफलता मिलनी ही थी। या कम से कम आंशिक रूप से तो मिलनी ही थी।”
मैं झिझक गया। अब या कभी नहीं।
मैंने कहा, "मुझे इस बात का पूरा यकीन नहीं है। मुझे नहीं लगता कि यह आत्महत्या का प्रयास था।"
"क्या आपको लगता है कि यह एक दुर्घटना थी?"
नहीं। मुझे नहीं लगता कि यह कोई दुर्घटना थी।
डायोमेडेस ने मुझे उत्सुकता भरी नज़रों से देखा। "तुम क्या कहना चाह रहे हो, थियो?"
इसके अलावा और क्या विकल्प है?
"खैर, सबसे पहले तो, मुझे नहीं लगता कि यूरी ने एलिसिया को ड्रग्स दिए थे।"
"क्या आपका मतलब है कि क्रिश्चियन गलत है?"
“नहीं,” मैंने कहा। “क्रिश्चियन झूठ बोल रहा है।”
डायोमेडेस और स्टेफ़नी मुझे हैरानी से घूर रहे थे। उनके बोलने की शक्ति वापस आने से पहले ही मैं आगे बढ़ गया।

मैंने उन्हें एलिसिया की डायरी में पढ़ी सारी बातें तुरंत बता दीं: कि गैब्रियल की हत्या से पहले क्रिश्चियन एलिसिया का निजी तौर पर इलाज कर रहा था; कि वह उन कई निजी मरीजों में से एक थी जिनका वह अनौपचारिक रूप से इलाज करता था, और इतना ही नहीं, वह मुकदमे में गवाही देने के लिए आगे नहीं आया, बल्कि जब एलिसिया को ग्रोव अस्पताल में भर्ती कराया गया था, तब उसने ऐसा दिखाया जैसे वह उसे जानता ही नहीं हो। मैंने कहा, "इसमें कोई हैरानी नहीं कि वह उसे दोबारा बोलने के लिए उकसाने की किसी भी कोशिश का इतना विरोध कर रहा था। अगर वह बोलती, तो वह उसे बेनकाब कर सकती थी।"

स्टेफ़नी ने मुझे खाली निगाहों से देखा। "लेकिन—आप क्या कह रहे हैं? आप सचमुच यह तो नहीं कह रहे कि वह—"

“हां, मैं यही कह रहा हूं। यह ओवरडोज नहीं था। यह उसकी हत्या करने का प्रयास था।”

“एलिसिया की डायरी कहाँ है?” डायोमेडेस ने मुझसे पूछा। “क्या वह तुम्हारे पास है?”

मैंने सिर हिलाया। “नहीं, अब नहीं। मैंने इसे एलिसिया को वापस दे दिया था। यह उसके कमरे में ही होगा।”

“तो हमें इसे वापस लाना होगा।” डायोमेडेस ने स्टेफ़नी की ओर मुड़कर कहा, “लेकिन पहले, मुझे लगता है कि हमें पुलिस को बुलाना चाहिए। क्या तुम सहमत नहीं हो?”

अध्याय उन्नीस

उसके बाद से चीजें तेजी से आगे बढ़ने लगीं।

पुलिस अधिकारी पूरे इलाके में फैल गए, सवाल पूछते, तस्वीरें लेते और एलिसिया के स्टूडियो और कमरे को सील कर दिया। जांच का नेतृत्व मुख्य निरीक्षक स्टीवन एलन कर रहे थे, जो भारी-भरकम, गंजे और बड़े चश्मे पहने हुए थे, जिससे उनकी आंखें विकृत होकर बड़ी और जिज्ञासा से भरी हुई प्रतीत होती थीं।

एलन ने मेरी कहानी बड़े ध्यान से सुनी; मैंने उसे वह सब कुछ बताया जो मैंने डायोमेडेस से कहा था, और मैंने उसे अपने पर्यवेक्षण के नोट्स भी दिखाए।

"आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, श्रीमान फैबर।"

मुझे थियो कहो।

“कृपया आप एक आधिकारिक बयान जारी करें। और मैं उचित समय पर आपसे और बात करूंगा।”
"हां बेशक।"
इंस्पेक्टर एलन ने डायोमेडेस के दफ्तर पर कब्ज़ा कर लिया था। उन्होंने मुझे बाहर तक छोड़ दिया। एक कनिष्ठ अधिकारी को अपना बयान देने के बाद, मैं गलियारे में इंतज़ार करता रहा। थोड़ी देर बाद, एक पुलिस अधिकारी क्रिश्चियन को दरवाजे तक ले आया। वह बेचैन, डरा हुआ और दोषी लग रहा था। मुझे तसल्ली थी कि उस पर जल्द ही आरोप लगाए जाएँगे।
अब इंतज़ार करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। ग्रोव से निकलते समय, मैं मछली के कटोरे के पास से गुज़रा। मैंने अंदर झाँका—और जो देखा, उससे मैं वहीं रुक गया।
यूरी, एलिफ को कुछ नशीली दवाएं दे रहा था और वह कुछ नकदी अपनी जेब में रख रहा था।
एलिफ गुस्से से बाहर निकली और अपनी एक आंख से मुझे घूरने लगी। उसकी नज़र में तिरस्कार और घृणा थी।
“एलिफ,” मैंने कहा।
“दफा हो जाओ।” वह गुस्से में चली गई और कोने में गायब हो गई।
यूरो मछली के कटोरे से बाहर निकला। मुझे देखते ही उसका मुंह खुला रह गया। वह आश्चर्य से हकलाते हुए बोला, "मैंने—मैंने आपको वहां नहीं देखा।"
"स्पष्टः नहीं।"
“एलिफ अपनी दवाइयाँ लेना भूल गई थी। मैं अभी उसे दवाइयाँ दे रही थी।”
"अच्छा ऐसा है।"
तो यूरी एलिफ के लिए सामान की खरीद-फरोख्त और आपूर्ति कर रहा था। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह और क्या कर रहा होगा—शायद स्टेफ़नी के सामने उसका इतनी दृढ़ता से बचाव करना मेरी कुछ ज़्यादा ही जल्दबाज़ी थी। मुझे उस पर नज़र रखनी चाहिए।
“मैं आपसे पूछना चाहता था,” उसने कहा और मुझे मछली के कटोरे से दूर ले गया।
हमें श्री मार्टिन के बारे में क्या करना चाहिए?

“तुम्हारा क्या मतलब है?” मैंने हैरानी से उसकी तरफ देखा। “तुम्हारा मतलब जीन-फेलिक्स मार्टिन से है? उसके बारे में क्या?”
“खैर, वह यहां घंटों से है। वह आज सुबह एलिसिया से मिलने आया था।”
और वह तब से इंतजार कर रहा है।
“क्या? तुमने मुझे क्यों नहीं बताया? तुम्हारा मतलब है कि वह इतने समय से यहीं था?”
"माफ़ कीजिए, इतनी सारी घटनाओं के बीच मैं भूल गया था। वह प्रतीक्षाकक्ष में हैं।"
“ठीक है। अच्छा, मुझे जाकर उससे बात करनी चाहिए।”
मैंने जो कुछ सुना था, उसके बारे में सोचते हुए मैं जल्दी से रिसेप्शन की ओर नीचे भागा।
जीन-फेलिक्स यहाँ क्या कर रहा था? मुझे आश्चर्य हुआ कि वह क्या चाहता था; इसका क्या मतलब था।
मैं प्रतीक्षालय में गया और चारों ओर देखा।
लेकिन कोई न था।
अध्याय बीस
मैं उस बाग से निकला और सिगरेट जलाई। तभी मुझे एक आदमी की आवाज सुनाई दी जो मेरा नाम पुकार रहा था।
मैंने जीन-फेलिक्स की उम्मीद में ऊपर देखा। लेकिन वह जीन-फेलिक्स नहीं था।
वह मैक्स बेरेंसन था। वह कार से बाहर निकल रहा था और मेरी ओर तेजी से बढ़ रहा था।
“ये क्या बकवास है?” वो चिल्लाया। “क्या हुआ?” मैक्स का चेहरा गुस्से से लाल हो गया था। “उन्होंने अभी फोन करके मुझे एलिसिया के बारे में बताया। उसे क्या हुआ?”
मैंने एक कदम पीछे हटते हुए कहा, "मुझे लगता है कि आपको शांत होने की जरूरत है, मिस्टर बेरेंसन।"
“शांत हो जाओ? तुम्हारी लापरवाही की वजह से मेरी भाभी वहां कोमा में पड़ी है—”
मैक्स की मुट्ठी बंधी हुई थी। उसने उसे ऊपर उठाया। मुझे लगा कि वह मुझ पर मुक्का मारने वाला है।
लेकिन तान्या ने उसे बीच में ही रोक दिया। वह जल्दी से उसके पास आई, उसका चेहरा भी उतना ही गुस्से से भरा था जितना उसका चेहरा—लेकिन वह मैक्स पर

गुस्सा थी, मुझ पर नहीं। “बस करो मैक्स! भगवान के लिए।”
क्या हालात पहले से ही काफी खराब नहीं हैं? इसमें थियो की कोई गलती नहीं है!
मैक्स ने उसकी बात अनसुनी कर दी और मेरी तरफ मुड़ गया। उसकी आँखों में एक अजीब सी बेचैनी थी।
“एलिसिया तुम्हारी देखरेख में थी,” वह चिल्लाया। “तुमने यह सब कैसे होने दिया?”
कैसे?"
मैक्स की आँखों में गुस्से के आँसू भर आए। वह अपने भावों को छुपाने की कोई कोशिश नहीं कर रहा था। वह वहीं खड़ा रोता रहा। मैंने तान्या की तरफ देखा; वह स्पष्ट रूप से एलिसिया के लिए मैक्स की भावनाओं के बारे में जानती थी। तान्या हताश और उदास लग रही थी। बिना कुछ कहे, वह मुड़ी और अपनी कार की तरफ वापस चली गई।
मैं मैक्स से जितनी जल्दी हो सके दूर जाना चाहता था। मैं चलता रहा।
वह लगातार गालियां बकता रहा। मुझे लगा कि वह मेरे पीछे आएगा, लेकिन वह नहीं आया।
वह वहीं जड़वत खड़ा था, एक टूटा हुआ इंसान, मुझे पुकारता हुआ, दयनीय स्वर में चिल्ला रहा था:
मैं तुम्हें ज़िम्मेदार ठहराता हूँ। मेरी बेचारी एलिसिया, मेरी बच्ची... मेरी बेचारी एलिसिया...
तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी! समझे?
मैक्स लगातार चिल्लाता रहा, लेकिन मैंने उसे अनसुना कर दिया। जल्द ही उसकी आवाज़ खामोशी में गुम हो गई। मैं अकेला रह गया।
मैं चलता रहा।
अध्याय इक्कीस
मैं वापस उस घर की ओर चल पड़ा जहाँ कैथी का प्रेमी रहता था। मैं वहाँ एक घंटे तक खड़ा होकर देखता रहा। आखिरकार दरवाजा खुला और वह बाहर निकला। मैंने उसे जाते हुए देखा। वह कहाँ जा रहा था? कैथी से मिलने? मैं हिचकिचाया, लेकिन उसके पीछे न जाने का फैसला किया। इसके बजाय मैं वहीं घर को देखता रहा।

मैंने खिड़की से उसकी पत्नी को देखा। देखते-देखते मुझे यह एहसास और भी पक्का होता गया कि मुझे उसकी मदद के लिए कुछ करना ही होगा। वह मैं ही थी, और मैं वही: हम दोनों निर्दोष पीड़ित थीं, धोखे और विश्वासघात का शिकार। उसे लगता था कि यह आदमी उससे प्यार करता है—लेकिन वह नहीं करता था।
शायद मैं गलत थी, यह मानकर कि उसे इस अफेयर के बारे में कुछ भी पता नहीं था? शायद उसे पता था। शायद उनका यौन संबंध खुला हुआ था और वह भी उतनी ही स्वच्छंद थी? पर मुझे ऐसा नहीं लगता था। वह मासूम दिखती थी, बिल्कुल मेरी तरह। उसे सच्चाई बताना मेरा फर्ज था। मैं उस आदमी के बारे में सच बता सकता था जिसके साथ वह रह रही थी, जिसके साथ वह सोती थी। मेरे पास कोई चारा नहीं था। मुझे उसकी मदद करनी ही थी।
अगले कुछ दिनों तक मैं बार-बार लौटता रहा। एक दिन वह घर से निकलकर टहलने चली गई। मैं उससे दूरी बनाए रखते हुए उसके पीछे-पीछे गया। मुझे डर था कि कहीं उसने मुझे देख न लिया हो, लेकिन अगर देख भी लिया होता तो मैं उसके लिए सिर्फ एक अजनबी था। फिलहाल के लिए।
मैं कुछ देर के लिए बाहर गया और कुछ सामान खरीदा। फिर वापस आया। मैं सड़क के उस पार खड़ा होकर घर को देख रहा था। मैंने उसे फिर से खिड़की के पास खड़े देखा।
मेरे पास कोई पक्की योजना नहीं थी, बस एक अस्पष्ट, अधूरा विचार था कि मुझे क्या करना है। एक अनुभवहीन कलाकार की तरह, मुझे पता था कि मुझे क्या परिणाम चाहिए—लेकिन यह नहीं पता था कि उसे कैसे हासिल करना है। मैंने थोड़ी देर इंतजार किया, फिर घर की ओर चल पड़ा। मैंने गेट खोलने की कोशिश की—वह खुला हुआ था। वह खुल गया।
और मैं बगीचे में दाखिल हुआ। मुझे अचानक एड्रेनालाईन का तेज प्रवाह महसूस हुआ। किसी और की संपत्ति में घुसपैठ करने का एक अवैध रोमांच।
तभी मैंने पीछे का दरवाज़ा खुलते देखा। मैं छिपने की जगह ढूंढने लगा। तभी मेरी नज़र घास के उस पार बने छोटे से समरहाउस पर पड़ी। मैं चुपचाप लॉन पार करके अंदर घुस गया। मैं वहाँ एक पल के लिए खड़ा रहा, गहरी साँसें ले रहा था। मेरा दिल

ज़ोर से धड़क रहा था। क्या उसने मुझे देख लिया था? मुझे उसके कदमों की आहट सुनाई दी।
अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था। मैंने अपनी पिछली जेब में हाथ डाला और खरीदी हुई काली बालाक्लावा निकाली। मैंने उसे अपने सिर पर पहन लिया। फिर मैंने दस्ताने पहन लिए।
वह अंदर आई। वह फोन पर बात कर रही थी: "ठीक है, डार्लिंग। मैं तुमसे आठ बजे मिलूंगी। हाँ... मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ।"
उसने फोन काट दिया और एक बिजली का पंखा चला दिया। वह पंखे के सामने खड़ी हो गई, उसके बाल हवा में लहरा रहे थे। उसने एक ब्रश उठाया और एक कैनवास के पास गई जो एक स्टैंड पर रखा था। वह मेरी तरफ पीठ करके खड़ी थी। तभी उसकी नज़र खिड़की में मेरी परछाई पर पड़ी। मुझे लगता है कि उसने पहले मेरा चाकू देखा।
वह एकदम अकड़ गई और धीरे से पीछे मुड़ी। उसकी आँखें डर से चौड़ी हो गई थीं। हम दोनों खामोशी से एक-दूसरे को देखते रहे।
यह पहली बार था जब मेरा सामना एलिसिया बेरेंसन से हुआ।
और बाकी, जैसा वे कहते हैं, इतिहास है।
भाग पाँच
यदि मैं स्वयं को सही ठहराने का प्रयास करूँ, तो मेरा अपना मुख ही मुझे दोषी ठहरा देगा।
—अय्यूब 9:20
अध्याय एक
एलिसिया बेरेंसन की डायरी
23 फरवरी
थियो अभी-अभी चला गया। मैं अकेली हूँ। मैं इसे जितनी जल्दी हो सके लिख रही हूँ। मेरे पास ज्यादा समय नहीं है। मुझे इसे तब तक लिख लेना है जब तक मुझमें ताकत है।
पहले तो मुझे लगा कि मैं पागल हो गई हूँ। यह सोचना आसान था कि मैं पागल हूँ, बजाय इसके कि मैं इसे सच मानूँ। लेकिन मैं पागल नहीं हूँ। बिलकुल नहीं।

जब पहली बार मेरी उनसे थेरेपी रूम में मुलाकात हुई, तो मैं निश्चित नहीं थी—उनमें कुछ जाना-पहचाना सा था, लेकिन कुछ अलग भी—मैंने उनकी आँखों को पहचाना, न केवल रंग बल्कि आकार भी। और सिगरेट और आफ्टरशेव की वही धुएँ वाली गंध। और जिस तरह से वह शब्दों का उच्चारण करते थे, और उनके बोलने का वही लय—लेकिन उसकी आवाज़ का लहजा अलग था, कुछ अलग सा लग रहा था। इसलिए मुझे यकीन नहीं था—

लेकिन अगली बार जब हम मिले, तो उसने अपनी असलियत बता दी। उसने वही शब्द दोहराए—

ठीक वही वाक्यांश जो उसने घर पर इस्तेमाल किया था, मेरी स्मृति में अंकित हो गया:

मैं आपकी मदद करना चाहता हूँ—मैं चाहता हूँ कि आप स्पष्ट रूप से देख सकें।

जैसे ही मैंने यह सुना, मेरे दिमाग में कुछ क्लिक हुआ और पहेली के टुकड़े एक साथ जुड़ गए—तस्वीर पूरी हो गई।

वह वही था।

और मेरे अंदर कुछ ऐसा हुआ, जैसे कोई जंगली जानवर वाली प्रवृत्ति। मैं उसे मारना चाहता था, मारना या मरना—मैं उस पर झपटा और उसका गला घोंटने की कोशिश की, उसकी आँखें नोच लीं, उसकी खोपड़ी को ज़मीन पर पटक-पट कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। लेकिन मैं उसे मारने में कामयाब नहीं हुआ, और उन्होंने मुझे पकड़ लिया, मुझे नशीली दवा दी और मुझे बंद कर दिया। और फिर—उसके बाद मेरा हौसला पस्त हो गया। मुझे फिर से खुद पर शक होने लगा।

हो सकता है मैंने कोई गलती की हो, हो सकता है मैं कल्पना कर रहा था, हो सकता है वह वह व्यक्ति न हो।

ये थियो कैसे हो सकता है? मुझे इस तरह चिढ़ाने के लिए यहाँ आने का उसका क्या मकसद हो सकता है? और फिर मुझे समझ आया। मेरी मदद करने का उसका सारा झूठ—यही तो सबसे घिनौना पहलू था। उसे इसमें मज़ा आ रहा था, उसे इसमें आनंद मिल रहा था—इसीलिए तो वो यहाँ आया था। वो बस अपनी जीत का जश्न मनाने वापस आया था।

मैं आपकी मदद करना चाहता हूँ—मैं चाहता हूँ कि आप स्पष्ट रूप से देख सकें।

अब मुझे समझ आ गया। सब कुछ साफ़-साफ़ दिख गया। मैं चाहती थी कि उसे पता चले कि मुझे सब पता है। इसलिए मैंने गैब्रियल की मौत के बारे में झूठ बोला। जब मैं बोल रही थी, तब मुझे लगा कि उसे पता चल गया है कि मैं झूठ बोल रही हूँ। हमने एक-दूसरे को देखा और उसने समझ लिया कि मैंने उसे पहचान लिया है।
और उसकी आँखों में कुछ ऐसा था जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था। डर। वह मुझसे डरा हुआ था—कि मैं क्या कहूँगी। वह भयभीत था—मेरी आवाज़ से।
इसीलिए वो कुछ मिनट पहले वापस आया। इस बार उसने कुछ नहीं कहा। एक शब्द भी नहीं। उसने मेरी कलाई पकड़ी और मेरी नस में सुई चुभो दी। मैंने कोई संघर्ष नहीं किया। मैंने कोई विरोध नहीं किया। मैंने उसे ऐसा करने दिया। मैं इसके लायक हूँ—मैं इस सज़ा के लायक हूँ। मैं दोषी हूँ—लेकिन वो भी है। इसीलिए मैं ये लिख रही हूँ—ताकि वो बच न सके। ताकि उसे सज़ा मिले।
मुझे जल्दी करनी होगी। मुझे अभी से महसूस हो रहा है—जो इंजेक्शन उन्होंने मुझे लगाया है, वो असर कर रहा है। मुझे बहुत नींद आ रही है। मैं लेटना चाहती हूँ। मैं सोना चाहती हूँ... लेकिन नहीं—अभी नहीं। मुझे जागते रहना होगा। मुझे कहानी पूरी करनी है। और इस बार, मैं सच बोलूँगी।
उस रात, थियो घर में घुस आया और मुझे बांध दिया—और जब गैब्रियल घर आया, तो थियो ने उसे बेहोश कर दिया। पहले तो मुझे लगा कि उसने उसे मार डाला है—लेकिन फिर मैंने देखा कि गैब्रियल सांस ले रहा था। थियो ने उसे उठाया और कुर्सी से बांध दिया। उसने कुर्सी को इस तरह से खिसकाया कि गैब्रियल और मैं पीठ से पीठ मिलाकर बैठ गए, और मैं उसका चेहरा नहीं देख पा रही थी।
मैंने कहा, "कृपया, उसे चोट मत पहुँचाइए। मैं आपसे विनती कर रही हूँ—मैं कुछ भी करूँगी, आप जो चाहें।"
थियो हँसा। मुझे उसकी हँसी से इतनी नफरत हो गई थी—वह ठंडी और खोखली थी। निर्दयी। "उसे चोट पहुँचाऊँ?" उसने सिर हिलाया। "मैं उसे मार डालूँगा।"
उसने सचमुच ऐसा कहा था। मुझे इतना डर लगा कि मैं अपने आँसू नहीं रोक पाई। मैं रोई और गिड़गिड़ाई।
“मैं आपकी हर इच्छा पूरी करूँगी, कुछ भी—कृपया, कृपया उसे जीने दीजिए—वह जीने का हकदार है। वह सबसे दयालु और बेहतरीन इंसान है—और मैं उससे प्यार

करती हूँ, मैं उससे बहुत प्यार करती हूँ—”
“मुझे बताओ, एलिसिया। मुझे उसके लिए अपने प्यार के बारे में बताओ। मुझे बताओ, क्या तुम्हें लगता है कि वह तुमसे प्यार करता है?”
मैंने कहा, "वह मुझसे प्यार करता है।"
मुझे पृष्ठभूमि में घड़ी की टिक-टिक सुनाई दी। उसके जवाब देने में मानो सदियां लग गईं। "देखते हैं," उसने कहा। उसकी काली आँखें एक पल के लिए मुझ पर टिकी रहीं और मुझे लगा जैसे मैं अंधेरे में डूब रही हूँ। मैं एक ऐसे प्राणी के सामने थी जो इंसान भी नहीं था। वह दुष्ट था।
वह कुर्सी के चारों ओर घूमकर गेब्रियल के सामने खड़ा हो गया। मैंने अपना सिर जितना हो सके घुमाया, लेकिन मुझे वे दिखाई नहीं दिए। एक भयानक, धीमी सी आवाज़ आई—जैसे ही मैंने उसे गेब्रियल के चेहरे पर मारते सुना, मैं सहम गया। उसने उसे बार-बार मारा, जब तक कि गेब्रियल हांफने लगा और जाग गया।
“हैलो, गैब्रियल,” उसने कहा।
तुम कौन हो बे?
मैं शादीशुदा हूं। इसलिए मुझे पता है कि किसी से प्यार करना कैसा होता है। और मुझे यह भी पता है कि धोखा खाना कैसा होता है।
तुम किस बारे में बात कर रहे हो?
“केवल कायर ही अपने प्रियजनों को धोखा देते हैं। क्या तुम कायर हो, गेब्रियल?”
"भाड़ में जाओ।"
“मैं तुम्हें जान से मार डालने वाला था। लेकिन एलिसिया ने तुम्हारी जान बचाने की गुहार लगाई। इसलिए, मैं तुम्हें एक विकल्प दे रहा हूँ। या तो तुम मर जाओ—या एलिसिया। फैसला तुम्हारा है।”
जिस तरह से वह बोल रहा था, वह बहुत ही शांत, संयमित और नियंत्रित था। उसमें कोई भावना नहीं थी।
गैब्रियल ने एक पल के लिए कोई जवाब नहीं दिया। उसकी आवाज़ हांफती हुई लग रही थी, जैसे उसे किसी ने घूंसा मारा हो।
"नहीं-"

“हाँ। एलिसिया मरेगी, या तुम मरोगे। तुम्हारी मर्ज़ी, गैब्रियल। चलो पता लगाते हैं कि तुम उससे कितना प्यार करते हो। क्या तुम उसके लिए मरोगे? तुम्हारे पास फैसला करने के लिए दस सेकंड हैं...”
दस ... नौ—”
मैंने कहा, "उसकी बात पर विश्वास मत करो। वह हम दोनों को मार डालेगा—मैं तुमसे प्यार करती हूँ—"
“—आठ ... सात—”
“मुझे पता है तुम मुझसे प्यार करते हो, गेब्रियल—”
“—छह ... पाँच—”
“तुम मुझसे प्यार करते हो—”
“—चार ... तीन—”
“गैब्रियल, कहो कि तुम मुझसे प्यार करते हो—”
"-दो-"
और फिर गैब्रियल बोला। पहले तो मैं उसकी आवाज़ पहचान नहीं पाया। इतनी धीमी आवाज़, इतनी दूर से आती हुई—एक नन्हे लड़के की आवाज़। एक छोटा बच्चा—जिसके हाथों में जीवन और मृत्यु की शक्ति थी।
उन्होंने कहा, "मैं मरना नहीं चाहता।"
फिर सन्नाटा छा गया। सब कुछ रुक गया। मेरे शरीर के अंदर, हर कोशिका सिकुड़ गई; मुरझाई हुई कोशिकाएँ, जैसे फूल से गिरती हुई मृत पंखुड़ियाँ। चमेली के फूल ज़मीन पर तैर रहे हों। क्या मुझे कहीं चमेली की खुशबू आ रही है? हाँ, हाँ, मीठी चमेली—शायद खिड़की की चौखट पर...
थियो गैब्रियल से दूर हटकर मुझसे बात करने लगा। मुझे उसकी बातों पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल लग रहा था। “देखा, एलिसिया? मुझे पता था कि गैब्रियल कायर है—
मेरी पत्नी के साथ मेरी पीठ पीछे संबंध बना रहा था। उसने मेरी इकलौती खुशी छीन ली। थियो मेरे चेहरे के बिल्कुल सामने झुक गया। "मुझे यह करते हुए खेद है। लेकिन सच कहूं तो, अब जब तुम्हें सच्चाई पता चल गई है... तो तुम्हारा मर जाना ही बेहतर है।"

उसने बंदूक उठाई और मेरे सिर पर तान दी। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। मैंने गैब्रियल को चिल्लाते हुए सुना—"गोली मत चलाओ, गोली मत चलाओ, गोली मत चलाओ—"

एक क्लिक। और फिर एक गोली चलने की आवाज़—इतनी तेज़ कि उसने बाकी सभी आवाज़ों को दबा दिया।

कुछ सेकंड के लिए सन्नाटा छा गया। मुझे लगा जैसे मैं मर गया हूँ।

लेकिन मैं इतना भाग्यशाली नहीं था।

मैंने आंखें खोलीं। थियो अभी भी वहीं था—छत की ओर बंदूक ताने हुए। वह मुस्कुराया। उसने अपनी उंगली होठों पर रखी और मुझे चुप रहने का इशारा किया।

"एलिसिया?" गैब्रियल चिल्लाया। "एलिसिया?"

मैं गैब्रियल को अपनी कुर्सी पर छटपटाते हुए सुन सकता था, वह यह देखने के लिए मुड़ने की कोशिश कर रहा था कि क्या हुआ था।

"तूने उसके साथ क्या किया, कमीने? तू हरामखोर। हे भगवान—"

थियो ने मेरी कलाई खोल दी। उसने बंदूक ज़मीन पर गिरा दी। फिर उसने बड़े प्यार से मेरे गाल पर चुंबन किया। वह बाहर चला गया और उसके पीछे सामने का दरवाज़ा ज़ोर से बंद हो गया।

गैब्रियल और मैं अकेले थे। वह सिसक रहा था, फूट-फूट कर रो रहा था, मुश्किल से शब्द बोल पा रहा था। वह बस मेरा नाम पुकारता रहा, विलाप करता रहा, "एलिसिया, एलिसिया—"

मैं चुप रह गया।

"एलिसिया? धत् तेरे की, धत् तेरे की, ओह, धत् तेरे की—"

मैं चुप रह गया।

"एलिसिया, मुझे जवाब दो, एलिसिया—हे भगवान—"

मैं चुप रहा। मैं कैसे बोल सकता था? गैब्रियल ने मुझे मौत की सजा सुनाई थी।

मरे हुए लोग बोलते नहीं हैं।

मैंने अपने टखनों के चारों ओर बंधी तार खोली। मैं कुर्सी से उठा। मैंने फर्श की ओर हाथ बढ़ाया। मेरी उंगलियां बंदूक पर जा लगीं। वह मेरे हाथ में गर्म और भारी थी। मैं

कुर्सी के चारों ओर घूमा और गैब्रियल के सामने खड़ा हो गया। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। उसकी आंखें चौड़ी हो गईं।
“एलिसिया? तुम ज़िंदा हो—भगवान का शुक्र है कि तुम हो—”
काश मैं कह पाती कि मैंने पराजितों के लिए प्रहार किया—कि मैं विश्वासघातियों और टूटे हुए दिलों के लिए खड़ी हुई—कि गैब्रियल की आँखें एक अत्याचारी की थीं, मेरे पिता की आँखें थीं। लेकिन अब झूठ बोलना बंद। सच तो यह है कि गैब्रियल की आँखें अचानक मेरी हो गईं—और मेरी आँखें उसकी। कहीं न कहीं हम दोनों ने अपनी जगहें बदल ली थीं।
अब मुझे समझ आ गया। मैं कभी सुरक्षित नहीं रह पाऊँगी। मुझे कभी प्यार नहीं मिलेगा। मेरी सारी उम्मीदें चकनाचूर हो गईं।
मेरे सारे सपने चकनाचूर हो गए—कुछ भी नहीं बचा, बिलकुल कुछ भी नहीं। मेरे पिता सही थे—मुझे जीने का कोई हक नहीं था। मैं कुछ भी नहीं थी। गैब्रियल ने मेरे साथ यही किया था।
यही सच है। मैंने गैब्रियल को नहीं मारा। उसने मुझे मारा।
मैंने बस ट्रिगर दबा दिया।
अध्याय दो
इंदिरा ने कहा, "किसी के सारे सामान को गत्ते के डिब्बे में देखना इससे ज्यादा दयनीय कुछ नहीं हो सकता।"
मैंने सिर हिलाया। मैंने उदास होकर कमरे में चारों ओर देखा।
इंदिरा ने आगे कहा, "सचमुच आश्चर्य की बात है कि एलिसिया के पास कितनी कम चीजें थीं। जब आप सोचते हैं कि अन्य मरीज कितना फालतू सामान जमा कर लेते हैं... उसके पास कुछ किताबें, कुछ चित्र और उसके कपड़े ही थे।"
इंदिरा और मैं स्टेफनी के निर्देशों पर एलिसिया का कमरा खाली कर रहे थे।
“उसके जागने की संभावना बहुत कम है,” स्टेफ़नी ने कहा था, “और सच कहूँ तो हमें बिस्तर की ज़रूरत है।” हम ज़्यादातर चुपचाप काम करते रहे, यह तय करते रहे कि क्या रखना है और क्या फेंकना है। मैंने उसके सामान को ध्यान से देखा।
मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि ऐसा कुछ भी न हो जो मुझे दोषी ठहरा सके—ऐसा कुछ भी न हो जिससे मैं फंस जाऊं।

मुझे आश्चर्य हुआ कि एलिसिया इतने लंबे समय तक अपनी डायरी को कैसे छिपाकर रख पाई। ग्रोव में भर्ती होने पर प्रत्येक मरीज को अपने साथ कुछ निजी सामान लाने की अनुमति थी। एलिसिया अपने साथ रेखाचित्रों का एक पोर्टफोलियो लाई थी, और मेरा मानना है कि इसी के ज़रिए उसने डायरी को अंदर लाया होगा। मैंने पोर्टफोलियो खोला और रेखाचित्रों को पलटा - वे ज्यादातर अधूरे पेंसिल रेखाचित्र और अध्ययन थे। पन्ने पर कुछ साधारण रेखाएँ खींची गई थीं, जो तुरंत जीवंत हो उठती थीं, अद्भुत भावपूर्ण थीं, और एक स्पष्ट छवि को दर्शाती थीं।
मैंने इंदिरा को एक स्केच दिखाया। “यह तुम हो।”
“क्या? ऐसा नहीं है।”
"यह है।"
“क्या सच में?” इंदिरा प्रसन्न होकर उसे ध्यान से देखने लगी। “क्या आपको ऐसा लगता है?”
मैंने कभी ध्यान नहीं दिया कि वह मेरी तस्वीर बना रही थी। मुझे आश्चर्य है कि उसने यह कब बनाई होगी। यह अच्छी है, है ना?
“हां, यह है। आपको इसे अपने पास रखना चाहिए।”
इंदिरा ने मुंह बनाया और उसे वापस देते हुए कहा, "मैं ऐसा नहीं कर सकती।"
“बिल्कुल कर सकते हो। उसे कोई आपत्ति नहीं होगी।” मैंने मुस्कुराते हुए कहा। “किसी को पता भी नहीं चलेगा।”
“मुझे लगता है—मुझे नहीं लगता।” उसने दीवार के सहारे फर्श पर खड़ी पेंटिंग पर एक नज़र डाली—जलती हुई इमारत की सीढ़ी पर मेरी और एलिसिया की वह पेंटिंग, जिसे एलिफ ने खराब कर दिया था।
“उसके बारे में क्या ख्याल है?” इंदिरा ने पूछा। “क्या तुम उसे लोगे?”
मैंने सिर हिलाया। "मैं जीन-फेलिक्स को फोन करूंगा। वह इसकी जिम्मेदारी ले सकता है।"
इंदिरा ने सिर हिलाया। "अफसोस की बात है कि आप इसे अपने पास नहीं रख सकते।"
मैंने इसे एक पल के लिए देखा। मुझे यह पसंद नहीं आया। एलिसिया की सभी पेंटिंग्स में से, यह एकमात्र ऐसी पेंटिंग थी जो मुझे पसंद नहीं आई। अजीब बात है, क्योंकि

इसमें मुझे ही विषय के रूप में दर्शाया गया था।
मैं यह बात स्पष्ट करना चाहता हूँ—मैंने कभी नहीं सोचा था कि एलिसिया गैब्रियल को गोली मार देगी। यह एक महत्वपूर्ण बात है। मेरा इरादा कभी भी उससे गैब्रियल को मारने का नहीं था और न ही मैंने ऐसी उम्मीद की थी। मैं बस एलिसिया को उसके विवाह की सच्चाई से अवगत कराना चाहता था, जैसे मुझे कराया गया था। मैं उसे यह दिखाना चाहता था कि गैब्रियल उससे प्यार नहीं करता, उसका जीवन झूठ था, उनका विवाह एक ढोंग था। तभी उसे भी, मेरी तरह, मलबे से एक नया जीवन बनाने का मौका मिलता; एक ऐसा जीवन जो झूठ पर नहीं, सच्चाई पर आधारित हो।
मुझे एलिसिया के अस्थिर स्वभाव के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी। अगर मुझे पता होता, तो मैं कभी भी हद से आगे नहीं बढ़ता। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वह इस तरह प्रतिक्रिया देगी।
और जब यह कहानी अखबारों में छा गई और एलिसिया पर हत्या का मुकदमा चल रहा था, तो मुझे व्यक्तिगत जिम्मेदारी का गहरा एहसास हुआ, और अपने अपराधबोध को मिटाने और यह साबित करने की तीव्र इच्छा हुई कि जो कुछ हुआ उसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं था। इसलिए मैंने ग्रोव में नौकरी के लिए आवेदन किया। मैं हत्या के बाद की स्थिति से उबरने में उसकी मदद करना चाहता था—उसे यह समझने में मदद करना चाहता था कि क्या हुआ था, इससे उबरने में मदद करना चाहता था—और खुद को मुक्त करना चाहता था। अगर आप संशयवादी हैं, तो आप कह सकते हैं कि मैंने अपने निशान मिटाने के लिए, एक तरह से, अपराध स्थल पर दोबारा जाकर ऐसा किया। यह सच नहीं है। हालाँकि मैं इस तरह के प्रयास के जोखिमों को जानता था, इस बात की पूरी संभावना थी कि मैं पकड़ा जा सकता हूँ, कि इसका परिणाम विनाशकारी हो सकता है, मेरे पास कोई विकल्प नहीं था—
क्योंकि मैं जैसा हूँ वैसा ही हूँ।
याद रखिए, मैं एक मनोचिकित्सक हूँ। एलिसिया को मदद की ज़रूरत थी—और केवल मैं ही जानती थी कि उसकी मदद कैसे करनी है।
मुझे डर था कि मास्क पहनने और आवाज बदलने के बावजूद कहीं वो मुझे पहचान न ले। लेकिन एलिसिया ने मुझे पहचाना नहीं, और मैं

वह अपने जीवन में एक नई भूमिका निभाने में सक्षम थी। फिर, कैम्ब्रिज में उस रात, मुझे आखिरकार समझ आया कि मैंने अनजाने में क्या दोहराया था, वह लंबे समय से भूला हुआ लैंड माइन जिस पर मैंने कदम रखा था। गैब्रियल वह दूसरा व्यक्ति था जिसने एलिसिया को मौत की सजा सुनाई थी; इस मूल आघात को फिर से याद करना उसके लिए असहनीय था।

इसीलिए उसने बंदूक उठाई और अपने पिता से नहीं, बल्कि अपने पति से अपना बहुप्रतीक्षित बदला लिया। जैसा कि मुझे संदेह था, इस हत्या के पीछे मेरे कार्यों से कहीं अधिक पुराने और गहरे कारण थे।

लेकिन जब उसने गैब्रियल की मौत के बारे में मुझसे झूठ बोला, तो यह स्पष्ट हो गया कि एलिसिया ने मुझे पहचान लिया था और वह मेरी परीक्षा ले रही थी। मुझे कार्रवाई करने के लिए मजबूर होना पड़ा, एलिसिया को हमेशा के लिए चुप कराना पड़ा। मैंने क्रिश्चियन को दोषी ठहराया—मुझे लगा कि यह एक तरह का न्याय था। मुझे उसे फंसाने में कोई संकोच नहीं था। क्रिश्चियन ने एलिसिया को उस समय धोखा दिया जब उसे उसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी; वह सजा का हकदार था।

एलिसिया को चुप कराना इतना आसान नहीं था। उसे मॉर्फिन का इंजेक्शन लगाना मेरे जीवन का सबसे कठिन काम था। शुक्र है कि वह मरी नहीं, बल्कि सो रही है।

इस तरह, मैं अभी भी हर दिन उससे मिलने जा सकता हूँ और उसके बिस्तर के पास बैठकर उसका हाथ पकड़ सकता हूँ।

मैंने उसे खोया नहीं है।

"क्या हमारा काम हो गया?" इंदिरा ने मेरे विचारों को बाधित करते हुए पूछा।

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

“अच्छा। मुझे जाना होगा, बारह बजे मेरा एक मरीज है।”

मैंने कहा, "आगे बढ़ो।"

"लंच पर मिलते हैं?"

"हाँ।"

इंदिरा ने मेरी बांह को हल्के से दबाया और चली गई।

मैंने अपनी घड़ी देखी। मैंने जल्दी निकलने और घर जाने के बारे में सोचा। मैं बहुत थका हुआ महसूस कर रहा था। मैं लाइट बंद करके निकलने ही वाला था कि तभी

एक विचार मेरे मन में आया और मेरा शरीर अकड़ गया।
डायरी। वो कहाँ थी?
मेरी नज़र कमरे में करीने से पैक और डिब्बों में बंद चीज़ों पर पड़ी। हमने सब कुछ देख लिया था। मैंने उसकी हर एक निजी चीज़ को गौर से देखा और उस पर विचार किया था।
और वह वहां नहीं था।
मैं इतनी लापरवाह कैसे हो सकती थी? इंदिरा और उसकी बेतुकी बकवास ने मेरा ध्यान भटका दिया और मैं अपना फोकस खो बैठी।
वह कहाँ था? यहीं होना चाहिए था। डायरी के बिना क्रिश्चियन को दोषी ठहराने के लिए बहुत कम सबूत थे। मुझे उसे ढूंढना ही था।
मैं बेचैनी से कमरे में हर जगह ढूंढने लगी। मैंने गत्ते के डिब्बों को उलट दिया, जिससे उनका सारा सामान ज़मीन पर बिखर गया। मैंने मलबे में हर जगह तलाशा, लेकिन वह नहीं मिला। मैंने उसके कपड़े फाड़कर देखे, लेकिन कुछ नहीं मिला। मैंने आर्ट पोर्टफोलियो को फाड़कर खोला, जिससे सारे स्केच ज़मीन पर गिर गए, लेकिन डायरी उनमें नहीं थी। फिर मैंने अलमारियों की तलाशी ली और सारे दराज बाहर निकाल दिए, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे खाली हैं, फिर उन्हें एक तरफ फेंक दिया।
लेकिन वह वहां नहीं था।
अध्याय तीन
ट्रस्ट के जूलियन मैकमोहन रिसेप्शन में मेरा इंतज़ार कर रहे थे। उनका शरीर गठीला था, घुंघराले लाल बाल थे, और उन्हें "आप और मेरे बीच", "आखिरकार" या "संक्षेप में" जैसे मुहावरों का बहुत शौक था, जो उनकी बातचीत में अक्सर, कई बार एक ही वाक्य में, दिखाई देते थे। वे मूलतः एक सौम्य व्यक्तित्व थे—ट्रस्ट का दोस्ताना चेहरा। घर जाने से पहले वे मुझसे कुछ बात करना चाहते थे।
“मैं अभी-अभी प्रोफेसर डायोमेडेस के पास से आया हूँ। मुझे लगा कि आपको यह जानना चाहिए—”
उन्होंने इस्तीफा दे दिया है।
"ओह समझा।"

“उन्होंने समय से पहले ही सेवानिवृत्ति ले ली। सच कहूँ तो, या तो यही करना था या फिर इस गड़बड़ी की जाँच का सामना करना था।” जूलियन ने कंधे उचकाते हुए कहा। “मुझे उनके लिए बहुत दुख हो रहा है—एक लंबे और शानदार करियर का यह कोई गौरवशाली अंत नहीं है।”
लेकिन कम से कम इस तरह वह प्रेस और सारे हंगामे से बच जाएगा।
वैसे, उन्होंने आपका जिक्र किया था।
“डायोमेडेस?”
“हाँ। उन्होंने सुझाव दिया कि हम आपको उनकी नौकरी दे दें।” जूलियन ने आँख मारी। “उन्होंने कहा कि आप इस पद के लिए एकदम सही व्यक्ति हैं।”
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "यह तो बहुत ही दयालुता है।"
"दुर्भाग्यवश, अंततः एलिसिया के साथ जो हुआ और क्रिश्चियन की गिरफ्तारी को देखते हुए, ग्रोव को खुला रखने का कोई सवाल ही नहीं उठता। हम इसे स्थायी रूप से बंद कर रहे हैं।"
मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। तो क्या सच में कोई नौकरी उपलब्ध ही नहीं है?
“तो, संक्षेप में कहें तो, हम अगले कुछ महीनों में यहाँ एक नई, कहीं अधिक किफायती मनोरोग सेवा शुरू करने की योजना बना रहे हैं। और हम चाहेंगे कि आप इसका संचालन करने पर विचार करें, थियो।”
अपनी खुशी छुपाना मुश्किल था। मैंने सहर्ष सहमति जताई। "सच कहूँ तो," मैंने उनके ही एक वाक्य को दोहराते हुए कहा, "यह वैसा ही अवसर है जिसका मैं सपना देखता हूँ।" और यह सचमुच ऐसा ही था—लोगों की सचमुच मदद करने का मौका, सिर्फ़ उन्हें दवाइयाँ देने का नहीं; उनकी मदद उस तरह से करने का मौका जिस तरह से मुझे लगता है कि उनकी मदद होनी चाहिए। जिस तरह रूथ ने मेरी मदद की। जिस तरह मैंने एलिसिया की मदद करने की कोशिश की।
मेरे लिए सब कुछ अच्छा रहा है—इस बात को स्वीकार न करना कृतघ्नता होगी।
लगता है मुझे वो सब कुछ मिल गया जो मैं चाहता था। खैर, लगभग सब कुछ।

*

पिछले साल, कैथी और मैं सेंट्रल लंदन छोड़कर सरे चले गए—वापस उसी जगह, जहाँ मैं पला-बढ़ा था। मेरे पिता की मृत्यु के बाद, उन्होंने यह घर मेरे नाम कर दिया था; हालाँकि जब तक मेरी माँ जीवित रहीं, यह घर उन्हीं के रहने के लिए था, लेकिन उन्होंने इसे हमें देने का फ़ैसला किया और खुद एक केयर फ़ैसिलिटी में चली गईं।

कैथी और मैंने सोचा था कि अतिरिक्त जगह और बगीचा लंदन तक आने-जाने की परेशानी को दूर कर देंगे। मुझे लगा कि यह हमारे लिए अच्छा होगा। हमने खुद से वादा किया कि हम घर को पूरी तरह बदल देंगे और सजावट और पुरानी बुरी यादों को मिटाने की योजना बनाई। लेकिन यहाँ आए हुए लगभग एक साल हो गया है, और घर अभी भी अधूरा है, आधा सजा हुआ है, पोर्टोबेलो मार्केट से खरीदी गई तस्वीरें और उत्तल दर्पण अभी भी बिना रंगी दीवारों के सहारे रखे हुए हैं। यह काफी हद तक वही घर है जिसमें मैं पली-बढ़ी हूँ। लेकिन मुझे उतना बुरा नहीं लग रहा जितना मैंने सोचा था। वास्तव में, मुझे यहाँ घर जैसा महसूस हो रहा है, जो कि विडंबनापूर्ण है।

मैं घर पहुंचा और अंदर चला गया। मैंने जल्दी से अपना कोट उतार दिया—अंदर बहुत गर्मी थी, जैसे ग्रीनहाउस में बैठा हो। मैंने दालान में लगे थर्मोस्टेट का तापमान कम कर दिया। कैथी को गर्मी पसंद है, जबकि मुझे ठंड, इसलिए तापमान हमारे बीच छोटी-मोटी लड़ाइयों का मैदान है। दालान से टीवी की आवाज़ आ रही थी। लगता है कैथी आजकल बहुत टीवी देखती है। कचरे का एक कभी न खत्म होने वाला शोर जो इस घर में हमारे जीवन का सार है।

मैंने उसे लिविंग रूम में सोफे पर सिकुड़कर बैठी हुई पाया। उसकी गोद में प्रॉन कॉकटेल चिप्स का एक बड़ा पैकेट था और वह अपनी चिपचिपी लाल उंगलियों से उन्हें निकालकर मुंह में ठूंस रही थी। वह हमेशा इसी तरह की बेकार चीजें खाती रहती है; इसलिए हाल ही में उसका वजन बढ़ना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। पिछले कुछ सालों से उसने ज्यादा काम नहीं किया है और वह काफी गुमसुम और उदास हो गई है। उसके डॉक्टर उसे दवाइयों पर रखना चाहते थे।

मैंने एंटीडिप्रेसेंट लेने की सलाह दी, लेकिन मैंने ऐसा करने से मना किया। इसके बजाय मैंने उसे किसी थेरेपिस्ट से मिलने और अपनी भावनाओं को साझा करने की वकालत की; मैंने खुद उसके लिए एक मनोचिकित्सक ढूंढने की पेशकश भी की। लेकिन लगता है कैथी बात ही नहीं करना चाहती।

कभी-कभी मैं उसे अजीब तरह से मेरी तरफ देखते हुए पाती हूँ—और सोचती हूँ कि वह क्या सोच रही है। क्या वह गैब्रियल और उस अफेयर के बारे में मुझे बताने की हिम्मत जुटाने की कोशिश कर रही है? लेकिन वह एक शब्द भी नहीं बोलती। वह बस चुपचाप बैठी रहती है, ठीक वैसे ही जैसे एलिसिया बैठी करती थी। काश मैं उसकी मदद कर पाती—लेकिन मैं उस तक पहुँच ही नहीं पा रही हूँ।

यही तो भयावह विडंबना है: मैंने कैथी को अपने पास रखने के लिए यह सब किया—और फिर भी मैंने उसे खो दिया।

मैं कुर्सी के आर्मरिस्ट पर बैठ गया और कुछ पल उसे देखता रहा। “मेरी एक मरीज़ ने ज़रूरत से ज़्यादा दवा ले ली है। वह कोमा में है।” कोई प्रतिक्रिया नहीं। “ऐसा लगता है कि स्टाफ के किसी दूसरे सदस्य ने जानबूझकर उसे ज़रूरत से ज़्यादा दवा दी है। शायद किसी सहकर्मी ने।” कोई प्रतिक्रिया नहीं। “क्या तुम मेरी बात सुन रही हो?”

कैथी ने हल्के से कंधे उचकाए। "मुझे नहीं पता कि क्या कहूँ।"

"थोड़ी सहानुभूति मिल जाए तो अच्छा रहेगा।"

“किसके लिए? तुम्हारे लिए?”

“उसके लिए। मैं कुछ समय से उससे व्यक्तिगत थेरेपी ले रही हूँ। उसका नाम एलिसिया बेरेंसन है।” यह कहते हुए मैंने कैथी की तरफ देखा।

उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। भावनाओं का जरा सा भी आभास नहीं हुआ।

“वह मशहूर है, या बदनाम। कुछ साल पहले हर कोई उसके बारे में बात कर रहा था। उसने अपने पति की हत्या कर दी थी... याद है?”

“नहीं, ऐसा नहीं है।” कैथी ने कंधे उचकाए और चैनल बदल दिया।

तो हम अपना "चलो नाटक करते हैं" वाला खेल जारी रखते हैं।

आजकल मैं बहुत दिखावा करता हूँ—कई लोगों के लिए, जिनमें मैं खुद भी शामिल हूँ। शायद इसीलिए मैं यह लिख रहा हूँ। अपने विशाल अहंकार को दरकिनार करके खुद के बारे में सच्चाई जानने की एक कोशिश—अगर यह संभव हो तो।

मुझे एक ड्रिंक चाहिए थी। मैं किचन में गया और फ्रीजर से वोदका का एक शॉट निकाला। उसे पीते ही मेरे गले में जलन होने लगी। मैंने एक और शॉट निकाला।
मैंने सोचा कि अगर मैं छह साल पहले की तरह फिर से रूथ से मिलने जाऊं और उसे यह सब बता दूं तो वह क्या कहेगी? लेकिन मुझे पता था कि यह असंभव था।
मैं अब बिल्कुल अलग प्राणी बन चुका था, एक अधिक दोषी, ईमानदारी से काम करने में कम सक्षम। मैं उस दुर्बल बूढ़ी औरत के सामने बैठकर उन आँखों में कैसे देख सकता था?
उन नीली नम आँखों ने, जिन्होंने इतने लंबे समय तक मुझे सुरक्षित रखा—और मुझे शालीनता, दया और सच्चाई के अलावा कुछ नहीं दिया—क्या वे यह प्रकट कर सकती हैं कि मैं कितना नीच, कितना क्रूर, कितना प्रतिशोधी और विकृत हूँ, मैं रूथ और उसने मेरे लिए जो कुछ भी करने की कोशिश की, उसके कितना अयोग्य हूँ? मैं उसे कैसे बता सकता हूँ कि मैंने तीन जिंदगियाँ तबाह कर दी हैं? कि मेरे पास कोई नैतिक संहिता नहीं है, कि मैं बिना पछतावे के सबसे बुरे काम करने में सक्षम हूँ, और मेरी एकमात्र चिंता अपनी जान की है?
जब मैंने रूथ को यह बात बताई, तो उसकी आँखों में जो सदमा, घृणा या शायद डर भी था, उससे भी बदतर था उदासी, निराशा और आत्म-निंदा का भाव। क्योंकि मैंने न केवल उसे निराश किया था, बल्कि मुझे पता है कि वह सोच रही होगी कि उसने मुझे निराश किया है—और सिर्फ मुझे ही नहीं, बल्कि खुद टॉक थेरेपी को भी।
किसी भी चिकित्सक को रूथ से बेहतर मौका नहीं मिला था—उसे एक ऐसे व्यक्ति के साथ काम करने के लिए कई साल मिले थे जो टूटा हुआ तो था, पर इतना छोटा, बस एक लड़का, और बदलने, बेहतर होने, ठीक होने के लिए इतना उत्सुक था। फिर भी, सैकड़ों घंटों की मनोचिकित्सा, बातचीत, सुनने और विश्लेषण के बावजूद, वह उसकी आत्मा को बचा नहीं पाई।
दरवाजे की घंटी बजी और मैं अपने विचारों से बाहर आ गया। शाम को किसी का आना कोई आम बात नहीं थी, जब से हम सरे में रहने आए थे तब से तो बिल्कुल नहीं; मुझे याद भी नहीं था कि आखिरी बार हमारे घर दोस्त कब आए थे।
मैंने पुकार कर पूछा, "क्या आप किसी का इंतजार कर रहे हैं?" लेकिन कोई जवाब नहीं आया।

कैथी शायद टीवी की आवाज़ के कारण मेरी बात नहीं सुन पाई होगी।
मैं सामने के दरवाजे पर गया और उसे खोला। मुझे आश्चर्य हुआ कि सामने चीफ इंस्पेक्टर एलन थे। उन्होंने स्कार्फ और कोट ओढ़ा हुआ था और उनके गाल लाल थे।
"शुभ संध्या, श्रीमान फैबर।"
“इंस्पेक्टर एलन? आप यहाँ क्या कर रहे हैं?”
“मैं संयोगवश आस-पास ही था और सोचा कि आपसे मिलने आ जाऊं। कुछ नई बातें हैं जिनके बारे में मैं आपको बताना चाहता था। क्या अब आपके लिए सुविधाजनक है?”
मैं हिचकिचाई। "सच कहूँ तो, मैं अभी खाना बनाने जा रही हूँ, इसलिए—"
इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा।
एलन मुस्कुराया। वह साफ तौर पर ना सुनने वाला नहीं था, इसलिए मैं एक तरफ हट गया और उसे अंदर जाने दिया। अंदर आकर वह खुश लग रहा था। उसने अपने दस्ताने और कोट उतार दिए। "बाहर बहुत ठंड हो रही है। मुझे लगता है इतनी ठंड है कि बर्फ गिर सकती है।" उसके चश्मे पर भाप जम गई थी, इसलिए उसने उसे उतारकर रुमाल से पोंछा।
मैंने कहा, "मुझे डर है कि यहाँ काफी गर्मी है।"
"मेरे लिए नहीं। मुझे जितनी गर्मी पसंद है, उससे ज्यादा गर्म नहीं होना चाहिए।"
"मेरी पत्नी के साथ आपकी अच्छी बनती होगी।"
ठीक उसी समय, कैथी गलियारे में प्रकट हुई। उसने मुझे और इंस्पेक्टर को हैरानी से देखा। "क्या हो रहा है?"
"कैथी, ये चीफ इंस्पेक्टर एलन हैं। जिस मरीज का मैंने जिक्र किया था, उसकी जांच का जिम्मा इन्हीं के पास है।"
"शुभ संध्या, श्रीमती फैबर।"
“इंस्पेक्टर एलन मुझसे कुछ बात करना चाहते हैं। ज़्यादा देर नहीं लगेगी। आप ऊपर जाइए और नहा लीजिए, खाना तैयार होते ही मैं आपको बुला लूँगी।” मैंने इंस्पेक्टर को रसोई में जाने का इशारा किया। “आप पहले जाइए।”
इंस्पेक्टर एलन ने कैथी की तरफ एक बार फिर देखा और मुड़कर रसोई में चले गए। मैं भी उनके पीछे-पीछे गया, कैथी को दालान में ही छोड़कर, तभी मुझे उनके कदमों

की धीमी आहट ऊपर की ओर सुनाई दी।
"क्या मैं आपके लिए कुछ पीने को लाऊं?"
“धन्यवाद। यह बहुत अच्छा लगा। एक कप चाय मिल जाए तो बहुत अच्छा होगा।”
मैंने देखा कि उनकी नज़र काउंटर पर रखी वोदका की बोतल पर चली गई।
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "या अगर आप चाहें तो कुछ और तेज़?"
नहीं, धन्यवाद। मुझे एक कप चाय ही काफी है।
आप इसे कैसे लेते हैं?
"तेज दूध चाहिए, बस इतना कि रंग आ जाए। चीनी मत डालना, मैं इसे छोड़ने की कोशिश कर रहा हूँ।"
जब वह बोल रहा था, मेरा मन भटक गया—मैं सोचने लगा कि वह यहाँ क्या कर रहा है, और क्या मुझे घबरा जाना चाहिए। उसका व्यवहार इतना सौम्य था कि सुरक्षित महसूस करना स्वाभाविक था। वैसे भी, ऐसा कुछ भी नहीं था जो मुझे परेशान कर सके, है ना?
मैंने केतली चालू की और उसकी ओर मुड़ गई।
“तो, इंस्पेक्टर साहब? आप मुझसे किस बारे में बात करना चाहते थे?”
"खैर, मुख्य रूप से श्री मार्टिन के बारे में।"
“जीन-फेलिक्स? सचमुच?” यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। “उसके बारे में क्या?”
“खैर, वो एलिसिया की कला सामग्री लेने ग्रोव आए थे, और हम इधर-उधर की बातें करते रहे। दिलचस्प आदमी हैं, श्री मार्टिन। वो एलिसिया के काम की एक रेट्रोस्पेक्टिव प्रदर्शनी आयोजित करने की योजना बना रहे हैं। उन्हें लगता है कि अब एलिसिया को एक कलाकार के रूप में फिर से आंकने का सही समय है। इतनी पब्लिसिटी को देखते हुए, मैं कह सकता हूँ कि वो...”
ठीक है।” एलन ने मुझे गौर से देखा। “आप उनके बारे में लिखना चाहेंगे, महोदय। मुझे यकीन है कि किताब या इसी तरह की किसी चीज़ में लोगों की दिलचस्पी होगी।”
“मैंने इस बारे में सोचा ही नहीं था... इंस्पेक्टर साहब, जीन-फेलिक्स की रेट्रोस्पेक्टिव प्रदर्शनी का मुझसे क्या लेना-देना है?”
“खैर, श्री मार्टिन नई पेंटिंग देखकर बहुत उत्साहित थे—उन्हें इस बात की ज़रा भी चिंता नहीं थी कि एलिफ ने उसे बिगाड़ दिया था। उन्होंने कहा कि इससे पेंटिंग की

सुंदरता और बढ़ गई है—मुझे उनके सटीक शब्द याद नहीं हैं—मुझे खुद कला के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं है। क्या आपको है?”
"वास्तव में नहीं।" मैं सोच रहा था कि निरीक्षक को मुद्दे पर आने में कितना समय लगेगा, और मुझे बढ़ती बेचैनी क्यों महसूस हो रही थी।
खैर, श्री मार्टिन उस तस्वीर की प्रशंसा कर रहे थे। उन्होंने उसे और करीब से देखने के लिए उठाया, और तभी वह तस्वीर सामने आ गई।
"क्या था?"
"यह।"
इंस्पेक्टर ने अपनी जैकेट के अंदर से कुछ निकाला। मैंने उसे तुरंत पहचान लिया।
डायरी।
केतली में पानी उबलने लगा और एक चीख गूंज उठी। मैंने गैस बंद कर दी और मग में थोड़ा उबलता पानी डाला। मैंने उसे हिलाया और महसूस किया कि मेरा हाथ थोड़ा कांप रहा था।
"ओह, अच्छा। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि यह कहाँ था।"
पेंटिंग के पीछे, फ्रेम के ऊपरी-बाएँ कोने में फंसा हुआ।
यह बहुत ही तंग जगह में फंसा हुआ था।
तो मैंने सोचा, उसने इसे वहीं छिपाया था। पेंटिंग के उस पिछले हिस्से में, जिससे मुझे नफरत थी। वह जगह जहाँ मैंने कभी नहीं देखा था।
निरीक्षक ने मुड़ी हुई, फीकी पड़ चुकी काली जिल्द पर हाथ फेरा और मुस्कुराया। उसने जिल्द खोली और पन्ने पलटने लगा। “बेहद दिलचस्प। तीर के निशान, उलझन।”
मैंने सिर हिलाया। "एक विक्षिप्त मन का चित्र।"
इंस्पेक्टर एलन ने पन्ने पलटते हुए आखिरी पन्ने तक पहुंचे। उन्होंने उसे जोर से पढ़ना शुरू किया:
“‘...वह मेरी आवाज से डर गया था... उसने मेरी कलाई पकड़ी और मेरी नस में सुई चुभो दी।’”
मुझे अचानक घबराहट होने लगी। मुझे वे शब्द नहीं पता थे। मैंने वह प्रविष्टि नहीं पढ़ी थी। यही वह निर्णायक सबूत था जिसकी मुझे तलाश थी—और यह गलत हाथों में था।

मैं एलन से डायरी छीनकर पन्ने फाड़ देना चाहती थी—लेकिन मैं हिल नहीं पा रही थी। मैं फंस गई थी। मैं हकलाने लगी—
मुझे लगता है कि अगर मैं ऐसा करूं तो बेहतर होगा—”
मैंने घबराहट में बात की, और उसने मेरी आवाज़ में डर महसूस किया। "जी?"
"कुछ नहीं।"
मैंने उसे रोकने की कोई और कोशिश नहीं की। वैसे भी, मेरे द्वारा उठाया गया कोई भी कदम दोषी ठहराने वाला ही माना जाता। बचने का कोई रास्ता नहीं था। और सबसे अजीब बात यह है कि मुझे राहत महसूस हुई।
“आप जानते हैं, मुझे विश्वास नहीं होता कि आप संयोगवश मेरे पड़ोस में थे, इंस्पेक्टर।” मैंने उन्हें उनकी चाय थमा दी।
“अरे नहीं, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। मुझे लगा कि दरवाजे पर अपनी यात्रा का इरादा बताना ठीक नहीं होगा। लेकिन सच तो यह है कि इससे मामला कुछ अलग ही नजरिए से सामने आता है।”
मैंने खुद को कहते सुना, "मैं इसे सुनने के लिए उत्सुक हूँ। क्या आप इसे ज़ोर से पढ़ेंगे?"
"अचे से।"
खिड़की के पास कुर्सी पर बैठे हुए मुझे अजीब सी शांति का अनुभव हुआ।
उसने गला साफ किया और बोलना शुरू किया, “‘थियो अभी-अभी चला गया। मैं अकेला हूँ। मैं इसे जितनी जल्दी हो सके लिख रहा हूँ...’”
सुनते-सुनते मैंने ऊपर बहते हुए सफेद बादलों को देखा। आखिरकार, बादल छंट गए —बर्फ गिरने लगी—बाहर बर्फ के टुकड़े गिर रहे थे। मैंने खिड़की खोली और हाथ बढ़ाया। मैंने एक बर्फ का टुकड़ा पकड़ा। मैंने उसे अपनी उंगली से ओझल होते देखा। मैं मुस्कुराया।
और मैं एक और मछली पकड़ने चला गया।

आभार

***** **समाप्त** *****

sjeet

इस सब को संभव बनाने के लिए मैं अपने एजेंट सैम कोपलैंड का बहुत आभारी हूं। और मैं अपने संपादकों - यूनाइटेड किंगडम में बेन विलिस और संयुक्त राज्य अमेरिका में रयान डोहर्टी - का विशेष रूप से आभारी हूं, जिन्होंने पुस्तक को इतना बेहतर बनाया। साथ ही, उनके सभी उपयोगी सुझावों, टिप्पणियों और प्रोत्साहन के लिए मैं हैल जेन्सेन, इवान फर्नांडीज सोटो, एमिली होल्ट, विक्टोरिया होल्ट, वैनेसा होल्ट, अन्ना बिंगेमैन, जेम्स हैस्लाम, उमा थुरमन, डायने मेडक, नेडी एंटोनिएड्स और जो एडम्स को धन्यवाद देना चाहता हूं।

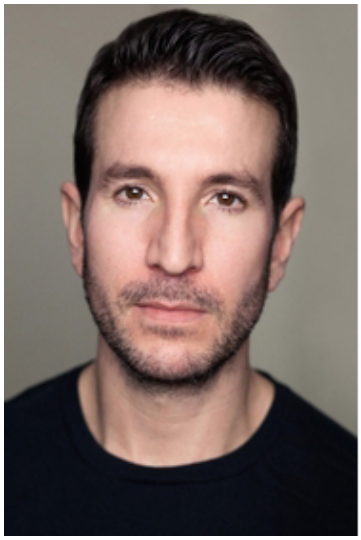

Wolf Marloh

लेखक के बारे में

एलेक्स माइकलडेस का जन्म 1977 में साइप्रस में एक ग्रीक पिता और एक अंग्रेजी माता के घर हुआ था। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया और लॉस एंजिल्स में अमेरिकन फिल्म इंस्टीट्यूट से पटकथा लेखन में एमए की डिग्री प्राप्त की।
उन्होंने रोसामंड पाइक अभिनीत फिल्म 'द डेविल यू नो' (2013) की पटकथा लिखी और उमा थुरमन, टिम रोथ, पार्कर पोसी और सोफिया वर्गेरा अभिनीत फिल्म 'द ब्रिट्स आर कमिंग' (2018) की सह-कथा लिखी। 'द साइलेंट पेशेंट' उनका पहला उपन्यास है।
आप यहां ईमेल अपडेट के लिए साइन अप कर सकते हैं।

यह एक काल्पनिक रचना है। इस उपन्यास में चित्रित सभी पात्र, संगठन और घटनाएँ या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से उपयोग की गई हैं।
द साइलेंट पेशेंट। कॉपीराइट © 2019 एस्ट्रामारे लिमिटेड द्वारा। सर्वाधिकार सुरक्षित। अधिक जानकारी के लिए, सेलाडॉन बुक्स, 175 फिफ्थ एवेन्यू, न्यूयॉर्क, एन.वाई. 10010 से संपर्क करें।
www.celadonbooks.com.
ISBN 978-1-250-30169-7 (हार्डकवर)
ISBN 978-1-25030171-0 (ईबुक)
ईआईएसबीएन 9781250301710
हमारी ई-पुस्तकें प्रचार, शिक्षा या व्यावसायिक उपयोग के लिए थोक में खरीदी जा सकती हैं। कृपया अपने स्थानीय पुस्तक विक्रेता या मैकमिलन कॉर्पोरेट और प्रीमियम बिक्री विभाग से 1-800-221-7945, एक्सटेंशन 5442 पर संपर्क करें या MacmillanSpecialMarkets@macmillan.com पर ईमेल करें।
पहला संस्करण: फरवरी 2019

दस्तावेज़ की रूपरेखा

- शीर्षक पेज
- कॉपीराइट सूचना
- समर्पण
- सूक्ति
- प्रस्तावना
- भाग एक
  - अध्याय एक
  - अध्याय दो
  - अध्याय तीन
  - चौथा अध्याय
  - अध्याय पाँच
  - अध्याय छह
  - अध्याय सात
  - अध्याय आठ
  - अध्याय नौ
  - अध्याय दस
- भाग दो
  - अध्याय एक: एलिसिया बेरेंसन की डायरी
  - अध्याय दो
  - अध्याय तीन
  - चौथा अध्याय
  - अध्याय पाँच
  - अध्याय छह
  - अध्याय सात
  - अध्याय आठ
  - अध्याय नौ
  - अध्याय दस
  - अध्याय ग्यारह

    - अध्याय बारह
    - अध्याय तेरह: एलिसिया बेरेंसन की डायरी
    - अध्याय चौदह
    - अध्याय पंद्रह
    - अध्याय सोलह
    - अध्याय सत्रह
    - अध्याय अठारह
    - अध्याय उन्नीस
    - अध्याय बीस
    - अध्याय इक्कीस
    - अध्याय बाईस: एलिसिया बेरेंसन की डायरी
    - अध्याय तेईस
    - अध्याय चौबीस
    - अध्याय पच्चीस
    - अध्याय छब्बीस
    - अध्याय सत्ताईस
    - अध्याय अट्ठाईस
    - अध्याय उनतीस
    - अध्याय तीस
    - अध्याय इकत्तीस
    - अध्याय बत्तीस
    - अध्याय तैंतीस
    - अध्याय चौंतीस
- भाग तीन
    - एलिसिया बेरेंसन की डायरी
- भाग चार
    - अध्याय एक
    - अध्याय दो

    - अध्याय तीन
    - चौथा अध्याय
    - अध्याय पाँच
    - अध्याय छह
    - अध्याय सात
    - अध्याय आठ
    - अध्याय नौ
    - अध्याय दस
    - अध्याय ग्यारह
    - अध्याय बारह
    - अध्याय तेरह
    - अध्याय चौदह
    - अध्याय पंद्रह
    - अध्याय सोलह
    - अध्याय सत्रह
    - अध्याय अठारह
    - अध्याय उन्नीस
    - अध्याय बीस
    - अध्याय इक्कीस
- भाग पाँच
    - अध्याय एक: एलिसिया बेरेंसन की डायरी
    - अध्याय दो
    - अध्याय तीन
- स्वीकृतियाँ
- लेखक के बारे में
- वृत्त पत्र शामिल होना
- कॉपीराइट